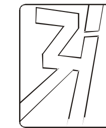
विकास ओ अर्थतंत्र

विकास ओ अर्थतंत्र

नरेन्द्र झा



अंतिका प्रकाशन

ISBN 978-81-906567-1-9
विकास ओ अर्थतंत्र

पहिल सजिल्द संस्करण : 2008

मूल्य : 250.00 टाका

प्रकाशक
अंतिका प्रकाशन
सी-56/यूजीएफ-4, शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-II,
गाजियाबाद-201005 (उ.प्र.)
फोन : 0120-6475212
ई-मेल : antika1999@yahoo.co.in

आवरण सज्जा : अंकन

मुद्रक : आर.के. ऑफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

VIKAAS O ARTHTANTRA
by Narendra Jha
Price : Rs. 250/-

समर्पण
मैथिली आंदोलन
आ सांस्कृतिक आलोड़न स'
सक्रिय रूप स' संबद्ध
आंदोलन कर्मी
ओ रंगकर्मी कें

अपन बात

देश 1947 मे स्वतंत्र भेल, मुदा मिथिलांचलक कृषि, उद्योग, यातायात ओ आर्थिक विकासक लेल कोनो ठोस कार्यक्रम एखन धरि राज्य आकि केन्द्र सरकार स्थिर नहि कयलक अछि। कोसी, गंडक, बागमती, महानन्दा योजना पर अवैज्ञानिक ओ दोषपूर्ण आधा–अधूरा काज भेल। एहि स' लाभ स' बेसी क्षति भेल छैक। जल–विद्युतक कोनो योजना पूरा नहि कयल गेल। सप्त कोसी योजना भारत ओ नेपाल सरकारक नीतिनिधारकक बोचलसकले अछि। मिथिलांचलक सामाजिक ओ आर्थिक जीवन के समृद्ध करबाक कोनो प्रयास नहि कयल गेल छैक। मिथिलांचलक सामाजिक ओ आर्थिक जीवन कें समृद्ध करबाक लेल यातायात (मुख्य रूपे सड़क), बाढ़ि नियंत्रण, नदी–नहरि स' पटौनीक सुविधा, ऊर्जा (अजस्त्र जल विद्युत) नौवहन, मत्स्य ओ मखानक उद्योग, चीनी, जूट, कागज ओ अन्य कृषि आधारित उद्योग, सेवा उद्योग के लक्ष्य राखि योजना बनय ओ सख्ती सँ ओकर मनुपालन शीघ्रातिशीघ्र कयल जाय, तखनहि मिथिलाकसी प्रकृति प्रदत्त सम्पदा स' लाभान्वित भ' सकताह। एहि दिशा मे हम सक्रिय प्रयास करैत रहलहुँ। सफलता एखनो बहुत दूर अछि।

मिथिला–मैथिलीक काज मे हम सर्वप्रथम वर्ष 1954 मे प्रवेश कयलहुँ। हम एहिसाल इंटर कॉमर्सक परीक्षा द' चुकल छलहुँ। एहि काज मे हमरा डा. लक्ष्मण झा एवं डा. लक्ष्मीनारायण सिंह स' प्रेरणा भेटल। पहिल काज 'पाया आन्दोलन' मे भाग लेलहुँ। सुरसंड स' जयनगर तक नेपाल–बिहारक सीमा रेखा स' सटल दुनू बगलक गामक जनमानस स' पायाक औचित्य पर चर्चा कयल। सात गोटेक टोली छल जकर नेतृत्व डा. लक्ष्मण झा क' रहल छलाह। दरभंगा मे छात्र लोकनिक बीच मिथिला–मैथिलीक काज मे तत्पर रहैत छलहुँ। 1956 मे सी.ए. पढ़वाक हेतु कोलकाता चल गेलहुं। ओतय प्रो. प्रबोधनारायण सिंहक निकट सम्पर्क मे आबि गेलहुँ। ओहि समय मे कोलकाता मे कतेको महानुभाव मिथिलामैथिलीक काज मे सक्रिय छलाह। मुदा हमरा प्रबोध बाबूक नेतृत्व पसिन्द पड़ल आ अन्त तक हुनके संग काज करैत रहलहुँ। ओतय बांग्लाभाषीक मातृभाषा प्रेम देखि हमरा अपन मातृभाषा मैथिलीक प्रति प्रेम आ ओर

उत्कट रूप मे उजागर भ' गेल। 'क, ट' कें मैथिली मे लिखय लगलहुँ। मिथिला दर्शन मे लेख सब छपय लागल। ओकर बाद 1974-75क अवधि मे मिथिला मिहिर पटना मे हमर 16 लेख प्रकाशित भेल। हमर लेखकीय साहस एकेबेर चौगुना भ' गेल। कारण, ओहि समय मुर्द्धन्य मैथिली लेखक लोकनिक संग हमरो लेख मिहिर मे प्रकाशित होबय हेतु पटना आबि गेलहुँ 1976-90 तक अपन रोजगार आ पारिवारिक व्यवस्था मे बेसी ओझरा गेलहुँ आ लेखनी मन्द परि गेल। 1997-98 मे हमरा हृदयक ऑपरेशन करबय पड़ल। हमर रोजी-रोटीक समस्या ओ धंधा सोझरा गेल। मुदा ओपरेशनक बाद सक्रिय रूपे मिथिला-मैथिलीक काज नहि क' सकब, से विश्वास भ' गेल। तखन मिथिला, कर्णामृत, अंतिका, मिथिला भारती आदि पत्र-पत्रिका, आकाशवाणी पटनाक 'भारती' कार्यक्रम मे भाग लेबय लगलहुँ। हम अभारो छी सब पत्र-पत्रिकाक सम्पादक ओ आकाशवाणी भारतीय संचलाक आ मिथिला-मैथिलीक विकास मे लागल प्रत्येक व्यक्ति के जे हमरा एहिकाज मे प्रेरित कयलनि। फलस्वरूप, मिथिलाक आर्थिक विकास जल संसाधन ओ प्रबंधन (2005) एवं मिथिला मे जल संसाधन ओ प्रबंधन (2006) पुस्तकक रूप में लोकक समक्ष आयल।

विकासओ अर्थतंत्र (निबंध संग्रह) मे कुलू आलेखक संग्रह अछि। एहि मे चारि अध्याय-राज ओ राजनीति, मिथिलाक आर्थिक विकास, अर्थनीति ओ संस्करण अछि। जाबतक मिथिला राज्य नहि बनत एहि अंचलक शोषण दिल्ली ओ पटनाक सरकार करबे करत। बंगाल स' बिहार, बिहार स' उड़ीसा सेहो एहि कारणें अलग भेल छल। अंत मे झारखंड कें बिहार स' अलग होबय पड़लैक। एहि संग्रह मे किछु लेख एहि उद्देश्य स' लिखल अछि जे मिथिलाक सर्वांगीण विकास संभव छैक। नहि भेल छैक, ओकर मुख्य कारण छैक सक्रिय नेतृत्वक अभाव तथा एहि क्षेत्रक चहुमुखी विकासक लेल कृत संकल्प राजनेताक। आजुक जनसेवक मात्र अपन आ अपना परिवारकें धनाढ्‌य बनेवाक मात्र संकल्प लेने छथि। समग्र उत्थान ओ विकासस' हुनका कोन प्रयोजन। मैथिली पत्रिका सभ मे प्रकाशित सालाना बजट (दिल्ली, पटना ओ रेल), प्रत्येक वर्ष दहाइत-मासिआइत मिथिलांचल, बाढ़ि आपदा स' लहा-लोट भेल जनमानस, औद्योगिक कृषि नीति (केंद्र ओ पटना सरकारक) ओ अन्य लेख जकर लाइफ मात्र एक साल अछि, एहि संग्रह मे स्थान नहि देने छियैक। एहि संग्रह मे उदारवादी, साम्राज्यवादी ओ बजारवादी नीतिस' करोड़पति अरब-खरब पति भ' रहल छथि आ अधिकांश जनमानसक घर मे दुनू सांझ चूल्हा जरबाक उपाय नहि, कि किछु लेख अपने लोकनिक सभदा अछि। अंत मे एहि संग्रह मे अपन पिता, जनिक विद्वता ओ सदाचार स' अत्यन्त प्रभावित भेल छी तथा मिथिला-मैथिली काज मे आजीवन संलग्न तीन निर्भीक सेनानी कें स्मरण कयल अछि।

—नरेन्द्र झा

अनुक्रम

अर्थतंत्र

स्मृति शेष

मिथिला : राज ओ राजनीति

सुख समृद्धिक लेल अपन राज्य

15 नवंबर, 2000 कें झारखंड, बिहार स' अलग राज्यक श्रेणी मे आबि गेल। 1939 मे एहि दिशा मे पहल भेल एवं आदिवासी महासभा नामक संगठन अस्तित्व मे आयल एवं जयपाल सिंहक नेतृत्व मे आंदोलन जोर पकड़लक। सतत् संघर्ष चलैत रहल। अंत मे भैयारी बंटबारा सफल भेल। मिथिलांचल सेहो 1952 स' अपन भैयारी हिस्सा मांगि रहल अछि, मुदा जोरदार आंदोलनक अभाव मे हम सब सफल नहि भेल छी तथा शोषित ओ पीड़ित छी। विशिष्ट समाजशास्त्री डॉ. सचीन्द्रनारायण अपन पुस्तक 'डायमेंशन ऑफ डेवलपमेंट इन ट्राइबल बिहार' मे लिखैत छथि जे 1991 ई. तक प्रति आदिवासी विकासक नाम पर 1,74,000 रुपया खर्च कयल गेल। मुदा आदिवासी लोकनिक कोनो विकास नहि भेल। प्रशासनिक अक्षमता, लूट ओ भ्रष्टाचारक अड्डा बनल रहल ई क्षेत्र। सब तरहक घोटाला एहि क्षेत्र मे होइत रहल। मिथिलांचल सेहो एहिना ठकल जा रहल अछि। गत 57 वर्ष मे दिनोंदिन आर्थिक विकास नहि भेल छैक। विश्व मे सब स' पिछड़ल क्षेत्र अछि ई। गत 14 वर्ष स' एहि राज्यक एकमात्र राजा अपना कें गौरवान्वित अनुभव क' रहल छथि तथा विभाजनक अवसर पर कहल जे शेष बिहारक एहि क्षेत्र मे मात्र 'बाढ़ि, बालु ओ भूख' रहि जायत। दोसर राज नेता जे तीन बेर एहि राज्यक राजा रहि चुकल छथि एहि विभाजनक विरोध कयने छलाह तथा अपन राजकाज मे मिथिलांचलक मैथिलीक अवहेलना क' दोसर राजभाषाक स्थान नहि देलनि। आब कतेक दिन शोषित आ पीड़ित रहब? अपन अधिकारक हेतु एकजुट भ' संग्राम मे जुटि जाइ।

जाहि कारण स' बिहार-उड़ीसा आ बंगाल स' अलग भेल वैह कारण स' झारखंड बिहार स' अलग भेल अछि। पूर्व मे बिहार बंगाल प्रांतक एक भाग छल। बिहारक लोकक स्थिति अत्यंत दयनीय छल। बिहार कें हेयदृष्टि स' देखल जाइत छल। विकासक कोनो काज नहि होइत छल। प्रशासनिक सुविधाक हेतु चटगांव कें बंगाल स' अलग करबाक प्रस्ताव आयल। एहि मौका स' 1906 मे महेश प्रसाद

आ सच्चिदानंद सिंह बिहारक विभाजनक मांग कें तेज कयल एवं 'द पार्टिशन ऑफ बंगाल' और 'द सिपरेशन ऑफ बिहार' नामक पुस्तक लिखल। 1907 ई. मे महेश प्रसादक मृत्यु भ' गेलनि, किंतु इमाम बंधु सक्रिय सहयोग देल। 1908 मे बिहार प्रादेशिक सम्मेलन पटना मे भेल आ आंदोलन मे तीव्रता आयल। परिणामस्वरूप 12 दिसंबर, 1911 कें बिहार ओ उड़ीसा प्रांतक निर्माण भेल। आर्थिक विपन्नता, भाषा एवं सांस्कृतिक विभिन्नताक कारण 1935 मे उड़ीसा कें बिहार स' अलग कयल गेल। यैह आर्थिक विपन्नता, अधोगति एवं भाषाक संग अत्याचार मिथिलांचलक प्रति नहि भ' रहल छैक? 1936 मे मैथिली साहित्य परिषदक मुजफ्फरपुर अधिवेशन मे कविवर सीताराम झाक शंखनाद—*अछि सलाइ मे आगि, बरत की बिना रगड़ने, पायब निज अधिकार कतहु की बिना झगड़ने।* एहि मूलमंत्र के पालन करय पड़त। बिहार लोकसेवा आयोग मे मैथिली ऐच्छिक विषय छल। वर्तमान बिहार सरकार पटना उच्च न्यायालय मे मोकदमा हारि गेल, तखन उच्च न्यायालय मे सरकार अपील कयने अछि। मैथिली संविधान मे स्वीकृत भाषा भ' गेल तथापि राज्य सरकार अपन याचिका वापिस नहि लेल। कतेक पैघ अन्याय?

मैथिली मिथिला देशक मातृभाषा थिक। मातृभाषाक शब्दार्थ थिक 'माइक भाषा'। हमरा लोकनिक माय अपन घर-दुआरि मे जाहि भाषा मे बजैत छथि—ओ थिक हमर मातृभाषा। एहिठाम मातृपद परिवार तथा समाजहुक उपलक्षण थिक तें हमरा लोकनिक ने केवल माय-बाबा-बाबी, काका-काकी, भौजी, अड़ोसिया-परोसिया जाहि भाषा मे अपन घर-आंगन मे, सर-समाज मे, बाध-बोन मे बाजैत छथि सैह थिक हमरा लोकनिक मातृभाषा। हिंदी कें हम राष्ट्रभाषा मानैत छी, हिंदीक प्रचार-प्रसार हो से चाहब। किंतु हिंदी हमर मातृभाषा मैथिलीक स्थान नहि ल' सकैत छथि। राष्ट्रभाषा प्रचारक ई अर्थ नहि जे प्रांतीयभाषा सबहक हानि हो अथवा ओकर लोप हो वा ओकर स्वतंत्रक अपहरण हो। पूनाक हिंदी साहित्य सम्मेलन मे डॉ. संपूर्णानंद बाजल रहथि, 'हिंदी को किसी भी प्रांतीय भषा से स्पर्द्धा नहीं है। मेरा तो विश्वास है कि प्रांतीय भाषाओं की उन्नति हिंदी की उन्नति में सहायक होगी। मेरा तो ऐसा विचार है कि व्रजभाषा, अवधी, पूर्वी, बुंदेलखंडी, मैथिली आदि की वृद्धि हिंदी की उन्नति में साधक होगी।' डॉ. अमरनाथ झा बाजल छलाह हिंदी साहित्य सम्मेलन मे, 'सभ प्रांतीय भाषाक उन्नति होयब आवश्यक एवं हितकर।' शिवनंदन ठाकुर महाकवि विद्यापति मे लिखैत छथि, 'मैथिली अप्रभंश युग से ही स्वतंत्र स्थिति रखती है यह भारतवर्ष की एक स्वतंत्र भाषा है। यह किसी के अंतर्गत या कि किसी भाषा की उपभाषा नहीं है।' डॉ. उमेश मिश्र 'कृष्ण-जन्म'क भूमिका मे लिखैत छथि, 'भाषा-विज्ञानक अनुसारे मैथिली एक स्वतंत्र भाषा थिक। ई मागधी नामक स्वतंत्र भाषा स' बाहर भेल अछि। समस्त भारतीय आर्य भाषा समूह मे सर्वप्रथम मैथिली कें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंसक पश्चात् साहित्यिक भाषा होयबाक गौरव प्राप्त भेल छैक।' जौर्ज ग्रियर्सन अपन मैथिली व्याकरण मे कहल जे मैथिली एक अलग भाषा अछि एवं सब तरहें हिंदी ओ बांग्ला स' भिन्न अछि। डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी कहल, 'मैथिली अपना मे एक भाषा अछि।' जवाहर लाल नेहरू कहल जे, 'मैथिली एक जीवित भाषा अछि'।' राहुल सांकृत्यायन स्पष्ट कहल जे, 'किसी आदमी की जाति पहिचानने के लिए सबसे बड़ा चिह्न है उसकी भाषा। यह आशा चिह्न है, जो हमारी भावुकता पर ही आधारित नहीं है, बल्कि हमारे जातीय उत्थान और पतन के साथ उनका घनिष्ट संबंध है।' अपन पुस्तक, 'आज की समस्यायें (1945 मे प्रकाशित) राहुलक शब्द मे मातृभाषाक परिभाषा। 'मातृभाषा की हमारी परिभाषा है, जिसके बोलने से अनपढ़ आदमी और बच्चा तक भी व्याकरण की गलती न कर सके।' एहि लेख मे राहुल लिखलनि, 'अपनी मातृभाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने का अधिकार हमारा वैसा जन्मसिद्ध अधिकार है, जैसा राजनीतिक स्वतंत्रता का।'

मैथिली भाषा हिंदी स' प्राचीन अछि। हिंदीक अस्तित्व एगारहम शताब्दी स' मानल जाइछ जखन कि मैथिलीक साहित्यिक प्रारंभकाल सातम-आठम शताब्दी अछि। एकरा स' प्राचीन साहित्य कोनो भाषा मे नहि अछि। गद्यक क्षेत्र मे ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण रत्नाकर स' प्राचीन ग्रंथ कोनो भाषा मे नहि अछि। चौदहम शताब्दीक आदि मे अंग्रेजीयो मे नहि अछि। पद्य मे विद्यापतिक पश्चात्‌हि असमक शंकरदेव, बंगालक चंडीदास, उड़ीसाक रामानंद राय ओ हिंदीक सूरदास एवं तुलसीदास भेलाह। भाषा नाटकक जहांधरि इतिहास ज्ञात भेल अछि बांग्ला, असमिया, उड़ीया, हिंदी मे कोनो नाटकक प्रचार नहि छल, तखन मैथिली मे पहिने गान मात्र द्वारा, पाछां गद्य-पद्य मिश्रित नाटक विविध प्रकारें लिखल ओ खेलायल गेल। अन्य उत्तर भारतीय भाषा सब स' पहिने मैथिली साहित्य विविध अंग स' समृद्ध भ' गेल छल। मैथिली मे जतेक अभिव्यंजना शक्ति छैक, जतेक सूक्ष्माति-सूक्ष्म अर्थ कें अभिव्यक्त करबाक सामर्थ्य छैक, ततेक कोनो भारतीय भाषा मे नहि भेटत। यथा हेलब, चुभकब, बोहिआयब, तामब, कोड़ब, चासब, समारब, उनाहब, गजाड़ब, कदबा करब, छीलब, छोलब, सोहब, सिसोहब, चांछब, रोलब, काटब, पाडब, असारव, छेबब आदि। मैथिली भाषाक कहबी सेहो अपूर्वे अछि। यथा, बुड़िबक वर कें कुर्थीक अच्छत, चोर कतहु सहय इजोत, अबल-दुलब पर सितुआ चोख आदि। भाषाक उत्कर्ष थिकैक ओहि भाषाक बजनिहारक मनोभाव कें व्यक्त करबाक सामर्थ्य आ समृद्धि थिकैक ओहि भाषा मे रचित एहन-एहन कृतिक प्राचुर्य

जाहि मे ओहि भाषाक बजनिहारक जीवन प्रतिबिंबित रहैक। उत्कर्ष मे अपन मातृभाषा कोनो भाषा स' न्यून नहि। मैथिली भाषाक साहित्य सब तरहें विकसित अछि।

मैथिली भाषा कें मान्यता बिहारक विश्वविद्यालयक अलावा कलकत्ता, त्रिभुवन विश्वविद्यालयय एवं अन्य विश्वविद्यालय मे प्राप्त छैक। साहित्य अकादमी 1965 मे एहि भाषाक मान्यता देलक भारतीय भाषाक रूप मे तथा प्रत्येक वर्ष विशिष्ट प्रकाशित ग्रंथ पर पुरस्कार दैछ। पुरस्कृत पोथीक भारतीय भाषा मे अनुवाद सेहो करा रहल अछि। अनुवादक पोथी पर सेहो पुरस्कार दैछ। नेपाल मे दोसर राजभाषाक स्थान प्राप्त छैक। विश्वक पी. इ. एन. सोसाइटी 1933 मे मैथिली भाषाक मान्यता देलक। वर्ष 1953 स' बिहार मे प्राथमिक स्तरक मैथिली माध्यम स' पढ़ौनी स्वीकृत अछि, मुदा बिहार सरकार सही ढंग स' संचालित नहि क' रहल अछि। जनवरी, 2004 स' मैथिली संविधानक आठम अनुसूची मे सम्मिलित क' लेल गेल अछि। एहि हेतु 1952 स' आंदोलन चलि रहल छल।

अदौ काल स' मिथिला विद्या-वैदुष्य मंडित संस्कृत विद्या एवं सारस्वतक गढ़ रहल अछि। भारतक मानचित्र पर विदेहक धरती संस्कृति-सभ्यताक केंद्रबिंदु, जनक याज्ञवल्क्यक कर्मक्षेत्र, जगज्जननीक जन्मभूमि, विद्या, बुद्धि तथा तपस्याक विधान ओ धर्म, दर्शन तथा अध्यात्मक त्रिवेणी प्रस्फुटित रहल। गौतम, कणाद, कपिल, कुमारिल, उदयन, वाचस्पति, मंडन, शंकर, गणेश, गोकुल, युग-युग स' एहि अंचलक मान बढ़ायल। गौतमी, गार्गी, मैत्रेयी, सीता, सावित्री, भारती, लखिमा आदि देवी एहि पुण्यभूमि कें अपन ज्ञान-विज्ञानक रसकण स' सिक्त कयने छथि। जतय सुदूर भारतक पंडित कें 'मया पंचाशीते...न मंत्रम् जानामि' कहल ओतहि एहि माटिक पाण्डित्य अछि 'अपूर्णे पंच्चमे वर्षे...जगत्रयम्।' जतय पिता स' पुत्र विशिष्ट विश्वविद्यालयक पदभार ग्रहण करैथ, जतय विश्वविद्यालयक कुलपति अपन प्राध्यापक कें साष्टांग प्रणाम करथि ओतय माटि पर सरस्वती स्वयं नृत्य करैत आबि रहल छथि। अपन प्राचीन कें मात्र स्मरण करबाक थिक। घमण्डक लेल नहि। सत्कर्मक-प्रेरणा लेल।

पुरातात्विक गौरवमय अतीतक अनुसंधान नहि कयल गेल छैक एवं एहि मे मिथिलाक इतिहास कें सुतले छोरि देल गेल छैक। जाहि मे बलिराजगढ़ (बाबूबरही-मधुबनी), असुरगढ़ (मधुबनी), अकौर (मधुबनी), जयनगरगढ़ (मधुबनी), नंदनगढ़ (चंपारण), देकुलीगढ़ (सीतामढ़ी), कटरागढ़ (मुजफ्फरपुर), नौला एवं मंगलागढ़ (बेगूसराय), अलौलीगढ़ (खगड़िया), पांडव स्थान (समस्तीपुर), कोचकगढ़ (पूर्णिया), पंचोभ अभिलेख (दरभंगा), भीठ-भगवानपुर अभिलेख,

गढ़ विस्की कोपगढ़ (केवटी) एवं अन्य। तहिना अंतरराष्ट्रीय महत्त्वक अरिपन, भित्तिचित्र, तुलसी मण्डप, कोहबरक रंग-बिरंगक चित्र, सामा-चकेबा ओ माटिक नाना विध बर्तन, सूई-तागक कसीदा, बांस, सिकी ओ मोथा स' बनल वस्तु-जात कें विकसित नहि कयल गेल। एकमात्र मिथिला (मधुबनी) पेंटिंग देश-विदेश मे ख्याति प्राप्त क' चुकल अछि। मैथिल पंचदेवोपासक छथि। शिवालय मे कपिलेश्वर, विदेश्वर, कुशेश्वर स्थान, मदनेश्वर स्थान (अन्हरा ठाढ़ी), चंडेश्वर स्थान (झंझारपुर), उग्रनाथ (भवानीपुर), सोमनाथ (सौराठ) अन्य मुख्य स्थान अछि। मुदा पर्यटनक हेतु विकसित नहि कयल गेल। गोसाउन घरे-घरे स्थापित छथि। किन्तु उच्चैठ (मधुबनी) मे छिन्नमस्तिका, उग्रतारा (महिषी-सहरसा) भद्रकालिका (कोइलख-मधुबनी), जयमंगला (बेगूसराय), बाणेश्वरी (मकरंदा-भंडारीसम), कालीमंदिर (मधुबनी), चामुंडा (कटरागढ़-मुजफ्फरपुर), श्यामा मंदिर (दरभंगा) आदि सिद्धपीठ कें पर्यटनक हेतु विकसित नहि कयल गेल। उचैठ, महाकवि कालिदासक सिद्धभूमि (बेनीपट्टी-मधुबनी), बिसफी (विद्यापतिक जन्मभूमि), बाजितपुर, कमतौल (आहिल्या स्थान-गौतमकुंड), महिषी (सहरसा) मीमांसक मण्डन मिश्रक जन्मभूमि, भटकुरा (मधुबनी) कुमारिल भट्ट। भटकुमार मिश्रक भूमि (आठम सदी), मंगरौनी (मधुबनी) नैयायिक गंगेश उपाध्याय ओ तांत्रिक मदन उपाध्याय एवं गोकुलनाथ उपाध्याय, सरिसबपाही गंगानाथ-अमरनाथ, पक्षधर मिश्र, भवनाथ मिश्र (अयाची) ठाढ़ी वाचस्पति मिश्र, करियन उदयनाचार्य जगवन-यज्ञवन-याज्ञवल्क्य बन, कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुरक पाली (मधुबनी) वैयाकरण केशरी म. म. परमेश्वर झाक तरौनी, हरिमोहन झाक कुमर बाजितपुर आदि गाम गहन शोधक स्थल अछि। घर-घर मे शास्त्र-चर्चा ओ गांव-गांव मे गुरुकुल शोभायमान छल। संस्कृतक संग प्राकृत, अपभ्रंश अवहट्ट ओ मैथिली भाषा साहित्यक विकास भेल छल। बाह्याक्रमण स' आक्रांत भेलो पर मिथिलाक सांस्कृतिक वैभव अनाक्रांत रहल। संस्कार प्रदूषित नहि भेल।

जनसंख्या कोनो भूभागक संपत्ति बुझल जाइछ। जनशक्ति राष्ट्रक पूजीक द्योतक। मानवीय संसाधन मानवीय पूजीक एक एहेन संचय अछि जकरा अर्थव्यवस्थाक मार्ग मे प्रभावी रूप स' विनियोग कयल जा सकैछ। वर्ष 2001 मे मिथिलाक जनंसख्या 4,39,14,581 आँकल गेल अछि जे 1991क जनगणनाक तुलना मे 28.43 प्रतिशत वृद्धि भेल। सब अपन मातृभाषा मैथिली मे बजैत छथि। भारत सरकारक रेकर्ड मे जनसंख्या मे वृद्धि भेल छैक। किंतु बिहार सरकारक रेकर्ड मे मैथिली भाषीक संख्या कमि रहल छैक। 1931क जनगणना मे मैथिली भाषीक संख्या 1,39,23,000 छल जे तीस वर्षक बाद 49,84,811 तथा 1971 ओ 1981क

जनगणना मे मैथिली भाषीक संख्या शून्य भ' गेल। मैथिली, मगही ओ भोजपूरी भाषा-भाषी कें हिंदी मे सम्मिलित क'लेल गेल। जखन कि तीनू स्वतंत्र भाषा अछि। सरकारक केहन पैघ अत्याचार? हमर माइक भाषा हिंदी भ' गेल! शोषणक पराकाष्ठा!

इक्ष्वाकुतनय निमि महाराजपुत्र मिथि महाराज स' बसाओल गेल एहि भूभागक नाम मिथिला पड़ल। एहि नदी मातृक देश मे नदीक बाहुल्य अछि एवं एहि नदी सभक तीर मे लोक सभ बसैत गेलाह तें तीरभुक्ति एवं तिरहुत नाम स' सेहो जानल जाइछ। बृहद्विष्णु पुराण मे मिथिलाक चतुः सीमाक उल्लेख अछि। (मिथिला खंड सी. 500 ए.डी.)। उत्तर मे हिमालय, दक्षिण मे गंगा नदी, पूब मे महानंदा आ पश्चिम मे गंडक नदी। हिमालय स' गंगाधरि 100 मील ओ पूब स' पश्चिम धरि 250 मील। क्षेत्रफल 25,000 वर्गमील। ई क्षेत्र 25.3 अंश उत्तर अक्षांश स' 27.5 अंश उत्तर अक्षांश धरि एवं 73.80 अंश स' 88.80 अंश पूर्बदेशांतर धरि व्याप्त अछि। बिहार राज्यक पूर्वी चंपारण, पश्चमी चंपारण, मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, शिवहर, वैशाली, दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर, बेगूसराय, खगड़िया, सुपौल, सहरसा, मधेपुरा, पूर्णिया, किशनगंज, कटिहार, अररिया तथा नवगछिया (उत्तरी भागलपुर) ओ तराइ क्षेत्रक मोरंग, सप्तरी, सरलाही, रौतहाट, बसारा ओ परसा जिला अछि। भारत-नेपालक बीच 1815 मे सुगौली सन्धिक पश्चात् अंग्रेज बहादुर अपन प्रशासकीय सुविधा हेतु तराइ क्षेत्र नेपाल सरकारक अधीन क' देलक। आब कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 46,905 वर्ग कि.मी. आ वर्ष 2001क जनगणना मे मिथिलाक जनसंख्या 4,39,14,581 आंकल गेल छैक। जनसंख्याक घनत्व दरभंगा जिला मे सब स' बेसी 1101 तथा अररिया जिला मे सब स' कम 569 व्यक्ति। 21,000 गाम एवं 90 प्रतिशत लोक खेती पर गुजर करैत छथि। 25 प्रतिशत कृषि श्रमिक कें जीवन-यापनक कोनो आधार नहि छनि। भूमिहीन छथि। जन्म-दर तथा मृत्यु-दर मे कमी भेल अछि जे विश्वक दर स' एखनो कम अछि। नागरिक जनसंख्याक अनुपात सर्वत्र समान नहि। साक्षरता सेहो कम अछि, जाहि मे पुरुषक अपेक्षा महिला बेसी अशिक्षित छथि। अशिक्षा एवं द्रुतगति स' बढ़ैत जनसंख्या एतयक आर्थिक विकासक मार्ग मे सब स' पैघ बाधा सिद्ध भ' रहल अछि। किंतु देश कें स्वतंत्र भेना 57 वर्ष भ' गेल तथापि सरकार एहि दिशा मे समुचित प्रयास नहि कयलक।

प्राचीनकाल मे मिथिलांचल आर्थिक दृष्टि स' स्वाबलंबी छल। प्रत्येक आवश्यक वस्तुक उत्पादन ओ निर्माण एतय भ' जाइत छल। समाजक खास वर्ग उद्योग विशेष मे संलग्न छलाह। चीनी मिल मुख्य उद्योग छल। सब चीनी मिल बंद अछि। 17 चीनी मिल छल। कागतक 11 कारखाना छल। सब बंद अछि। कटिहारक

दू जूट मिल बंद अछि तथा समस्तीपुरक जूट मिल हुकुर-हुकुर क' रहल छैक। बरौनीक खाद कारखाना, मुजफ्फरपुरक भारत वैगन ओ दवाइक कारखाना, पंडौलक सूत मिल रुग्ण भ' बंद अछि। दरभंगा, बरौनी, हाजीपुर और मुजफ्फरपुरक औद्योगिक प्रांगणक कल-कारखाना मृतप्राय छैक। डा. इरानी औद्योगिक आयोग औद्योगिक विकासक ठोस सुझाव देल। राज्य सरकार कार्यान्वित नहि कयल। मुदा भ्रामक प्रचार कयल जाइछ जे ई क्षेत्र सर्वथा अनुपयुक्त अछि औद्योगिक विकास करबा मे एवं आर्थिक दृष्टि स' आत्मनिर्भर नहि भ' सकैछ।

ब्रितानिया सरकारक शासनकाल मे भारतीय अर्थव्यवस्था स्वार्थी, शोषक एवं दोषपूर्ण नीतिक कारण दिवालियापनक शिकार बनल। 19म शताब्दी मे भारत स' इंगलैंडक खजाना मे धनक प्रवाह होइत रहल एवं ई देश नियमित रूप स' सम्पत्ति विहीन राष्ट्र बनि गेल। जे देश 17म ओ 18म शताब्दीक पूर्वार्द्ध धरि संपन्नताक चरम बिंदु पर छल। एतयक कृषक भूमि कें धरती माता मानैत छलाह से कार्ल मार्क्सक मतानुसार अंग्रेजक शासनकाल मे कृषि व्यवस्था कें तानाशाही शिकंजा मे जकड़ि देल गेल, जकर फलस्वरूप कृषक भयंकर शोषण स' ग्रसित भ' गेलाह। कृषकक समृद्धता हीनता मे परिवर्तित भ' गेल। मिथिलांचल पर बड्ड पैघ आघात भेल। तराइ नेपाल क्षेत्र जे मिथिलाक प्राकृतिक संसाधनक मुख्य स्रोत छल 1815 मे गोरखा लोकनि स' संधि क' अपन शासनक सुविधा हेतु हुनका द' देल गेल जाहि मे एहि क्षेत्रक 5000 वर्ग मील क्षेत्र संगहि एतयक नदीक संप्रसार क्षेत्र। एहि स' मिथिलांचलक अपार क्षति भेल। हिमालय संसारक सर्वोच्च पहाड़ अनेक सुखकर खनिज द्रव्यक आगार अछि। गंडक, बागमती, कमला, त्रियुगा, कोसी ओ महानंदा जल ओ विद्युतक भंडार अछि। भूमि, पर्वत ओ नदीक एहि समस्त निधिक यदि उपयोग हो त' कोन एहेन ऐहिक सुख अछि जाहि स' हमरा लोकनि बंचित रहब। भारत सरकारक अभियंता एवं अमेरिकाक डा. जे.एल. सैवेज ओ डा. ए. निकेल तथा फ्रांसक एम. कोयल प्रभृत विशेषज्ञ लोकनिक स्पष्ट मत छनि जे मात्र कोसी योजनाक ठीक कार्यान्वयन स' 18 लाख किलोवाट बिजली उत्पादन हैत—बाढ़िक रोक-थाम ओ सिंचाइ व्यवस्था एकर अतिरिक्त। कोसी महासेतु योजना पर काजक सुर-शार आब भ' रहल अछि।

डा. लक्ष्मण झाक नेतृत्व मे मिथिला राज्य आंदोलन जोर पकड़लक। पाया आंदोलन कयल गेल। सुगौली संधिक बाद पाया निर्माण क' नेपाल ओ भारतक सीमा बांटल गेल। जखन कि देशक बंटवारा मुख्यतः नदी ओ पहाड़ द्वारा निर्धारित होइछ। एहि आंदोलन कें अंतरराष्ट्रीय समस्या कहि दबा देल गेल। सितंबर, 1998क पहिल सप्ताह मे नरहरि नाथ ओ बलराम भट्टराय 1815क भारत-नेपाल समझौता

(सुगौली संधि)क विरोध कयल जकर नेपालक उच्चतम न्यायालय मे सुनवाई भेल। हेगक अंतरराष्ट्रीय न्यायालय मे सेहो याचिका देल जाहि मे भारतक पांच राज्यक (तिस्ता सिक्किम स' कालापानी-जतय नेपाल, भारत, तिब्बत ओ चीनक सीमा रेखा) हिमाचलक कांग्रा वैली, उत्तर प्रदेशक गोरखपुर ओ बिहारक 9 जिला हाजीपुर तक अपन सीमारेखाक दावा करैत छथि। (Nepal Trying to USURP 9 between District?—Times oh Indian, Patna, 30-09-98) एहि दावा पर कोनो सरकारी प्रतिक्रिया नहि आयल। हम 13-11-98 मे Times oh India, Patna में News Over looked क अपन प्रतिक्रिया देल। नेपालक अनधिकृत कब्जा मिथिलाक उत्तरी-पश्चिमी सीमाक 7,500 एकड़ भूमि कें मुक्त करयबाक हेतु 17 अप्रैल 1999 मे बिहार विधान परिषद मे संकल्प पारित कयल गेल। ई भूमि पश्चमी चंपारण ओ किशनगंजक सीमा पर अछि। भारत सरकार बिहार सरकार कें एहि संबंध मे दिशा-निर्देश देल। किंतु बिहार सरकार अनुपालन नहि कयलक। (हिंदुस्तान 18-04-'99, पटना संस्करण) मिथिलांचलक हानि स' एतयक शासक कें कोन फिकिर छनि। देशक सुरक्षाक दृष्टि स' एहि तरहक अनधिकृत भूमिक अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान अछि।

20म शताब्दीक भारतक इतिहास कें राज्यक पुनर्गठन सदी कहल जायत। 1911 मे बिहार-उड़ीसा अलग राज्य भेल। एहि वर्ष अंग्रेज सरकार भारतक राजधानी कोलकाता स' दिल्ली अनलक। तखनहि दिल्ली कें पंजाब प्रांत स' अलग कयल गेल। सुविचारित ढंग स' प्रांतक गठन नहि भेल छैक। अंग्रेज जहिना एहि देशक शासक कें पराजित करैत छलाह, अपन सुविधानुसार एक प्रांत आकि प्रेसीडेंसीक रूप मे गठन करैत गेलाह एवं ओकर प्रशासन गवर्नर आकि लेफ्टीनेंट गवर्नर कें सौंपैत गेलाह। लगभग 600 देशी रियासत एहि प्रांतक अंदर आकि आसपास छल। एहि मे राजा, नवाब ओ जागीरदार राज्य करैत छलाह। किंतु ओकर नकेल ब्रिटिश एजेंटक हाथ मे रहैत छल। देश मे राजनैतिक जागरण शुरू भेल एवं विचार होमय लागल जे भावी भारत मे प्रांतक गठन कोन आधार पर कयल जाय। 1917 मे कोलकाता कांग्रेस मे लोकमान्य तिलक आग्रह कयल जे वास्तविक प्रांतीय स्वाधीनताक लेल भाषाक अनुसार प्रांतक निर्माण करब अत्यंत आवश्यक। कांग्रेस अपन प्रांतीय इकाई कें भाषाक आधार पर गठन कयल तथा संगठनात्मक दृष्टि स' कांग्रेस 22 प्रांत बनायल, किंतु स्वाधीनता संग्राम मे ई मुख्य मुद्दा नहि रहल, मात्र स्वाधीनता प्राप्त करब मुख्य अभीष्ठ। आंध्रक लोक एहि दृष्टि स' सर्वाधिक सक्रिय भेलाह। अपन मांग पूरा नहि होइत देखिक' तेलगु नेता पोटी श्री रामुलू आमरण अनशन कयल ओ 58 दिन अनशनक बाद 15 दिसंबर, 1952 मे हुनक मृत्यु भ' गेलनि। एहि दुखद घटनाक चारि दिन बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री पृथक राज्यक रूप मे आंध्र प्रदेशक निर्माणक घोषणा कयल।

भाषाक आधार पर आंध्र प्रदेशक निर्माण स' संपूर्ण देश मे एहि आधार पर राज्यक पुनर्गठन लहरि चलल। भारतीय संसद 22 दिसंबर 1953 मे राज्य पुनर्गठन आयोगक स्थापना सैयद फजल अलीक अध्यक्षता मे कयल जाहि मे हृदयनाथ कुंजरु ओ के. एम. पनिक्कर सदस्य नियुक्त भेल छलाह। रिपोर्ट दू वर्षक अंदर मे देल गेल एवं संवैधानिक आवश्यकता पूर्तिक पश्चात् 1956 मे अधिकांश राज्यक निर्माण भेल। 1960 मे महाराष्ट्र ओ गुजरात एवं 1966 मे पंजाब ओ हरियाणा अस्तित्व मे आयल। एहि शताब्दीक अंत मे तीन राज्य—छत्तीसगढ़, उत्तरांचल ओ झारखंड अस्तित्व मे आयल। किंतु एखनो विसंगति स' पूर्ण अछि। राज्यक आंदोलन सुगबुगा रहल छैक। भारत मे भाषाक स्थिति विचित्र छैक। प्रथमदृष्टया 15 भाषा कें राष्ट्रीय भाषाक मान्यता देल गेल। जाहि मे संस्कृत ओ सिन्धी कें छोड़ि अपना राज्य मे सब राजभाषा अछि। कश्मीरी सरकारी भाषा नहि अछि। ओतय उर्दू कें राज्य भाषाक मान्यता छैक। बाद मे कोंकणी, मनीपुरी ओ नेपाली सेहो राष्ट्रीय भाषाक रूप मे जुटि गेल। जनवरी, 2004 मे अन्य भाषाक संग अष्टम सूची मे मैथिलीक स्थान भेटि गेल छैक।

डा. लक्ष्मण झा लोकमान्य तिलकक विचार ओ अन्य भाषावेत्ताक मतानुसार भाषाधार प्रांतक समर्थक छलाह तथा 1952 मे 'मिथला ए युनियन रिपब्लिक' पोथीक माध्यम स' 22 राज्यक निर्माणक प्रस्ताव कयने छलाह। तथाकथित हिंदी भाषी क्षेत्र मे 6 राज्य समाहित छल ओ 11 राज्यक निर्माण चाहैत छलाह। बिहार मे 4 राज्य-मिथिला, मगध, भोजपुर ओ झारखण्ड। 22 दिसंबर, 1953 मे सैयद फजल अलीक अध्यक्षता वला आयोग कें मिथिला राज्यक निर्माण हेतु स्मार-पत्र सेहो देने छलाह। 26 फरवरी, 1954 कें पटना विश्वविद्यालयक वार्षिक अधिवेशन मे एहि आयोगक सदस्य आयल छलाह एवं अपना भाषण मे मिथिला राज्यक निर्माणक जोरदार विरोध कयने छलाह। पटना ओ दिल्लीक सरकारक षड्यंत्र सफल भेल तथा आयोग मिथिला राज्यक निर्माण कें अस्वीकृत क' देलक। एहि स' ओ मर्माहक भेला एवं हुनक वेदना एक भेंटवार्ता जे मिथिला साप्ताहिकक बंद पर व्यक्त कयने छलाह, ''चूड़ा-दहीवला सब धर घए लेलक, मुखिया मानिजन कें गप्पे छंटबा स' फुरसति नहि, बुद्धिजीवी सब तमसगीर बनल रहिगेल। ज' एक बेर ओ सब मातृभूमिक नाम पर बढ़ि-चढ़ि क' आगू अबैत आकि सड़के पर उतरि जाइत त' ओकरे सभक संडोर पर नोनो-रोटीबलाक हेज निकलि जइतय। तखनहि ई पत्रिको दनदनाइत चलैत आ ओही उत्साही समूहक आक्रामक जयजयकार स' मिथिला

राज्यक आंदोलनो सफल भ' जाइत। से नहि भेल मुदा मिथिला केसरी जानकीनंदन सिंहक संग हमर ई मिथिला राज्यक प्रयास कथमपि निष्फल नहि होयत। एक ने एक दिन अवश्य फलित होयत।'' एहि सब प्रयासक उपरांतो मिथिला राज्य नहि बनि सकल। कल्याणी कांग्रेस अधिवेशनक समय पश्चिम बंगाल सरकार आसनसोल स्टेशन पर बाबू जानकीनंदन सिंह एवं हुनक सहकर्मी कें हिरासत मे ल' लेलक। कारण कांग्रेस अधिवेशन मे ई लोकनि जोरदार ढंग स' मिथिला राज्यक मांग करय जा रहल छलाह।

केंद्र सरकार प्रशासनिक ओ विकासक दृष्टि स' छोट-छोट राज्यक पक्षधर अछि। तीन राज्यक—झारखंड, छत्तीसगढ़ ओ उत्तरांचलक निर्माण भ' गेल छैक। अनेको सुगबुगा रहल अछि। उत्तर प्रदेश स' हरित प्रदेश दोसर उत्तर प्रदेश ओ मध्यप्रदेश स' बुंदेलखंड, असम मे बोरोलैण्ड, बंगाल मे गोरखालैंड एवं कामतापुर, मध्यप्रदेश स' विंध्याचल, आन्ध्र स' तेलंगना, कर्नाटक स' कोड़ाग। बिहार मे मिथिला राज्यक आवाज 1952 स' अछि आ तीनू नवनिर्मित राज्य स' सबल हैत। एक तुलनात्मक विवरण—

क्र.	विषय	छत्तीसगढ़	उत्तरांचल	झारखंड	मिथिला
1.	जनसंख्या	1.76 करोड़	70.45 लाख	2.18 करोड़	4.39 करोड़
2.	क्षेत्रफल	1,35,000 वर्ग कि.मी.	55,845 वर्ग कि.मी.	74,677 वर्ग कि.मी.	46,905 वर्ग कि.मी.
3.	जिलाक संख्या	16	13	18	18(+) एक अनुमंडल
4.	संसद सदस्यता	11	5	14	22
5.	विधानसभा सदस्यता	90	22	81	126
6.	शिक्षा	79.23 (नागरिक) 36.56 (ग्रामीण)	65 प्रतिशत	52 प्रतिशत	27 प्रतिशत
7.	प्राकृतिक संसाधन	बॉक्साइट, डोलमाइट, हीरा लाइमस्टोन, लोहा, टीन, कोयला, सिल्का, अन्य	पर्यटन स्थल भरपूर	कोयला, तांबा, पाइराइट्स, सिल्का ग्रेफाइट, ग्रेनाइट अन्य	पहाड़, नदी, पर्यटन स्थलक अनुसंधान नहि भेल छैक
8.	जंगल	59,28,526 वर्ग किमी.	उत्तर प्रदेश क 76 प्रतिशत	बिहारक 71 प्रतिशत	96,033 वर्ग किमी.
9.	कृषि	मुख्य धान	पहाड़ी खेती	सब्जी प्रधान	मुख्य धान, जूट, कुसियार, मखान
10.	उद्योग	मुख्य भिलाई, स्टील प्लांट	शून्य	टाटा समूह, बोकारो, हटिया अन्य	बरौनी रिफाइनरी खाद कारखाना, चीनी, जूट, भारत बैगन एवं औषधि
11.	पर्यटन	अमरकंटक, भोरमदेव, कन्हा, बस्तर	नैनीताल, मसूरी, केदारनाथ, बद्रीनाथ, हरिद्वार, ऋषिकेश, नंदादेबी, कौरबेट नेशनल पार्क	रांची, हराजीबाग	बाल्मीकीनगर, सीशापानी एवं अन्य अविकसित

मिथिलांचल मे मात्र कमला-कोसीक जल ओ बाढ़ि नहि। उपरोक्त तुलनात्मक अध्ययन स' स्पष्ट होइछ जे एहि भू-भाग कें अविकसित राज्य मे अंग्रेज बहादुरक शोषण, स्वतंत्रताक बाद जनप्रतिनिधि ओ भ्रष्ट अफसरक उदासीनता भेटलै। ई बड्ड पैघ भ्रान्ति अछि जे कोनो क्षेत्रक विकास मात्र खनिज संपदा पर निर्भर करैछ। तखन पंजाब, हरियाणा ओ गुजरात कंगाल रहैत। जापान आ अमेरिकाक बाद दोसर आर्थिक शक्ति नहि रहैत कारण एकरो पास खनिज संपदा नहि छैक। मिथिलांचल प्राकृतिक संसाधन स' भरल-पुरल अछि। यदि एतयक उर्बरा भूमि, जल, मानव-शक्ति आदिक ध्यान कृषि पर केंद्रित कयल जाइत त' दोसर पंजाब हरियाणा भ' सकैत छल। पंजाब अन्नक उगाही पर मंडी टैक्स, ग्रामीण विकास आदि कर लगाक' 800 करोड़ रुपया स' अधिक राजस्व प्राप्त करैछ जे मिथिलांचल सेहो क' सकैत छल। नदी मातृक देश होयबाक कारण जल एतयक मूल्यवान संपदा अछि। नेपाल स' समझौता क' बाढ़ि, सुखार, सिंचाइ ओ जल-विद्युतक समुचित व्यवस्था अपेक्षित छैक। जल-विद्युत सब स' सस्ता उर्जा संसाधन जे एतय प्रचुर छैक। सूचना ओ बायो टेक्नोलॉजीक संग कृषि आधारित उद्योगक विकास कयल जा सकैछ। सिंगापुरक एक भारतीय उद्योगपति कुसियारक सिट्ठी (बगास) स' बिजलीक नव तकनीक विकसित कयने छलाह आ मात्र सकरी-लोहट चीनी मिलक सीट्ठी स' 10 मेगावाट बिजली बनयबाक आश्वासन देल, जाहि मे 5 मेगावाट राज्य

सरकार कें देबाक हेतु प्रस्तुत छलाह। राज्य सरकारक बिजली सचिव सहानुभूति देखायल। मुदा विद्युत बोर्ड हुनका बिजलीक मूल्य द' देतनि तकर गारंटी नहि कयल। उद्योगपति अपन तकनीकक संग सिंगापुर फिर गेलाह। बगास स' बिजलीक उत्पादन आब भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स क' सकैछ। एतयक 17 गोट चीनी मिल स' बिजली उत्पादन संभव! सरकार नहि करत। बिहार विभाजन पर एतयक सत्तारूढ़ राजाक विलाप स' दिल्लीक योजना आयोग सहमत नहि। ओकर कथन—

``Still north Bihar-Mithilanchal will be leht with enormous pool oh human resources and harnessable water resources which, ih utilised properly, can brign rich dividends. To salvage a lot oh sunrise investment is required, especially in water resources, agriculture and traditional craht and oh course institutional rehorm'' (Outlook-August 21, 2000 page 36.)

भारत कें प्राचीनतम गणतंत्र होयबाक गौरव मिथिला स' मात्र प्राप्त अछि। पाणिनिक अष्टाध्यायी ओ कौटिल्यक अर्थशास्त्र मे एकरा वृजि संघ ओ बौद्ध साहित्य मे बज्जि प्रदेश कहल गेल। वैदिक साहित्य मे गंडकी नदीक पूर्वीतट पर अग्नि प्रज्वलित क' विदेह राज्यक स्थापना कयल गेल छल। यैह विदेह भूमि गणतंत्र प्रणाली मे एहि पवित्र क्षेत्रक जे भयंकर शोषण, उत्पीड़न तथा दुर्दशा भेल अछि, एकर विश्व मे कत्तौ उदाहरण नहि भेटत। तेलांगना ओ विदर्भ राज्य बनि रहल अछि। राज्य गठन आयोग बनि रहल छैक। मिथिला राज्यक निर्माण हाथ पर हाथ राखि आकि मात्र प्रस्ताव पारित कयला स' नहि हैत। पायब निज अधिकार की बिना संघर्ष कें? जोरदार आंदोलन एकजुट भ' कर' पड़त। अवश्य सफल हैब।

(जुलाइ-सितंबर, 2004)

चुनावी दंगल 2005 : ताल ठोकिक'

अपन आंचर मे उत्कृष्ट गौरव गाथा समेटने मिथिलांचल आइ विकासक लेल छटपटा रहल अछि। जन प्रतिनिधि अबैत-जाइत छथि, किंतु एहि क्षेत्रक समस्या ज्यों के त्यों मुंह बौने ठाढ़ अछि। जखन तानाशाही चरम पर पहुंचल तखन लोकतंत्रक उदय भेल। जे सदैव देशक हित मे सोचैत छथि वैह भेलाह देशभक्त। वैह देशक सर्वांगीण विकास मे सक्षम छथि। वर्ष 2005 मे पांच वर्षक लेल 13म बिहार विधान सभाक चुनाव आहूत छल। मिथिलांचल मे गत 2000-05क अवधि मे तथाकथित देशभक्त विधायकक द्वारा कयल गेल काजक विवेचना क' वोटर अग्रिम मतगणना मे अपन प्रतिनिधिक सही चुनाव क' गणतंत्र कें विकासोन्मुख बनब'क कोशिश कयलनि। मुदा भेल की?

वैशाली विधान सभा क्षेत्रक अंतर्गत वोटरक संख्या अछि 2,07,709 एवं अधिकांश गामक सड़क जर्जर, शिक्षकक अनुपस्थितिक कारण शिक्षाक खास्ताहाल, स्वास्थ्य केंद्र मे चिकित्सकक अनुपस्थिति ओ औषधक अभाव, बिजली रानी घर मे सांझ तक नहि दैत, एको टा एहेन उद्योग नहि स्थापित भेल जे बेरोजगारी कें दूर करैत, विकास योजना मे करोड़ोक लूट-खसोट, गत चुनाव मे कयल गेल कोनो करार पूरा नहि कयल। विधायक छथि श्रीमती वीणा साही जे सहकारिता मंत्री सेहो छलीह। 2,01,578 वोट बला महनार विधान सभा क्षेत्रक विधायक छथि महाबली श्री रामा किशोर सिंह। क्षेत्र मे पांच वर्ष मे 14 करोड़ रुपया विकास काज मे खर्च भेल, किंतु हजारो लोक विगत वर्ष मे गंगा नदीक कटाव स' विस्थापित भेलाह। पुनर्वासित नहि कयल गेलाह। विकास मे असमानता। स्वास्थ्य सेवा तथा शिक्षाक खास्ताहाल। अनियमित विद्युत आपूर्ति। विधायकजी विभिन्न आरोप मे लगभग एक वर्ष स' जेल मे। 2,34,418 वोटरबला हाजीपुर विधान सभा क्षेत्रक विधायक छथि श्री नित्यानंद राय। विद्यालयक जर्जर स्थिति, शिक्षा व्यवस्था चौपट, अनियमित विद्युत आपूर्ति, टूटल सड़क, विधायक बनला पर अपन एयरकंडीशन गाड़ी, कृषि

विपणनक उचित व्यवस्था नहि, औद्योगिक क्षेत्र मे अधिकांश उद्योग बंद तथा विधायकजी स्वयं एक वर्ष स' जेल मे। महुआ प्रखंड स' अनुमंडल बनल, परंतु विकासक पहिया पाछू मुंहे घुसकि गेल। 1,88,859 वोटरवला क्षेत्रक विधायक छथि श्री दशई चौधरी। अपन करार पूरा नहि कयल। जनहितक उपेक्षा। पातेपुर 1,97,359 वोटरवला विधान सभा क्षेत्र। विधायिक छथि श्रीमती प्रेमा चौधरी। जल जमाव स्थायी समस्या। वर्षाकाल मे बाढ़िक प्रकोप। राहत वितरणक समय गत वर्ष गोली चलल एवं एक व्यक्तिक मृत्यु। विकासक लेल करोड़ो रुपयाक धनराशि उपलब्ध करायल गेल, मुदा देशक प्रसिद्ध बरैला पक्षी-विहार विकसित नहि भ' सकल। टूटल सड़क, जर्जर विद्यालय भवन तथा स्वास्थ्य केंद्रक खास्ताहाल। लालगंजक विधायक महाबली श्री विजय शुक्ल 2000क विधान सभा चुनावक समय जेल मे छलाह। 6-7 करोड़ रुपया विकास काज मे खर्च कयलनि, किंतु जलजमाव, टूटल सड़क, सड़क जाम, जर्जर स्कूल भवन, बंद सरकारी नल-कूप। विधायकजीक कथन जे क्षेत्र मे एतेक समस्या छल जे पांच वर्ष मे निराकरण असंभव। वोटरक संख्या 1,99,634 एहि क्षेत्र मे।

सीमामढ़ी जिलाक बेलसंड विधान सभा क्षेत्र भौगोलिक दृष्टि स' अनेक भाग मे बंटल। यातायात सुविधा मे अत्यंत पिछड़ल। बेलसंड ओ तरियानी प्रखंड कें जोरयबला माड़र घाट पुल ब्रिटिशकाल मे आंदोलनकारी सभ उड़ा देने छलाह। जल-जमाव व पीबाक हेतु प्रदूषित जल। जलजमावक कारणें हजारो एकड़ भूमि खेतीक योग्य नहि। बेलसंड-रुन्नीसैदपुर पथ पर पुल निर्माण नहि भेल। बेलसंड माड़र पुल जर्जर। स्टेट ट्यूबवेल चालू नहि भेल। ग्रामीण विद्युतीकरण मे लाखोक लूट। बाढ़िक विनाशलीला यथावत। 1,84,410 वोटरबला क्षेत्रक विधायक छथि श्री रामस्वार्थ राय। मुजफ्फरपुर जिलाक औराई विधान सभा क्षेत्र मे साल मे 6 मास यातायातक मुख्य सहारा नाव। बाकी 6 मास चचरी पुलक सहारा। क्षेत्रक पैघ आबादी बांध पर जीवन यापन करैछ। सालोभरि रुन्नीसैदपुरऔराई-बेनीबाद सड़क, भैरव स्थान-रामनगर सड़क, डुमरी, पंहसौला सड़क, औराई-रामनगर सड़क, पितौझिया-अमनौर सड़क, एकम-बड़ा मछुआरा सड़क तथा राष्ट्रीय उच्च पथ जर्जर स्थिति मे। कतेको सड़कक बीचो-बीच 5-5 सय फीट तक लंबा पोखरिक दृश्य। बिजली, सिंचाइ ओ अन्य बुनियादी जरूरति नदारत। 1,80,976 वोटरबला एहि क्षेत्रक विधायक छथि श्री गणेश प्रसाद यादव। सकरा विधान सभा क्षेत्रक विधायक छथि श्री सीतल राम ओ वोटर 1,91,593। एहि क्षेत्रक गाम मे सड़क, बिजली, स्कूल, अस्पताल बदहाली मे। विकासक नामोनिशान नहि। मुजफ्फरपुर-वैशाली स' सटल कुढ़नी विधान सभा क्षेत्र मे मतदाता 2,04,245 तथा विधायक छथि राज्य सरकारक मंत्री श्री वसावन भगत जे अपन दबंगई मे ख्यात छथि। एहि बेर एहि क्षेत्र मे जातीय समीकरण मुख्य मुद्दा। विकास गौण।

पश्चिम चंपारण जिलाक लौरिया विधान सभा क्षेत्र, सम्राट अशोकक नगरी, जकर दियारा क्षेत्र मे दस्यु सरदारक समानांतर सरकार। एकरा बिहार सरकार स' जानल जाइछ। बंद लौरिया चीनी मिल, अपराधी ओ अपहर्ताक रूप मे विश्व विद्यालयक प्रसिद्धि, बैसही मे अल्पसंख्यक पर अत्याचार, जर्जर सड़क, ठप्प सिंचाइ व्यवस्था, बिजली 24 घंटा मे कखनो नहि उपलब्ध, शिक्षाक निरंतर खसैत स्तर आ 30 वर्ष स' विधायक छथि श्री विश्वमोहन शर्मा, संप्रति राज्य सरकारक उद्योग मंत्री। कोनो नव उद्योग नहि लगौलनि ओ जेहो छल से बंद पड़ल अछि। बाढ़िक स्थायी निदान नहि भेला स' दियारावासीक पलायन। अधर मे लटकल अछि गन्ना किसानक तीन करोड़ बकियौता रुपया। कुल वोटर छथि 1,92,053 लोक। अपहरणकर्त्ता ओ माओवादी शक्ति स' लड़ैत बगहा विधान सभा क्षेत्र। 2,48,630 वोटरबला क्षेत्र विधायक छथि श्री पूर्णमासी राम। आब अनुमंडल स' जिला बनि गेल। दियारा विकास प्राधिकरण, सोमेश्वर वनस्पति उद्यान, अग्निशमन केंद्र स्थापित करब समेत बंद कागत फैक्ट्री चालू नहि भेल। बेतिया-वाल्मीकिनगर सड़क एहि क्षेत्रक सात प्रखंडक अतिरिक्त नेपाल ओ उत्तर प्रदेश कें जोड़छ। ई 110 कि.मी. सड़क, बगहा-हरनाटांड, बगहा-चिउटांहा, बगहा-भैरोगंज, चमैनिया-गोनौली आदि ग्रामीण सड़क जर्जर। पेयजलक किल्लत। दू दशक पूर्व बनल 30 शय्याबला अनुमंडल अस्पताल मे ने डाक्टर, ने दवाइ। चीनी मिल मजदूर ओ गन्ना किसानक करोड़ो रुपया बाकी रखने। जलकुंभी स' पाटल त्रिवेणी सिंचाइ कैनाल तथा वाल्मीकीनगर स' जंगल साफ। पूर्वी उत्तर प्रदेशक कुशीनगर एवं गंडक नदी घिरल धनहा विधान सभा क्षेत्र कतेको अपराधी सरगनाक शरणस्थली। 1,35,899 वोटरबला क्षेत्रक विधायक श्री राजेश सिंह। एखन तक किसान हेतु सुव्यवस्थित नहरि आकि राजकीय नलकूपक व्यवस्था नहि क' सकल छथि। एहि क्षेत्र मे पीडब्लूडीक सड़क नहि, लगभग पंद्रह वर्ष बनल आइर ओ दहबा स' मधुबनी तक बनल सड़कक नामोनिशान नहि, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र मे डाक्टर नहि, कतेको विद्यालय कें अपन भवन नहि, पदस्थापित शिक्षक अपहरण एवं लेवीक धमकी स' फरार, विद्युत ओ दूरभाष सुविधा नदारद। बाढ़िक वार्षिक विभीषिका, जर्जर सड़क, ध्वस्त मकान ओ फूसक खोपड़ी। आपराधिक माहौल मे बास करैत छथि सिकटा विधान सभा क्षेत्रक 1,93,440 वोटर। लोक मात्र मजदूरी पर निर्भर। कतेको इस्टेटक कृषि फार्म तथापि सिंचाइ व्यवस्था नगण्य। चापाकलक नाम पर करोड़ो रुपयाक गबन। विधायक छथि श्री दिलीप कुमार वर्मा। समस्या ओ रंगदारीक पराकाष्ठा स'

भरल-पुरल 1,92,053 वोटरबला विधान सभा क्षेत्र बेतिया आ विधायिका छथि श्रीमती रेनू देवी। जिला मुख्यालय स' गाम धरि जर्जर तस्वीर।

पूर्वी चंपारण जिलाक मधुबन विधान सभा क्षेत्र। वोटर छथि 2,13,029 ओ विधायक छथि श्री सीता राम सिंह। पकड़ीदयाल अनुमंडलक तीन लाख आबादी कें जिला मुख्यालय स' जोड़यबला मधुबनी घाट पुल विगत 20 वर्ष स' बनि रहल अछि। डेढ़ करोड़ रुपया लागत स' बनयबला पुल पर 11.5 करोड़ राशि व्यय भ' चुकल। मुदा चालू नहि भेल। मधुबन-फेनहारा पथ पर लगभग दू दर्जन पैघ वाहन चलैत अछि किंतु रुपौलिया बजार पर अवस्थित कटही पुल तथा हरदिया पुल कखनो ध्वस्त भ' सकैछ। सिंचाइ संसाधन हेतु 34 इंजन चालित नलकूप लगायल गेल, किंतु आइ तक एको ठोप जल नहि बहरायल। मधुबन स्वास्थ्य केंद्र मे एंबुलेंस उपलब्ध मुदा चालक नहि। क्षेत्रक विकास मे लोक ठकल गेलाह। विधायकक मात्र सर्वांगीण विकास भेल। उग्रवाद, अपराध, बाढ़िक विभीषिका, बेराजगारी स' भरल 2,39,706 वोटरबला विधान सभा क्षेत्रक विधायक छथि श्री मनोज कुमार सिंह। क्षेत्रक अधिकांश आबादी बागमती नदी स' प्रभावित। फसिल, मकान ओ सड़क सालाना ध्वस्त। पताही ग्रिड निर्माण एक दशक स' अनिर्मित। क्षेत्रक कोनो सड़क यातायात योग्य नहि। ढाका-पताही मार्ग स्थित मठिया गाम मे ब्रिटिश कालीन पुल ध्वस्त। गरीबी, अशिक्षा, भ्रष्टाचार, तस्करी, सीमापार स' उग्रवादी तथा अपराधक बोलबाला। आदापुरा विधान सभा क्षेत्रक विधायक छथि श्री वीरेंद्र प्रसाद। वोटरक संख्या 2,13,855। छौड़ादानों एवं नोपालक सीमा कें जिला मुख्यालय स' जोड़यवला सड़क खधिया मे परिणत। आदापुर विद्युत सब-स्टेशन मात्र 29 दिन चालू रहल। केसरिया विधान सभा क्षेत्र मे 2,06,631 वोटर छथि एवं विधायक छथि मो. ओबेदुल्लाह। स्तूपक लेल विश्वविख्यात भगवान बुद्धक संदेश स्थल एहि क्षेत्रक गाम वर्षाकाल मे अढ़ाई मास टापू बनल रहैछ। किसान अपन आंखिक सामने फसिल नष्ट होइत देखबाक लेल बाध्य। सड़क यातायातक खास्ताहाल। गन्ना किसान चीनी मिल द्वारा लूटल गेलाह।

मधुबनी जिलाक सर्वाधिक पिछड़ल विधान सभा क्षेत्र लौकहा जतय मतदाता संख्या अछि 1,85,121 आ विधायक छथि श्री हरिप्रसाद साह। क्षेत्रक उपजाऊ भूमि बंजर भ' गेल, उद्योग-धंधाक नामोनिशान नहि, पक्की सड़कक कोन कथा कच्ची सड़क तक नहि, भवनहीन विद्यालय, चिकित्सक विहीन स्वास्थ्य केंद्र, पेटक लेल पलायन, भूतही बलानक तांडव स' उजड़ल घर-द्वारि यैह स्थिति अछि भारत-नेपाल सीमा स' सटल एहि क्षेत्रक। क्षेत्र मे माओवादीक आतंक। मधेपुर विधान सभा क्षेत्र मे मतदाता छथि 2,17,510 एवं विधायक श्री जगत नारायण सिंह। मधेपुर, लखनौर

प्रखंडक दू-तिहाइ स' अधिक पंचायत प्रति वर्ष प्राकृतिक आपदा स' तबाह रहैत अछि। विकासक काजक कोनो अत्ता-पत्ता नहि। एहि जिलाक पूर्वी आ दक्षिणी छोर मे महाकवि विद्यापतिक जन्मस्थली बिस्फी विधान सभा क्षेत्र जकर विधायक छलाह डा. शकील अहमद। आब सांसद ओ भारत सरकार मे मंत्री। मतदाता छथि 2,13,031। 90 प्रतिशत लोक कृषि पर आधारित। अधवारा समूहक नदीक कहर। सड़क, बिजली, सिंचाइ, शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल आदि मूलभूत सुविधाक अभाव। परंपरागत खेती-बाड़ी। विधायकक ऐच्छिक कोष मे लूटपाट तथा बिचौलिया संस्कृतिक साम्राज्य। समाजवादी आंदोलनक केंद्र पंडौल विधान सभा क्षेत्र मे वोटरक संख्या 2,13,427 ओ विधायक छथि मो. नैयर आजम। पंडौल उद्योग क्षेत्रक सब कल-कारखना बंद। चीनी मिल बंद भेला स' गन्ना किसान भयंकर आर्थिक संकट मे। क्षेत्र ढिबरी युग मे। विद्युत उपकेंद्र संसाधनक अभाव मे विलीनक कगार पर। क्षेत्रक बुनकरक फटेहाली। विख्यात खादी उद्योग चौपट।

दरभंगा ग्रामीण विधान सभा क्षेत्र प्रमंडल कार्यालयक निकट दरभंगा सदर ओ बहादुरपुर प्रखंड मिलाक' निर्मित क्षेत्रक विधायक छथि श्री पीतांबर पासवान, राज्यक कल्याण मंत्री तथा वोटरक संख्या 1,97,060। एतय चारि जिलाक खेती-बारी समुन्नत करबाक जिम्मेदारी कृषि कार्यालय कें मुदा क्षेत्रक किसान फटेहाली मे। मिथिलाक सब स' पैघ अस्पताल सन्निकट, किंतु महामारीक चपेट। बिजली आपूर्तिक हेतु शक्तिशाली पावर ग्रिड तथापि क्षेत्र मे अंधकार। श्रम नियोजन कार्यालय मुदा क्षेत्र मे बेरोजगारक अनगणित फौज। शिक्षा ओ साक्षरता ढंगक नहि। समाजवादीक गढ़ बहेड़ी विधान सभा क्षेत्रक विधायक श्री रमानंद सिंह 2,26,244 वोटरक प्रतिनिधि जनहित मे कोनो काज नहि कयल। जातीय जोर पर मात्र सफलता। मधुरभाषी मो. अब्दुलबारी सिद्दीकी बहेड़ा विधानसभा क्षेत्रक विधायक, राज्य सरकारक मंत्री ओ बिहारक राष्ट्रीय जनता दलक अध्यक्ष। बुनियाद सुविधा अपना क्षेत्र कें नहि दिया सकलाह। तीन चुनाव स' बेनीपुर कें जिला बनयाक घोषणा डपोरशंखी साबित भेल। अलीनगर प्रखंड मे सड़क, सामुदायिक भवन ओ विद्यालय ठीकठाक। कारण एहि प्रखंडक रुपसपुर हिनक पैतृक गाम। क्षेत्रक अन्य गामक सड़क ध्वस्त। देवराम, अमैठी-शिवराम, नहेरा-नारबांध सड़क पर अनेक गड्ढा। बहेड़ा कालेजक सरकारीकरण नहि करा सकलाह। बाढ़ि राहत मे भेदभाव। क्षेत्र मे मतदाताक संख्या 2,01,427। त्रेता युग मे भगवान राम अहिल्याक उद्धार करबाक हेतु जाले विधान सभा क्षेत्र मे आयल छलाह। किंतु एखन तक अहिल्यास्थान कें पर्यटन केंद्र नहि बनायल गेल। राष्ट्रीय उच्च पथ 57 एहि क्षेत्र स' जाइत अछि किंतु कतेको गामक सड़क कच्ची तक नहि। जाले कृषि केंद्र मे ताला लटकल। शिक्षक,

भवन, छात्र ओ उपस्कर मे कोनो तालमेल नहि, स्वास्थ्य सेवा स्वयं अस्वस्थ्य। विधायक छथि श्री विजयकुमार मिश्र आ मतदाता 2,18,915। केवटी विधान सभा क्षेत्रक विधायक स्वर्गीय गुलाम सरवर आ मतदाता संख्या 2,37,769। राष्ट्रीय उच्च पथ संख्या 105 स' जुड़ल क्षेत्र। वर्षो स' क्षतिग्रस्त मोहनी पुल जस के तस। प्रखंड स्थित उच्च विद्यालय मे साधन सुविधाक अभाव। चिकित्सक ओ दवाइ दुनू नदारद। रैयाम चीनी मिल डेढ़ दशक स' बंद। गन्ना किसानक स्थिति सोचनीय तथा मिल मे कार्यरत मजदूर बेकार। कमला नदीक कारण अधिकतर आबादी बला मनीगाछी विधान सभा क्षेत्र कें मात्र बाढ़ि नहि, बेरोजगारी, भय, बुनियादी सुविधा, जातीय मतान्तरक शिकार अछि। विधायक छथि श्री ललित कुमार यादव आ मतदाताक संख्या 2,01,797। रेफरल अस्पताल, स्वास्थ्य-केंद्र कतेको परंतु सेवा नदारद। विद्यालय बिना शिक्षकक। सिंचाइ हेतु 17 नलकूप मे 4 कार्यरत। बाढ़ि राहत मे गड़बड़ीक कारण गतवर्ष उजान गोलीकांड विख्यात।

जननायक कर्पूरी ठाकुरक कर्म भूमि समस्तीपुर विधान सभा क्षेत्रक विधायक श्री रामनाथ ठाकुर, हुनक पुत्र, धरमपुर-कर्पूरी गाम तक एक करोड़ बावन लाखक लागत स' पथ निर्माण ओ चौड़ीकरण करौने छथि। आजाद चौक, सोनवर्षा एवं आजाद चौक स' ताजपुर रोड तक सड़क निर्माण भेल छैक। जगतसिंहपुर गाम मे आठ लाखक लागत स' स्लूईस गेटक निर्माण स' करीब 405 एकड़ भूमि मे खेत आबाद भ' रहल छैक। विद्युतीकरण भेल मुदा ढिबरी एखनो जरैत अछि। क्षेत्रक सड़कक मरम्मति नहि भेल छैक। मतदाताक संख्या 2,48,902 छैक। हसनपुर विधान सभा क्षेत्र मे वोटर छथि 1,87,698 आ विधायक छथि पुरान समाजवादी श्री गजेंद्र प्रसाद हिमांशु। अधिकतर आबदी गरीबी ओ बेरोजगारीक शिकार। बाढ़ि प्रभावित क्षेत्र। हसनपुर-बिथान ओ हसनपुर-सखबा मुख्य सड़कक अस्तित्व समाप्तप्राय। दर्जन भरि नलकूल ठप्प। हसनपुर चीनी मिल बन्दीक कगार पर। क्षेत्रक अधिकतर लोकक रोजी-रोटीक हेतु पलायन। समस्तीपुर जिला मुख्यालय स' सटल कल्याणपुर विधान सभा क्षेत्रक विधायिक छथि श्रीमती अवशमेध देवी एवं मतदाता 2,30,983। बाढ़िक विभीषिका हो आकि कोनो अन्य अवसर क्षेत्रक जनताक संग सब समय हाजिर रहैत छथि। जनताक समस्या कें निपटेबा मे स्वयं स्थानीय स्तर स' राज्य स्तर तक मौजूद रहैत छथि। मुदा अधिकारी ओ कर्मचारीक लूट स' स्वयं चिंतित। विभूतिपुर विधान सभा क्षेत्रक विधायक छथि माकपाक श्री रामदेव वर्मा तथा वोटर छथि 2,43,716। सर्वहारा कें सम्मान एवं हक नहि दिया सकलाह। किसान कें सिंचाइ व्यवस्था नहि उपलब्ध करा सकलाह। उजियारपुर प्रखंड मे बिजली एखन तक नहि पहुंचल। बलुआही ओ चकहबीव पुल जर्जर अवस्था मे। विभिन्न संपर्क सड़क दयनीय। सरायरंजन विधान सभा क्षेत्र मे मनिका-नरघोघीक बीच जर्जर काठक पुल, राष्ट्रीय उच्चपथ संख्या 103 सरायरंजन स' ककरघट्टी मार्ग विक्रमपुर स' सलेमपुर वाया सुभाषा चौक, अहमदपुर स' खजुरी चौक, सुभाष चौक स' मनिका जर्जर सड़क मरम्मति एवं निर्माणक अभाव मे जानलेवा। नून नदी परियोजना जस के तस। बंद कुटीर-लघु उद्योग, शिक्षाक दयनीय स्थिति, जर्जर विद्यालय भवन। हिनका कार्यकाल मे अपराधी तत्वक मनोबल मे वृद्धि। विधायक छथि श्री रामाश्रय सहनी एवं मतदाता 2,47,641। मोहउद्दीनगर क्षेत्रक विधायक छथि श्री रामचंद्र राय। मतदाताक संख्या 2,44,842। मोहनपुर प्रखंड के कटाव स' पीड़ित विस्थापितक दर्द बरकरार। जाति एवं लाठी तंत्र हावी। बिजली, अन्य बुनियादी सेवा, सड़कक स्थिति 20 वर्ष पहिने एहि स' ढंगगर।

बेगूसराय विधान सभा क्षेत्र मे विकासक नाम जातिवाद। ठेकेदारीक नाम पर रंगदारी ओ हुनका राजनैतिक संरक्षण। मिथिलाक एकमात्र औद्योगिक नगरी। संप्रति खंडहर। सड़क एवं बिजलीक खराब व्यवस्था। पावर हाउसक जर्जर व्यवस्था एवं थर्मल मे सुधारक उपाय नहि। खाद कारखाना वर्षो स' बंद। जलापूर्ति योजना लागू नहि। सरकारी अस्पताल अछि, मुदा डाक्टर नहि। उच्च विद्यालय मे शिक्षकक अभाव। विधायक छथि श्री भोलाप्रसाद सिंह। मतदाता 2,26,698। बलिया विधान सभा क्षेत्रक विधायक श्री नारायण यादव, शहरी विकास मंत्री तथा वोटरक संख्या 1,92,354। जर्जर सड़क, खस्ताहाल विद्यालय भवन, दियारा मे खेत आरि भेल सड़क। क्षेत्र मे बिजली नदारद। गंगाक कटाव, कतेको गाम विलीन भ' गेल— कोहबा, हुसैना, हसनपुर, नौरंगा आर अन्य। स्वच्छंद घुमैत अपराधी। एहि जिलाक तीन प्रखंड मे पसरल बरौनी विधान सभा क्षेत्र मिनी मास्को नाम स' प्रसिद्ध। विधायक छथि श्री राजेंद्र प्रसाद सिंह आ मतदाताक संख्या 2,21,494। बुनियादी समस्या स' घिरल क्षेत्र। मात्र समस्या समाधानक लेल विधान सभा मे आवाज उठल।

खगड़िया विधान सभा क्षेत्रक विधायक छथि श्री योगेंद्र सिंह एवं वोटरक संख्या 2,18,505। बाढ़ि स' ध्वस्त मकान, जर्जर सड़क, स्कूली भवन, अस्पतालक खास्ताहाल। चंद्रनगर-रांको स' माड़र तक बनयबला सड़क मे भयानक अनियमितता। पेयजलक किल्लत। गाम मे मूलभूत सुविधाक घोर अभाव। परवत्ता मे वोटरक संख्या 2,10,871 एवं विधायक छथि श्री राकेश कुमार। जर्जर सड़क, अस्पताल डाक्टर विहीन, शिथिल मशीनरी, बिजली अनियमित। गोगरी प्रखंडक उपेक्षा। खपरैल प्राथमिक विद्यालय। चौथम विधान सभा क्षेत्र मे अविरल बहैत कोसी, बागमतीक धारा। बाढ़िक मारि स' त्रस्त। जर्जर सड़क। डाक्टरक अभाव मे अस्पताल बंद। विधायक श्री पन्नालाल सिंह एवं मतदाता संख्या 2,08,323।

भागलपुरक बिहपुर विधान सभा क्षेत्र मे गंगा ओ कोसीक कहर, कृषि आधारित अर्थव्यवस्था। बाढ़ि मे बर्बाद होइत फसिल। आर्थिक, सामाजिक ओ राजनैतिक स्थिति मे लगातार गिरावट। मूलभूत सुविधाक लेल तरसैत जनता। मतदाता संख्या 1,85,381 एवं विधायक छथि श्री शलैश कुमार। बाढ़ि ओ कटाव स' मुक्तिक आशा करैत गोपालपुर विधान सभा क्षेत्र सड़क, बिजली, स्वास्थ्य सेवाक लेल तरसैत। उजड़ल विद्यालय भवन। क्षेत्र ढिबरी युग मे। गंगा ओ कोसीक कटाव स' विस्थापित लोक। वोटरक संख्या 2,18,165 ओ विधायक छथि श्री रवीन्द्र कुमार राना।

सुपौल जिलाक किशुनपुर विधान सभा क्षेत्र आधा स' अधिक भाग कोसीक पेट मे। बांधक हालति जर्जर, नदीक तल उठैत गेल, बाहर सीपेज ओ जलजमावक समस्या बरकरार। सिंचाइ नहरि दुर्गति मे। भपटियाही कोसी बराज, भपटियाही-सिमराही सड़क बदतर। निर्मली भरौना एहि क्षेत्रक कालापानी। मतदातक संख्या 1,96,004 विधायक छथि श्री यदुवंश कुमार यादव। प्रसिद्ध बाबा सिंहेश्वरनाथ महादेव ओ बांस बोरिंगक आविष्कारक पद्मश्री रामप्रसाद जायसवाल, नदीक जाल स' पसरल विधान सभा क्षेत्र सिंहेश्वर मधेपुरा जिलाक मुख्य अंग। मतदाताक संख्या 1,66,344 ओ विधायक छथि श्री विजय कुमार सिंह। कुमारखंड ओ शंकरपुर प्रखंड मे नदी पर पुल नहि बनल। भवनहीन प्राथमिक विद्यालय। स्वास्थ्य सेवा चौपट। बाढ़ि ओ अपराधक लेल प्रसिद्ध मधेपुराक आलम नगर विधान सभा क्षेत्रक विधायक छथि श्री नरेंद्र नारायण यादव। वोटरक संख्या 1,67,329। कतेको गाम मे कच्ची सड़क तक नहि। आलम नगर प्रखंडक खापुर गाम जयबाक कोनो रास्ता नहि। सपरदह पुलक निर्माण नहि भेल। जन समस्या जस के तस। सहरसा जिलाक महिषी विधान सभा क्षेत्र मे मतदाता छथि 2,21,120 तथा विधायक छथि मो. अब्दुल गफ्फार। एहि विधान सभा क्षेत्र कें पूर्वी कोसी तटबंध दू भाग मे बंटैत अछि। आधा आबादी कोसीक तांडव ओ आधा जर्जर तटबंध टुटबाक आशंका स' भयभीत। कतेको दशक बीत गेल मुदा समस्याक कोनो ठोस समाधान नहि भेल। कोसीक बलुआहा मे मूल निर्माणक घोषणा मात्र भेल। अद्यावधि काज नहि शुरू भेल। चंद्रायण रेफरल अस्पतालक मात्र उद्घाटन। चिकित्सकक अभाव मे खंडहर भेल अस्पताल। तटबंधक बाहर राजनपुर, कर्णपुर पथ, सत्तरबार बलुआरा पथ, नवहट्टा भुरादपुर पथ बदहाल। अधिकांश गामक हेतु बिजली मात्र स्वप्न। एहि जिलाक सोनवर्षा विधान सभा क्षेत्रक विधायक छथि राज्य सरकारक मंत्री श्री अशोक कुमार सिंह। मतदाता छथि 1,77,521। राष्ट्रीय उच्च पथ संख्या 107 एहि क्षेत्र स' जाइछ किंतु आसपासक गाम मे सड़क नहि। मरम्मतिक अभाव मे सड़क पर पैघ-पैघ

गड्ढा। लोकक मुख्य पेशा कृषि किंतु प्राकृतिक आपदाक मारल। उद्योग-धंधाक नामोनिशान नहि। शिक्षक विहीन विद्यालय। स्वास्थ्य सेवा नदारद।

कटिहार विधान सभा क्षेत्रक विधायक छथि राज्य सरकारक मंत्री श्री रामप्रकाश महतो। मतदाताक संख्या 2,37,097। रेल ओ संचार व्यवस्था स' संपन्न कटिहार विधान सभा क्षेत्र। झूलैत तारक बीच न्यूनतम बिजली आपूर्ति, बजबजाइत नाली, अस्तित्व विहीन सड़क, लौहयुक्त जल, जगह-जगह कूड़ा-कचराक ढेर, मरणासन्न स्वास्थ्य व्यवस्था, जल निकासीक अभाव मे टापू सदृश मोहल्ला, लुंज-पुंज शिक्षा सेवा, तस्करी, अपहरण, रंगदारी, बांग्लादेशी घुसपैठ, भ्रष्ट नोकरशाहीक बीच कटिहारक विकास। करोड़ रुपयाक लागत स' अमृत पेय जल योजनाक हश्र अत्यंत दुखदायी। बिहार-बंगालक सीमावर्त्ती क्षेत्र पर स्थित एहि जिलाक बारसोई विधान सभा क्षेत्र जकर विधायक छथि मो. महबूब आलम। मतदाताक संख्या 2,19,564। महानंदा, कुलुक ओ अन्य नदी स' जुड़ल ई क्षेत्र सिंचाइ व्यवस्थाक असीम संभावना। पटसन ओ धान उत्पादनक मुख्य केंद्र आइ शैक्षणिक दुर्दशा, पेयजल संकट, खास्ताहाल सड़क। अनुपलब्ध बिजली, बदहाल चिकित्सा सेवा, उद्योग-धंधा स' बंचित क्षेत्र। बांग्लादेशी घुसपैठ। गजब राजनैतिक जागरुकता। टूटल सड़क, टूटल पुल, टापूनामा फलका गाम, राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 31 स' जुड़ल एहि जिलाक कोढ़ा विधान सभा क्षेत्र। विधायक छथि श्री महेश पासवान ओ मतदाताक संख्या 2,01,507। बिजलीक संकट। बेरोजगारी ओ श्रमिकक पलायन रोजी-रोटी लेल। कोढ़ा-फलका मुख्य सड़कक काठ पुल मृत्युक आवाहन करैछ। विकास योजना काज घटिया।

कालजयी रचनाकार फणीश्वर रेणुक जन्मभूमि रानीगंजक अद्यपर्यन्त कायापलट नहि। मूलभूत सुविधा स' बंचित। एखनधरि 'मैला आंचल'। क्षेत्रक अधिकांश हिस्सा वर्षाकाल मे टापू। फरियानी नदी पर पुल एखन तक लंबित। एहि क्षेत्रक जगत-खरसाही पंचायतक लोक नहरि पर चलिक' गाम जाइत छथि। सड़क नहि छैक। ग्रामीण क्षेत्रक कोनो विकास नहि। विधायक छथि श्री यमुना प्रसाद राम ओ मतदातक संख्या 2,32,309। अररिया विधान सभा क्षेत्रक विधायक छथि श्री विजयकुमार मंडल ओ मतदाताक संख्या 2,12,290। भय, भूख, भ्रष्टाचारक साम्राज्य। बाढ़ि, बीमारी ओ बेकारी स' ग्रस्त रोजी-रोटीक लेल श्रमिकक पलायन। आजादीक बाद दू सड़क-अररिया-कुसीकांटा-कुंआरी तथा एबीम सिकटी-बनल। दुनू कहियो दुरुस्त नहि। एहि जिलाक नेपाल सीमा पर स्थित सिकटी प्रखंड मुख्यालय तक बसक आवागमन नहि। गाम मे मूलभूत सुविधाक अभाव ओ अंधकारक साम्राज्य। सरेआम पशु चोरी। विकासक काज मे गुणवत्ताक अनदेखी।

सिकटी एबीएम सड़क गत 35 वर्ष स' अपूर्ण रहल। सिकटीक विधायक छथि श्री आन्नदी प्रसाद यादव ओ मतदाताक संख्या 2,52,316। कोसीक बाढ़ि स' पीडित, गरीबी, कुपोषण ओ उपेक्षा स' त्रस्त नरपतगंज विधान सभा क्षेत्रक विधायक छथि श्री जनार्दन यादव ओ मतदाताक संख्या 2,28,598। वर्ष 2001 मे लक्ष्मीपुर फुलकाहा पथक मरम्मति 16.80 लाख रुपया तथा अचरा-घुरना पथक लेल 12.60 लाख रुपया खर्च भेल, किंतु सड़कक हालति जस के तस। जर्जर स्वास्थ सेवा, शिक्षा विहीन स्कूल, बिजली नहियेक बराबरि। आशाक किरण मात्र क्षेत्रक बीचोबीच जायवला फोरलेन राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 57।

परमान, बकरा, दास ओ कनकई नदीक पेट मे बसल पूर्णियाक अमौर विधान लोक-सभा क्षेत्र। बाढ़िक स्थायी विभीषिका स' पीड़ित, टूटल-फूटल सड़क, ध्वस्त पुल-पुलिया, चरमरायल स्वास्थ्य सेवा, बिजली, पेयजल ओ दूरसंचारक घोर अभाव। पेयजलक हेतु कल गाड़ल गेल मुदा जल नहि खसैत। चापा कल मे माल-जाल बान्हल जाइछ। गरीबी ओ भुखमरीक कारण लोकक पलायन। विधायक छथि मो. अब्दुल जलील मस्तान आ वोटरक संख्या 2,02,668। बनमनखी विधान सभा क्षेत्रक विधायक छथि श्री देवनारायण रजक आ मतदाताक संख्या 1,99,446। स्व. भोला पासवान शास्त्रीक क्षेत्र मे लगातार उजड़ैत बाजार, टूटल सड़क, पुल-पुलियाक अभाव, वर्षो स' बंद पड़ल चीनी मिल, विधायक कोषक राशि मे कमीशनखोरी, दवंग ओ बाहुबलीक साम्राज्य। कसबा विधान सभा क्षेत्रक विधायक छथि श्री प्रदीप कुमार दास ओ वोटरक संख्या 2,27,263। क्षेत्र मे बिजली, पेयजल, अस्पताल, स्कूल, महिला कालेजक कोनो व्यवस्था नहि। 16 लाख रुपयाक लागत स' बनल सीमेंटक नालीक कोनो अता-पता नहि। सामुदायिक भवन हेतु राशि निर्गत भेल। निर्माण कार्य अपूर्ण। सिंचाइक सुविधाक अभाव मे कृषक बेहाल। उद्योगक नाम पर एकटा चाउर मिल जे बंदीक कगार पर। सड़क मरम्मति मे अनियमितता। धमदाहा अनुमंडलक बदहाल सड़क। आवागमनक सुविधाक अत्यंत अभाव। अनुमंडल स्थित व्यापार मंडल बदहालीक कगार पर। समय पर प्रामाणिक खाद ओ बीजक अभाव। अनाप-सनाप मूल्य पर उपलब्ध। किसानक उपज बजार तक सुविधा स' नहि पहुंचैत छैक। फलस्वरूप एत'क कृषक आर्थिक रूप स' टूटि चुकल छथि। एहि विधान सभा क्षेत्रक विधायक छथि श्रीमती लेसी सिंह आ वोटरक संख्या 2,06,853। कटिहार, मधेपुरा, भागलपुर, पूर्णियाक रूपौली विधान सभा क्षेत्र भूमि-विवाद एवं वर्चस्वक लड़ाइक कारण भय, भूख, बेकारी ओ बीमारीक चपेट मे। अपराधक खेती। न्यूनतम सुविधाक अभाव। भिट्ठा गामक एकमात्र प्राथमिक विद्यालय पुलिस कैंप बनल अछि। विधायक छथि श्रीमती बीमा भारती तथा

मतदाताक संख्या 1,77,521।

पश्चिम बंगाल, नेपाल एवं बांग्लादेश सीमा स' सटल किशनगंज विधान सभा क्षेत्रक गाम ओ छोट शहर लालटेन युग मे। दू दशक पूर्व पावर ग्रिड स्टेशनक शिलान्यास भेल जे एखन तक अपूर्ण। रोजगारक अभाव मे क्षेत्रक लोकक पलायन। आवासीय व्यवस्थाक अभाव मे किशनगंज जिला एवं सत्र न्यायाधीशक पदस्थापन नहि भेल। विधायक छलाह महाबली मो. तसलीमुद्दीन जे संप्रति केंद्रीय मंत्री छथि। मतदाताक संख्या 2,34,099। किशनगंज जिलाक उत्तर दिशा मे नेपाल तथा पश्चिम बंगालक सीमा स' सटल ठाकुरगंज विधान सभा क्षेत्रक विधायक छथि डा. मो. जावेद आ मतदाताक संख्या 2,32,988। विशेष भौगोलिक परिस्थिति तथा कृषिक हेतु उत्तम जलवायुक कारण क्षेत्र अपन व्यापारिक फसिल धान, पाट, आद, केरा, बांस तथा चायक उत्पादनक हेतु महत्त्वपूर्ण। किंतु सरकारी सुविधा स' एत'क कृषक बंचित। रेल तथा सड़क यातायातक उचित सुविधाक अभाव मे चाउर मिल, प्लाईउड फैक्टरी मरणासन्न। सात मे मात्र एकटा चाउर मिल चालू। पोठिया होइत राष्ट्रीय राजमार्ग 3 कें जोड़यबला सड़क पर आधा दर्जन कठपुलिया फलस्वरूप, डायवर्सनक सहारा। अधिकांश गाम लालटेन युग मे। सब स' कम साक्षारताबला क्षेत्र। स्वास्थ्य सेवाक नाम पर मात्र पल्स पोलियोक खुराक। बेरोजगारी दूर करबाक कोनो व्यवस्था नहि।

मिथिलांचलक उपरोक्त विधान सभा क्षेत्रक विधायक द्वारा विकास काज एवं हुनक गतिविधि स' परिचित भेलहुं। 13म बिहार विधान सभा चुनाव मे आरोप-प्रत्यारोपक गरम वातावरण छल। 15 वर्ष स' पिछड़ल दलित आत्म सम्मानक लड़ाइ मे, सत्तानसीनक मुंह स' अदभुत वाक्य—विकास अभी नहीं तो कभी नहीं। बिहार मे सत्ता कें चुनौती दैत सब राष्ट्रीय जनता दलक कुशासनक विरुद्ध सुशासनक राग ओ सुर अलापैत छलाह। विकास बनाम विनाशक मुद्दा स' जनमानस दिग्भ्रमित भेलाह। परिणाम त्रिकुंश विधान सभा। चुनाव परिणाम 27 फरवरी 2005 कें भेल एवं सत्ताधारी राष्ट्रीय जनता दलक शासन नकारि देल गेल जे निम्नांकित परिणाम स' स्पष्ट होइछ।

	संपूर्ण बिहार	मिथिलांचल स'
राष्ट्रीय जनता दल	75	39
जनता दल यूनाइटेड	55	22
भारतीय जनता पार्टी	37	21
लोक जनशक्ति पार्टी	29	20
कांग्रेस	10	7

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (माले)	7	1
राष्ट्रवादी कांग्रेस	3	3
भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी	3	2
समाजवादी पार्टी	4	2
बहुजन स. पार्टी	2	–
मार्क्सवादी पार्टी	1	–
निर्दलीय	17	11
कुल	243	128

त्रिशंकु विधान सभा चुनाव परिणामक फलस्वरूप बिहार मे राष्ट्रपति शासन। की, जनतंत्र मे चुनाव स' बनल सरकारक विकल्प राष्ट्रपति शासन? हरगिज नहि। एकर उत्तर के देताह? परिवार, जाति ओ सत्ताक सागर मे 15 वर्ष स' लिप्त लालू–रावड़ी दंपति आकि सामाजिक न्यायक कोख स' उपजल दोसर संतान नीतीश एवं पासवान। 40 साल सत्तासुख भोगी कांग्रेस स' पूछि क' की हैत। 2000क विधान सभा चुनाव मे 23 स्थान छलनि से 10 पर पहुंचि गेल छनि। अपराधी–बाहुबली अपना कें किंगमेकर घोषित कयने छथि। बिहारक समाज ओ राजनैतिक संबंध–संरचना तथा गतिरोध कें बुझय पड़त। वी.पी. सिंहक कमंडल स' मंडलक जे गंगा जल प्रवाहित भेल ओहि स' बिहारक संपूर्ण वर्ग चरित्र कें वर्ण चरित्र मे बदलि देलक। तथाकथित सामाजिक न्यायक धारा समस्त राजनीति मध्य जाति कें हस्तांतरण कयल तथा समस्त देशक गतिरोधक बीच प्रत्येक नेता एक पार्टी बनि गेल। लक्ष्य छल बिहारक विकास कें स्थगित रखैत सता–सुखक अबाध भोग। भोग ओ जातिक पाया एतेक सशक्त छल जे शेष जनता कें अराजकता, भूख, गरीबी, बेरोजगारी, बाढ़ि, रौदी तथा अपराधक गंगोत्री मे छोड़ि देल गेल। देशक सब स' भुक्खड़, दरिद्र क्षेत्रक कुर्सी पर आसीन हेबाक व्यक्तिगत दुश्मनी, पिछला घाव ओ केंद्र सरकारक भूमिका अत्यंत जटिल ओ संगीन अछि। केंद्रक कांग्रेस सरकार द्वारा नियुक्त राज्यपालक भूमिका तथा स्थानीय राजनीतिक दल द्वारा अपन संकट ओ स्वार्थक लेल नाना प्रकारक नौटंकी। किंतु अपराध, भ्रष्ट सरकारी तंत्र ओ विकासहीनता कें ध्यान मे राखि सरकारक गठन परमावश्यक। कारण गाम स' ल'क' रेलवे योजनाक ठेकेदार जे पहिने मात्र बाहुबली छलाह ओ आब विधायक ओ पार्टी नियंता छथि। निष्कर्ष जे जन, जाति, अपराधी, भ्रष्ट सरकारी तंत्रक महाजाल मे एतयक जनमानस प्रभावित रहत। 15 वर्ष स' सत्ताधारी येनकेन प्रकारेण सत्ता हथियाब'क हेतु सक्रिय। कांग्रेस चुनाव मे हिनका विरोध मे आ रामविलास पासवानक संग चुनाव लड़ने छलाह। मुदा राष्ट्रीय जनता दल कें सरकार बनयबाक हेतु समर्थन द' देने छथि। लोकतंत्रक आत्मानुशासन कतय गेल। आजुक नेता सामंती जीवन जीबा मे अपन शान बुझैत छथि। कमांडो अपना संग राखब आधुनिक विधायक गौरवक बात बुझैत छथि। एहना स्थिति मे सामाजिक समस्या ओ क्षेत्रक सर्वांगीण विकास कोना हैत? बहुमत स' गठित केरलक नम्बुदरीपाद सरकार कें नेहरूक युग मे तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष इंदिरा गांधी खसा देलनि आ अपन सरकार बना लेलनि। सैह प्रक्रिया गोवा ओ झारखंड मे केंद्रक कांग्रेस सरकार कयल एवं बिहार मे वैह होबय जा रहल अछि। राष्ट्रीय जनता दलक अध्यक्ष ताल ठोकिक' केंद्र सरकारक सहयोग स' सरकार बनयबाक हेतु उताहुल छथि जखन कि राष्ट्रीय जनता दल कें बिहारक जनता नकारि चुकल अछि। एहना स्थिति मे अन्य गठबंधन कें सरकार बनयबाक प्रयास करबाक चाहैत छलनि। कांग्रेस ओ राष्ट्रीय जनतादलक एकक्षत्र राज्य स' एतयक जनमानस तंग आबि विखंडित जनादेश देने छल। भारतक राष्ट्रपति सांसदक संबोधन मे कहने छलाह जे आब राजनैतिक राजनीति नहि, विकासमान राजनीतिक जरूरति अछि। लोकतंत्रक संग खेलबाड़ नहि।

(अप्रैल-जून, 2005)

राजतंत्र पर लोकतंत्रक विजय

जाहि क्षेत्र मे देशक प्राचीनतम गणतांत्रिक राज्यक स्थापना कयल गेल छल ओकरा पाणिनिक अष्टाध्यायी ओ कौटिल्यक अर्थशास्त्र मे वृजि संघ कहल गेल। जाहि मे छल आठ गणराज्य। एकर राजधानी वैशाली मे छल। किंतु, विगत पंद्रह वर्ष स' बिहार राज्य मे गणतंत्र नहि, राजतंत्र छल। राजाक मुखे कानून। लोक कल्याणकारी राज्यक परिकल्पना जाहि मे नागरिक कें सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक न्याय, विचार अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म ओ पूजाक स्वतंत्रता तथा प्रतिष्ठाक समानता प्राप्त होयत। मौलिक अधिकार द्वारा सब प्रकारक सामाजिक तथा राजनैतिक भेदभाव ओ असमानता कें मेटा देल जायत। नागरिक कें व्यक्तिगत स्वतंत्रता प्रदान कयल जायत तथा हुनका शिक्षा, धर्म ओ सम्पत्तिक अधिकार रहत। राजनैतिक तथा सामाजिक न्यायक अतिरिक्त आर्थिक न्याय दिस विशेष ध्यान देल जायत। स्त्री ओ पुरुष कें जीविकोपार्जनक समान अधिकार। धन उत्पादनक साधनक केंद्रीकरण रोकबाक व्यवस्था। बालक तथा नवयुवक कें शोषण ओ अनैतिकता सं सुरक्षा, श्रमिकक जीवन-स्तर कें ऊंच उठयबाक निर्देश, पिछड़ल वर्ग तथा अल्पसंख्यक जातिक सुरक्षा तथा उत्थानक लेल विशेष व्यवस्था। अर्थात् लोक-कल्याणकारी राज्य मे प्रत्येक व्यक्तिक पूर्ण विकास। एहि कालखंड मे बिहार आर्थिक रूप स' बदहाल प्रदेश साबित भेल। चक्रवर्ती राजाक कुशासन चरम पर छल। एहि राज्य मे प्रति व्यक्ति आय मात्र 3,707 रुपया जखनि कि राष्ट्रीय औसत 12,985 रुपया। गरीबी रेखा स' नीचा जीवन बसर करयबला कुल आबादीक 42 प्रतिशत, 69 लाख हेक्टेयर जमीन बाढ़ि प्रभावित, राज्य मे प्रति लाख आबादी पर 90 कि.मी. सड़क जखन कि राष्ट्रीय औसत अछि 257 कि.मी. प्रति लाख मे, उद्योग धंधाक अकाल, संपूर्ण देश मे 27 जिला उद्योग विहिन जाहि मे बिहार मे 10 आ ओहि मे 6 जिला—अररिया, मधेपुरा, सहरसा, खगड़िया, किशनगंज ओ मधुबनी जिला मिथिलांचलक अछि। प्रति व्यक्ति बिजली खपत 140.8 किलोवाट जखन कि राष्ट्रीय औसत छैक 354.75

किलोवाट। बिहार राज्य पर कर्ज छैक 40,310 करोड़ रुपया जाहि पर ब्याज प्रतिवर्ष मात्र 3,417 करोड़ रुपया। एहन विकट आर्थिक स्थिति मे राज्य मे साल भरि मे (2005) दोसर चुनाव दिल्ली ओ बिहारक राजा लादि देल। विकास काज बाधित भेल तथा अतिरिक्त आर्थिक बोझ। तानाशाही चरम पर पहुंचि गेल छल। 14म विधान-सभा मे लोकतंत्रक उदय भेल छैक। लोक कल्याणकारी राज्यक निर्माण हैत। प्रत्येक व्यक्ति कें पूर्ण विकासक सुअवसर भेटत।

विगत पंद्रह वर्ष मे लालू, लाठी आ लालटेनक साम्राज्य। मुख्यमंत्री बनलाक बाद अपन माय कें, ''हथुआ राज से भी बड़ा राज्य मिल गईल।'' मदांध राजाक रूप मे रहलाह। बिहार कें अपन राज-जमींदारी बुझि नेपाल नरेशक मुखे कानून चलायल। लोकतंत्र कें राजतंत्र मे परिवर्तित ओ कामयाब प्रयोग। किंतु, राजा ईमानदार-कर्त्तव्यनिष्ठ नहि रहि सकलाह। प्रजा खातिर स्वप्नक सौदागर। पटना उच्च न्यायालय शासन स्थितिक तुलना ''जलते हुए रोम और नीरोक बांसुरी वादन'' स' कयल। हिनक शासन कें ''जंगलराज''क संज्ञा देल। लालू प्रसादक टिप्पणी, ''मैं जंगल का राजा शेर हूं।'' चारा घोटालाक कारण जखन जेल जाय पड़लनि अपन तुलना भगवान श्रीकृष्ण सं कयलनि, ''कृष्ण को माखन-चोर कहा गया था, वे भी जेल में पैदा हुए थे।'' गरीब रैलीक समय भगवान श्रीकृष्णक साज-सज्जावला अपन पोस्टर-होर्डिंग सुदर्शन चक्रबला देखायल गेल छल। नारा छल आब सामाजिक न्यायक शत्रु नहि बचत। कालांतर मे हिनक राज लोकतंत्र पर पूर्ण हाबी भ' गेल। मुख्यमंत्री आबास दरबार मे परिणत भेल। नवरत्न स' राजगुरु तक। पैघ हस्तीक दुलार-मलार भेल आ अंत मे लतिआयल गेल। जखन एहन दिग्गज लोकनिक ई दुर्गति, बेचारी जनता-जनार्दन कें के पुछय। पीड़ित-प्रताड़ित जनता कें मौका लगलनि, पलटि देलनि राजाक सिंहासन। बर्दास्तोक सीमा छैक। हरि अनंत हरि कथा अनंता। नेतृत्वकर्त्ता (राजा) हंसोड़ अगम्भीर। नतीजा बिहार मे अराजकताक साम्राज्य। जानलेवा दुर्दशा ओहू स' पैघ ओ हीनता जे कोनो बिहारी कें अन्य प्रदेश मे अपन उज्ज्वल पहिचान कें नुकयबाक विवशता। बिहारी (लालू) माने मजाक, रोचक चुटकुलाक पात्र। राजनैतिक जोकर आकि विदूषकक विशेषण।

लालूक राजकाल मे जेलक नव परिभाषा बनल। गत डेढ़ दशक मे राजा कें कतेको बेर जेल यात्रा करय पड़लनि। कोर्ट स' एखनो जमानते पर छथि। जेल स' राजपाटक संचालन। पटनाक बेउर जेल मुख्यमंत्रीक आवासक विस्तार छल। चारा घोटाला मे रांची जेल कें दंडी मार्चक संज्ञा देल। जेल कें कहल राजाक किला। रांची जेल यात्र कें ''झारखंड बचाओ—मरांडी भगाओ'' नामकरण कयल गेल। बेउर जेल यात्राक समय अपन अंगूठा छाप पत्नी कें मुख्यमंत्री बनायल।

असंवैधानिक सत्ता केंद्र, डी. फैक्टो सी.एम.। राबड़ी सरकार रिमोट स' संचालित रहल। विपक्षक आरोपक उत्तर ''हर पति अपनी पत्नी का पी.ए. होता है।'' आइएएस तथा आइपीएस सरकारी व्यवस्थाक स्टील फ्रेम। राजनेता ओ नोकरशाह भ्रष्ट। व्यक्तिगत स्वार्थ मे चौपट तंत्र। अपन पसंदक अफसरक टोली। इमानदार ओ स्वाभिमानी अफसरक पलायन। निज स्वार्थक हेतु कार्यालय मे अफसरक संग दुर्व्यवहार। अक्टूबर 2005क चुनाव मे मुख्यमंत्री जमुई कांड मे मंच स' बजलीह ''जमुई के एस.पी. को नहीं छोड़ूंगी। नोकरशाहक संबंध मे पटना उच्च न्यायालयक टिप्पणी छल, ''इनका चमड़ा गैंड़ा से भी मोटा है, संवेदनशून्य।'' नेता-नोकरशाहक दुरभिसंधि मे लुटि गेल बिहार प्रदेश। 15 आइएएस अफसर जेल जा चुकल छथि—डेढ़ दर्जन जेलक रास्ता मे। लगभग साढ़े चारि हजार पुलिसकर्मी संगीन मामिला मे आरोपी।

प्राय: गत पंद्रह वर्ष मे बिहार एक राज्य रहल जतय लोकप्रिय सरकार अपने अस्तित्व कें खारिज क' देलक। लालू-राबड़ी राजपाट मे न्यायिक सक्रियता, वस्तुत: लोकशाही-नोकरशाहीक बेइमानीक खुलासा रहल। राजधानी मे शराबक दोकानक मनमानी बंदोबस्ती, टाउन प्लानिंगक अभाव, ओवर ब्रिज, नाला सफाई, पेयजलक उपलब्धता, सड़क निर्माण-मरम्मत आकि ट्रैफिक व्यवस्था, मच्छर-जलजमाव स' मुक्ति, जेल, शिक्षा, अस्पताल, बिजली सुधार, छेड़खानी पर पाबंदी, मुआवजाक भुगतान, सिंचाइ, जन वितरण प्रणाली, स्वास्थ्य समस्या सुधार, गंगाक सफाई, वीआइपी जेलक विरोध, मानवाधिकार आयोगक गठन जे किछु भेल ओ पटना उच्चन्यायालयक आदेशक परिणाम छल। पूर्ववर्ती सरकारक जवाबदेह जिम्मेदार लोक एकर उत्तर नहि द' सकताह। निहायत मामूली कार्यपालक लेल सब कें न्यायलयक शरण लेबय पड़लनि। हाईकोर्ट राज्यक मुख्य सचिव, पुलिस महानिदेशक, गृह सचिव आकि अन्य विभागीय अधिकारी कें कोर्ट बजाय फटकारलक तथा हुनका जुर्माना तक देबय पड़ल। यदि हाईकोर्ट सक्रिय नहि रहैत तखन कोनो घोटालाक जांच नहि होइत। प्रदेशक तमाम पैघ घोटाला सीबीआई-विजिलेन्सक पास नहि जाइत। विधान सभाक अवैध नियुक्ति कें हाईकोर्ट रद्द कए देलक। दागी उम्मीदवार पर उच्च न्यायलयक रुखि ऐतिहासिक रहल। संप्रति बिहार-लोक सेवाक दू अध्यक्ष एवं मेंबर जेल मे छथि, नियुक्ति घोटाला। स्थानीय स्वशासनक त्रिस्तरीय तंत्र (पंचायत ओ जिला परिषद) 22 वर्षक बाद हाईकोर्टक निदेश पर करायल गेल। यथार्थ मे ई काज सरकारक जिम्मेदारी छल। किंतु, अपना कें गरीब गुरुबाक सरकार कहयबला राजा पूर्णत: निष्क्रिय रहल।

लालू-राबड़ी राजपाट मे आठ करोड़ आबादीवला राज्य मे एक सय व्यक्ति

खुश ओ सुरक्षित। एहि मे हिनक परिवार-मुख्य क' सासुर पक्ष एक नंबर पर। आम लोकक दुर्दशा। वेतन भोगी सरकारी मुलाजिम, किसान, वकील, डाक्टर, इंजीनियर, व्यापारी आदि सब त्रस्त। आमजन माने कीड़ा-मकोड़ा। जीबित लाशक भरमार। गत पंद्रह वर्ष मे आदमीक कोनो महत्त्व नहि। लालू यादवक कुकुर-घोड़ा-गाय आदि जानवर जरूर सुर्खी मे रहल। अपने सेहो सुर्खी मे रहलाह—जखन लालकृष्ण आडवाणीक रथ यात्राक क्रम मे जेल यात्रा करा देलनि, हेमामालिनीक गाल सन सड़क निर्माणक ऐलान, ममता कुलकर्णी कें बिहार आबयक आमंत्रण, भूराबाल साफ करबाक नारा, बकरी सुअर चरनिहार कें आवाज, अनेक बेर केंद्र सरकार बनायबा-बिगाड़बाक कलाबाजी, चारा घोटाला मे जेल स' निकललाक बाद हाथीक सवारी, रिक्सा पर अदालत यात्रा, चरवाहा ओ पहलवान विद्यालय खोलब, तेल पिलावन लाठी रैली तथा अन्य। राज्यक गरीब-गुरबाक तथा शोषित कें मात्र आवाज देल। ठोस दिशा प्रदान नहि क' सकलाह। हिनका समक्ष बेरोजगारी, भुखमरी, अशिक्षा, कर्ज मे डूबल जिंदगी, पेटक खातिर दोसर राज्य मे पलायन, अनेक समस्या ग्रस्त रहलनि। सकारात्मक काज नहि कयलनि। फलस्वरूप राज्य मे लालू, लाठी ओ लालटेनक जादू मद्धिम भ' गेल।

वर्ष 2000 मे राज्यक बटबारा भेल। राज्य सरकार औद्योगिक विकासक हेतु जे.जे. ईरानीक अध्यक्षता मे आयोग बनायल। आयोग अपन रपट प्रस्तुत कयल। झारखंड सरकार तत्काल लागू कयलक। बिहार सरकार रद्दीक छिट्टा मे राखि देल। मेगा ग्रोथ सेंटर, साफ्टवेयर पार्क, निर्यात प्रोत्साहन पार्क, एग्रो प्रोसेसिंग जोन ओ अन्यक ऐलान सुनि कान पाकल। बैंक अपन ऋण-जमा अनुपात ठीक नहि कयल। बिहार कें हरियाणा-पंजाब बनयबाक मात्र घोषणा रहल। किसान बिना कोनो सरकारी सहायता कें अपन मेहनत ओ पूजी स' खाद्यान्नक मामिला मे सरप्लस स्थिति कयल। किंतु समुचित बजारक अभाव मे किसानी सब स' घाटाक सौदा प्रमाणित भेल। बिहार नकली खाद-बीजक पैघ बाजार। कृषि आधारित उद्योग संचिका मे ओझरायल रहल। खाद घोटाला सेहो भेल। गन्ना किसानक करोड़ो रुपया बकाया भ' गेल। दयनीय हालतक लेल सब दोष राजग आकि दिल्ली मे बैसल सरकारक। स्वार्थ मे संविधान गौण। सत्तारूढ़ राजद विधान मंडल मे राज्पालक वापसीक प्रस्ताव पारित कयल। प्राय: सर्वप्रथम एहन संवैधानिक घटना बिहार मे घटल। मुख्यमंत्री राज्यपालक पैर तोड़बाक घोषणा कयल। राज्यपालक पुतला कें लघुशंका पिआयल गेल, तलवार स' काटल गेल, लाठी स' पीटल गेल, स्वाहा कार्यक्रम चलायल गेल। कारण राज्यपाल एकक्षत्र राज्य भोगबा मे बाधक होइत छलाह।

विगत डेढ़ दशकक शासन काल मे जनमानस कें भरोस देल गेल जे कोनो

गंभीर मुद्दा पर सरकार अत्यधिक चिंतित अछि। एहि कालखंड मे अत्यधिक जांच आयोग बनायल गेल। सर्वाधिक आयोग मात्र औपचारिकता साबित भेल। अधिकांशक रिपोर्ट तक नहि आयल। आरोपी आनंद मे रहलाह, संरक्षित छलाह। सरकार गैर वित्तीय कंपनीक लूट आ हुनक फरारी देखैत रहल। आयोगक रिपोर्ट आयल। कोनो कारवाई नहि भेल। सरवर अली आयोग, औद्योगिक आधारभूत संरचना ओ वित्तीय सुधार आयोगक अनुशंसा आयल, कोनो कारवाई नहि। विधान मंडलक जांच कमेटी पर लाखो रुपया खर्च। आरोपित अधिकारी पर कोनो कारवाई नहि। भ्रष्टाचार ओ कुप्रशासन संगहि संग जीबैत ओ पनपैत रहल। घोटालाक आदि अंत नहि। बहुचर्चित चारा घोटाला 1000 करोड़ रुपया स' अधिकक। विजिलेंस डीएसपी विद्युत भूषण द्विवेदी अदालतक समक्ष कहल, ''जखन हम चारा घोटाला मे दिग्गज राजनीतिज्ञ ओ पैघ आपूर्तिकर्त्ताक विरुद्ध अनुमति अपन अधिकारी स' मांगल हमरा डांटि धमकाक' चुप करा देल गेल।'' चारा घोटालाक ओहि मामिला मे लालू प्रसाद ओ पूर्व मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्र समेत अन्य राजनीतिज्ञ ओ वरीय नोकरशाह आरोपी छथि। अलकतरा घोटाला, शिक्षक नियुक्ति, बी.एड. घोटाला, 40 नव अंगीभूत कालेजक मामिला, इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा गोलमाल, डिग्री घोटाला, डेंटल कालेजक मामिला, लेप्रौसी स्कैम, खाद-बीज खरीद ओ अन्य घोटाला जांचक भार विजिलेंस कें देल गेल। कोनो फायदा नहि भेल। गोलमाल जारी रहल। प्राथमिक शिक्षा मंत्री जयप्रकाश नारायण यादव बी.एड. घोटाला मे फरार रहलाह। हिनक अधिवक्ता न्यायाधीश स' श्री यादव लेल जमानत मांगल। न्यायाधीशक टिप्पणी, ''जमानत की क्या जरूरत?'' वारंटक बादो मासक मास एहन लोकक गिरफ्तारी नहि होइछ। लेप्रोसी स्कैम मे अनंत: पटना हाईकोर्ट मंत्री महावीर प्रसाद ओ सी.के.बसु आईएएस कें आरोपी सिद्ध कयलक। विजिलेन्सक विशेष अदालतक संख्या नहि बढ़ायल। फलस्वरूप, मोकदमाक निष्पादन नहि भेल। दर्जन स' उपर मामिला 20-25 वर्ष स' चलि रहल अछि। किछु आरोपी एहि दुनिया मे आब नहि छथि। दागी-भ्रष्ट जमात कें राहत।

लालू प्रसाद 8 मार्च 1990 कें मुख्यमंत्रीक शपथ लेबा काल घूस कें गोमांस कहल। कांग्रेसी जमानाक व्यवस्थागत पाप आ कुकर्म नहि दोहरायल जायत। लोकशाही इमानदार हैत। किंतु, हिनका शासन काल मे जनताक खजानाक रक्षक स्वयं लूटेरा बनि गेलाह। स्वयं लालू प्रसाद चारा घोटालाक सात मामिला मे आरोपी छथि। डेढ़ दशकक कार्य-कलाप मे गरीबक सरकार अत्यधिक भ्रष्ट साबित भेल, कांग्रेसी राजकाजक तुलना मे। सर्वाधिक लूट भेल गरीबक कल्याणकारी योजना मे—बाढ़ि राहत घोटाला, स्वरोजगार, झुग्गी-झोपड़ी उन्नयन कार्यक्रम, इंदिरा

आवास योजना, मध्यान्न भोजन योजना ओ अन्य। जखन कि लालूक जनता सरकार कांग्रेसी कुशासन-भ्रष्टाचार-लालफीताशाही कें समाप्त करबाक दावाक बुते गद्दी हासिल कयने छलाह। ट्रांसपरेंसी इंडिया द्वारा बिहार राज्य भ्रष्ट राज्यक सर्वेक्षण मे सब स' अंतिम 20म स्थान पर अछि। एहि राज्य मे भूमि प्रशासन ओ पुलिस विभाग सब स' पैघ भ्रष्ट विभाग मे तथा मूलभूत सेवा मे सार्वजनिक वितरण प्रणाली प्रथम, जलापूर्ति द्वितीय, बिजली तृतीय ओ सरकारी अस्पताल चारिम स्थान पर छल।

सम्प्रति बिहार गंभीर वित्तीय संकट मे अछि। विश्व बैंक अपन रिपोर्ट ''बिहार : विकास रणनीति की ओर'' एकरा स्पष्ट कयलक अछि। लालू राजक प्रथम पांच वर्ष (1990-1995) मे विकास दर शून्य रहल। जखन कि प्रति व्यक्ति आयक आंकड़ाक अनुसार वार्षिक वृद्धि एक फीसदी छल। 1994क बाद कृषि मे वृद्धि दर एक प्रतिशत कम पाओल गेल। जखन कि बिहारक 80 फीसदी आबादी कृषि स' जुड़ल अछि आ राज्यक सकल घरेलू उत्पाद मे कृषिक योगदान 40 प्रतिशत छैक। राजकोषीय घाटा बढ़ि रहल अछि। विशाल कर्ज व्यय मे असंतुलन, व्ययक प्रबंधन ओ बजट लागू करबा मे संस्थागत कमी बिहारक प्रमुख समस्या। 1980क बाद स' वोसूली लगातार नकारात्मक ओ बाहरी कर्ज पर निर्भरता। विभाजनक बाद बिहारक हिस्सा मे कुल कर्जक 75 प्रतिशत हिस्सा भेटल। जखन कि उत्पादन मे 60 प्रतिशत हिस्सा देल गेल। रिपोर्ट मे प्रदेशक जर्जर वित्तीय स्थिति मे सुधारक तीन मुख्य तत्व सुझायल गेल अछि। प्रथम एहन कार्यप्रणाली विकसित कयल जाय जाहि स' वित्तीय घाटा कम करबाक उपाय। दोसर, सार्वजनिक व्यय प्रबंधक लेल बजट, निर्माण, लेखा ओ परीक्षण तथा नकद प्रबंधन मे सुधार। तेसर, उपयोगिता दर वृद्धि करबाक हेतु केंद्रक सहयोग ओ परियोजना लागू करबा मे संयम। 1997-2000क अवधि मे केंद्रीय साहाय्यक पांचम हिस्सा बिना उपयोग के लौट गेल। पिछड़ापनक दंश मेटयबाक हेतु राज्य कें सरकारी काम-काज मे सुधार, सड़क निर्माण, बाढ़ि नियंत्रण ओ बाल शिक्षा पर राजनैतिक ओ सामाजिक दृष्टिकोण स' ध्यान परमावश्यक।

लालू राज माने सामाजिक न्याय, माय समीकरण ओ आरक्षण कार्ड। वोटक राज माने छोटक राज। आब रानीक पेट स' राजा नहि जनमैत छैक। अहांक राज चलत रौब स' शान स'। ई उड़नखटोला डाक्क साहेब खरीदे रहलन, अब हम चढ़' तानी। पहिले भईंस के पीठ पर सींग पकड़ के चढ़त रहीं। गाड़ी के सायरन सुन के उलोगिन के करेजा फाटे लागल। कहता है—ललुआ मुख्यमंत्री बन गया। बीस साल राज करूंगा। गरीब विरोधियों की छाती तोड़ दूंगा। सी.एम. का भेकेंसी कहां है। लालटेन का रिनीवल होना है। देबी (राबड़ी देबी) बइठा दी गई है कोई हिलाके

तो दिखाये। डेढ़ दशक मे हजारो स्लोगन-अनसोहांत कथा। प्रथम पंच वर्षक कार्यकाल मे बहुमतक प्रयास मे कतेको दल कें तोड़लनि, कारण कुल 320 मे मात्र 121 जनता दल। 1991 मे लोकसभा चुनाव मे 54 मे 41 सांसद सीट भेटलनि। 1994 तक हिनक नेतृत्व पिछड़लक बीच खूब विकसित रहल। 1993-94 मे गांधी मैदान पटना मे 40 जातीय रैली निकालल। 1996क लोकसभा चुनाव मे हिनक संसदीय ग्राफ मे ह्रास भेल। चारा घोटाला हिनका नागफस साबित भेल, जाहि मे एखन तक उलझल छथि। एहि कारणें अपना मुख्य मंत्री पद छोड़य पड़लनि, जेल यात्रा करय पड़लनि तथा अपन पत्नी कें बिहारक प्रथम महिला मुख्यमंत्री बनौलनि। जे छथि घरेलू महिला—औंठा छाप। 2000क विधान सभा चुनाव मे बहुमत नहि भेटलनि, एतहि स' कांग्रेस कें सझिया बनायल। 2004क लोकसभा चुनाव लालू-कांग्रेस-पासवान, माकपा, राकपा एक संग लड़लनि। राजगक स्थिति ठीक नहि रहल। 2005 मे बिहार विधान सभा चुनाव लालू कांग्रेसक संग मिलिक' लड़लनि। राजद गठबंधन कें कुल 89 सीट (75 राजद +10 कांग्रेस +3 रांकपा+1माकपा) भेटलनि तथा राजग गठबंधन के 92 सीट (जदयू 55+ भाजपा 37)। बहुमत ककरो नहि। राजग गठबंधन तोड़-तोड़ क'क' नीतीश कुमारक नेतृत्व मे सरकार बनयबाक प्रयास भेल। किंतु, चक्रवर्ती राजा लालू ओ केंद्रक कांग्रेसी सरकारक चक्रचालि स' 13म विधान सभा विघटित क' देल गेल ओ 14म विधान-सभाक चुनाव घोषणा भेल जे अक्टूबर-नवंबर 2005 मे पूरा भेल। 13म विधान सभाक विघटन कें सर्वोच्च न्यायालय असंवैधानिक कहल। मुदा 14म विधान सभाक प्रक्रिया चालू छल। फलस्वरूप, 14म विधान सभाक चुनाव पूरा करायल गेल।

चौदहम बिहार विधान सभा चुनाव, जे अक्टूबर-नवम्बर 2005 मे भेल, एक निष्पक्ष, स्वतंत्र ओ हिंसामुक्त चुनाव करायल गेल। जकर पूरा श्रेय चुनाव आयोग कें छनि। लालू राजाक राजतंत्रक उपर लोकतंत्रक विजय भेल। हिंसा ओ बूथ कैप्चरिंगक लेल कुख्यात बिहार मे बिना चुनाव आयोगक हस्तक्षेप कें शांतिपूर्ण चुनाव संभव नहि छल। निष्पक्ष ओ भयमुक्त चुनाव। आपराधिक ओ बाहुबली नेता लोकनि कें जोरदार झटका। राष्ट्रीय जनता दलक वरिष्ठ नेता केंद्रीय मंत्री रघुवंश प्रसाद सिंहक टिप्पणी जे जातीय गोलबंदीक स्थान पर लालू-राबड़ी कें जनताक जरूरति मे ध्यान नहि देबाक कारण सत्ता परिवर्त्तन। मंडल आंदोलनक दौरान सवर्ण विरोधक राजनीति स' चमकल लालू प्रसाद अति पिछड़ल कें अपेक्षित महत्त्व नहि देल तथा मुस्लिम-यादव समीकरणक असफलता हिनक सत्ता मे बीस वर्ष राज करबाक स्वप्न ध्वस्त भ' गेल। नीतीशक नेतृत्व मे मतदाताक बीच विकासक भूख जगायल गेल, एकजुटताक परिचय देल, अति पिछड़ल मतदाता कें संग लेल तथा

जगह-जगह पर ''माय''क समीकरण मे सेन्ह लगायल तथा सत्ताक मार्ग प्रशस्त कयल। चुनाव आयोगक निष्पक्षता बिहारक 30 प्रतिशत अति पिछड़ल मतदाता वर्ग कें गत पंद्रह वर्ष मे पहिल बेर मतदानक सुअवसर देलक। राजद जातीय ओ बाहुबलीक बदौलति सत्ता मे बनल रहल तथा गरीब, कमजोर वर्गक लेल सामाजिक न्यायक ढोंग रचलक। नीतीश हिनक एहि कमजोरी पर प्रहार कयल एवं सवर्णक संगहि संग अति पिछलड़, अति पीड़ित मतदाता पर अपन पकड़ बनायल। जदयू—भाजपा नेता लोकनि बिहारक कुशासन, अराजकता तथा अत्याचारक विरुद्ध मतदाताक भीतर विकास ओ परिवर्त्तनक भूख जगाय लालू-राबड़ीक तख्ता पलट कयल। गत पंद्रह वर्ष मे बिहार मे मीडियाक व्यापक विस्तार भेल तथा मतदाता मे जागरूकता जागृत भेल। अगंभीर राजनेता लालू प्रसाद मात्र मसखरी कयल जकर परिणाम भोग' पड़लनि।

बिहारक मतदाता दोसर खेपक चुनाव मे दुरुस्त जनादेश देलक तथा जनता दल यूनाइटेड ओ भारतीय जनता पार्टी गठबंधन कें राजसत्ता सोंपि देलक। कुशासनक पर्याय लालू-राबड़ी राज युग कें विराम देलक। अराजकता ओ अव्यवस्था स' त्रस्त बिहार मे आवश्यक छल जे राज्य मे बहुमतबला कोनो सरकार पदारूढ़ हो। अंततः यैह भेल। एहि बेरक जनादेश एहि बातक परिचायक अछि जे जनमानस व्यवस्था परिवर्त्तनक पक्ष मे छल। जनता राज कें रसातल दिस ल' गेनिहार लालू यादव ओ दिशाहीन रामविलासक संग कांग्रेस ओ बाम दल कें पैघ सबक सिखायल। राज्यक बागडोर नीतीशक नेतृत्व कें बहुमत देलक। जिनका मात्र अराजकता ओ अव्यवस्था स' संघर्ष नहि, खाली खजानाक संग बिहारक लोक मे आत्मसम्मान आ विकासक हेतु लड़य पड़तनि। काज कठिन, मुदा मुस्किल नहि। नीतीश धीर-गंभीर स्वभावक परिपक्व राजनेता छथि तथा केंद्र सरकार मे अपन प्रशासनिक क्षमताक हेतु प्रसिद्धि प्राप्त कयने छथि। मात्र एतयक जनता नहि समस्त राष्ट्रक लोक कें बिहारक बदहालीक चिंता छनि। उम्मीद कयल जाइछ जे नीतीशक नेतृत्व मे बिहार अपन अराजकता ओ अव्यवस्था स' उबरत तथा एक प्रगतिशील राज्यक श्रेणी मे गनल जायत।

बिहारक दोसर विधान सभा चुनाव (14म) जे अक्टूबर-नवंबर 2005 मे संपन्न भेल ओहि मे राजतंत्र ओ ताना शाहीक अंत भेल तथा लोकतंत्रक उदय भेल अछि। गत पंद्रह वर्ष स' जन प्रतिनिधि अबैत-जाइत रहलाह। किंतु मिथिलांचलक समस्या ज्यों के त्यों मुंह बौने रहल। राजनेता मात्र अपन ओ परिवारक आर्थिक सुधारक लेल काज कयलक। क्षेत्रक जनता बेकारी, बाढ़ि, दुर्भिक्ष कें भोगैत रहल। जीविका ओ सही शिक्षाक लेल प्रतिभा पलायन भेल। विगत वर्षक राज-काज मे

मिथिलाचलक भागीदारी बहुमत दिऔलक, तथापि मैथिली कें मात्र सवर्णक भाषा बुझि बिहार लोक सेवाक परीक्षा स' हटा देलक। राज्य सरकार सर्वोच्च न्यायालय मे अपील कयने अछि। कारण जे सरकार पटना उच्च न्यायालय मे मामिला हारि गेल अछि। मिथिलांचलक दुर्भाग्य छैक सवर्ण मुख्यमंत्री अपन राजकाल मे एतयक मातृभाषा मैथिली कें दोसर राजभाषाक स्थान नहि देल। मिथिलांचल कें सब दबाक' रखलनि। नवंबर 2005क विधान सभा चुनाव एहि क्षेत्रक जनमानस वर्त्तमान राज्य सरकार कें बहुमत देलक। एहि क्षेत्रक जनता एहि सरकार स' सर्वांगीण विकासक अपेक्षा क' रहल अछि। कारण केंद्र मे जखन एहि गठबंधनक सरकार छल कतेको उत्कृष्ट काज एहि क्षेत्रक लेल कयल गेल, जाहि मे महत्त्वपूर्ण अछि मैथिली कें संविधानक आठम अनुसूची मे स्थान। विनाश केर बाद विकासक उदय भ' रहल अछि। विधान सभाक दोसर खेपक चुनाव मे एहि क्षेत्रक चुनाव एहि तरहें रहल।

	मिथिलांचल स' 2005		संपूर्ण बिहार 2005	
	फरवरी	नवंबर	फरवरी	नवंबर
राष्ट्रीय जनता दल (राजद)	39	30	75	54
जनता दल यूनाइटेड (जेडीयू)	22	43	55	85
भारतीय जनता पार्टी (भाजपा)	21	28	37	55
लोक जनशक्ति पाटी (लोजपा)	20	8	29	9
कांग्रेस	7	5	10	9
अन्य	19	14	37	31
	128	128	243	243

मुख्यमंत्री नीतीश कें कुल 85 मे 43 स्थान मिथिलांचल स' प्राप्त भेल छनि। राजद बिहारक 11 जिला मे अपन खाता नहि खोलि सकल। आठ जिला मे मात्र एक-एक सीट भेटलै। कोसी क्षेत्रक सुपौल, सहरसा ओ मधेपुरा मे राजद अपन खाता नहि खोलि सकल। राजद आ राजग कें छोड़ि तेसर समीकरण नहि बनि सकल। साम्यवादी पार्टी कें कुल 9 स्थान भेटलनि। जाहि मे माले के 5, मार्क्सवादी पार्टी के एक तथा भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी कें तीन स्थान भेटलै। कांग्रेसक स्थिति लगातार कमजोर भ' रहल छै। पंद्रह वर्ष स' सत्ताधारी राष्ट्रीय जनता दल कें गत चुनाव मे जनादेश नहि भेटलै। एकर लक्ष्य छल बिहारक विकास कें स्थगित रखैत सत्ता सुखक अबाध भोग। भोग आ जातिक पाया एतेक सशक्त छल जे शेष जनता कें अराजकता, भूख, गरीबी, बेरोजगारी, बाढ़ि, रौदी, दाही तथा अपराधक गंगोत्री मे छोड़ि देल गेल। निष्कर्ष जे जन, जाति, अपराधी, भ्रष्ट सरकारी तंत्रक महाजाल

स' एत'क जनमानस मुक्त भेल छथि।

राजनैतिक दल आइडियोलाजी बेस्ड नहि अछि। राजनीति मे भाग लेबाक मतलब राज-पाट मे हिस्सेदारी। प्राचीन कालक राजा जकां। मात्र बम, गोली, मारि-पीट क' गद्दी हथिऐबाक प्रयास। गद्दी प्राप्त भेला पर राजशाही, जनहित नहि। यदि लोकतंत्रक कें सबल करबाक अछि त' देशक प्रत्येक संवैधानिक संस्था कें अधिक अधिकार प्रदान करय पड़त तथा राजनैतिक इच्छा शक्तिक परिचय दैत सब राजनैतिक पार्टी कें एक संग मिलिक' काज करय पड़तै। नहि त लोकतंत्र मात्र नामक रहि जायत।

(जनवरी-मार्च, 2006)

मैथिली सेवी संस्था सब स'

मातृभाषा मैथिली अपन सर्वाङ्गीण विकासक हेतु जनजागरण, एकता ओ क्रांति मांगि रहल अछि। की ई अढ़ाई कोटि मैथिली भाषीक हेतु लज्जा ओ ग्लानिक विषय नहि आबहु एहि जनतांत्रिक युग मे प्रारब्धेक भरोस धयने रहब? की आबहु गोलैसी ओ पारस्परिक द्वंद्वक कारण माइक भाषा बंदिनीये रहतीह? सर्वत्र युग-चेतना अछि, हमरा लोकनि की सुतले रहब? की संभावित जीवन-यापनक हेतु शोणित उष्ण रहब अनिवार्य नहि? आउ सब किओ मिलि आइ मातृभाषाक करुण-क्रंदन कें सुनि एकर विकासक हेतु अपन आत्मोत्सर्ग एवं बलिदान करी।

देश मे मिथिला-मैथिली सेवी संस्थाक अभाव नहि अछि। बहुतो व्यक्तिक विचार छनि जे ''एक्के नगर मे तीन-तीन, चारि-चारि संस्था एकहि उद्देश्य ल'क' स्थापित अछि एवं जखन संस्था संचालक कें अपन तुच्छ स्वार्थ पूर्तिक साधन मे बाधा होइत छनि तखन ओ एक नवीन संस्थाक स्थापना क' लैत छथि।'' हम पूर्णत: एहन विचार स' असहमत छी। मैथिलीक विकासक हेतु देश मे जतेक संस्था हो से उत्तम। कारण प्रत्येक संस्था मे किछु उत्साही ओ कर्मठ कार्यकर्त्ता रहैत छथि जनिक प्रयास स' मैथिलीक विकास हेतु किछु काज अवश्य होइत अछि। तखन रहल प्रश्न स्वार्थ-पूर्तिक, से जहां तक हमर व्यक्तिगत अनुभव अछि जे प्रत्येक सामाजिक संस्था मे काज करयबला व्यक्ति कें अपन अर्थ ओ समय देबय पड़ैत छनि। आर्थिक लाभक मैथिली सेवी संस्था-संचालक कें कोनो आशे नहि, कारण कोनो सरकारी साहाय्य एहि सब संस्था कें नहि छैक। तखन जनता-जनार्दनक यत्किंचित दान स' चलनिहार संस्था मे छहर-महरक कोन आशंका? मात्र एतबे जे व्यक्ति मैथिलीक विकासक हेतु श्रम, समय एवं अर्थ दैत छथि हुनक नाम ओ ख्याति समाज मे अवश्य होइत छनि। एहि स' हमरा लोकनि कें द्वेष ओ ईर्ष्या किएक?

किछु मैथिली सेवी संस्था मे ईहो देखल जाइछ जे किछु पद-लोलुप व्यक्ति जनतांत्रिक पद्धति कें नहि अपनाए संस्थाक गद्दी स' चिपकल रहैत छथि एवं नव कार्यकर्त्ता कें मैथिलीक सेवा स' वंचित करैत छथि। ई सर्वथा अन्याय भ' रहल अछि। संस्थाक संचालक मिथिला-मैथिलीक उद्देश्य कें गौण क' अपन प्रचार एवं प्रसार मे रत रहैत छथि। एहि स' मैथिलीक विकास अवरुद्ध भ' रहल अछि।

अपन मातृभाषा कें जीवित रखबाक हेतु किछु संस्था छिट-पुट प्रयास करैत रहल अछि एवं सीमित क्षेत्रीय छिट-फुट प्रयास व्यर्थ सिद्ध भेल अछि। कोनो राजनैतिक दल एखन धरि एकरा राजनैतिक मांग नहि घोषित कयलक अछि। कोनो दल मिथिलाक उचित एवं न्यायपूर्ण मांगक दिशा मे अग्रसर भेले नहि अछि। सरकारक सौतिनिया डाह मैथिलीक हेतु सर्वविदिते अछि। आजुक युग मे भाषा, साहित्य, संस्कृति अथवा समाजक विकास बिना राजनैतिक चेतना असंभव अछि। अपना क्षेत्र मे राजनैतिक चेतना ओ युग चेतनाक सर्वथा अभाव अछि। अविवेकी सरकारक तंद्रा कें भंग करय पड़त। समस्त मैथिली-सेवी-संस्था कें अपन गोलैसी कें बिसरि न्यूनतम सामान्य कार्यक्रम मे लागि जाए पड़त।

एहि उद्देश्य स' 28 मइ, 1967 कें ''अखिल भारतीय मैथिली महासंघक'' जे निर्माण भेल अछि ओ मैथिलीक इतिहस मे एक मील पाथरक काज करत। एहि संस्था कें देशक अधिकतम संस्थाक समर्थन प्राप्त छैक। महासंघ जन-आंदोलनक हेतु मैथिली भाषी क्षेत्र मे घूमि-घूमि क' प्रचार क' रहल अछि। बिहारक राजनैतिक अस्त-व्यवस्ताक कारणें कोनो प्रदर्शन, जुलूस आदिक जे कार्यक्रम छलै तकरा स्थगित क' एखन कम स' कम एक लाख हस्ताक्षर संग्रहक योजना चला रहल अछि। भिन्न-भिन्न अंचल स' तपल आ मांजल व्यक्ति सबहक संग्रह क' रहल अछि। आउ सब कियो मिलि मैथिली महासंघक एहि पवित्र मैथिली-विकासक कार्यक्रम मे योगदान करी। महासंघ मे संबद्ध भेला स' कोनो संस्था एकर अधीन नहि भ' जाइत अछि, परंच पूर्णत: स्वतंत्र रहैत सम्मिलित योजना-निर्धारण तथा कार्यान्वयन मे भाग ल' सकैछ। संघबद्धताक अर्थ अछि, ''केवल मैत्री-संबंध-संस्थापन''।

देशक खाद्य-समस्या आ बढ़ैत मूल्यक समाधान दिस साधारण जन-समाज एवं सरकारी यंत्र क्रियाशील बुझना जाइछ। जन-जीवन स' अविच्छिन्न संबंध राखय बला मैथिलीक मान्यताक प्रश्न सरकारक समक्ष एक महत्त्वपूर्ण कार्यक रूप मे उपस्थित अछि। मैथिली ककरो स' भीख नहि मंगैछ, न्याय मंगैत अछि। एहि संघर्षात्मक युग मे आत्मबल, संघर्ष, सुगठित ओ सुनिर्दिष्ट आंदोलन, सबल नेतृत्व, देशभक्ति एवं राष्ट्रीय एकता कें सर्वोपरि स्थान दैत अहिंसात्मक ढंग स' अपन जन्म-सिद्ध एव सहजलब्ध अधिकार कें षड्यंत्रकारी ओ सशक्त राजकीय सूत्र स'

हथिआबय पड़त। हिंदी वा कोनो भाषाक विरोध नहि, राष्ट्रीय संपत्तिक कोनो प्रकारक क्षति नहि करैत जन-आंदोलन कें सशक्त बनबय पड़त। मैथिलीभाषी छात्र समाज माइक करुण-क्रंदन स्वर सुनि की सुतले रहताह? उठू; अहीं सजग प्रहरी छी। अहीं देशक सपूत छी, अहींक उपर समाजक भविष्य निर्भर छैक। एहन शंखनाद एवं गर्जन करू जाहि स' अन्यायी एवं अविवेकी सरकारक सिंहासन डगमगा उठय। अहां लोकनि स' मात्र नम्र निवेदन जे भावावेश मे कोनो राष्ट्रीय संपदाक कोनो प्रकारक क्षति नहि हो। सत्य-अहिंसाक पथक अनुसरण क' मैथिलीक शांतिपूर्ण संग्राम कें अधिकाधिक सशक्त तथा प्रभावशाली बनावैत जाय।

(अक्टूबर, 1966)

प्रतिभा पलायनक कारण

आजुक बिहार राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक ओ सांस्कृतिक अराजकताक बिहार थिक। एतयक समाचार पत्र नित्य चोरी, डकैती, अपहरण, फिरौती, बलात्कार, रंगदारी, हत्या, सामूहिक नरसंहारक खबरि स' भरल रहैछ। अभिप्राय-प्रशासन चौपट। कानून व्यवस्था अत्यंत कमजोर। फलस्वरूप, अपराधी खुलेआम विचरण करैत अछि। जन-जीवन अस्त-व्यस्त। राजधानी निरापद नहि। देहाती ओ सुदूर जिलाक कथे कोन। फर्जी डिग्री पइसाक बल पर उपलब्ध होइछ। सुव्यवस्थित शासन-व्यवस्थाक जगह घोटाला ओ चोरीक साम्राज्य। जाहि स' आर्थिक अराजकता। प्रशासन पर सरकारक नियंत्रण नहि। राज्य सचिवालय भ्रष्टाचारक केंद्र। जिला प्रशासन सेहो कम नहि। व्यापारी वर्ग, शिक्षक वर्ग, अधिकारी वर्ग, राजनैतिक महकमा, मजदूर वर्ग कें भ्रष्टाचार मे भागीदारी। चुनाव मे वोट स्वेच्छा स' नहि, जातिवाद, पैसा ओ दबावक आधार पर। जकर लाठी ओकर महीसक कहावत चरितार्थ। राज्य नागरिक कें मौलिक अधिकार देबा मे अक्षम। सुरक्षा ओ संरक्षण मे असमर्थ। अराजक स्थिति। तखन त' पलायन स्वाभाविके।

शिक्षाक मामिला मे हमर सबहक निराशाजनक स्थिति। निरक्षरक संख्या सर्वाधिक। निरक्षरता उन्मूलनक प्रयास विफल। जनगणना 2001 उद्घाटित कयलक जे समस्त बिहार शिक्षाक मामिला मे सर्वाधिक पिछड़ल राज्य। 35म स्थान पर। अर्थात सब राज्य आ केंद्र शासित प्रदेशक तुलना मे सब स' नीचा। एतय 47.53 प्रतिशत साक्षरता छैक। वित्तीय वर्ष 2000-01 मे भारत सरकारक ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा उपस्थित निष्पादित बजट मे स्पष्ट कयल गेल अछि जे बिहार मे गरीबी रेखा स' नीचा रहयबलाक संख्या 58.21 प्रतिशत छैक। राष्ट्रीय स्तर पर 20-25 प्रतिशत गरीबी घटल, जखन कि बिहार मे मात्र साढ़े चारि प्रतिशत घटल छैक। एहना स्थिति मे पलायन छोड़ि दोसर उपाय कोन।

बिहारी मजदूरक पलायन धड़ल्ले स' होइछ। परिस्थितिवश बिहार स' मेधा

ओ प्रतिभा पलायन जारी अछि। शैक्षिक वातावरण अत्यंत अराजक तथा दिनानुदिन क्षरण ओ ह्रास। शैक्षिक मर्यादा ओ अनुशासनक लोप भ' गेल छैक। समय पर अध्ययन-अध्यापन नहि, समय पर परीक्षा नहि, परीक्षाफलक प्रकाशन में विलंब, पठन-पाठनक पवित्रता नष्ट भ' चुकब छैक। फलस्वरूप देशक दोसर राज्यक विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, अभियंत्र ओ चिकित्सा महाविद्यालय, तकनीकी, संस्थान मे बिहारोक छात्र-छात्राक संख्या दिनादुदिन बढ़ि रहल अछि। परीक्षाफल उत्तम कोटिक हासिल करैत छथि। गत किछु वर्ष स' सुविधा संपन्न व्यक्ति अपन बच्चा कें बिहार स' बाहर पठा रहल छथि—देहरादून, दिल्ली, पिलानी, वनस्थली, अजमेर ओ अन्य उच्च कोटिक विद्यालय मे। यैह स्थिति अछि एतयक श्रम शक्तिक। एतयक मजदूर दिल्ली, बंबई, आसाम, कलकत्ता, गुजरात, हरियाणा ओ पंजाब मे जीविकाक लेल भटकैत छथि। ई जे भटकब ओ भगदड़क स्थिति हमर अछि ताहि स' देश मे सर्वत्र उपहास होइछ। मजदूर जीबय चाहैत छथि। ओ गाम-घर छोरी शोक-मौज स' भटकि नहि रहल छथि। अपना गृह राज्य मे जीवाक कोनो आधार नहि छनि। अत्यधिक संख्या मे मजदूरक पलायन अपना राज्य स' भ' रहल छैक।

बिहार मे विकासक काज लगभग ठप्प छैक। ग्रामीण क्षेत्र मे लोकक दाना-पानी चलि रहल छनि तकर मुख्य कारण छैक जे लाखोक संख्या मे मौसमी मजदूरी करबाक हेतु एतय स' लगभग एक करोड़ लोक दोसर राज्य मे पलायन करैत छथि। ई मजदूर बंगालक चटकल, आसामक चाय बगान ओ सेवा क्षेत्र मे मात्र नहि—पंजाब, हरियाणाक खेत-पथार मे, दिल्ली सहित उत्तर भारतक निर्माण काज, लघु उद्योग, नर्मदा डेमक निर्माण काज तथा पश्चिमी भारत तक प्राय: सब क्षेत्र मे अपन श्रम स' जीवकोपार्जन क' रहल छथि। प्रवासी मजदूर बाहर स' कमाकय धन संग्रह क' अपन गाम लबैत छथि तथा छोट-छोट बचत स' थोड़ खेत खरीदैत छथि। सामंती प्रभावक मुकाबला अपन सामूहिक सामर्थ्यक बदौलति किछु अंश मे क' रहल छथि। अपन खेत कें एक फसली स' दू फसली मे परिवर्तित कयलनि अछि। यदि समुचित योजना ओ विकास संबंधी अधिसंरचनाक निर्माण स' बांछित फलक आशा कयल जा सकैछ। विकास ओ उत्पादकता गरीब वर्गक सब स' प्रबल आकांक्षा। भूमि सुधार मुख्य कार्यक्रम अछि। नदी स' प्लावित बिहारक लेल जल संसाधनक उचित उपयोग परमावश्यक। बाढ़िक रोकथाम, सिंचाइक उचित व्यवस्था ओ सस्त उर्जाक साधन जल स' प्राप्त करबाक चेष्टा ओ प्रयास अत्यावश्यक कार्यक्रम हेबाक चाही।

एहि क्षेत्र मे कुशलता एवं क्षमताक अभाव नहि। कमी छैक माहौलक, व्यवस्थाक। एतयक छात्र अन्य प्रदेश मे सर्वोच्च अंक प्राप्त करैछ। एतयक उद्यमी अन्य प्रदेश मे पैघ स' पैघ उद्योग सफलता पूर्वक चलबैत छथि। एतयक श्रमिक

अपन श्रम स' अन्य प्रदेश कें आगू बेढ़यबा मे भरपूर योगदान दैत छथि। एतय स' पलायन करयबला व्यवसायी अन्य प्रदेश मे जा क' सफलतम व्यवसायी बनि जाइत छथि। बिहारवासी अपन सन्तानक शिक्षाक लेल अरबों रुपया खर्च क' दैत छथि। उद्योग एवं व्यवसायक स्थिति अत्यंत गंभीर छैक। संसाधनक अभाव मे उद्योग धड़ाधड़ बंद भ' गेल छैक। कानून व्यवस्था मे गिरावटक कारण उद्योगपति एवं व्यवसायी बिहार स' पलायन क' अन्य राज्य मे अपन उद्योग एवं व्यवसाय लगा लेने छथि। उद्योग एवं व्यवसाय कें सब सुविधा प्रदान क' बिहारक आर्थिक स्थिति कें सुदृढ़ करय पड़त।

बिहारक पास जल ओ उर्वरा भूमिक रूप मे अतुलित प्राकृतिक संपदा तथा विशाल जन संपदा ओ अद्भुत श्रमशक्ति छैक। कला, साहित्य, विज्ञान सब क्षेत्र मे हम अपन परिचिति बनौने छी। कल-कल करैत नदी, सुस्वादु फल ओ नकदी फसिलक अकूत संभावना छैक। बंद चीनी मिल, जूट एवं कागत मिल। बंद तथा रुग्ण औद्योगिक इकाई अपन आधुनिकीकरणक बाद खुजबा तथा एतयक भाग्य बदलबाक प्रतीक्षा मे अछि। विकासक कोनो रास्ता नहि भेटि रहल छैक। राज्यक स्थिति मे चौतरफा ह्रास भ' रहल छैक। शैक्षिक अराजकताक कारण बिहार स' पलायनक हेतु एतयक छात्र विवश छथि। देशक प्रख्यात शिक्षण-संस्थान मे बिहारक छात्रक संख्या 30प्रतिशत अछि। भारतीय प्रशासनिक एवं पुलिस सेवा मे प्रतिवर्ष 15 प्रतिशत बिहारी छात्र उत्तीर्ण होइत छथि। मात्र पटना साइंस कालेजक 200 वैज्ञानिक छात्र विदेश मे रहिक' नित्य नव शोध क' रहल छथि। ओतहि अमेरिका, इंगलैंड तथा सउदी अरब मे हजारों बिहारी डाक्टर उत्कृष्ट चिकित्सा सेवा क' रहल छथि। आर्थिक कुप्रबंधन, प्रशासनिक विफलता एवं विकासक दृष्टि एवं राजनैतिक इच्छाशक्तिक अभावक कारण दयनीय स्थिति अछि। शिक्षा ओ रोजगारक अवसरक अभाव तथा विधि व्यवस्था पूरापूरी चौपट भ' गेलाक कारण उद्योगपति, व्यवसायी खेतिहर मजदूर ओ छात्र राज्य स' पलायनक लेल विवश छथि। एकटा नियोजित ओ सर्वतोन्मुखी प्रयासक आवश्यकता छैक। हम अपन वैशिष्ट्यक संरक्षण तथा ओकरा विकसित तथा उजागर करी।

भारत आ विश्वक इतिहास गवाह अछि जे जतय कतहु आम जनता सबल आवाज उठौलक, ओतय विकासक काज भेल आ जतयक लोक प्रतीक्षा मे सहनशील बनल रहल, ओतयक जनताक मादे केओ नहि सोचलक। एहि अंचलक विडंबना इएह अछि जे एतय कहियो विकासक मांग सार्वजनिक नहि बनि सकल। फलत: राज्य आ राष्ट्रीय स्तरक जन-प्रतिनिधियो लोकनि एहि दिस कहियो ध्यान नहि देलनि।

प्रश्न ई नहि अछि जे कहियो सांस्कृतिक रूप स' देशक सब स' समृद्ध राज्यक ई दशा किएक भेल अछि! प्रश्न ईहो नहि अछि जे प्राकृतिक संसाधनक मामिला मे देशक कतेको राज्य स' आंगा रहयबला एहि राज्यक नियति एहन किएक अछि। प्रश्न ईहो नहि होयबाक चाही जे राज्यक विश्वविद्यालय सब स' सब साल सर्वाधिक डिग्रीधारी छात्र बहराइत अछि, ओ कतय जाइत अछि, किएक जाइत अछि, रने-वने बौआइत अछि, जे प्रश्न सब स' पैघ अछि, ओ रोजगारक प्रश्न अछि, पेटक ज्वाल कें शांत हेबाक प्रश्न अछि, परिवारक आवश्यकताक पूर्तिक प्रश्न अछि। आजादीक अंठावन वर्ष बादो बिहार मे भूमि सुधार नहि भेल, पटौनीक आ बाढ़िक रोक-थाम नहि भेल, कल-कारखाना बंद भेल, कुप्रशासन ओ आतंकक साम्राज्य रहल, अपहरण, फिरौती, रंगदारी, सामूहिक नरसंहार होइत रहल। तें ई पलायन, अफरातफरी आ भेड़िया धसान भ' रहल अछि।

(फरवरी, 2006)

मिथिला मे पंचायती राज व्यवस्था

पंचायतक शाब्दिक अर्थ ग्रामीण द्वारा निर्वाचित पांच जनक एक निकाय। मिथिलाक सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक संरचना मे जकर सर्वोच्च महत्त्व छैक। प्राचीन काल मे ग्रामीण समुदाय लघु गणतंत्रक सदृश्य छल जिनका पास आवश्यकतानुसार सब चीज उपलब्ध छल तथा पूर्ण रूप स' बाह्य अभिकरण स' स्वतंत्र छल। एकर अस्तित्व छल। किंतु उपनिवेशवादी शासनकाल मे एकरा निर्ममता स' बर्बाद क' देल गेल। स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद कल्याणकारी राज्यक स्थापनाक परिकल्पना कयल गेल। जाहि मे सत्ताक विकेंद्रीकरण एक अहम पहलू छल। राजनैतिक निर्णय एवं प्रशासनिक क्रियान्वन कें गांव तक पहुंचयबाक एक सुंदर स्वप्न छल। एहि उद्देश्य स' बिहार पंचायत राज अधिनियम 1993 पंचायत कें सशक्त बनायल, न्याय कें गांव मे ग्रामीणक द्वार तक पहुंचायल। एहि अधिनियमक विशेषता छैक देशक बंचित वर्ग यथा अनुसुचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ल वर्ग एवं महिला कें देशक पुनर्निर्माण मे हुनक अधिकार वापस करब। हुनक व्यक्तित्व कें रचनात्मक तथा सबल बनायब। देश मे बिहार प्रथम राज्य अछि जे सर्वप्रथम पंचायती राज अधिनियम 1947 मे पारित कयलक। लेकिन एकर अनुपालन मे सब राज्य स' पाछू ओ फिसड्डी साबित भेल अछि। एतय पंचायती राज व्यवस्था पूर्णरूपेण कायम नहि भेल छैक। पंचायती व्यवस्था मे कुर्सीक लड़ाई ओ लूटपाटक मात्र योजना। जखन कि मानवताक इतिहास मे अभिशासनक विकेंद्रीकरणक सब स' पैघ प्रयोग पंचायती राज व्यवस्था।

किछु गाम कें मिलाक' एक पंचायत, एक पंचायत मे 5000-7000 लोक, 500क आबादी पर एक सदस्य, चुनाव गामक लोक द्वारा, पंचायतक समस्त आबादी मे अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति ओ पिछड़लवर्गक लेल जगह आरक्षित एवं एक तिहाई महिलाक लेल—एहि तरहें पंचायत समितिक निर्माण हैत। किछु पंचायत के मिलाक' एक प्रखंड बनायल जाइछ। पंचायत द्वारा ग्राम पंचायत ओ प्रखंडक सब गाम मे शासन कयल जायत। ग्रामीणक अपन शासन। किछु प्रखंड कें मिला

क' एक जिला। जिलाक सब गामक शासन जिला परिषद करत। जिला परिषद मे नगरपालिका आकि नगर निगमक क्षेत्र नहि रहत। जिला परिषद मे जिला भरि स' लोक चुनल जयताह। विधायक ओ सांसद एकर सदस्य रहताह। जिलाक 50,000 आबादी पर एक सदस्य चुनल जयताह। पिछड़ल वर्ग ओ अनुसूचित जाति ओ जनजातिक हेतु आरक्षण रहत। महिलाक हेतु सेहो आरक्षणक प्रावधान छैक। जिला परिषदक अध्यक्ष ओ उपाध्यक्षक चुनाव सदस्य द्वारा कयल जायत। एहि मे आरक्षणक प्रावधान छैक। पंचायत समिति मे मुखियाक चुनाव हैत। एहू मे आरक्षण छैक। ग्राम पंचायतक अवधि पांच सालक छैक। ग्राम पंचायतक बैसार दू मास मे एकबेर मुखिया द्वारा बजायल जायत। कुल सदस्यक संख्याक एक तिहाई सदस्य द्वारा लिखित रूप मे विशेष बैठक बजायल जायत। प्रत्येक ग्राम पंचायत मे तीन समिति—उत्पादन, सामाजिक न्याय ओ सुख सुविधा समिति। उत्पादन समिति खेती, पशुपालन, ग्रामीण उद्योग ओ गरीबी दूर करबाक कार्यक्रम देखत। सामाजिक न्याय समिति अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति ओ पिछड़ल वर्गक विकासक काज करत। महिला ओ नेनाक भलाइक काज सेहो देखत। सुख-सुविधा समिति शिक्षा, स्वास्थ्य आदि काज देखत। ग्राम पंचायत कें अपन संपत्ति ओ निधि रहत जे सरकार द्वारा देल जायत टैक्स स' आकि संपत्तिक आय स' प्राप्त हैत। ग्राम पंचायत टैक्स लगायत। ग्राम पंचायत मे एक सचिव रहताह जे सरकार द्वारा नियुक्त कयल जयताह।

गामक अद्वितीय संरचनाक स्पष्ट अनुभव करैत स्वतंत्रता संग्रामक अवधि मे ग्रामीण गणराज्य व्यवस्थाक आवश्यकता पर विशेष जोर देल गेल। ग्राम स्वराज्यक स्वरूप एक संपूर्ण गणराज, अपन महत्त्वपूर्ण आवश्यकताक लेल अपन पड़ोसी गाम स' स्वतंत्र परंतु अन्य मुद्दा एक दोसर पर आश्रित जतय आवश्यक हो। एकर अनुसार निर्धारित योग्यताबला वयस्क (पुरुष ओ महिला) ग्रामीण द्वारा वार्षिक निर्वाचित पांच लोकक पंचायत द्वारा ग्राम स्वशासन संचालित कयल जायत। संपूर्ण वर्ष मे पंचायत विधायिका, न्यायपालिका तथा कार्यपालिकाक दायित्व निबाहत। गाम मे व्यक्तिगत स्वतंत्रता आधारित संपूर्ण लोकतंत्र रहत। अपन शासनक निर्माता स्वयं व्यक्ति हेताह। ग्राम सभा ग्रामीणक लोक संसद। ग्राम सभा साल भरिक लेखा विवरणी, अंकेक्षण, बजट, योजना ओ लाभार्थीक चयन, प्रशासनक प्रतिवेदन पर विचार-विमर्श, आवश्यक भेला पर श्रमदानक व्यवस्था, वयस्क शिक्षा ओ परिवार कल्याण, ग्रामीणक बीच भाईचारा ओ प्रेम जागृत करब, निगरानी समिति द्वारा कार्यक पर्यवेक्षण करत। ग्राम सभा पंचायतक क्रिया-कलाप मे प्रहरीक भूमिका निभायत। ग्राम सभाक अध्यक्षता मुखिया करताह। ग्राम सभाक क्षेत्र मे रहनिहार वयस्क (पुरुष ओ महिला) एकर सदस्य होइत छथि।

पंचायत कें स्वायत्तता देबाक घोषित उद्देश्य छल—गांव अपन विकासक लेल स्वयं योजना बनायत आ ओकरा कार्यान्वित करत, संसाधन जुटायबाक हेतु करारोपण तथा संसाधनक युक्तिसंगत उपयोगक अधिकार। मुदा से भेल नहि। पंचायत पूर्ण रूपेण सरकारी आवंटन पर आधारित। फलस्वरूप, नोकरशाही लोकतंत्रक एहि बुनियादी तंत्र पर हावी भ' गेल। नीर-क्षीर-विवेक आधारित ग्रामीण न्याय प्रणाली व्यवस्था पूर्णतः ध्वस्त। त्रिस्तरीय पंचायती राज्य व्यवस्था वास्ते निर्धारित दायित्वक दसम भाग तक गाम मे नहि पहुंचल। संप्रति पंचायती राज तंत्र मात्र बुनियादी आवश्यकता—सड़क आवास, पेयजल, विद्यालय तक सीमित, किंतु संपूर्ण पंचायती व्यवस्था सरकारी विभाग, जन प्रतिनिधि, बिचौलिया, इंजीनियरक गठजोड़ मे फसल। कमीशनक रेट खुजल छैक। नियंत्रणक अभाव। लूट खसोट मे लागल तमाम पक्षक मनोबल बढ़ल। समस्त माल हजम करबाक प्रयास चरम पर। महिला सशक्तिकरणक दाबा, परंतु पार्टीक वर्चस्व। रबर स्टांप। महिलाक हाथ मे निर्णायक शक्ति देल गेल, किंतु विकास कें नया आयाम देबाक कोशिश पूर्णरूपेण 'फ्लाप'।

गत तीन वर्ष स' पंचायती राज व्यवस्था मिथिलांचल मे लागू अछि जे 23 वर्षक बाद अस्तित्व मे आयल। जिलावार स्थितिक अवलोकन स' स्पष्ट होइछ जे राजनैतिक अपराधीकरण, भाई-भतीजावाद, लूटखसोट, भ्रष्टाचार, बिचौलिया संस्कृति, ठेकेदारक भरती ओ कलपैत निरीह जनमानस, चकनाचूर विकासक स्वप्न, ग्राम सुराज मात्र स्वप्ने रहि गेल। पूर्णिया जिला मे 251 मुखिया, 3426 वार्ड सदस्य, 34 पार्षद ओ 344 पंचायत समिति सदस्य जनताक अरमान पूरा करय मे विफल रहल। 1389 महिला प्रतिनिधि मुदा बीस प्रतिशतक बागडोर हुनक पति आ कि अन्य संबंधीक हाथ। करोड़ो रुपयाक राशि आवंटित किंतु पचास प्रतिशत स' बेसी काज नहि भेल। 2002-03 मे स्वर्ण जयंती स्वरोजगारक लक्ष्य 7158 उपलब्धि 3377, प्रधानमंत्री रोजगार योजना लक्ष्य 400 परिणाम 64 तथा इंदिरा आवास योजनाक लक्ष्य 11,918 आ उपलब्धि 4,537 मात्र। एहि वर्ष 24 लाख रुपया आवंटित छल, खर्च भेल आधा। वर्ष 2003-04क यैह हाल। प्रतिनिधिक मनमानी ओ पदाधिकारीक कार्य शिथिलता पंचायती व्यवस्था कें विफल क' देलक। किशनगंज मे पंचायती राज भाई-भतीजावादक शिकार। बहुतो मुखियाक वित्तीय अनियमितता उजागर भेल। भैंसलवारी ओ खारुदह पंचायत (ठाकुरगंज)क मुखियाक वित्तीय अधिकार छीनि लेल गेल।

भारत-नेपाल सीमा क्षेत्र पर स्थित दिघल बैंक, टेढ़ागाछी, ठाकुरगंज, गलगलिया मे पंचायत व्यवस्था स' बुनियादी सुविधा मे कोनो लाभ नहि भेल छैक।

सात प्रखंडक साढ़े बारह लाखक आबादी अपना कें ठकायल महसूस क' रहल अछि। टूटल ओ जर्जर सड़क, छतविहीन विद्यालय, विद्यालय मे ककहरा रटैत दलित बच्चा, बिना तारक बिजलीक खंभा, जन विकासक नाम पर निर्वाचित पंचायत प्रतिनिधिक स्व-विकास। कटिहार जिलाक पंचायती व्यवस्थाक यैह हाल। एहि व्यवस्थाक तीन सालक अवधि मे मात्र लूट-खसोट। 23 प्रखंड मे 239 मुखिया, 329 पंचायत समिति सदस्य, 3273 वार्ड सदस्य ओ 33 जिला परिषद सदस्यक बावजूद हिनक कारनामा निराशाजनक। पिछला तीन वर्ष मे संपूर्ण ग्राम स्वरोजगार योजना अंतर्गत एहि जिला कें 2728.2 लाख, इंदिरा आवास योजना मद मे 380.39 लाख, अपग्रेडेशनक लेल 892.73 लाख, सुनिश्चित रोजगार योजना-स्टीम वनक लेल 2370.78 लाख ओ स्टीम-टूक तहत 1751.91 लाख रुपया भेटल, किंतु गामक दशा-दिशा मे कोनो विशेष परिवर्तन नहि। मुखियाजीक उपर धांधली ओ योजना मे अनियमितताक शिकायत। त्रिस्तरीय संस्था आवास तथा प्रशासनक हेतु सिरदर्द।

नोकरशाहीक सकारात्मक रूख स' पंचायत संस्थाक सर्वांगीण विकास संभव। ई विचार छनि सहरसा जिलाक 21 जिला परिषद, 200 पंचायत समिति सदस्य, 153 मुखिया, 2041 वार्ड आयुक्त तथा नगर परिषदक 28 निर्वाचित प्रतिनिधिक। प्रशासनिक लापरवाही सीमा पार क' चुकल छैक। वर्ष 2001-02 मे विद्यालय भवन एवं शौचालय निर्माण हेतु 72 लाख रुपया आवंटित मुदा एखन तक ई स्वीकृति राशि सरकारी खजना मे। इंदिरा विकास योजनाक अंतर्गत गत तीन वर्ष मे 23 करोड़ 8 लाख 87 हजार रुपया खर्च भेल जखन कि आवंटन छल 40,22,47,000 रुपया। जवाहर ग्राम समृद्धि योजना स्टीम-2 मे कोनो खास उपलब्धि नहि। कम बेस सब योजनाक यैह हाल। अपराधीकरणक जोर। सूहत पंचायत मुखियाक हत्या। आधा दर्जन स' अधिक जनप्रतिनिधि पर गंभीर मोकदमा। सुपौल जिला मे निर्वाचित प्रतिनिधि आ कि हुनक संबंधी ठेकेदार बनि गेला और बिचौलियाक संख्या मे अचानक वृद्धि। तैंतीस प्रतिशत आरक्षित कोटा स' विजयी महिला प्रतिनिधि मे अधिकांश एखन तक घोघटक तर मे। बलवाक मुखिया जगदीश मंडल तथा मंजरीक मुखिया मो. इसराइलक हत्या क' देल गेल। सब एगारह प्रखंड मे अविश्वास प्रस्ताव आयल। जमि क' कमीशन ओ लूटपाट। उपयोगिता प्रमाण पत्रक अभाव मे दोसर किस्त आवंटित नहि भेल। मधेपुरा जिला मे 170 मुखिया, 225 पंचायत समिति सदस्य, 2242 वार्ड ओ 23 जिला परिषद सदस्य चुनल गेल छथि। किछु मुखिया आपराधिक रेकर्डबला। लगभग प्रत्येक योजनाक आधा स' अधिक राशि सरकारी मुलाजिम, जनप्रतिनिधि, ठेकेदार ओ बिचौलियाक जेब मे। एक यूनिट इंदिरा आवासक हेतु दू हजार रुपया कमीशन। संपूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना स्टीम-एकक अंतर्गत 746.265 लाख रुपया मे मात्र 116.23 लाख रुपया खर्च भेल जुलाइ 2004 तक। प्रतिनिधि लोकनि सूमो, बलेरो ओ स्कोर्पियो मे भ्रमण करैत छथि आ जनता टुकुर-टुकुर सब देख रहल छथि। अररिया जिला मे इंदिरा आवास, प्रधानमंत्री ग्रामोदय ओ ग्राम सड़क, स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार, जवाहर ग्राम समृद्धि समेत विकास एवं गरीबी उन्मूलनक बहुप्रचारित योजनाक उपलब्धि नहि। मात्र राजनैतिक संरक्षण मे बिचौलिया संस्कृति मे वृद्धि। पंचायत समिति एवं जिला परिषद प्रारंभे स' राजनैतिक जोड़-तोड़क अखाड़ा। पलासी ओ कुर्साकांटा मे प्रमुखक पदक चुनाव मे गोली तक चलल। आंगनबाड़ी सेविका, सहायिका, शिक्षा मित्रक बहाली मे भारी भ्रष्टाचार। कमीशनखोरी ओ विकासक प्रति घोर लापरवाही।

बेगूसराय जिला मे पंचायती राज व्यवस्था ठेकेदार, अपराधी, बिचौलिया ओ नोकरशाहीक चौतरफा मारि झेल रहल अछि। एहि स्थितिक सर्वाधिक लेल दोषी जनप्रतिनिधि। जनमानस कलपैत। चारि पंचायतक मुखियाक पद रिक्त। बछवाड़ा ओ रजौड़क मुखिया अयोग्य घोषित। अमोल ओ बारोक मुख्यािक हत्या। 57 पंचायत वार्ड सदस्यक जगह रिक्त। 50 पंचायत सेवकक जगह खाली। संपूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना स्टीम-2क अंतर्गत 927 मे मात्र 222 पूर्ण तथा स्टीम-एकक अंतर्गत 518 स्वीकृत मे 126 पूर्ण। जिलाक 18 पंचायत मे विकासक गति मद्धिम। खगड़िया मे इंदिरा आवास आवंटित भेल मुखियाक परिजन-शुभचिंतक कें जिनका छनि आ आलीशान मकान। अंत्योदय-अन्नपूर्णा योजनाक लाभ भेटल मुखियाजी कें तथा हुनक लठैत चमचा कें। 128 मुखिया, 182 पंचायत समिति सदस्य, 1804 वार्ड सदस्य अपन कुर्सीक रक्षार्थ किछु क' सकैत छथि। चारि मुखिया मारल गेलाह। पिछला दू वर्ष मे करोड़ो खर्च कयल गेल। धन्यवाद भीषण बाढ़ि कें जे सब बहा क' ल' गेल। किओ चोर बेइमान नहि।

समस्तीपुर जिला मे बीतल तीन वर्षक कालखंड मे पंचायती राज व्यवस्था निश्चित रूप स' निराशाजनक। मोहिउद्दीनगरक मुखिया मारल गेलाह। जितबारपुर चौथ एवं कल्याणपुरक मुखियाक सजा साबित भेल। पदहीन भेलाह। समस्तीपुर प्रखंडक स्थिति भयावह। विकास योजनाक 30 लाख रुपया तीन वर्ष स' बैंक मे पड़ल। हसनपुर प्रखंडक बीस पंचायतक चुनावक बाद लूट-खसोट चरम पर। सिंघिया प्रखंडक पंचायती राज व्यवस्था, 'आतंकी' व्यवस्था विकास नाम मात्रक। दरभंगा जिला परिषदक 47, मुखिया-329, 451 प्रखंड समिति सदस्य तथा ग्राम पंचायतक 4570 निर्वाचित सदस्य छथि, मुदा विकास कहिया हैत? बहेड़ी, किरतपुर तथा बहादुरपुरक प्रमुखक कुर्सी छिना गेलनि, किंतु केवटी, सिंहवाड़ा, जाले, तारडीह, अलीनगर तथा दरभंगा शहरक प्रमुख अविश्वास प्रस्ताव मे कुर्सी बचा

लेलनि। संपूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना मे जिला परिषद ओ पंचायत समिति आमने-सामने। अधिकारक लड़ाइ। प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजनाक लेल स्वीकृति 23 मे मात्र 10 मे काज भेल। 2002-03 मे 4,15,47,020 रुपया आवंटित। खर्च भेल 1,69,50,138 रुपया। 2003-04 मे 2,11,94,480 रुपया प्रथम किस्त भेटल। मुदा खर्च नहि भेल। तें हेतु बादक किस्त नहि भेटल। सिंहवाड़ा ओ हायाघाटक प्रमुखक कथन जे जन प्रतिनिधि अपन दायित्व निर्वहन कयल, किंतु सरकार ओ नोकरशाह उद्देश्य कें सफल नहि होमय देलक। मधुबनी जिला मे बेकाबू हालति, अराजकता, ठेकेदारी, रंगदारी, वर्चस्वक तनातनी पंचायती व्यवस्थाक यैह परिदृश्य। दर्जन भरि मुखिया गबन ओ अन्य आरोप मे। जेल मे 20 प्रखंड प्रमुख मे स' 12 अविश्वास प्रस्ताव झेल रहल छथि। बाबूबरही, खुटौना, झंझारपुर, अंधराठाढ़ी, जयनगर, हरलाखी प्रखंडक प्रमुख कें अपन कुर्सी गंवाब' पड़लनि। जिला परिषद अध्यक्ष कें अविश्वास प्रस्तावक सामना करय पड़लनि। फलस्वरूप 56 जिला पार्षद, 399 मुखिया, 555 पंचायत समिति सदस्य ओ 5525 वार्ड सदस्यक अछैत ग्राम स्वराजक स्वप्न सपने रहि गेल। जन प्रतिनिधि एवं नोकरशाहक बीच सामंजस्य जाबत धरि स्थापित नहि हैत पंचायती राज व्यवस्था अपन सही लीक स' भटकैत रहत। जनभावनाक अनुरूप काज नहि भ' रहल छैक। मुखियाक मनमानी। सड़क, विद्यालय, शौचालय, चिकित्सालय, पेयजलक घोर अभाव।

मुजफ्फरपुर जिला मे त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था तीन वर्ष बितलाक बादो अपन सही दिशा नहि ल' सकल अछि। जिला परिषदक संवैधानिक ढांचा तक तैयार नहि भेल अछि। 54 जिला परिषद सदस्य, 387 मुखिया, 535 पंचायत समिति सदस्य ओ 5353 बार्ड सदस्य एहि व्यवस्था मे कार्यरत छथि। संपूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना मे स्वीकृत 933 मे 456 अपूर्ण, आधारभूत संरचना मे 55 चयनित पूर्ण भेस मात्र 8, इंदिरा आवास योजना मे 18,823 स्वीकृत पूर्ण भेल 9,454, प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना मे 1515 मे स' 800 पूरा भेल, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना मे 36 स्वीकृत काज मे पूरा भेल मात्र 6। एहि स' विकासक स्थिति जानल जा सकैछ। सीतामढ़ी जिला मे उपलब्धि कम किंतु कुर्सीक लेल मारामारी ओ विकासक राशिक बंदरबांट अधिक। दू मुखियाक हत्या एवं आपराधिक आरोप मे तीन मुखिया बर्खास्त। वर्ष 2002-03 ओ 2003-04 मे संपूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना स्ट्रीम-एक मे 1694 योजना स्वीकृत जाहि मे पूर्ण भेल 1052, स्ट्रीम-दू मे एहि अवधिक लेल 2367 योजना स्वीकृत मुदा पूरा भेल 1788, इंदिरा आवास योजनाक 17,077 यूनिट मे 11,885 पूर्ण भेल एवं प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना मे 1463 योजना स्वीकृत मुदा काज भेल 1138 पर। मजदूरक लेल आवंटित खाद्यान्न खुला बजार मे बेचल जाइछ।

एहना स्थिति मे गामक तकदीर-तस्वीर बदलबाक वादा। चरम भ्रष्टाचार, कमीशनक खुजल रेट, दलालक भरमार, औकात मुताबिक मनमानी, घर भरबाक व्यस्तता ओ लाचार जनता शिवहर जिला पंचायती राजक यैह विकास भेल। 7 जिला पार्षद, 53 मुखिया, 71 पंचायत समिति सदस्य ओ 743 वार्ड सदस्य द्वारा संचालित अछि एहि जिलाक त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था। ई व्यवस्था मात्र जन प्रतिनिधि तथा सरकारी अधिकारीक हेतु वरदान साबित भेल। डूमरी कटसरीक मुखिया जेल स' पंचायत काजक संचालन करैत छथि। कमरौली पंचायतक मुखियाक पद खाली। जहांगीरपुर ओ कुम्मा पंचायतक मुखिया जेलक भीतर। विभिन्न योजनाक हेतु करोड़ो रुपया आयल मुदा धरातल पर नहि पहुंच सकल। गणतंत्रक जन्मभूमि तथा राज्यक मुख्यमंत्रीक चुनाव क्षेत्र हाजीपुर जिला मे गाम सुराजक नामोनिशान नहि। तमाम दावपेंच, तिकड़म, भ्रष्टाचार मे लिप्त 41 जिला परिषद सदस्य, 290 मुखिया, 399 पंचायत समिति सदस्य ओ 4000 स' उपर वार्ड सदस्य। करोड़ो रुपया ग्रामीण विकासक हेतु आयल। कोनो योजना पूर्ण नहि भेल। इंदिरा आवास मे भारी कमीशन ओ कागत मे लंबित हजारो आवास। गांधीक कर्मभूमि चंपारण मे ग्राम सुराज मात्र नारा बनि क' रहि गेल। नोकरशाहीक सर्वोच्यता ओ विकास योजना मे कमीशनखोरी। जाति-पाति, गंवई अधिकार-वर्चस्वक दबंगक राजनीति, घोषणा स' कम अधिकार, संबंधित लड़ाइ मे समयक अनावश्यक बर्बादी, सरकारी कार्यक्रमक अज्ञानता, अधकचरा लेखा प्रणालीक कारण गामक विकास नदारद। जिला परिषदक 42 सदस्य, 319 मुखिया, 421 पंचायत समिति सदस्य ओ 4,219 वार्ड सदस्य निर्वाचित भेल छथि। पंचायत कें विभिन्न मद मे 31 करोड़ रुपया देल गेल, किंतु एकर उपयोगिता जिला मुख्यालय कें नहि देल गेल। पंचायती तंत्र दलाली, कमीशनखोरीक एकटा तगड़ा अखाड़ा। भ्रष्टाचारक विकेंद्रीयकरणक वाहक त्रिस्तरीय व्यवस्थावला ई चुनाव मात्र राजनैतिक अपराधीकरण। जनताक राज आ पारदर्शिता निपता।

विगत तीन वर्ष मे पंचायत राज संस्थाक गतिविधिक समीक्षा स' स्पष्ट होइछ जे पंचायत कें स्वतंत्र रूप स' काज नहि करय देल गेल छैक। पंचायत राज संस्था मे सुशासन मे सुधार अपेक्षित। महिलाक जानकारी एवं जागरूकता वृद्धिक लेल प्रशिक्षण कार्यक्रम। ग्रामीण कें सजग बनायब तथा हुनका अपन अधिकारक मांग करबा मे सक्षम ओ योग्य बनबय पड़त। विकास एवं शासनक संबंध मे राजनैतिक इच्छा शक्तिक संग व्यक्तिगत इच्छा शक्ति जागृत करब, व्यक्तिगत लाभक स्थान पर सामूहिक एवं सामाजिक लाभ कें प्रश्रय एवं प्राथमिकता देब, सूचना तकनीकी पहुंच मार्ग कें सुगम बनायब, समाज मे दबाव समूहक गठन तथा ओकरा सशक्त, पंचायत कें शासनक केंद्र बनायब तथा बहुमतक स्थान पर आपसी सहमति स'

योजना निर्माण एवं संचालन करब। पंचायत प्रतिनिधि, सरकारी पदाधिकारी एवं हितभागीक संयुक्त प्रशिक्षण चर्चाक आयोजन तथा ओहि मे निरंतरता राखय पड़त। पंचायतक आंतरिक संसाधनक खोज एवं ओहि मे वृद्धि करय पड़तै। समाज कें कोन प्रकारक विकास सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक नैतिक अलग-अलग आकि समन्वितक आवश्यकता समाज कें निर्धारित करबाक स्वतंत्रता देल जाय। जीवन मे जवाबदेही एवं पारदर्शिता आवश्यक। जखन आधा आबादी महिलाक छनि। हुनका ग्राम पंचायतक सदस्य, मुखिया, ग्राम कचहरीक सरपंच, पंच, पंचायत समितिक प्रमुख, जिला परिषदक अध्यक्ष सब जगह एक तिहाई हिस्सा देल गेल छनि। घर-आंगन स' बाहर सामुदायिक भागीदारी देल गेल छनि। संख्याक हिसाब स' पद भेटल छनि। किंतु अधिकारक उपयोग पुरुष द्वारा। महिला कें मजबूत नहि होब' देल जा रहल छनि। आशा कयल जा रहल छल जे पंचायत व्यवस्था मे पुरुष सत्तात्मक व्यवस्था स' उत्पन्न विसंगति कें दूर करबा मे महिलाक सहभागिता कारगर हैत। से नहि भ' सकल छैक। पुरुष प्रधान समाज एखनो महिला के चौखटिक बाहर नहि जाय देबय चाहैत छनि। किशनगंज जिलाक पंचायत समिति मे 67 महिला सदस्य, 7 जिला परिषद मे, नगर परिषद मे उपाध्यक्ष महिला, किंतु पतिक वर्चस्व। किछु कें छोड़ि बाकी कुशल गृहणी। वैशालीक जिला महिला पार्षद 14 करोड़ रुपयाक घोटालाक उजागर कयल। गिरफ्तार कयल गेलीह। मधेपुराक जिला महिला पार्षद कें अनुशंसित योजना पूरा करयबा मे आंदोलन करय पड़लनि। साक्षरताक संग हिनका समूह मे बैसब, अपन बात राखब, भाषण देबाक प्रशिक्षण देल जाय। बैठकक कार्यवाही तैयार करबा मे संभव आ सक्षम बनायल जाए तखने हिनक सामाजिक स्थिति मे वास्तविक सुधार हैत।

(फरवरी, 2005)

राजशाहीक अंत : स्वेदश मे परदेसी मधेशी

नेपाल, भारतक पड़ोसी देश, अपन हिंदू राजशाहीक अंतिम सांस गनि रहल अछि। आइ जे राजशाही नेपालक सत्ता पर अछि ओ नेपाली नहि, भारतीय मूलक राजस्थानी वंशजक छथि। चितौड़क राजपूत। लगभग 240 साल पूर्व मे हिनक वंशज पृथ्वीनाथ शाह नेपालक छोट-छोट रजवाड़ा कें जीत क' जोड़ल आ नेपालक राजशाहीक स्थापना कयल। एत'क जनता राजा कें ईश्वरक रूप मे मानैत छलाह, किंतु काठमांडू आइ विरोधाभासी त्रासदीक राजधानी बनल छै। आम जनता सड़क पर। घाटीक करीब 65 प्रतिशत जनता राजशाहीक खिलाफ अपन मत देने छथि। अराजकताक स्थिति रहल। बहुसंख्यक जनता मात्र लोकतंत्रक लेल आंदोलनरत। शाही महल हत्याकांडक बाद ज्ञानेंद्र सत्तासीन भेलाह। चारि वर्ष बीतलाक बाद जनता राजतंत्रक विरोध कयल। 1990 मे मात्र तीन दिनक जन प्रदर्शनक बाद तत्कालीन राजा वीरेंद्र बहुदलीय शासन पद्धति शुरू कयने छलाह। देश मे शासनक लेल 205 प्रतिनिधि चुनल गेल। घाटी मे विकास परिलक्षित भेल। मुदा ज्ञानेंद्र सब कें चौपट क' देलनि। अराजकताक पराकाष्ठा भ' गेल। नेपाल नरेश ज्ञानेंद्र फरवरी 2005 मे समस्त अधिकार अपना हाथ मे ल' लेलनि, सरकार बर्खास्त क' देल गेल, आपातकाल लगा देल गेल। जनता मे जबरदस्त प्रतिक्रिया भेल, जनताक नजरि मे राजा, जे विष्णुक अवतार बुझल जाइत छलाह, दुष्ट-दानव साबित भेलाह। नेपाली नेता सभक गिरफ्तारी आ बर्खास्त प्रधानमंत्री देऊबा कें घर मे नजरबंद क' लेल गेल।

राजा ज्ञानेंद्र बहुत अलोकप्रिय साबित भेलाह। नेपाल जरय लागल। काठमांडू एक अशांत राजधानी बनि गेल। आम जनता सड़क पर चलि आयल। शासन पर जबरन कब्जा करयबला शासकक देशव्यापी विरोध। ऐतिहासिक घटनाक्रम मे माओवादी आ अन्य राजनीतिक दल एक मंच पर आबि गेला। माओवादीक प्रमुख मांग छल जे राजतंत्र कें समाप्त क' गणराज्यक स्थापना कयल जाय। समस्त राजनैतिक दल आ माओवादी नव संविधान सभाक चुनाव तथा राजतंत्रक अंतक

मांग कयल। भारत समेत अंतरराष्ट्रीय रुखि कें देखि क' राजा ज्ञानेंद्र कें झुक' पड़लनि। 21 अप्रैल, 2006 कें राष्ट्रक नाम अपन संदेश मे पुन: लोकतांत्रिक ढंग स' विधान सभाक गठनक नाटक कयल। आम जनता कें हुनका पर कोनो भरोस नहि रहल। जनता राजाक एहि घोषणा कें धोखा कहलक। 'ज्ञानेंद्र चोर, देश छोड़'क नारा गुंजय लागल। बुटवल मे उग्र भीड़ महाराजा त्रिभुवनक मूर्ति तोड़ि देलक। भैरहपा, कपिलवस्तु, पाल्पा, अर्धाखांची, नवलपरासी आदि जगह मे राजाक विरोध मे मशाल जुलूस निकालल गेल। ज्ञानेंद्र कर्फ्यूक अवधि बढ़ा देल। अपन महलक चारू दिस टैंक आ बख्तरबंद गाड़ीक घेरा तैयार कयल गेल। राजशाहीक समाप्तिक मांग कयनिहार जनता टैंक आ गेलीक कोनो परवाहि नहि कयलक। ''ज्ञानेंद्र चोर, देश छोड़'क नारा लगैत रहल। राजा कें विश्वास छलै जे अमेरिका एहि संकट स' उबारत। अमेरिका कें लाचार भ' हाथ खींच' पड़लै। हिनका बुझेलनि जे राजा आत्मघाती डेग उठायबाक हेतु अभिशप्त अछि। पूरा विश्वास भ' गेलनि जे नेपाल स' राजशाहीक अंतिम विदाइ आ नव लोकतांत्रिक नेपालक उदय काल आबि गेल छै। हद तख नि भेल जखन पूरा नेपाल अशांतिक आगि स' जरि रहल छल आ नरेश ज्ञानेंद्र विदेश मे दू मास स' छुट्टी मना रहल छलाह।

आब नेपालक राजतंत्रक विरुद्ध नेपालक जनता बगावतक शंखनाद कयल। कर्फ्यू कें भंग करैत हजारो लोक सड़क पर उतर' लागल आ अपन जानक कोनो परवाह नहि क' लोकतंत्रक पक्ष मे नारा बुलंद कर' लागल। 19 मार्च 2006 कें सात लोकतंत्रवादी दल आ माओवादी संयुक्त मोर्चा बनायल तथा मांग कयलक जे भंग संसद कें बहाल कयल जाय आ नवीन संविधान सभा स्थापित कयल जाय। 6 अप्रैल 2006 कें सातो पार्टीक गठबंधन आ माओवादी संपूर्ण देश मे शांतिपूर्ण आंदोलन शुरू कयलक जाहि मे मुख्य मांग छल राजशाहीक समाप्ति। 9 अप्रैल 2006 कें माओवादीक शीर्ष नेता प्रचंड आ बाबूराम भट्टराईक हस्ताक्षर स' एक वक्तव्य जारी कयल गेल जाहि मे जनता स' राजशाहीक खिलाफ उतरबाक अनुरोध कयल गेल। नेपाल मे माओवादीक संग चीनक संबंध मधुर छै। चीन माओवादी कें अपन वैचारिक मित्र मानैत अछि। नेपाली माओवादी कें भारतीय माओवादी स' सेहो संबंध मधुर छै। नेपाली माओवादी कें समय-समय पर चीन सहयोग दैत छै। पिछला दस साल स' चलि रहल माओवादी हिंसा मे 15000 लोक मारल गेल छथि। नेपालक तीन चौथाइ स' अधिक हिस्सा मे माओवादीक समानांतर सरकार चलि रहल छै। नेपाल पहुंचयबला विदेशी पर्यटकक संख्या मे 30 फीसदी गिरावट आयल।

मइ 2006 कें भंग संसदक बहाली, सात दलीय गठबंधन आ नेपाली कांग्रेसक नेता गिरिजा प्रसाद कोईराला कें प्रधानमंत्री पद पर आमंत्रणक राजकीय घोषणा

कयल गेल। काठमांडूक सड़क पर विजयक लहरि पसरि गेल। माओवादी पहिने राजाक एहि फार्मूला पर असहमति देखोऔल। बाद मे ओ सात दलीय गठबंधनबाला सरकारक समर्थन देबाक लेल राजी भ' गेलाह। सड़क पर विरोध कें त्यागि देल। भंग संसदक बहालीक लेल कयल गेल हड़ताल 19 दिन चलल। बारह रुपयाक नोनक थैली 40 रुपया मे बिकायल। प्याज 80 रुपया प्रतिकिलो बिकायल। व्यापारी, गृहिणी, विद्यार्थी, वकील, डाक्टर सब राजशाहीक खिलाफ आंदोलन मे भाग लेल। स्कूल, कालेज, बैंक, दोकान आ उद्योग बंद रहल। 2001 मे तत्कालीन राजा वीरेंद्र आ हुनक परिवारक हत्याक लेल आम लोक ज्ञानेंद्र कें जिम्मदार मानैत छै। आम नेपालीक बीच राजा ज्ञानेंद्र आ हुनक परिवारक प्रति घृणा आ नेपाल मे राजशाहीक अंतक मंशा साफ देख' मे आयल। राजा ज्ञानेंद्र कें गद्दी सम्हारब पांच वर्ष बीत गेल मुदा ओ लोकक बीच अपन स्थान नहि बना सकल। देशक स्थिति एकदम बिगड़ि गेल। आखिर मे नेपालक गरीब जनता लोकतंत्रक अपन लड़ाइ मे राजा कें नहि मात्र झुकौलक, राजनैतिक पार्टी कें मार्गदर्शन सेहो करौलक। 24 अप्रैल, 2006 कें नेपाल नरेश ज्ञानेंद्र कें झुक' पड़लनि।

सात दलीय गठबंधन सरकार आ माओवादीक बीच 7 नवंबर, 2006 कें 16 घंटा लगातार वार्ता चलल। समझौताक अनुसार माओवादी सशस्त्र छापामार दस्ता कें संयुक्त राष्ट्रक निगरानी मे कैंप मे राखल जायत आ हथियार निश्चित स्थान पर बंद ताला मे राखल जायत। हुनके देखरेख मे ओतबे संख्या मे शाही नेपाली सेनाक हथियार राखल जायत। अंतरिम संविधानक घोषणाक संग वर्तमान 205 सदस्यीय संसद विघटित क' 330 सदस्यीय नवीन अंतरिम विधायिका बनायल जायत। नेपाली कांग्रेस-113, नेकपा (एमाले)-69, माओवादी-73, नागरिक आंदोलनक अग्रणी कें-48, आ अन्य दल एनडीपी, एन.एस.पी, राष्ट्रीय जनमोर्चा, संयुक्त जनमोर्चा, एन.डब्ल्यू, पीपी सब कें भंग सदस्य मे जे सीट छलनि, से देल जयतनि। अगिला वर्ष जून मे 425 सदस्यीय संविधान सभाक चुनाव करायल जायत जाहि मे महिलाक 33 प्रतिशत सुनिश्चित भागीदारीक संग जनजाति, दलित, मधेशीक समानुपातिक प्रतिनिधित्व हैत। नेपाल कें एक केंद्रीकृत राज्य स' बदलि क' संघीय ढांचा देल जायत। पूर्व राजा वीरेंद्र आ हुनक भाइ धीरेंद्रक संपत्तिक एक राष्ट्रीय ट्रस्ट बनायल जायत, शाही महल नारायणहिटी दरबारक राष्ट्रीयकरण कयल जायत। 23 सदस्यीय मंत्रिमंडल मे माओवादी कें शामिल कयल जायत।

नेपाल सांस्कृतिक आधार पर एक बहु-सांस्कृतिक आ बहु-भाषी देश अछि। जाहि मे एक भागक संबंध पहाड़ी क्षेत्रक ओहि निवासी स' अछि जे नेपाली बजैत छथि। दोसरक संबंध मैदानी क्षेत्रक ओहि मधेशी स' अछि जे मुख्यत: मैथिली,

थारू, अवधी आ भोजपुरी बजैत छथि। लगभग 240 वर्ष पूर्व नेपालक महाराज पृथ्वीनारायण शाह तीन राज्य, जाहि मे मकवानपुर राज्य सेहो छल, कें मिला क' आधुनिक नेपालक नींव राखल। मकबानपुर नेपालक हिस्सा भेला पर एत'क मैथिली भाषी नेपालक राजाक प्रजा भ' गेलाह। एहि तरहें मधेशी नेपाल मे अनिवासी भारतीय नहि ओत'क मूल नागरिक छथि। अंतर मात्र सांस्कृतिक रहि गेल। मधेशी अपन संस्कृति आ भाषा नहि छोड़लक। अर्थात् भौगोलिक रूप स' एकीकृत नेपाल सांस्कृतिक आ ऐतिहासिक रूप स' एकीकृत कहियो नहि भेल। मधेशी अर्थात् मध्य देशक लोक, तराइवासी। ब्रितानिया सरकार गोरखा स' कतेको युद्धक बाद मार्च 1816 मे सुगौली (चंपारण)क संधि कयल आ चंपारण स' किशनगंज तक 5000 वर्गमील जमीन नेपालक अधीन क' देलक। मधेशी कें मैथिली मूलक नेपाली कहब तर्कसंगत हैत। 1954 मे हम सात विशिष्ठ लोकक संग सुरसंड स' पैदल चलि क' पायाक कातक गाम होइत जयनगर तक गेल छलहुं। खेत भारत मे घर नेपाल मे, खेत नेपाल मे घर भारत मे। बोली आ भाषा मैथिली जहिना दरभंगा-मधुबनीक लोक बजैत छथि। संबंध सेहो। किंतु, नेपाल मे रहितहुं मधेशी विदेशी बनल छथि। नेपाली राज व्यवस्था मूलतः पहाड़ी नेपाली कें सही ढंग स' नागरिक मानैत छथि। तराइ क्षेत्रक नेपालीक संग दोयम दर्जाक व्यवहार कयल जाइछ।

मिथिला (तराइ क्षेत्र) आकि मकवानपुर राज्यक निवासी नेपाली संस्कृति नहि अपनायल, अपन मौलिक विशेषता अपनौने रहलाह। फलस्वरूप, नेपालक राज्य व्यवस्था मे प्रभावी भूमिका कहियो नहि देल गेलनि। वर्ष 1971क जनगणना मे भाषाक आधार पर हिनक जनसंख्या 50 लाख छल जकरा वर्ष 2001क जनगणना मे घटाक' 2 लाख 70 हजार क' देल गेल एवं नेपाली भाषीक संख्या मे नाटकीय वृद्धि कयल। मधेशी कें मात्र जनसंख्या नहि नेपालक अर्थव्यवस्थाक विकास मे महत्त्वपूर्ण मानल जा सकैत अछि। नेपालक कृषि भूमिक करीब 60 प्रतिशत तराई क्षेत्र मे अछि। नेपालक जीडीपी मे मधेशीक योगदान 65 प्रतिशत, औद्योगिक उत्पादन मे 72 प्रतिशत तथा राजस्व मे 76 प्रतिशत छै तथापि राज्यक विधायिका आकि कार्यपालिका मे कोनो हिस्सा नहि। न्यायिक व्यवस्था, सिविल सेवा, पुलिस आ सेना मे नगण्य स्थान। अंतरिम संविधान संशोधन मे तराइ मे बसल मधेशी कें सत्ता मे भागीदारीक उचित प्रावधान नहि छल। हिनका लोकनिक मुख्य मांग छल—नेपाल कें संघीय देश घोषित करब, जनसंख्याक आधार पर चुनाव क्षेत्रक पुनर्निर्धारण, राज्यक मशीनरीक पुनर्गठन जाहि स' मधेशी दलित आ विभिन्न जातीय समुदाय कें सब क्षेत्र मे बरोबरि प्रतिनिधित्व भेट सकनि। एहि मधेशीक मुख्य मांग कें ल'क' तराइ क्षेत्र मे जोरदार आंदोलन शुरू भेल। रक्सौल, महोत्तरी, जोगबनी, फारबिसगंज,

सुपौल धरि जोरदार आंदोलन। मधेशी आंदोलन कें खतम करबाक लेल सुनसरी मे 31 जनवरी 2007 कें आंदोलनकारीक जुलूस पर अंधाधुंध पुलिस फायरिंग मे 5 लोकक मृत्यु आ 50 स' अधिक घायल भ' गेला। इनारूआ मे सरकारी मकान पर हमला करबाक कारण तीन लोक मारल गेलाह। मोरंग जिला प्रशासन उग्र हिंसा कें देखि क' अनेक थाना कें खाली करा लेलक। भंसार मे प्रदर्शनकारी चाउर स' लदल ट्रक, एक बस आ चारि मोटर साइकिल कें फूंकि देलक। प्रदर्शनकारी द्वारा सीमावर्ती फर्सिया बजारक वीपी चौक पर वीपी कोइरालाक आदमकद प्रतिमा तोड़ि देल गेल। सामीवर्ती मोरंग जिलाक प्रशासन नया बाजार, गररिया, पोखरिया, खरबन्ना, सौराभाग, बेलौना, मोरंग आदि थाना कें खाली करा लेल गेल। लौकही मे आंदोलनकारी उग्र प्रदर्शन कयल। पूर्वी एवं पश्चिमी नेपाल कें जोड़यवला महेंद्र राजमार्ग सुनसान छल। जनकपुर, वीरगंज, इनारूआ आ विराटनगर मे कर्फ्यू लागल छल। आंदोलनकारी सप्तरी जिलाक मलेढ़ा चौकी पर हमला क' शस्त्र लूटि लेल। नेपाल पुलिसक दमनात्मक कारवाई स' आक्रोशित मधेशीक आंदोलन 3 फरवरी कें उग्र भ' गेल। नेपाल मे मधेशीक चलि रहल आंदोलन कें देखि आ बिहार-नेपाल सीमा पर जोगबनीक स्थितिक अवलोकन क' बिहार सरकार केंद्रीय गृह आ विदेश मंत्रालय कें त्राहिमाम संदेश देलक। नेपाल स' लागल बिहारक सीमा पर लोकक भीड़ बढ़ि गेल छल। लोक सब भारतीय सीमा मे अपन परिजनक ओत' पहुंचि रहल छल। माल स' लादल 100 स' उपर भारतीय ट्रक-टैंकर फंसल छल जकरा 4 फरवरी कें निकासी क' पुलिसक सुरक्षा मे रक्सौल पठा देल गेल। एहि मे 15 ट्रक कें प्रदर्शनकारी क्षति पहुंचायल।

नेपाल मे गत मास राजनैतिक दल माओवादीक संग मिलिक' अंतरिम संसदक स्थापना कयल, तखन प्रसन्नता भेल जे पड़ोसी देश मे नव-बिहान भेल। किंतु, एक सप्ताहक अभ्यंतर तराइ क्षेत्रक उपेक्षित मधेशीक संघर्ष नेपालक सोझरायल शांति व्यवस्था कें विकट बना देलक। नेपाली माओवादीक शिखर पुरुष पुष्प कमल दहल 'प्रचंड'क टिप्पणी जे राजशाहीक समर्थक आ विदेशी शक्ति षड्यंत्र करा रहल छथि। ई टिप्पणी आगि मे घीक काज कयलक। मधेशीक आंदोलन आरो तीव्र भ' गेल। 7 फरवरी 2007 कें प्रधानमंत्री गिरिजा प्रसाद कोइरालाक अध्यक्षता मे मधेशीक संग बैठक मे निर्णय भेल जे नेपाल मे संसदीय सीट आबादीक हिसाब स' तय कयल जायत। नेपाल कें संघीय राष्ट्रक दर्जा देबाक आदेश मे समानुपातिक निर्वाचन प्रणाली लागू हैत। एहि आंदोलन मे 21 लोक मारल गेलाह। तहिना माओवादी आंदोलन मे 15000 स' उपर लोक मारल गेलाह। मधेशी पीपुल्स राइट फोरमक संयोजक एक प्रेस कांफ्रेंस मे 10 दिनक हेतु आंदोलन कें वापस लेने छलथि। प्रधानमंत्री

कोइराला राष्ट्रक नाम अपन संबोधन मे मधेशी स' आंदोलन खतम कराब'क अपील कयल। तराइ इलाकाक मांग कें स्वीकार क' लेलनि। देशक नव संविधान मे परिवर्तन कें मानि लेल। संघीय व्यवस्था कें उदार बनायल जायत। सत्ताक विकेंद्रीकरण हैत। समस्त सांस्कृतिक समूह कें उचित अधिकार प्रदान कयल जायत।

मधेशी नागरिक समाजक संजय शाह, पत्रकार रामभरोस कापड़ि, मिश्रीलाल मधुकर आ अन्य नेता भारत मे कतेको जगह प्रेस कांन्फ्रेंस क' क' भारत सरकार कें प्रभावित करबाक प्रयास कयलनि अछि जे हुनक मांग नेपाल सरकार मानि लनि। 8 फरवरी, 2007 कें पटना मे सेहो प्रेस कान्फ्रेंस कयने छलाह। आशय छलनि नेपाल कें संघीय देश घोषित करब, जनसंख्याक आधार पर चुनाव क्षेत्रक पुनर्निर्धारण एवं राज्य मशीनरी कें एहि तरहें पुनर्गठन कयल जाय जाहि मे मधेशी दलित आ विभिन्न समुदाय कें सब क्षेत्र मे समान प्रतिनिधित्व भेटि सकै। राजशाहीक अंत अवश्यंभावी अछि। राजा कें, जे विष्णुक अवतार मानल जाइत छलाह, 16 फरवरी, 2007 कें काठमांडू मे शिवरात्रिक दिन पशुपतिनाथक दर्शन मे असौकर्य भेलनि। लोक राजाक गाड़ी पर पथराव कयलक जखन ओ मंदिर जा रहल छलाह आ 'ज्ञानेंद्र चोर, देश छोड़'क नारा गुंजय लागल।

(अप्रैल-जून, 2007)

मिथिलाक विकास-मार्ग

मिथिलांचलक समन्वित विकास

इक्ष्वाकुतनय निमि महाराजक पुत्र मिथि महाराज स' बसाओल गेल एहि भूभागक नाम मिथिला पड़ल। बृहद्‌विष्णु पुराण मे मिथिला खंड (C500 AD) मिथिलाक चतु:सीमाक उल्लेख अछि। उत्तर मे हिमालय, दक्षिण मे गंगा नदी, पूब मे महानंदा ओ पश्चिम मे गंडक नदी। हिमालय स' गंगा धरि 100 मील ओ पूब स' पश्चिम धरि 250 मील। ई क्षेत्र 25.3 अंश उत्तर अक्षांश स' 27.5 अंश उत्तर अक्षांश तक एवं 83.80 पूर्व देशांतर धरि पसरल अछि। भौगोलिक क्षेत्रफल 46,905 वर्ग कि.मी., बिहार राज्यक 18 जिला ओ नवगछिया (पुलिस जिला), 126 विधान सभा सदस्य, 18 लोक सभा सदस्य। 56 अनुमंडल, 261 प्रखंड अछि। तराइ नेपाल क्षेत्रक मोरंग, सप्तरी, महोत्तरी, सरलाही, रौतहट, बारा ओ परसा जिला आब एहि भूभागक अंग नहि अछि। 1816 मे ईस्ट इंडिया कंपनी एवं गोरखा स' संधि भेल जाहि मे अंग्रेज बहादुर ई क्षेत्र द' देलक। मिथिलांचलक बहुउद्देशीय नदी योजनाक कार्यान्वन मे ई सन्धि बड्ड पैघ बाधक साबित भेल छैक। कारण मिथिलाक अधिकांश नदीक कैचमेंट एरिया एहि 5000 वर्गमीलक अंतर्गत पड़ैत छैक। संप्रति सप्तकौशिकी डैम योजनाक हेतु नेपाल सरकार स' समझौता करय पड़ल छैक तथा योजनाक प्रारूप तैयार कयल जा रहल छैक। कोसी नदी घाटी योजना मे नेपाल सरकार अनेक व्यवधान उपस्थित कयने छल। मिथिलांचलक भूमि नवनिर्मित अछि। पांच लाख वर्ष पूर्व एतय समुद्र छल। गंगा, गंडक, कोसी, कमला, बलान एवं हिमालय स' नि:सृत अन्य नदी सब माटि, पांक ओ बालू स' समुद्र कें भरने अछि। भूमि उत्तर स' दक्षिण आ दक्षिण स' पूब ढलाउ छैक। धनहर ओ भीठ भूमि सेहो छैक। औसत 54 इंच वर्षा होइछ। कठिन श्रम करय जोगर जलवायु नहि। जल विद्युत, उर्जाक सस्त साधन, प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध कयल जा सकैछ। यातायातक समुचित विकास देश कें 55 वर्ष अपन सरकार रहला पर नहि कयल गेल। कृषि आधारित उद्योगक सब साधन मुदा विकसित नहि कयल गेल। सब संभव अछि। सुनियोजित आर्थिक

विकासक मार्ग कें अपनाबय पड़त।

जनसंख्या कोनो भूभागक संपत्ति बुझल जाइछ। जनशक्ति राष्ट्रक पूजीक द्योतक। मानवीय संसाधन पूजीक एक एहेन संचय अछि जकरा अर्थव्यवस्थाक मार्ग मे प्रभावी रूप स' विनियोग कयल जा सकैछ। 1991क जनगणना मे मिथिलांचलक जनसंख्या 3,36,82,501 छल जे वर्ष 2001क जनगणना मे 4,36,31,581 आंकल गेल। 2001क जनगणना मे 28.43 प्रतिशत वृद्धि भेल। सब स' कम आबादी बला जिला शिवहर एवं सब स' अधिक वृद्धि 36.16 प्रतिशत एहि जिला मे। मिथिलांचल मे प्रति हजार पुरुष पर 921 महिला छथि। आबादीक घनत्व मे दरभंगा जिला प्रथम, वैशाली दोसर आ बेगूसराय तेसर स्थान पर अछि। राष्ट्रीय जनसंख्याक घनत्व प्रतिवर्ग कि.मी. 324 व्यक्ति जे एहि क्षेत्र मे अछि 880 व्यक्ति, जखन कि 1991 मे आबादीक घनत्व मात्र 685 व्यक्ति छल। जनसंख्याक दृष्टि स' मिथिला मे सब स' पैघ जिला पूर्वी चंपारण, दोसर मुजफ्फरपुर आ तेसर स्थान पर अछि मधुबनी जिला। साक्षरताक दृष्टि स' आबादीक सब स' अधिक साक्षर छथि वैशाली जिला मे आ सब स' कम अररिया जिला मे। आजुक सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक पुनर्निर्माणक कोनो योजना मे जनाधिक्य समस्या महत्त्वपूर्ण अछि। एतय अधिकांश व्यक्ति कें पूर्ण नियोजन नहि छनि। फलस्वरूप, श्रमिक द्वारा रोजगारक क्षेत्र मे पलायन। श्रम शक्तिक समुचित उपयोग नहि भेला स' एतयक अधिकांश व्यक्ति भुखल, आधा नांगट ओ अस्वस्थ छथि। दू-तिहाई व्यक्ति कें पर्याप्त मात्रा मे भोजन उपलब्ध नहि। द्रुतगति स' बढ़ैत जनसंख्याक सही उपयोग नहि भेला स' आर्थिक विकासक मार्ग बाधित छैक।

मानव सभ्यताक आरंभ स' कृषि विशाल जनसंख्याक जीविकाक साधन रहल अछि। वास्तव मे कृषि सब उद्योगक जननी ओ मानव जीवनक पोषक थिक। कोनो अल्प विकसित भूभाग खाद्यान्न मे आत्मनिर्भरता प्राप्त कयने बिना अपन आर्थिक विकासक कल्पना नहि क' सकैछ। विश्वबैंकक एक रपटक अनुसार बिना कृषि विकासक आर्थिक विकास संभव नहि। एतय तीन तरहक फसिल—भदै, अगहनी ओ रब्बी होइछ। धानक खेती 52 प्रतिशत क्षेत्र मे एवं एक एकड़ मे उत्पादन 1432 एलबो, जे अमेरिका मे 2185 एलबो, चीन मे 2433 एलबो एवं जापान मे 3244 एलबो। गहुंमक उत्पादन प्रति एकड़ 625 एलबो जे चीन मे 989 एलबो, अमेरिका मे 1030 एलबो आ जापान मे 1713 एलबो। एहि गति स' अन्य जजाति उपजैछ। चाहक खेती किशनगंज जिला मे शुरू भेल छैक, प्रगति मे छैक। नारियल, केरा ओ अनानासक व्यावसायिक खेती आरंभ भेल छैक। मखानक खेती पूर्ववत। विकासक प्रयास कयल जा रहल छैक। एहि क्षेत्र मे पछुआयल खेती ओ निम्न

उत्पादकताक मुख्य कारण-प्राकृतिक, तकनीकी, आर्थिक ओ संस्थागत असहयोग। भूमि सुधार कानून पूर्णरूपे असफल। विपणन ओ भंडारणक समुचित व्यवस्थाक अभाव। शीतगृह नदारद। साहुकार ओ बिचौलियाक साम्राज्य। खेतिहर मजदूरक अभाव। असुविधा ओ असौकर्य मे कृषिक विकास कोना होयत?

मिथिलाक कृषि अर्थव्यवस्था अनेक जटिलता स' जकड़ल छैक। फलतः कम उत्पादकता एवं कम उत्पादन एतयक कृषिक नियति बनि गेल छैक। कृषि क्षेत्रक दयनीय स्थिति एवं तस्वीर सामने उभरैछ। कृषि निर्धन व्यक्तिक रोजगारक साधन। सामाजिक ओ आर्थिक रूप स' संपन्न व्यक्ति कृषक छथि, मुदा खेती स्वयं नहि करैत छथि। कृषिकार्य स' जुड़ल लोक भूमिहीन तथा सीमांत कृषक। बड्ड पैघ विडंबना। आवश्यकता छैक कृषि मे संरचनात्मक सुधार। कृषि मे वृहत पूजी निवेश। भूमि सुधार अधिनियम मात्र कानूनक पुस्तकक शोभा। भूदान मे प्राप्त जमीन ओ ओकर भूमिहीन मे वितरण मात्र दंगा-फसादक जरि प्रमाणित भेल। चकबंदी एहि अंचल मे नहि भेल। भैयारी बंटवारा स' जोत जमीन छोट भेल। सूरतगढ़ फार्म सदृश एकोटा फार्म एहि अंचल मे नहि बनायल गेल। कृषि बीज फार्म मे चरवाहा विद्यालय खोलल गेल। परिणाम भेल जे बीज उत्पादन ओ विद्यालय दुनू बंद भ' गेल। कोनो तरहक कृषि क्षेत्र मे विकास नहि देखि कृषि स' जुड़ल मजदूर मिथिला स' बाहर अन्य राज्य मे पलायन कयलनि।

कृषि क्षेत्र मे रौदी आ दाही एक्के सिक्काक दू पहलू जे अछि एहि अंचलक भूमिक लेल विपदाकारी। एकर स्थायी समाधान नहि कयल गेल छैक। एहन विकटतम समस्याक समाधानक हेतु इसरायल, मिस्र ओ चीनक सफलताक स्मरण करब प्रासंगिक ओ अनुकरणीय। इसरायल ओ मिस्र अपन ठोस कार्यक्रमक बदौलति अपन रेगिस्तानी क्षेत्र मे हरित क्रांतिक कीर्तिमान स्थापित कयने छथि। चीन अपन बेलगाम नदी पर पैघ-पैघ बान्ह बनाय तथा 10 हेक्टेयर क्षेत्र मे सघन वृक्ष लगा क' बाढ़ि एवं अकाल कें बहुत हदतक नियंत्रित कयने अछि। नदी मातृक क्षेत्र मे बास करबाक कारण बाढ़ि तथा दाही स' हमहुं सब विपदा कें अंत क' सकैत छी, किंतु विगत कालखंड मे एहि समस्या पर कोनो दृष्टिपात नहि कयल गेल। दृष्टांत स्वरूप कोसी पश्चिमी नहरि प्रणाली। दू वर्षक अध्ययनक बाद एहि नहरि प्रणालीक प्रारूप 1961 मे तैयार भेल जाहि मे 112 कि.मी. मुख्य नहरि मे 32 कि.मी. नेपाल मे आ 80 कि.मी. मधुबनी जिला मे 12.50 करोड़ रुपया लागत स' तथा 9.76 लाख एकड़ कमांड क्षेत्रक 6.45 लाख एकड़ भूमि मे पटौनी करैत। पांचबेर मात्र राजनेता द्वारा फीता काटल गेल आ काज एखनो लटकले अछि। वर्ष 2005-06 मे पूरा होयबाक संभावना छल। मिथिलांचलक सब नदी घाटी योजना बिसंगति स' भरल

छैक। बाढ़िक रोकथाम, पटौनीक व्यवस्था ओ बिजली कोना भेटत?

मिथिला एक कृषि प्रधान अंचल। कृषि सब उद्योगक जननी ओ मानव जीवनक पोषक। विश्वक विकसित महत्त्वपूर्ण राष्ट्र कें तीव्र गति स' कृषिक विकास उद्योगीकरण कें सुदृढ़ आधार प्रदान कयलक। कोनो अल्प-विकसित भूभाग खाद्यान्न मे आत्मनिर्भरता कयने बिना अपन आर्थिक विकासक परिकल्पना नहि क' सकैछ। आर्थिक विकास मे कृषिक भूमिका एहि तथ्य स' परिलक्षित होइछ—बढ़ैत जनसंख्याक हेतु पर्याप्त खाद्य सामग्री उपलब्ध करब, औद्योगिक कच्चा मालक आपूर्ति, पूजी निर्माण मे सहायक, विदेशी विनिमयक स्रोत, औद्योगिक मालक हेतु बजार एवं अन्य पूजी प्रधान उद्योगक हेतु श्रमशक्ति उपलब्ध करब। कृषि उत्पादकता मे सुधार उद्योगीकरण कें प्रोत्साहित करबा मे ठोस साधन साबित भेल छलै। कृषि एवं आर्थिक विकास मे अत्यंत घनिष्ठ संबंध छैक। कृषि एवं उद्योग दुनू क्षेत्रक विकास अंतरसंबंधित अछि। प्रत्येक एक दोसर पर निर्भर। निष्कर्ष जे मिथिलांचलक आर्थिक विकास कृषिक समग्र विकास बिना संभव नहि। कृषि-व्यवस्था मे आमूल परिवर्तनक योजना कें कार्यान्वित करय पड़त।

प्राचीनकाल मे मिथिलांचल आर्थिक दृष्टि स' स्वावलंबी छल। प्रत्येक आवश्यक वस्तुक उत्पादन ओ निर्माण एतय होइत छल। समाजक खास-खास वर्ग उद्योग विशेष मे लागल छलाह। उद्योगीकरणक परिदृश्य बदलल छैक। एतयक संगठित, मध्यम, लघु तथा कृषि आधारित उद्योगक स्थिति दयनीय। मिथिलांचल मे 11 गोट कागतक कारखाना छल जाहि मे दरभंगाक अशोक पेपर मिल ओ समस्तीपुरक ठाकुर पेपर मिल पैघ छल। सब रुग्ण ओ मृतप्राय अछि। तीन जूट मील-दू कटिहार मे एवं एक समस्तीपुरक रामेश्वर जूट मिल बंदीक कगार पर, 17 चीनी मिल सरकारी क्षेत्रबला सब बंद। निजी क्षेत्रबला हसनपुर, हरिनगर अछि चालू। सरकारी क्षेत्रक चीनी मिल करोड़ो रुपया गन्ना किसानक राखि लेलक। फलस्वरूप एहि क्षेत्र मे कुसियारक उत्पादन कमि गेल। एहि अंचल मे जोल्हा लोकनि कें सस्त ओ सुलभ दर पर सूत देबाक हेतु पंडौल कोआपरेटिव स्पिनिंग मिलक निर्माण भेल। किछु दिन उत्तम उत्पादनक बाद बंद भ' गेल। जहिना बरौनी तेल शोधक कारखाना अपन क्षमता स' बेसी अशोधित तेल 498 कि.मी. बरौनी-हल्दिया पाइप लाइन स' उपलब्ध होइछ तहिना बरौनी खाद कारखाना—हिंदुस्तान उर्वरक निगमक एक इकाई—जकर उत्पादन क्षमता 4,00,000 टन छल संप्रति बंद अछि। जीर्णोधार नहि कयल गेल। तहिना मुजफ्फरपुरक भारत वैगन अंतिम सांस घीचि रहल अछि। राज्य सरकारक बोर्ड ओ निगम बंद अछि। उत्पादन ठप ओ कामगार बेकार छथि। वर्ष 1970क दशक मे औद्योगिक प्रांगणक स्थापना एहि उद्देश्य स' कयल गेल जे

औद्योगिक प्रांगण मे भूखंडक विकास, शेड निर्माण, आधारभूत सुविधा, कच्चामालक आपूर्ति ओ उत्पादित मालक बिक्री मे सहयोग देल जायत। दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर, बेगूसराय, पूर्णिया, किसनगंज, सुपौल, कटिहार, सहरसा, मधेपुरा एवं अररिया कार्य-क्षेत्र छल दरभंगा औद्योगिक क्षेत्र विकास प्राधिकारक। 619 भूखंड बना क' उद्यमी कें देल गेल। मुजफ्फरपुर मे बेला औद्योगिक क्षेत्र विकास प्राधिकार बनल। जकर कार्य क्षेत्र मुजफ्फरपुर, हाजीपुर, सीतामढ़ी, शिवहर, पूर्वी ओ पश्चिमी चंपारण छल। बेला प्रांगण प्राधिकार मे 310 एकड़ भूमि अधिग्रहीत एवं 400 लघु एवं मध्यम उद्योग खुजल छल। अधिकांश बंद भ' गेल। नगण्य चालू अछि। औद्योगिक विकासक हेतु आधुनिकतम आधारभूत संरचनाक लेल राज्य सरकार 40 करोड़ रुपयाक लागत स' 3 मेगा विकास केंद्र मुजफ्फरपुर, दरभंगा ओ बेगूसराय मे स्थापित क' रहल छल जे एखन तक कार्यरत नहि भ' सकल अछि। औद्योगिक विकासक मार्ग अंधकारमय।

एहि राज्य मे औद्योगिक वित्तीय साहाय्यक लेल बिहार राज्य वित्तीय निगम एवं बिहार राज्य वित्त उधार निगम—दू संस्था कार्यरत अछि। बैंकक माध्यम स' ऋण सेहो उपलब्ध होइछ। वित्त ओ उधार निगम मे राज्य सरकारक 1215.35 लाख हिस्सा पूजी लागल छैक। मध्यम ओ लघु उद्योग कें ऋण देने छैक। ऋण वसूली ठप्प छैक। बिहार राज्य वित्त निगम 7223 इकाई कें 439 करोड़ रुपया ऋण देने छैक। संस्था 1954 स' 1972 तक लाभ हासिल करैत छल। संप्रति विशेष उद्योग जकरा वित्तीय सहाय्य देने छैक बंदीक कगार पर छैक। संस्थाक ऋण वसूली नगण्य छैक। स्वयं रुग्ण भ' गेल अछि। उद्योगक जीर्णोद्धार कोना करत। राज्य सरकारक 50 निगम जाहि मे 32,845.45 लाख रुपया हिस्सा पूजी ओ IDBI तथा IFCक करोड़ो रुपयाक ऋण लागल छैक। बंद भ' गेल छैक। जनता जनार्दनक करक माध्यम स' ओसूल रुपया जल मे गेल।

मिथिलाक आर्थिक विकासक हेतु औद्योगिक संरचनाक पूर्ण अभाव। सड़क, रेल, यातायातक प्रबंध नहियेक बराबर। स्वर्णिम चतुर्भुज सड़क योजना एवं प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजनाक तहत किछु काज भेल अछि। काजक गति अन्य राज्यक तुलना मे नगण्य। बिजलीक क्षेत्र मे बरौनी ओ कांटी ताप विद्युत केंद्र रुग्ण। बिजली उत्पादन अधिकांशतः बंदे रहैछ। जल विद्युतक उत्पादन लेल कोसी आ गंडक मे प्रयास भेल, मुदा बांछित लक्ष्य उत्पादनक नहि हासिल क' सकल अछि। अर्थात् उर्जाक घोर अभाव। विशेषरूप स' सड़क यातायात कें लेल जाय। राज्यक सड़क यातायात कें राष्ट्रीय उच्चपथ मापदंडक अनुसार निर्माण करबा मे करीब 3200 करोड़ रुपयाक आवश्यकता। यदि राज्य सरकार कें ई राशि उपलब्धो भ'

जाय त' राज्य सरकार कें एकरा खर्च करय मे 60 साल लागि जयतैक। राज्यक पथ निर्माण विभाग सड़क मरम्मति मे 50-60 करोड़ रुपया तक खर्च करबा मे अपना कें असमर्थ पाबि रहल अछि। सालाना बजट मे निर्धारित राशि लैप्स क' जाइछ। समस्याक मूल मे छैक तयसुदा क्वालिटीक मुताबिक ठेकेदार कें काज आवंटित नहि क' राजनेताक लगुआ-भगुआ स' काज करायब।

संपूर्ण भारत मे सब स' अधिक भूमिहीन खेतिहर मजदूर अपनहि अंचल मे छथि। चौदह वर्षक जनता कार्यकालक दौरान शाइते कोनो निस्सन डेग उठायल गेल जे एहि भयावह स्थिति स' राहत भेटैत। अंचलक आर्थिक अविकासक एक प्रमुख कारण। भूमंडलीकरणक एहि दौर मे राज्य सरकार अन्य राज्य जकां कृषि पर अपन निर्भरता कम नहि क' सकल। कृषि एतयक सब स' पैघ घाटाक सौदा। बड्ड पैघ विडंबना जे सर्वाधिक श्रम शक्तिबला अंचल मे मजदूरक अभाव। रोजगारक अवसरक अभाव मे अत्यधिक श्रमिकक पलायन। कृषि आधारित उद्योग सेहो नहि पनपि रहल अछि, जखन कि 84 फीसदी आबादी खेती पर निर्भर।

एहि राज्य मे पंचायती राज व्यवस्था विफल भ' गेल। एहि व्यवस्था स' ग्रासरुट स' आर्थिक, शैक्षिणिक ओ सामाजिक विकास संभव छल। सत्ताक दलालक रूप मे एक नवीन वर्गक जन्म। मार-काट अशोभनीय। पैघ समस्या उपस्थित भ' गेल छैक। सांसद तथा विधायक कोषक खुलमखुला दुरुपयोग। निर्वाचित मुखिया, सरपंज आदि हत्या ओ लूट-खसोट मे संलग्न। प्रदेशक राजा पंचायते कें घोषित पूर्ण अधिकार देबा मे आनाकानी क' रहल छथि। जखन कि अन्य राज्य मे ग्रासरुट पर लोकतांत्रिक संस्था उत्तम काज कयने अछि ओ करय जा रहल अछि। गामक सर्वांगीण विकास मे पंचायत व्यवस्था उत्तम माध्यम सिद्ध भेल अछि।

राज्यक आर्थिक पिछड़ापन तथा निर्धनताक कारण बदहाल वित्तीय दशा अछि। पूजीगत व्यय नगण्य ओ राजस्व खाता मे लगातार बढ़ैत घाटा। पूजीगत व्यय कम भेला स' पूजी निर्माण दर निम्नतम स्तर पर पहुंचि गेल छैक। परिणामस्वरूप एहि राज्यक आर्थिक संवर्द्धन निम्न भ' गेल छैक। अपर्याप्त राजस्व सृजन होइछ। राजस्व घाटा बढ़ैत जा रहल छैक। राजस्व व्यय मे सेहो वृद्धि नहि। 1995-96 मे प्रति व्यक्ति राजस्व व्यय 884.29 रुपया छल। जखन कि ओहि वर्ष महाराष्ट्र मे 1874.82 तथा पंजाब मे 3416.83 रुपया छल। अपना राज्य मे केंद्र स' भेटय बला कर राशि तथा सहायता मे लगातार वृद्धि भ' रहल छैक। मुदा, राज्य सरकार अपन संसाधन कें बढ़ाबय मे असमर्थ अछि। केंद्र स' प्राप्त अनुदानक हेतु अपन मैंचिग ग्रांटस देबा मे असमर्थ रहलाक कारण केंद्र स' आबयबला आवंटित अनुदान वापस केंद्र कें लौट जाइछ। विकसित राज्यक तुलना मे एहि राज्यक व्यय स्तर अधिक

नहि भ' रहल छैक। एहि सरकार कें केंद्र स' भेटय बला राशि, यथा आयकर हस्तांतरण, केंद्रीय उत्पाद कर हस्तांतरण, ग्रांट्स इन एड आदि मे 1990क तुलना मे 89.46 प्रतिशत वृद्धि भेल छैक। राज्य सरकार वर्ष 2000-2001 मे विकास पर 29 प्रतिशत तथा स्थापना मद मे 71 प्रतिशत व्यय कयने अछि। योजना आयोग राज्य सरकार कें मात्र 10 प्रतिशत स्थापना खर्चक अनुमति देने अछि। बिहार सरकार अपन फाजिल कर्मचारी कें स्वेच्छा स' रिटायर करबाक' आकर्षक योजना लागू करय एवं ऋण माफीक हेतु केंद्र सरकार पर दबाव बनाबय। तखनहि ऋण जाल स' अपना कें मुक्त क' सकैछ।

योजना आयोगक अनुसार राज्यक वित्तीय संकटक अध्ययनक निष्कर्ष मे कहल गेल जे राज्य सरकारक घटिया ओ भ्रष्ट प्रशासन एहि संकटक हेतु जिम्मेदार अछि। प्रशासन राज्य सरकार पर पैघ बोझ बनल जा रहल छैक। तत्काल एहि मे कटौती परमावश्यक। मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव, सचिव, संयुक्त सचिव, अनुसचिव स' सेक्शन आफिसर ओ बाबू लोकनिक बीच लंबा प्रक्रिया मे कोनो निर्णय समय पर नहि भ' पबैत अछि। एहि प्रक्रिया मे संचिका मासोमास इमहर स' उम्हर टहलैत रहैत अछि। बेइमान अधिकारी संचिका कें दबा क' बैसल रहैत छथि। संचिका तखनि ससरैत अछि जखन संबंधित अधिकारी कें बांछित धन राशि अलग स' हुनका जेबी मे स्थान पाबि जाइछ। एहि प्रक्रिया मे निजी उद्यमी कें क्षति होइत छनि ओ सार्वजनिक योजनाक लागत कई गुणा बढ़ि जाइछ जकर बोझ राज्य सरकारे पर पड़ैत अछि। सरकारी तंत्र निकम्मा ओ निर्लज्ज भ' गेल अछि एवं मनमाना ढंग स' काज क' रहल छैक। राज्य सरकारक मुख्य ओ अन्य मंत्री कें देखय पड़तनि जे कुशलपूर्वक काज कर'क की पद्धति हैत। काज कयनिहार ईमानदार व्यक्ति कें प्रोत्साहन ओ बेइमान पदाधिकारी कें सजाक प्रावधान।

बिहार राज्यक विभाजन—बिहार एवं झारखंड—15 नवंबर 2000 कें भेल। एहि विभाजन स' आर्थिक भरपाइक हेतु बिहार सरकार केंद्र सरकार स' डेढ़ लाख करोड़ रुपयाक आर्थिक पैकेजक मांग कयने छल। योजना आयोग आर्थिक पैकेजक रूप मे बिहार कें 6 क्षेत्र मे सहायता देबाक फैसला कयलक। ई क्षेत्र—सड़क, बिजली, डेयरी, बागवानी, जल छाजन ओ पूर्वी गंडक नहरि। केंद्र सरकार राज्य सरकार कें अगिला पांच वर्ष मे 4000 करोड़ रुपयाक सहायता करत। मुदा राज्य सरकार द्वारा सहायता राशिक सदैव दुरुपयोग होइत रहल अछि। तें केंद्र सरकार एहि आर्थिक पैकेजक राशि कें केंद्रीय एजेंसीक माध्यम स' खर्च करत। योजना आयोग बिहार मे सड़कक खास्ताहाल कें देखैत 'कनेक्टीविटीक'क प्राथमिकता द' रहल छैक। कनक्टीविटीक तहत राष्ट्रीय राजमार्ग कें राज्य मार्ग स' ओ राज्यमार्ग

कें जिला मार्ग स' तथा जिला मार्ग कें ग्रामीण मार्ग स' जोड़बाक छैक। एहि योजनाक उद्देश्य छैक प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना स' गाम कें सोझे राजधानी दिल्ली स' जोड़बाक। एहि मे मिथिलांचलक सड़क सेहो छैक। रेलपथ सुविधा कें सुदूर क्षेत्र स' जोड़ल जा रहल छैक तथा अमान परिवर्तनक काज द्रुत गति स' भ' रहल छैक। मिथिलांचल मे आब छोटी लाइनक रेल पथ नहि रहत। वायु मार्ग मे पूर्णियाक विमानपतन तथा दरभंगाक हवाई अड्डा कें विकसित कयल जा रहल छैक। सीमाक्षेत्र किसनगंज कें सेहो हवाई मार्ग स' जोड़ल जा रहल छैक। उर्जाक क्षेत्र मे मुजफ्फरपुर स्थित कांटी ताप बिजली घरक उत्पादन क्षमता बढ़यबाक तथा रुग्णता दूर करबाक हेतु एनटीपीसक माध्यम स' तथा राजधानी पटनाक बिजली वितरण पावर ग्रिड कारपोरेशन द्वारा करबाक प्रमुख शर्त राज्य सरकार कें ओतय प्रस्तुत कयने अछि। गत 7 मास स' झीकातिरी भ' रहल अछि। राज्य सरकार एग्रीमेंट नहि क' रहल छैक। केंद्रक सहायता स' बागवानी विकास कार्यक्रमक हेतु मिथिलांचलक मुजफ्फरपुर, दरभंगा, मधुबनी ओ समस्तीपुर जिला चुनल गेल। कृषि आधारित उद्योगक माध्यम स' विकासक अवधारणा कें धरातल पर उतारबाक हेतु व्यावसायिक उत्पादनक हेतु दरभंगा मे 36 करोड़ रुपया योजना आयोग निवेश करत। राष्ट्रीय कृषि ओ ग्रामीण विकास बैंक 273 हेक्टेयर भूमि मिथिलांचलक पूर्वी भाग मे नारियल खेतीक विकास मे निवेश करत। सप्तकोसी डैमक हेतु केंद्रीय सरकार नेपाल सरकार स' समझौता क' निर्धारित अवधि मे परियोजनाक क्रियान्वन हेतु तत्पर भेल अछि। एहि स' मिथिलांचलक बाढ़ि, रौदी, सिंचाइ एवं जल विद्युतक आपूर्ति स' विकासक मार्ग खुजि जायत।

वर्ष 2000 मे जखन आठ करोड़ आबादीबला बिहार राज्य मे राजद–कांग्रेस गठबंधन सरकार न्यूनतम साझी कार्यक्रम बनौलक। ओकरे तहत राज्य औद्योगिक आयोग (डा. ईरानीक अध्यक्षतावला) ओ राज्य वित्त आयोग (डा. एस. सी. झा अध्यक्ष) गठन कयल गेल। डा. ईरानी 04 अगस्त 2001 मे अपन रिपोर्ट मुख्यमंत्री कें समर्पित कयल। एहि मे 15म खंड मे औद्योगिक नीतिक (पृष्ठ संख्या 125 स' 168) अनुशंसा कयल। झारखंड सरकार तत्काल एहि आयोगक अनुशंसाक अध्ययन क' अपन औद्योगिक नीतिक घोषणा कयल एवं तद्नुसार काज प्रारंभ क' देलक। बिहार सरकार पौने दू वर्ष एहि आयोगक अनुशंसाक अध्ययन मे लगौलक तथा 27 जून 2003 कें अपन औद्योगिक नीतिक घोषणा कयलक। यदि राज्य सरकार एहि आयोगक अनुशंसा कें शत–प्रतिशत क्रियान्वित करय तखन निसंदेह बिहार एक औद्योगिक राज्यक श्रेणी मे सूचीबद्ध भ' सकत। राज्य वित्त आयोग फरवरी 2002 कें अपन रिपोर्ट प्रस्तुत कयलक। सकल उत्पाद मात्र एक प्रतिशत जखन कि राष्ट्रीय

5.5 प्रतिशत। निर्धनता 43 प्रतिशत जे राष्ट्रीय 27 प्रतिशत अछि। 56.5 प्रतिशत एतय बाढ़ि पीड़ित छथि। कर्ज 1991–92 मे 12,237 करोड़ रुपया छल जे वर्ष 2000–01 मे 34,000 करोड़ रुपया भ' गेल। राज्य सरकार 3.5–5.00 अपन जमा राशि पर ब्याज आय करैछ आ कर्ज पर 12.5–14 प्रतिशत ब्याज भुगतान करैछ। विकासक राशि मात्र 25–30 प्रतिशत निवेश करैछ आ बाद बाकी राशि केंद्र कें वापस चल जाइछ। कारण अपन हिस्सा राशि नहि द' पबैछ। 53 बोर्ड स' निगम मे फसिल 32,846 करोड़ रुपया निवेश पर एको छदाम ब्याज तथा लाभांश अर्जित नहि करैत अछि। राजा अपना कें डाक्टर कहैत छथि आ लाठी हुनक आला। तखन जंगल राजक सुधार कोना हैत। एहि अनुचित वित्तीय व्यवस्था स' मिथिलांचल सेहो पीड़ित अछि।

मिथिला मे संपन्नता तथा विकास ओ पैसा एवं पूजीक अंतर बुझव आवश्यक। एतय संपन्नता बढ़ल अछि, किंतु विकास ओहि अनुपात मे नहि। राज्यक गाम तक पैसा बढ़ल मुदा शहर तक पूजी नहि बढ़ल। अप्रवासी मैथिल मजदूर जे प्रतिवर्ष लगभग हजार करोड़ रुपया अन्य राज्य स' उपार्जन क' लाबैत छथि, हुनका परिवार मे संपन्नता ठोस धरातलक निर्माण नहि क' सकल। पूजीक निर्माण नहि भेल। फलस्वरूप, यदि धनादेश पैसा आयब बंद भ' जाय, त' पुन: वैह भुखमरी। सरकारक कर्त्तव्य होइत छैक जे जे पैसा राज्य मे अबैछ ओकर विधिवत निवेश हो। आर्थिक रूप स' लाभकारी काज मे उपयोग कयल जाय। पूजीक रूप मे धरोहर बनि सकय। एहू मे राज्य सरकार विफल अछि।

अंग्रेज बहादुर काल स' अद्यपर्यंत एहि क्षेत्रक जनमानस कें शोषण कयल गेल। मात्र भ्रांति प्रचारित कयल गेल जे कोनो क्षेत्रक विकास मात्र खनिज संपदा पर निर्भर करैछ! यदि आरोप सत्य तखन पंजाब, हरियाणा ओ गुजरात कंगाल रहैत। जापान कें खनिज संपदा नहि छैक। मिथिलांचल प्राकृतिक संसाधन स' भरल–पुरल अछि। यदि एतयक उर्वरा भूमि, जल, मानव शक्ति आदि संसाधन कें कृषि पर ध्यान केंद्रित कयल जाइत तखन पंजाब–हरियाणा स' बेसी समृद्धशाली भ' सकैत छल। पंजाब मात्र अन्नक उगाही पर मंडी टैक्स, ग्रामीण विकास कर आदि लगा क' 800 करोड़ रुपया स' अधिक राजस्व प्राप्त करैछ। मिथिलांचल सेहो सुलभ रूप मे एहि स' अधिक राजस्व जमा क' सकैत छल। नदी मातृक देश होयबाक कारणे जल एतयक मूल्यवान संपदा। नेपाल स' समझौता क' बाढ़ि, रौदी सिंचाइ ओ जल–विद्युतक समुचित व्यवस्था संभव छैक। जल विद्युत सब स' सस्त उर्जा जे पर्याप्त रूप मे संभव कयल जा सकैछ। सूचना ओ बायोटेक्नोलोजीक संग कृषि आधारित उद्योग विकसित करबाक पूर्ण जोगार छैक। रुग्ण उद्योग कें आधुनिक ढंग स' पुन:

बृहत पैमाना पर चलायल जा सकैछ। नव-नव उद्योग निर्माणक संभावना छैक। किंतु वर्तमान राजा बिहार विभाजन पर मात्र विलाप कयल जे मिथिलांचल मे मात्र कोसी-कमला-बागमतीक जल आ बालु छैक। किंतु योजना आयोग, दिल्ली बिहारक सत्तारूढ़ राजाक विलाप स' सहमत नहि। योजना आयोगक अनुसार मिथिला मे Still north Bihar mithilanchal-will be leht with enormous pool oh human resources and harnessable water resources which, ih utilised properly, can bring rich dividends, to salvage, a lot oh sunrise investment is required, especially in water resources, agriculture and traditional craht, and oh course institutional rehorm. (Out Look, August 21, 2000, Page 36)

शिक्षाक क्षेत्र मे सेहो हम सब पुछआयल छी। हमर अतीत बड्ड उज्ज्वल छल। ऋग्वेदक दस मंडल मे तीन, विश्वामित्रक बनायल प्रख्यात गायत्रीमंत्र, याज्ञवल्क्य शुक्ल यजुर्वेद, वेदांतक आदि ओ आधार ग्रंथ ईशावस्योपनिषत् सहित शतपत ब्राह्मण, अनेक श्रौत, गुह्व ओ धर्मसूत्र, स्मृति ओ पुराण, जैमनिक पूर्व मीमांस, ओ शबरक भाष्य, कपिलक सांख्य, गौतमक न्याय ओ कणादक वैशेषिक दर्शन, कुमारिलक वार्तिक ओ टीका, वाचस्पतिक भामती, गंगेश-वर्द्धमान-पक्षधर-शंकर वाचस्पतिक नवन्याय एवं अनेक विद्वानक काव्य, निबंध आदि स' भरल-पुरल साहित्यिक जगत। जतय 'अपूर्णे पंचमे वर्षे...जगत्रयम' गुंजायमान छल। जतय पनिभरनी यात्री स' संस्कृत मे वार्त्तालाप करैत छलीह। ओतय वर्ष 2001क जनगणनाक अनुसार अशिक्षित मे 23 लाख लोकक वृद्धि 28.38 प्रतिशत एवं शिक्षित आबादीक दशकीय वृद्धि मात्र 10.04 प्रतिशत। शिक्षाक मामिला मे केरल देश मे प्रथम स्थान पर ओ बिहार (मिथिला सहित) 35म स्थान पर अर्थात सब स' अंतिम स्थान पर। हैत नहि कोना। जखन राज्य सरकार मैथिली भाषाक प्रति पटना उच्च न्यायालय मे मामिला हारि गेला पर उच्चतम न्यायालय मे एहि भाषाक विरोध मे अपील कयने अछि?

भवन विहीन, शिक्षक विहीन ओ छात्र विहीन विद्यालय मिथिलाक प्राथमिक शिक्षाक दयनीय स्थिति कें परिभाषित करैछ। समाजक सब वर्गक बच्चा कें मुफ्त शिक्षा सरकारी संचिका मे लेपटायल अछि। धरातल तक नहि पहुंचल छैक। सरकार बच्चा कें पाठशाला एवं विद्यालय दिस आकर्षित करबाक हेतु 13 महत्त्वाकांक्षी योजना करोड़ो रुपया खर्च क' चलौलक। मुदा संपूर्ण साक्षरता कोसो दूर अछि। बिहार सरकार मध्यान्न भोजन, जे केंद्र सरकारक सहायता स' 28 नवंबर 2001 मे उच्चतम न्यायालयक आदेश स' चलयबाक छल, नहि शुरू कयल। एहि माध्यम स' तीन लाभ—शिक्षाक स्तर मे सुधार, बच्चाक कुपोषण समस्या स' मुक्ति ओ सामाजिक समानताक भावनाक उदय। एहि योजना स' स्कूल आबयबला छात्रक

संख्या मे वृद्धि होइत यदि राज्य सरकार एहि योजनाक कार्यान्वयन करैत। संप्रति भारत सरकार द्वारा सर्वशिक्षा अभियानक अंतर्गत प्रारंभिक शिक्षा प्रत्येक शिशु तक पहुंचेबाक राष्ट्रीय कार्यक्रम चलायल जा रहल अछि। वर्ष 2003-04 मे मिथिलाक सब जिला मे एहि अभियान कें शामिल कयल गेल छलै। परिणाम साक्षरता वृद्धि भेला पर ज्ञात हैत!

वयस्क शिक्षा कार्यक्रम कें 1986 मे केंद्र आधारित स' बदलि क्षेत्र आधारित कयल गेल। वर्ष 1994-95 मे बिहारक 16 जिला मे संपूर्ण साक्षरता अभियान केंद्र सरकार संचालन कयलक। वर्ष 1988 मे राष्ट्रीय शिक्षा नीतिक अंतर्गत साक्षरता ओ सतत शिक्षा के स्थायी रूप देबाक हेतु 1812 जन शिक्षण निलयक स्थापना कयल गेल। गुणात्मक दृष्टिकोण स' प्राथमिक शिक्षा मे सुधारक हेतु बिहार राज्य द्वारा शिक्षा परियोजनाक माध्यम स' 7 जिला मे कार्यक्रम चालू कयल गेल। एकर अतिरिक्त जाहि गाम अथवा टोल मे विद्यालय नहि छल तथा जनसंख्या 300 स' अधिक छल, ओतय विशेष शिक्षा केंद्र खोलल गेल। प्राथमिक शिक्षा मे गुणात्मक सुधारक हेतु आपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना चालू कयल गेल। अनौपचारिक शिक्षाक 50,000 केंद्र स्वीकृत कयल गेल। दुनू स्कूलक परिवेश स' उपजल नव शिक्षा नीतिक कार्यान्वन मे मिथिला मे नवोदय विद्यालय—पं. चंपारण, मधुबनी, बिरौली मे कार्यरत अछि। 1990 दशक मे जोर-शोर स' चरवाहा विद्यालय खुजल आ 2000 तक सब मरणासन्न। उच्च शिक्षाक प्रचार-प्रसार हेतु दरभंगा, मुजफ्फरपुर ओ मधेपुरा मे विश्वविद्यालय खोलल गेल। दरभंगा मे संस्कृत शिक्षाक हेतु संस्कृत विश्वविद्यालय कार्यरत अछि। संस्कृत शिक्षाक हेतु दरभंगा मे मिथिला रिसर्च इंस्टीच्यूट कार्यरत अछि ओ एखन तक 175 पोथीक प्रकाशन कयने अछि। संप्रति फंडक अभाव मे निठ्ठला बैसल अछि।

समस्त बिहार राज्य मे शैक्षिक भ्रष्टाचार चरम सीमा पर अछि। 1980क दशक मे अंधाधुंध महाविद्यालयक अंगीभूत, वित्तरहित शिक्षा, आयुर्वेदक डिग्री प्राप्त शिक्षक भौतिक विभाग मे यूनिवर्सिटी प्रोफेसर, महाविद्यालय तथा इंजीनियरिंग शिक्षा कें अंगीभूत करबाक पैघ माफियागिरी धंधा भ' गेल। एखनो नहि रुकल अछि। स्कूल-कालेज मे पढ़ायब नदारद, मुदा गली-कुची मे कोचिंग इंस्टीच्यूट। मिथिला मे शिक्षा व्यवसाय-व्यापार भ' गेल अछि। फर्जी डिग्री बिकाइत अछि।

जन स्वास्थ्य सेवा मे एहि अंचल मे समुचित विकास नहि भेल छैक। चिकित्सा शिक्षा मे पछुआएल अछि। दरभंगा, मुजफ्फरपुर ओ कटिहार मे चिकित्सा महाविद्यालय तथा अस्पताल, बेगूसराय तथा दरभंगा मे आयुर्वेद महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर मे होम्योपैथी कॉलेज, दरभंगा, बहेड़ा मे डेंटल कॉलेज कार्यरत छैक।

एतेक पैघ आबादीक हेतु नाममात्र स्वास्थ्य शिक्षा व्यवस्था। राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन मे संतोषजनक काज भेल छैक। मुदा कालाजार रोकथाम मे ठोस काज नहि भेल छैक। यक्ष्मा, कुष्ठ रोग, फाइलेरिया, घेघा आदि संचारी रोग पर नियंत्रण हेतु पिवेन्टिव एवं क्यूरेटिव युनिट चलायल जा रहल अछि। स्वास्थ्य उपकेंद्र ओ रेफरल अस्पताल तथा जिला एवं अनुमंडल मे सरकारी अस्पताल चालू छैक। किंतु अस्पताल मे दवाइ नहि। रोगीक भोजनक उचित व्यवस्था नहि। डाक्टरक अभाव। डाक्टर निजी क्लिनिक मे व्यस्त। सरकारी अस्पताल मात्र मृत्यु कें बजबैछ। विश्व स्वास्थ्य संगठन ओ बिहार एड्स सोसाइटी द्वारा एचआईवी एड्सक बारे मे जागरूकता, भ्रमक निवारण तथा सुरक्षित यौन व्यवहार अंगीकृत करबाक हेतु सकारात्मक प्रचार-प्रसार भ' रहल छैक। राजमार्ग पर बचाव कार्यक्रम, व्यावसायिक यौनकर्मीक बचाव, झुग्गी-झोपड़ी मे रहयबलाक लेल बचाव तथा कार्यस्थल पर बचाव कार्यक्रम मुस्तैदी स' चलायल जा रहल छैक। पोलियोक टीकाकरणक सघन कार्यक्रम कार्यरत, किंतु पोलियो उन्मूलन नहि भेल छैक। प्रखंड स्तर पर परिवार नियोजन कार्यक्रम चलायल जाइछ तथा वर्ष 2001क जनगणना मे मिथिलाक आबादी मे 28.43 प्रतिशत वृद्धि आंकल गेल।

विकासक पटरी स' मिथिला पूर्णत: नीचा उतरि चुकल अछि। जातीय जोड़-तोड़, अपराध, अपहरण, फिरौती, रंगदारी विकसित भेल। तखन विकासक दर 2.75 अछि जे राष्ट्रीय औसतक आधा स' कम। औद्योगिक विकास लगभग शून्य। एहि राज्य मे 65,000 उद्योग बीमार। रोजगारक अवसर मे वृद्धि दर एक फीसदी। एतय प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष बिजली खपत 50 यूनिट, जे पंजाब मे 500 यूनिट तथा राष्ट्रीय औसत 350 यूनिट। भूमि सुधार मे असफलता पिछड़ापनक पैघ कारण। 70 प्रतिशत मजदूर कें कोनो काज नहि। राज्य सरकार मात्र केंद्र सरकार पर निर्भर। उद्यमिता विकास नदारद। बाढ़ि नियंत्रण पर भाकड़ा-नांगल परियोजना स' बेसी खर्च भ' चुकल तथापि सप्तकौशिकी योजना लटकले। विकासक मुद्दा पर झारखंड अलग राज्य बनल। मिथिलाक विकास सेहो तखनहि संभव।

(अक्टूबर-दिसंबर, 2005)

मिथिलाक आर्थिक विकास मे कृषिक भूमिका

मानव सभ्यताक आरंभ स' कृषि विशाल जनसंख्याक जीविकाक आधार रहल अछि। वास्तव मे कृषि सब उद्योगक जननी आ मानव जीवनक आधार थिक। कोनो अल्प-विकसित भूभाग खाद्यान मे आत्मनिर्भरता प्राप्त कयने बिना अपन आर्थिक विकासक कल्पना नहि क' सकैछ। विश्वबैंकक एक रपटक अनुसार कृषि विकासक बिना आर्थिक विकास संभव नहि। विश्वक विकसित महत्त्वपूर्ण राष्ट्र तीव्र गति स' उद्योगीकरण कें सुदृढ़ आधार प्रदान कयलक। आर्थिक विकास मे कृषिक भूमिका एहि सत्य स' परिलक्षित होइछ—बढ़ैत जनसंख्याक हेतु पर्याप्त खाद्य-सामग्री उपलब्ध करब, औद्योगिक कच्चा मालक आपूर्ति, पूजी निर्माण मे सहायक विदेशी विनिमयक स्रोत, औद्योगिक मालक हेतु बजार एवं अन्य पूजी-प्रधान उद्योग हेतु श्रमशक्ति उपलब्ध करब। कृषि उत्पादकता मे सुधार उद्योगीकरण कें प्रोत्साहित करबा मे ठोस साधन साबित भेल अछि। कृषि एवं उद्योग दुनू क्षेत्रक विकास अंतर्संबंधित छै। प्रत्येक एक दोसर पर निर्भर छै। मिथिलाक आर्थिक विकास कृषिक समग्र विकासक बिना संभव नहि। एत'क कृषि व्यवस्था मे आमूल परिवर्तन योजना कें अविलंब कार्यान्वित करय पड़तै।

मिथिलाक भौगोलिक क्षेत्रफल 58.50 लाख हेक्टेयर, जे समस्त बिहारक 62.36 प्रतिशत छैक। ग्रामीण क्षेत्र मे जीवन-यापनक मुख्य साधन कृषि। 65 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर आश्रित। बिहार सरकार कें प्राप्त होब'बला कुल आयक 37 प्रतिशत कृषि स' प्राप्त होइछ। एत' अर्थव्यवस्था मे कृषि क्षेत्रक सब स' पैघ योगदान। मुदा एहि जुड़ल कृषक सब स' बेसी फटेहाल। हिनक निर्धनता बढ़ैते जा रहल छै। पिछला किछु वर्ष मे दिनानुदिन काश्तकारक पैघ भाग कृषक मजदूर मे बदलि गेलाह। 1991 मे जत' 37.89 प्रतिशत काश्तकार छलाह, वर्ष 2001 मे से घटि क' 23.20 प्रतिशत भ' गेलाह। अर्थात् ग्रामीण क्षेत्र मे सब स' अधिक सीमांत आ उपसीमांत किसान बचि गेलाह। एहि तरहें घटैत संख्याक एकमात्र कारण

अलाभकर कृषि तथा एहि क्षेत्र मे रोजगारक अवसरक अभाव। रोजगारक मामिला मे मिथिलाक ग्रामीण क्षेत्र पूर्णत: कंगाल भ' गेल छै। अलाभकर कृषिक कारणें छोट-छोट काश्तकार जमीन बेचिक' ग्रामीण क्षेत्र स' रोजगारक हेतु पलायन अथवा अपना घरक जनी-जाति पर खेतीक काज छोड़ि दोसर राज्य मे नोकरीक तलाश मे चलि गेल छथि। स्थिति गंभीर आ भयानक।

मिथिला नदी मातृक अंचल। गंगा, गंडक, बूढ़ी गंडक, बागमती, कमला, बलान, कोसी, अधवारा समूहक नदी महानंदा आदि अनेक नदी स' पोषित एत'क भूमि बड्ड उपजाऊ। ई नदी सब प्रतिवर्ष बाढ़ि मे पांक आनि भूमिक उत्पादन शक्ति कें अक्षुण रखने अछि। एत' बलुआर, दोरस, मटियार, चिकनी माटि तथा उसर माटि अछि। माटि मे चूनक अंश छै। बलुआर माटि गहूम, जव, जई, दलहन आ तेलहनक हेतु उपयुक्त। चिकनी माटि उपरारि मे भदै फसिलक हेतु एवं नीचा मे धानक खेती हेतु श्रेयस्कर अछि। दरभंगा, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, खगड़िया, बेगूसराय जिलाक बलुआर माटिबला जमीन रबी फसिलक हेतु। कोसी क्षेत्रक बलुआर माटि बेसी उपजाऊ नहि अछि। पूर्णिया, सहरसा आ मधेपुरा जिलाक जमीन कम उपजाऊ छै। जूटक खेती मुख्य छै। सरिसो, तोड़ी, राहरि, कुर्थी, तिल आदि औस, मकई, जनेर, बूढ़ी गंडक आ लखन देई नदीक उत्तर मुजफ्फरपुर, मोतिहारी आ बेतियाक बलुआर भूमि मे होइछ। एकर अलावा एहि भूभागक माटि मटियार आ दोरस अछि। धनहर आ भीठ माटिक वर्गीकरण छै। पहिल नीचाक जमीन धानक हेतु आ भीठ भूमि मे रबी होइछ।

प्राकृतिक माटि, नदी जल आ श्रम संसाधन स' संपन्न मिथिला वस्तुत: कृषि क्षेत्र मे विकासक बिना अपन मानचित्र नहि बदलि सकैछ। कृषि उत्पादकता संग कृषि मे करोड़ो लोकक जीवन स्तर मे सुधारक बिना विकासक कल्पना अर्थहीन। कृषि उत्पादकता कें बढ़ा क' कृषि पर आधारित उद्योग कें बढ़ाबा देबाक संग कृषि मे पूजीनिवेशक गतिशीलता मे तेजी लाबय पड़त। समस्या मात्र बाढ़ि नहि, जलजमाव एक गंभीर समस्या छै। डैम नहि बनल, तटबंध बनि गेल। नदी-जलक उपयोग स' सस्त जल-विद्युत, उचित नहरिक निर्माण आदि मे जाहि स' पटौनी सुविधाजनक होइत, से नहि कयल गेल। तटबंधक रख-रखाव, तटबंधक दुनू कात वृक्षारोपण जाहि स' पर्यावरण सुरक्षित रहय, नहि कयल गेल। बाढ़िक जल कें सुरक्षित रखबाक योजना नहि बनल। बाढ़िक जल जियाने नहि, घर, जान-माल, उपजल खेती बाड़ी कें नष्ट करैत रहल। अनेक सिंचाइ योजना बनल, उचित समय पर कार्यान्वयन नहि भेल। उदाहरणस्वरूप 112 कि.मी. पश्चिमी कोसी नहरि। अध्ययन कयलाक उपरांत 1961 मे नहरि प्रणालीक प्रारूप तैयार भेल। 1984 मे 311 करोड़ रुपयाक लागत

स' 1995 तक काज पूरा करबाक छल, पांच बेर उद्घाटन भेल। एखन तक काज लटकले अछि। यैह हाल बागमती परियोजनाक संग भेल। बहुउद्देशीय नदी योजना एहि नदी मातृक देश मे स्वतंत्रता प्राप्तिक 59 वर्ष बीतलोपरांत नहि बनल। कृषि आ कृषि आधारित उद्योगक विकास नहि भेल। शासकक बड्ड पैघ शोषण। जखन कि मात्र भाखड़ा-नांगल परियोजना समय पर बनला स' पंजाब आ हरियाणा देशक उच्चकोटिक विकसित राज्य बनि गेल। सड़क एवं अन्य मूलभूत आवश्यकता पर ध्यान नहि देल गेल जाहि स' एहि क्षेत्रक अपेक्षित विकास नहि भ' सकल।

कृषि क्षेत्र मे रौदी आ दाही एक्के सिक्काक दू पहलू जे दुनू एहि अंचलक भूमिक लेल विपदाकारी। एकर स्थायी समाधान नहि कयल गेल छै। एहने विकटतम समस्याक समाधानक हेतु इसरायल, मिस्र आ चीनक सफलताक स्मरण करब प्रासंगिक आ अनुकरणीय। इसरायल आ मिस्र अपन ठोस कार्यक्रमक बदौलति अपन रेगिस्तानी क्षेत्र मे हरित क्रांतिक कीर्तिमान स्थापित कयने अछि। चीन अपन बेलगाम नदी पर पैघ-पैघ बान्ह बना तथा 10 हेक्टेयर क्षेत्र मे सघन वृक्ष लगा क' बाढ़ि एवं अकाल कें बहुत हद तक नियंत्रित कयने अछि। नदी मातृक क्षेत्र मे बास करबाक कारण बाढ़ि, दाही आ रौदी स' हमहु सब पीड़ित छी। हमहु सब एकर समाधान ताकि एहि अंतहीन विपदा कें स्थायी रूपें अंत क' सकैत छी। मुदा से उपाय नहि कयल गेल। 1946 मे केंद्रीय जल आ परिवहन आयोग द्वारा अनुशंसित चतराघाटी मे बाराह क्षेत्रक पास 750 फीट ऊंच, 1,10,000 एकड़ क्षमताबला कंक्रीट बान्ह, 1200 मेगावाट क्षमताबला जल-विद्युत संयंत्र तथा नेपाल-मिथिला मे 30,00,000 एकड़ भूमिक सिंचाइ क्षमताबला योजना कें नकारि देल गेल। तखन बाढ़िक रोकथाम, पटौनीक व्यवस्था आ जिबली आपूर्ति कोना होयत? सप्तकौशिकी डैम स्वीकृत भ' गेल छै। प्रारूप तैयार भ' रहल छै। एहि परियोजना कें पूरा भ' गेला पर क्षेत्रक सुख-समृद्धि संभव छै। संप्रति नेपाल मे राजनीतिक उथल-पुथल स' योजनाक पूरा होयबा मे विलंबक संभावना छै।

मिथिलांचल मे भूमिव्यवस्था आ भूमि सुधार एखन तक नहि भेल छै। सर्वप्रथम जमीन पर स' मध्यस्थ आ जमींदारी व्यवस्थाक समाप्ति 1956 मे भेल। छोट आ पैघ जमींदारक भूमि ल' लेल गेल। मुदा छोट कृषक, कृषि श्रमिक एवं भूमिहीनक बीच भूमि स्वामित्वक वितरण नहि भेल। एत'क कृषि व्यवस्था अनेक जटिलता स' जकड़ल छै। कृषि निर्धन व्यक्तिक रोजगारक साधन छै। सामाजिक आ आर्थिक रूप स' संपन्न व्यक्ति कृषक छथि मुदा खेती स्वयं नहि करैत छथि। कृषि कार्य स' जुड़ल लोक भूमिहीन तथा सीमांत कृषक बेसी भेटत। खेती कयनिहार भूमिहीन। बड्ड पैघ विडंबना छै। तें आवश्यकता छै कृषि मे संरचनात्मक सुधारक।

कृषि मे वृहत पूजी निवेशक। भूमि सुधार नहि भेल। चकबंदी एहि अंचल मे नहि भेल। सुरतगढ़ फार्म सदृश एकोटा फार्म एहि अंचल मे नहि बनायल गेल। कृषि बीज फार्म छल मुदा ओहि मे चरवाहा विद्यालय खोलल गेल। परिणाम भेल जे बीज उत्पादन आ विद्यालय दुनू बंद भ' गेल। कृषि विपणनक कोनो व्यवस्था नहि। बिचौलियाक भरमार। कृषक कें अपन उपजाक उचित मूल्य नहि भेटैत छनि। अमेरिकी कांग्रेसक प्रतिनिधि फैंक पैलोन मिथिलाक गाम घुमलाह। अपन अनुभव मे कहल—'एतयक किसान मे अपार क्षमता छनि, मुदा विपणनक अभाव छै।' व्यवस्थित कृषि उत्पादकक बजारक अभाव। कृषि क्षेत्र मे कोनो तरहक विकास नहि देख कृषि स' जुड़ल मजदूर जीविकाक हेतु अन्य राज्य मे पलायन करैत छथि।

भूमि कें जोत'बलाक स्वामित्व, उचित मात्रा मे लगानक भुगतान, भूमि हस्तांतरणक स्वतंत्र व्यवस्था एवं जोतक सीमा निर्धारण एक आदर्श भूमिव्यवस्थाक गुण मानल जाइत छै। भूमि सुधार कार्यक्रमक अंतर्गत बहुतो अधिनियम बनायल गेल मुदा एहि स' बांछित फल नहि भेटल। संयुक्त राष्ट्रसंघक भूमि संबंधी रपट मे सेहो कहल गेल अछि जे भूमि सुधारक कार्यक्रम मंद रहल। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री दांतबालाक मत छनि जे भूमि सुधार अधिनियमक सही कार्यान्वयनक अभाव मे परिणाम संतोषजनक नहि। अपन बहुचर्चित एसियन ड्रामा मे प्रो. गुर्नार मिर्डल अपन मत प्रस्तुत कयलनि जे भूमि सुधार अधिनियम स' काश्तकारक बीच बेदखलक लहरि उत्पन भ' गेल छै एवं तथाकथित खुदकाश्तक हेतु जमीन पुनर्ग्रहण कयल गेल। खुदकाश्तक जमीन पर बटाइदार आ कृषि श्रमिक काज करैत छथि। जमीनक सीमा निर्धारण स' बचबाक हेतु अनियमित आ अवैधानिक हस्तांतरण कयल गेल जाहि स' नगण्य अतिरिक्त भूमि प्राप्त भ' सकल। एखनो 1000 बीघा जोत'बला बहुतो लोक छथि। मुख्यत: पूर्णिया आ चंपारण जिला मे। भूमि सुधार कार्यक्रमक सफलताक हेतु भूमिक संबंध मे नवीन रेकर्ड तैयार कयल जाय, जिला आ राज्य स्तर पर कुशल प्रशासनिक व्यवस्था, गरीबक प्रति सही न्याय हेतु भूमि सुधार अदालत, खेतिहर आ बटाइ जोत'बलाक संगठन, जाहि कृषक कें भूमि आवंटन हो हुनका वित्तीय सुविधा, भूमि सुधार अधिनियमक क्षेत्रीय भाषा मे प्रचार, भूमि सुधारक निर्धारित कार्यक्रम एवं भूमि सुधार अधिनियम कें संविधानक नवम सूची मे सम्मिलित कयल जाय। 23 अगस्त, 1984 कें लोकसभा मे बिहारक 14 भूमि सुधार अधिनियम कें नवम सूची मे शामिल क' लेल गेल छै। गत 15 वर्ष स' सामाजिक न्यायक प्रणेता समाजवादी लोकनिक सरकार छल। आब जंगलराजक अंतक फुसियाहा नारा देब'वलाक सरकार अछि। किंतु, भूमिहीन एवं वास्तविक काश्तकार कें भूमिक स्वामित्व नहि भेटल। भूदान स' जमीन सेहो भेटल। बिहार

सरकार लग एकर खतियान नहि छै। दिसंबर 2002 मे सरकार आंकड़ा तैयार करौलक जे दान मे कतेक जमीन भेटल, किनका स' भेटल, किनका देल गेल तकर नाम, पता आ रकबाक संग। मात्र पूर्णिया जिला मे 27,639.10 एकड़ भूमि भूदान स' प्राप्त भेल जाहि मे मात्र 13,505.15 एकड़ भूमि भूमिहीनक बीच वितरित भेल आ बाद बाकी भूमि ओहिना पड़ल अछि।

कृषि उपज कें एकत्रित करब, ओकर श्रेणीकरण एवं प्रभावीकरण, बिक्रीक हेतु मंडी वा बजार धरि ल' जायब कृषि विपणनक मुख्य कार्यक्षेत्र भेल। एखन कृषि उपजक बिक्री गाम मे, मेला मे, मंडी मे, सहकारी माध्यम, सरकारी खरीद आ फुटकर विक्रेताक माध्यम स' होइछ, किंतु मध्यस्थक अधिकता, मंडीक कुरीति, बजार व्यय मे बाहुल्य, श्रेणीकरण आ प्रमाणीकरणक अभाव, भंडार सुविधाक अभाव, कृषकक रूढ़िवादी स्वभाव आदि कृषि विपणन मे बाधक अछि। सहकारी विपणन प्राथमिक सहकारी समिति, केंद्रीय सहकारी समिति, प्रांतीय सहकारी समिति एवं राष्ट्रीय सहकारी विपणन संगठन (नेफैड)क माध्यम स' होइछ। एहि स' विपणन लागत मे कमी, साहुकारक चांगुर स' छुटकारा, भंडारक सुविधा, उत्पादन मे वृद्धि आदि सुविधा स' कृषक कें कृषि विकासक मार्ग मे उत्साहित करैत अछि। कृषि मूल्यक स्थिरीकरणक दिशा मे प्रयास कयल गेल अछि—कृषक कें न्यूनतम मूल्यक गारंटी, सरकार द्वारा प्रमुख खाद्य वस्तुक क्रय हेतु मूल्य निर्धारण, उचित मूल्यक दोकान पर बिकयबला खाद्य पदार्थक बिक्रीक मूल्य निर्धारण एवं मूल्य कें एक सीमा मे रखबाक हेतु बफर स्टॉकक नीति अपनायल गेल अछि। सरकारक राशन व्यवस्था, न्यूनतम समर्थित मूल्य नीति, सरकारी खरीद आ बिक्री, बफर स्टॉक, क्षेत्रीय प्रतिबंध नीति स' कृषि उपज मूल्य स्थिरीकरण एक सीमा धरि प्रभावकारी रहल। एकरा आरो प्रभावकारी बनायल जा सकैछ जाहि स' कृषक, सरकार आ उपभोक्ता कें कम स' कम असुविधा हो।

मिथिलांचलक खेतिहर मजदूरक समुचित व्यवस्था पर ध्यान देने बिना कृषि विकासक कोनो योजना सफल कोना हैत? खेतिहर मजदूर तीन तरहक छथि। प्रथम, खेत मे काज कयनिहार यथा हरवाह, कटनी करयबला एवं अन्य। दोसर, कृषि संबंधी अन्य काज कयनिहार जाहि मे गाड़ीवान, घर छारयबला आदि। तेसर, बढ़ई, लोहार, कुम्हार आदि। एत' खेतिहर मजदूरक समस्या बहुत कठिन अछि। हिनका सब कें कम मजदूरी भेटैत छनि। 1950 मे अनुमान कयल गेल छल जे हिनक दैनिक मजदूरी एक रुपया 19 पैसा स' एक रुपया 31 पैसा तक छल। महिला कें मात्र 60 पैसा स' एक रुपया धरि। मजदूरी अन्न मे वा नकद मे देल जाइत छल। हिनका लगातार काज नहि भेटैत छनि। बेकारी विशेष रहैत छै। सरकार आ समाज द्वारा एहि पर

ध्यान नहि देल गेल छै। न्यूनतम मजदूरीक निर्धारण, काजक अवधि निश्चित करब, दासत्व भावना कें दूर करब, कुटीर आ पूरक धंधाक विकास, शिक्षा तथा स्वास्थ्य संबंधी सुधार, आवासक समुचित व्यवस्था, कर्जक बोझ कें समाप्त करबाक प्रयास, संगठनक निर्माण एवं भूमिहीन मजदूर कें भूमि देबाक व्यवस्था कयला स' खेतिहर मजदूरक सर्वांगीण विकास संभव अछि। प्रथम पंचवर्षीय योजना मे पुनर्वासक व्यवस्था, दोसर योजना मे न्यूनतम मजदूरीक व्यवस्था एवं बंजर भूमिक उद्धार, तेसर योजना काल मे कृषि एवं ग्रामीण विकास कार्यक्रमक माध्यम स' खेतिहर मजदूरक स्थिति मे सुधार जाहि मे लघु किसान एजेंसी द्वारा छोट-छोट कृषक लेल लाभार्थ योजना, पांचम मे वासभूमि दिआएबाक प्रयास, छठम एवं सातम योजना काल मे समन्वित ग्रामीण विकास एवं आठम पंचवर्षीय योजना मे खेतिहर मजदूरक स्थिति मे सुधार, जे ग्रामीण अर्थव्यवस्थाक एक प्रमुख अंग छथि एवं जनिक उन्नति एवं समृद्धि पर समस्त ग्रामीण अर्थव्यवस्थाक दारोमदार छल। की दशम पंचवर्षीय योजना तक से सब सफल भ' सकल? कोनो अंश मे नहि।

1919-20 मे स्वामी विद्यानंद मिथिलांचल मे घूमि-घूमि दरभंगाराजक जमींदारी शोषणक प्रतिवाद कयने छलाह। मधुबनी सबडिवीजन हिनक मुख्य कार्यक्षेत्र छल। लगान बढ़ेबा पर कोनो नियंत्रण नहि छल। राजक अमलाक गैर कानूनी असूली एवं बलजोरी किसान कें बेदखल करबाक प्रक्रिया छल। दाही-रौदीक समय लगान चुकेबा मे असमर्थ भेला पर भूमि कें नीलाम क' लेल जाइत छल। स्वामीजी द्वारा जमींदारी व्यवस्थाक खिलाफ जोरदार आवाज उठायल गेल। सामान्य रैयत कें शोषणक विरोध करबाक चेतना भेटल आ संगठित किसान सभा रूप लेलक। 1929 मे स्वामी सहजानंदक नेतृत्व मे बिहार प्रांतीय किसान सभाक गठन भेल जकर मुख्य मांग छल जमींदारी उन्मूलन, किसान स्वयं अपन जमीनक स्वामी होअय आ भूमिहीनक हेतु उपयुक्त रोजगारक व्यवस्था हो। आंदोलन चलैत रहल। सामान्य लाभ भेल। 1943-44 मे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा बटाइदारीक आंदोलन चलल। भोगेंद्र झाजीक नेतृत्व मे कम्युनिस्ट पार्टी छोट किसान, बटाइदार, खेतिहर जोन-बनिहारक बीच अपन नीक स्थान बनयबा मे सफल भेल। 1948 मे अन्हरी महंथक जमीन पर भेल हिनक संघर्ष ऐतिहासिक अछि। भूमिहीन, काश्तकार आ बटाइदारक समस्या बढ़ैत गेल। 9 सितंबर 1973 मे कांग्रेस सरकार एवं भाकपाक बीच समस्याक सौहार्दपूर्ण समाधानक हेतु एक समझौता भेल जकरा 'मधुबनी समझौता' कहल गेल। एहि समझौता स' भूमि समस्याक कतेक समाधान भेल से मूल्यांकनक विषय थिक मुदा एहि स' भूमि समस्याक स्वीकृति सर्वोच्च स्थान पौलक। औपनिवेशिक काल स' अद्यपर्यंत सरकार जे कृषि नीति अपनौलक ओ सब अंततः पैघ कृषि संकटक दुशचक्र मे फंसि गेल। गाम मे मजदूर-किसानक आंदोलन भेल। नव-नव कानून बनेबाक हेतु सरकार बाध्य भेल, नीति मे फेर-बदल कयल गेल तथापि कृषि सुधारक मामिला मे, बुनियादी दशा मे सकारात्मक परिणाम नहि आयल। खेत-खरिहान मे काज कयनिहारक हित मे कोनो काज नहि भेल। गामक गरीब, मजदूर, छोट आ मध्यम कृषक कें भीषण भुखमरी, तबाही, बेरोजगारी तथा अकाल स' कोनो राहत नहि भेटल। वर्तमान कृषि परिदृश्य एत'क अर्थनीति तथा देश मे पूजीवाद आ पूजीवादी स्वरूप कें बखानि रहल अछि।

भारत सरकारक राष्ट्रीय कृषि नीति पूर्णतः असफल रहल। 1990-2000 मे 1980-90क तुलना मे कृषि उत्पादन दर मे कमी भेल। खाद्यान्न उत्पादन वृद्धि 3.33 प्रतिशतक जगह 1.32 प्रतिशत पर पहुंचि गेल। कृषि अलाभकारी धंधा भ' गेल। उदारीकरण आ डब्लू.टी.ओ.क चुनौतीक बारे मे चर्चा करैत योजना आयोग अपन रपट मे स्पष्ट कहल अछि जे भारत तेजी स' अपन घरेलू बजार मे सुधार करय अन्यथा विश्व बजारक पाछू दौड़ला स' भारतीय कृषिक भविष्य पर पैघ संकट आयत। बजार आ प्रतिद्वंद्विता मे नहि डटि सकत। तकर अर्थ हैत पूजीवादी विकासक कमजोरी। योजना आयोगक मुताबिक भूमि सुधारक अभाव, गरीबी उन्मूलन योजनाक असफलता, ग्रामीण मजदूरी वृद्धि मे गतिक अभाव। सिंचाइ व्यवस्था मे सरकारी निवेशक कमी यथा मात्र 40 प्रतिशत कृषि योग्य भूमि मे सिंचाइ व्यवस्था, कृषि स' जुड़ल उपरी ढांचा—सड़क, नहरि, रिजर्वायर, नलकूप आदिक रखरखाव मे कमी, बिजली आपूर्ति, ऊर्जा संरक्षण मे उदासीनता, बंजर, परती, उसर भूमि कें कृषि उत्पादन योग्य नहि बनायब। बाढ़ि-रौदी स' बर्बादी आदि एत'क कृषि मे उदासीनता आ उपेक्षा दर्शाबैत अछि। फलस्वरूप, 2001-02 मे सकल राष्ट्रीय उत्पाद मे कृषिक योगदान घटि क' 24.2 प्रतिशत भ' गेल जखन कि कृषि पर निर्भरता 65 प्रतिशत आबादीक अछि। कृषि आ कृषकक संकट गंभीर भेल जा रहल छै। केंद्र स' ल' क' पश्चिम बंगालक बाम मोर्चा सरकार तथा अन्य राज्य सरकार 'जमीन जोत' बालक'क नारा कें बदलि क' जमीन बहुराष्ट्रीय कंपनी कें देबाक प्रयास क' रहल अछि। पश्चिम बंगालक वाम मोर्चा सरकार 1978-1982 तक ऑपरेशन बर्गा (बटाइदारी) खूब जोर-शोर स' शुरू कयलक। 1992 मे राष्ट्रीय सैंपुल सर्वेक्षणक अनुसार 30.6 प्रतिशत वर्गादारक पंजीकरण भ' सकल। जाहि मे भूमिहीन मात्र 16 प्रतिशत एवं पैघ बटाइदारक 71 प्रतिशत पंजीकृत भेल। एहि सुधार मे कोन वर्गक कृषक कें लाभ भेल, से स्पष्ट होइछ। बोरो (गरमा) धानक खेतिहर कें कोनो लाभ नहि। भूमि सुधार ओ भूमिहीन कें जोत जमीन उपलब्ध कराबय मे साम्यवादी सरकार असफल भ' गेल अछि। बिहार राज्यक समाजवादी सरकारक मुखिया स्वयं पैघ

जोतदार भ' गेल छथि। भूमिहीनक दुर्दशा आब अंतहीन कथा भ' गेल अछि।

कृषि विकास स' मात्र कृषक समुदाय कें वांछित सुख संपन्नता उपलब्ध नहि भ' सकैछ। एहि पर अर्थशास्त्री एकमत भ' गेल छथि। ई संपन्नता तखने संभव जखन कृषि आ ग्रामीण उद्योगक समागम कें वैज्ञानिक आ सही दिशा देल जाय। सालोभरि कृषि कार्य नहि रहला स' आ पारिवारिक बंटवाराक कारणें सीमांत किसानक संगहि भूमिहीन मजदूरक संख्या मे अप्रत्याशित वृद्धि भेल छै। गाम मे सुविधा आ साधनक अभाव मे ग्रामीण जन शहर भागि रहल छथि। ताहि दृष्टि स' ग्रामीण समाजक हेतु सालो भरि रोजगारक व्यवस्था परमावश्यक। गामक हेतु कृषि उद्योग एवं अन्य ग्रामीण उद्योगक हेतु प्रचुर संसाधन छै। एहन उद्योगक हेतु कच्चा माल आ सस्त श्रमशक्ति गाम मे उपलब्ध अछि। कृषि एवं ग्रामोद्योगक नव प्रौद्योगिकीक आवश्यकता आ जानकारी मात्र अपेक्षित।

मिथिलाक आर्थिक विकास गामक विकास स' साक्षात जुड़ल अछि। एत'क ग्रामीण विकास कृषि, पशुपालन, मत्स्यपालन, कुटीर आ लघु उद्योगक विकास पर निर्भर छै। आधारभूत संसाधनक उपलब्धता-कच्चा माल आ श्रमशक्ति छै। अभाव छै समुचित यातायात आ उर्जाशक्तिक। एहि स' ग्रामीण रोजगार मे वृद्धि हैत। गामक निर्धनता दूर हैत। श्रमिक पलायन नहि हैत। क्षेत्रक कायाकल्प हैत। कृषि आधारित उद्योगक विकास-विस्तार स' ग्रामीण विकास हैत। ग्रामीण बेराजगारी कें दूर करब एवं अर्थव्यवस्था मे सुधार आनबाक क्षमता कृषि आधारित उद्योग मे समाहित अछि।

प्राचीनकाल स' मिथिला मे कृषि आधारित उद्योग मद्धिम गति स' चलैत आबि रहल छल। गत 15 वर्ष मे कृषि आधारित उद्योगक भट्ठा बैसि गेल छै। कुसियार स' गुड़ आ चीनी बनायल जाइत छल। 18 चीनी मिल कार्यरत छल। आधुनिकीकरणक दृष्टि स' सरकार एकरा अपना अधीन कयलक। सब मिल जर्जर भ' गेल। बंद पड़ल अछि। गन्ना किसानक करोड़ो रुपया डूबि गेल। गन्नाक खेती बंदप्राय अछि। बांस, सावेघास, पुआर स' कागत बनायल जाइत छल। 11 कागतक कारखाना छल। एखन बंद अछि। पटुआक खेती पूर्णिया, सहरसा, सुपौल आ मधुपेरा जिला मे अधिक मात्रा मे होइत अछि। कटिहारक दू मिल बंद अछि तथा समस्तीपुरक जूट मिल बंदक कगार पर। मात्र पूर्णिया मे 28 छोट-छोट कारखाना कार्यरत छल। एखन बंद छै। किशनगंज मे 16000 एम.टी.ए.क जूट कारखाना निर्माणावस्था मे दम तोड़ि देलक। एत' फल, साग-सब्जी अत्यधिक मात्रा मे होइछ। जखन कि व्यावसायिक रूपें खेती नहि होइछ। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग विकसित नहि कयल गेल छै। खाद्य प्रसंस्करण उद्योगक स्थापना, विस्तार एवं आधुनिकीकरणक हेतु भारत सरकार दृढ़संकप अछि मुदा मिथिला मे किछु नहि कयल गेल। समस्तीपुरक मसाला उद्योग विकसित नहि

कयल गेल छै। दरभंगाक मखान उद्योग कें विकसित करबाक सुर-सारे मात्र भ' रहल छै। मिथिलांचलक मत्स्य उद्योग जे विख्यात छल, कोनो प्रोत्साहन नहि देल गेल। वैज्ञानिक विधिक अज्ञानता आ व्यापारिक महत्त्वक अभाव मे उत्पादन कम होइछ। आंध्रप्रदेशक सरकार एहि धंधा कें प्रोत्साहित कयलक। फलस्वरूप, गामोक हाट पर मिथिलाक माछ नहि, आंध्रक माछ उपलब्ध रहैत छै। पानक खेती कें व्यावसायिक रूप नहि देल गेल छै। हाजीपुर आ दलसिंगसराय मे आधुनिक ढंगक सिगरेटक कारखाना नहि खोलल गेल। किशनगंज जिला मे 10,000 एकड़ भूमि मे चाहक खेती आ 15,000 कृषक कार्यरत छथि मुदा, प्रसंस्करण इकाइक अभाव मे चाय उद्योग विकसित नहि भ' रहल छै। पशुपालनक व्यवस्था प्राचीने अछि। मुजफ्फरपुर आ बरौनी मे सरकारी क्षेत्र मे दूध स' बनल सामानक कारोबार चालू भेल छै। निर्यात स' व्यावसायिक लाभ हैत। केराक व्यावसायिक खेती प्रारंभ छै। पानक व्यावसायिक खेती शुरू नहि भेल अछि। नारियल, फूलक खेती, औषधीय वृक्षक उत्पादन, जलकुंभी स' खाद उद्योग, सीप बटन, सूर्यमुखी स' तेल, पशु आहार उत्पादन आ उद्योग, मधुमाछी पालन आदि कृषि आधारित उद्योग अविकसित अवस्था मे अछि। कृषि आधारित उद्योगक विकास-विस्तार स' ग्रामीण विकास हैत। ग्रामीण बेराजगारी कें दूर करब, श्रमिकक पलायन कें रोकब एवं अर्थव्यवस्था मे सुधारक क्षमता मात्र कृषि आधारित उद्योग मे समाहित अछि। कच्चा माल आ श्रमशक्ति गाम मे उपलब्ध अछि। आवश्यकता छै पूजी, नव प्रौद्योगिकी एवं आधारभूत संरचनाक।

(अप्रैल-सितंबर, 2006)

मिथिला मे सिंचाइ समस्या एवं समाधान

मिथिलाक भौगोलिक क्षेत्रफल 58.50 लाख हेक्टेयर अछि। हिमालय पहाड़ स' एतुक्का नदी सब 60,000 वर्गमील संप्रसारक नि:सृत होइछ आ गंगा मे विलीन भ' जाइत छथि। भूमि नवनिर्मित छैक। पांच लाख वर्ष पूर्व एतय समुद्र छल। गंगा, गंडक, कोसी, बागमती, कमला, बलान, तिलयुगा, महानंदा एतयक मुख्य नदी जे हिमालय स' नि:सृत होइछ आ अपना संग माटि, पांक आ बालू स' एहि समुद्र कें भरलक। भूमि उत्तर स' दक्षिण आ दक्षिण स' पूब ढलाउ होइत गेल। माटि बलुआर, दोरस, मटियार, चिकनी ओ ऊसर अछि। धनहर ओ भीठ भूमि सेहो अछि। औसत 54 इंच वर्षा होइछ। भूमि उपजाऊ अछि। एतय वर्षा अनियमित, अनिश्चित, आवधिक, अपर्याप्त एवं परिवर्ती होयबाक कारण किछु फसिल कें सिंचित स्थिति मे उपजयबाक लेल कृषि उपादानक समुचित उपयोग क' उपजाऊ अधिकतम करबाक हेतु तथा भूमि कें दुफसला बनयबाक हेतु सिंचाइ आवश्यक। वर्षा अनियमित भेला पर सिंचाइ आवश्यक। धानक फसिलक हेतु 1000 मि.मी. वर्षा परमावश्यक। कम भेला पर सिंचाइक जरूरति भ' जाइत छैक। रबी फसिल मे गहूंम फसिल, जे पूर्णत: सिंचित फसिल। तीन बेर सिंचाइ आवश्यक। कृषि प्रधान भूभाग एखन तक पटौनीक समुचित व्यवस्था स' वंचित आ मानसून वर्षा पर निर्भर रहबाक कारण लाखो टाकाक क्षति होइछ।

स्वतंत्रता प्राप्तिक पूर्व पोखरि, छोट नाला कें बान्हि, नलकूप आदिक माध्यम स' पटौनीक व्यवस्था चलैत छल। एहि क्षेत्र मे 19,823 पोखरि अछि, जाहि मे 10,733 निजी पोखरि आ बाद बाकी 9090 सरकारी पोखरि स' सिंचाइक व्यवस्था अनादि काल स' भ' रहल अछि। सब स' बेसी पोखरि पश्चिमी चंपारण मे 2913 एवं दोसर नंबर पर सीतामढ़ी जिला जतय 2906 अछि। एहि क्षेत्र मे चौर 36,470 हेक्टेयर क्षेत्र मे अछि जाहि मे वैशाली जिला मे मात्र 13,500 हेक्टेयर आ दोसर नंबर पर दरभंगा जिला जतय 1,241 हेक्टेयर भूमि अछि। 4,755 हेक्टेयर क्षेत्रफल

मे मोइन अछि। चौर मे जल सब समय रहैत अछि। एतयक नदी सभक जलसंग्रह क्षमता 44,006 वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल मे अछि। 1879 मे गंडक नदीक सहायिकी तेउर नदी पर बीयर बना क' 7050 हेक्टेयर भूमि मे पटौनीक हेतु 10 कि.मी. लंबा नहरि बनायल गेल। ओहि समय मे नीलक खेतीक सिंचाइ होइत छल। नीलक खेती बंद भ' गेल। गंडक ओतय स' घसैक गेलीह। जलापूर्ति घटि गेल। प्रथम पंचवर्षीय योजना काल मे नहरि पुनरुद्धार भेल जे संप्रति गंडक सिंचाइ योजनाक अंग अछि। 1897 मे कमला नदीक जल कें ओकर पुरान त्यक्त धारा मे प्रवाहित क' सिंचाइक लेल किंग नहरिक निर्माण कयल गेल। 10 कि.मी. लंबा बाहिका खोदि क' कमलाक व्यक्त धारा कें कमला नदी स' जोड़ि देल गेल जाहि स' 30 कि.मी. लंबा नहरि स' 8,800 हेक्टेयर भूमि मे सिंचाइक व्यवस्था कयल गेल। 1907 मे गंडक नदी स' त्रिवेणी नहरिक निर्माण भेल जाहि स' चंपारण जिलाक 1.09 लाख हेक्टेयर भूमि मे सिंचाइ होइछ। 1904 मे लाल बकेया नदी पर एक एनिकट बना क' 52 कि.मी. ढाका नहरि निकालल गेल जाहि स' 3200 हेक्टर मे खरीफ ओ 2400 हेक्टेयर मे रबीक पटौनीक व्यवस्था कयल गेल। संप्रति ढाका नहर गंडक नहरिक अंग बनि गेल छैक।

नलकूप-धरातल स' जलमृत तक छीद्र क' कें उर्जा चालित पंप द्वारा भूमि जल बाहर क' नलकूप स' सिंचाइ व्यवस्था। निजी ओ राजकीय नलकूप बनायल गेल अछि। निजी नलकूप सामान्यत: 8-13 सें.मी. व्यासक होइछ। उपरी जलमृतक उपयोग करैत अछि। एकर सिंचन क्षमता 05 हेक्टेयर भूमि। 1999 मे प्रमुख राजकीय नलकूप क्षेत्र मिथिलांचल मे कम बनायल गेल। बेगूसराय जिला, पूर्वी चंपारण, पश्चिमी चंपारण, सीतामढ़ी-रीगा क्षेत्र, मुजफ्फरपुरक बेलसंड-मोतीपुर-गोरौल क्षेत्र, मधुबनी-रहिका-जयनगर क्षेत्र, सहरसा-बांसापट्टी-गोबरगढ़-सुपौल-नरपतगंज-राघोपुर-किशुनपुर-चौहट्टा-त्रिवेणीगंज-अमराहा-बिहारीगंज क्षेत्र, दरभंगाक बथुआ-लदनियां क्षेत्र, पूर्णियाक नबाबगंज-अररिया-पूर्णिया क्षेत्र मे राजकीय नलकूप लगायल गेल छल। सरकारी नलकूपक रखरखाव दयनीय। उर्जाक अभाव। तखन पटौनी कोना हैत। वर्षाकाल मे पोखरि मे जल भरि जाइछ एवं एहि स' पोखरिक आसपासक भूमि मे पटौनी होइत छैक। कोसी अंचल मे बांस बोरिंगक माध्यम स' पटौनी कयल जाइत अछि।

स्वतंत्रताक पश्चात् जलीय समस्याक समाधान एवं सिंचाइक विकासक लेल पंचवर्षीय योजना चलायल गेल। एकर अंतर्गत धरातलीय जलक उपयोग क' कें सिंचाइक वृहद्, मध्यम ओ जलमोड़ योजना चलायल गेल। मिथिलांचल कें तीन पटौनी क्षेत्र मे विभक्त कयल जा सकैछ। प्रथम, पूब मे कोसी ओ महानंदा क्षेत्र,

दोसर पश्चिम मे गंडक क्षेत्र आ तेसर एहि दुनूक मध्य क्षेत्र जाहि मे चंपारणक पूर्वी भाग, मुजफ्फरपुरक उत्तरी भाग एवं दरभंगा जिलाक पश्चिमी भाग। हिमालय स' निकलल कोसी, गंडक, बागमती, कमला-बलान, बूढ़ी गंडक, अधवारा ओ महानंदा नदी सभ वर्षो स' एहि क्षेत्रक पोर-पोर कें सिंचैत रहल अछि। धरातलीय जलक अभाव एहि क्षेत्र मे नहि। अभाव अछि आधुनिक ढंगक सिंचाइ व्यवस्थाक। सर्वप्रथम 1947 मे सी.एच.भामा कोसी योजनाक प्रारूप प्रस्तुत कयल जाहि मे बाढ़िक रोकथाम, पनबिजलीक व्यवस्था ओ नेपाल तथा मिथिलांचल मे 30,00,000 एकड़ भूमि सिंचाइक प्रावधान छल। सरकार एकरा टारैत गेल। 1953 मे 'कोसी तटबंध योजना' स्वीकृत भेल तथा 14 जनवरी 1955 स' कार्य प्रारंभ भेल। सर्वप्रथम 43 कि.मी. लंबा पूर्वी नहरिक निर्माण 1957 मे शुरू कयल गेल। बराजक बाम भाग स' बथनाहा धरि निकालल गेल एहि मुख्य नहरि स' मुरलीगंज, जानकीनगर, पूर्णिया ओ सहरसा मे सिंचाइक हेतु शाखा नहरि निकालल गेल एवं 1964 स' सिंचाइ प्रारंभ भेल। चारू शाखा नहरि स' सहरसा, मधेपुरा, सुपौल, पूर्णिया ओ कटिहार जिलाक 22.69 लाख एकड़ क्षेत्रफल मे 2887 कि.मी.लंबा नहरिक जाल स' 15.13 लाख एकड़ भूमिक सिंचाइ भ' सकल। कोसी परियोजनाक मूल प्रारूप मे दरभंगा ओ मधुबनी जिला मे नहरि सिंचाइ प्रणालीक प्रावधान नहि जे 1961 मे स्वीकृत भेल। मात्र 6 बेर उद्घाटन भेल। एखन तक नहि बनल अछि। 112 कि. मी. मुख्य नहरि मे 32 कि.मी. नेपाल आ 80 कि.मी. भारत मे बनबाक छैक। नेपाल मे नहरि प्रणालीक काज पूर्ण भ' गेल छैक। मिथिलांचल मे एखनो लसकले अछि। सप्तकौशिकी डैम स्वीकृत भ' गेल छैक। प्रारूप तैयार भ' रहल अछि। एहि स' सिंचाइक उत्तम प्रबंध संभव हैत। कोसी योजना स' 7,02,400 हेक्टेयर भूमि मे पटौनीक लक्ष्य छल जाहि मे मात्र 1,89,000 हेक्टेयर भूमि मे जल पहुंचायल गेल अछि।

गंडक बराजक उपर नदी पश्चिमी कछेड़ स' मुख्य पश्चिमी नहरि, जे करीब 23 कि.मी. नेपालक तराइ मे पड़ैत अछि, झुलनीपुलक निकट भारतक सीमा मे प्रवेश करैछ। ओतहि दुटा नहरि मे बांटि उत्तरप्रदेश मे नहरिक जाल बिछायल गेल छैक। सिवान ओ छपरा जिलाक अंतर्गत 14.08 लाख एकड़ भूमि मे सिंचाइ करैत अछि। त्रिवेणी ओ तिरहुत मुख्य नहरि बनायल गेल अछि। गंडक परियोजनाक अंतर्गत मिथिलांचल मे 95 कि.मी. लंबा दोन शाखा स' 68,296 एकड़, 165 कि.मी. लंबा तिरहुत नहरि स' 16,95,000 एकड़ एवं 61 कि.मी. लंबा सारण मुख्य नहरि स' 14,08,000 एकड़ भूमि मे सिंचाइक प्रावधान भ' गेल छैक। लक्ष्य कें नहि प्राप्त क' सकल अछि। बागमती परियोजना मे 1,21,000 हेक्टेयर भूमि मे सिंचाइक प्रावधान छैक जाहि स' सीतामढ़ी ओ शिवहर जिला लाभान्वित हैत। तटबंध बनल

मुदा सिंचाइक योजना कार्यान्वित नहि भेल छैक। लखनदेई नदी स' सिंचाइक व्यवस्था नहि भेल अछि। एहि नदी मे सैदपुर स' आगू राजखंडक समीप उपयुक्त स्थान पर बीयर बना क' पटौनी व्यवस्था कयल जा सकैछ जाहि स' मुजफ्फरपुर जिलाक सैदपुर, औराई, राजखंड, कटरा एवं दरभंगा जिलाक जाले ओ कल्याणपुर प्रखंड लाभान्वित हैत। बूढ़ीगंडक तटबंध स' बाढ़िक सुरक्षा भेल किंतु पटौनी व्यवस्था नहि कयल गेल। चंपारण जिलाक पूर्वी-उत्तरी भाग, मुजफ्फरपुर जिलाक पूर्वी-उत्तरी हिस्सा एवं दरभंगा जिलाक पश्चिमी भाग मे सिंचाइ व्यवस्था कयल जा सकैत छल। 1951 मे कमला-बलान तटबंधक उत्तरी सीरा मे 48.67 लाख टाकाक लागत स' 300 मीटर लंबा एक बीयर बनायल गेल एवं बीयरक दुनू छोर स' मुख्य नहरि निकालल गेल छैक तथा एहि नहरि कें किंग्स कैनाल स' जोड़ि देल गेल छैक। एहि स' मधुबनी जिला लाभान्वित भेल। 1969-70 मे 85 प्रतिशत क्षमता स' खरीफक मौसम मे 71.16 एकड़ भूमि मे सिंचाइ भ' सकल। मधुबनी जिलाक खजौली लग कमला सिफनक निर्माण भेल। एहि स' दरभंगा ओ समस्तीपुर जिला सेहो लाभान्वित हैत। शीशापानी तटबंध एखनो लसकले अछि। महानंदा सिंचाइ परियोजनाक कार्यान्वन हेतु 1978 मे बिहार ओ पश्चिम बंगालक बीच समझौता भेल। कार्यान्वनयन आइ तक नहि भेल छैक।

अतिवृष्टिक करणें बाढ़ि, अनावृष्टिक कारणें रौदी मिथिलांचलक नियति छैक। एहि क्षेत्रक हेतु कोनो नवीन समस्या नहि। गरीबीक कारणें पीड़ित जनमानस एहि परिस्थिति स' अपना कें उबारवाक प्रयास करओ त' कोना? भरोस मात्र सरकारक सिंचाइ व्यवस्थाक मुदा उपरोक्त परियोजना लसकले अछि। सप्तकौशिकी डैम जाहि स' बाढ़िक रोकथाम, पटौनीक हेतु जल आ जलविद्युतक ठोस योजना अछि। भारत सरकार ओ नेपाल सरकारक संयुक्त प्रयासक बिना सफल नहि भ' रहल अछि। एहि क्षेत्रक लोकक दुख-दैन्य निवारणक हेतु एहि योजनाक अतिशीघ्र कार्यान्वन परमावश्यक। संगहि गंडक, कोसी, कमला आ अन्य नदी मे गाद जमा भ' जयबाक कारण मात्र 40 प्रतिशत पटौनीक सृजित क्षमताक लाभ भ' रहल छैक। राज्य सरकारक जल संसाधन विभाग पटौनी योजना पर खर्च कम ओ स्थापना पर बहुत बेसी व्यय करैत अछि। एहि योजना स' खेत तक पानि नहि पहुंचि सकल किंतु राज्य सरकारक अभियंता ओ राजनेताक घर जरूर भरि गेल।

(फरवरी, 2004)

सप्तकौशिकी डैम परियोजना

सर्वाधिक चंचला ओ चिरयौवना कोसी नदी नेपालक पूर्वीभाग एवं सिंगलीलाक पश्चिमी भाग मे हिमालय पहाड़ स' 22,888 वर्गमील संप्रसारक संग तिब्बत ओ नेपाल होइत 9,50,000 क्यूसेक जलक बहावक संग निकलैत अछि। चतरा स' कुरसेला धरि 170 मील बहैत अछि। प्रतिवर्ष 55 मिलियन सेडीमेंट जलक संग अनैछ जाहि मे 37 मिलियन टन अपन दुनू कछेड़ मे जमा करैत कुरसेला लग गंगा मे विलीन भ' जाइत अछि। चतरा नामक स्थान मे उतरि ओतय स' 42 किलोमीटर दक्षिण बहैत नेपालक सप्तरी जिला कें पार क' सुपौल जिला मे प्रवेश करैत अछि। मधुबनी ओ दरभंगा जिलाक सीमावर्ती क्षेत्र होइत सहरसा जिला मे प्रवाहित कुल 254 किलोमीटर यात्रा करैत कटिहार जिलाक कुरसेला लग गंगा मे समाहित होइत अछि। एकर कुल जलग्रहण क्षेत्र 70,409 वर्ग किलोमीटर अछि। तिब्बत ओ नेपाल मे ई 59.339 वर्ग किलोमीटर हिमखंड एवं वर्षाक जल समेटैत कुल जलग्रहण क्षेत्र 11,000 वर्ग किलोमीटर छैक। कोसी हिमालयक अनेक हिमपोषित धारा स' मिलि' बनैछ। एकर हिमखंड जलग्रहण क्षेत्र तीन अलग-अलग इलाका मे अवस्थित अछि। सन कोसी पहिल उद्‌गम धारा मानल जाइछ जकरा 1900 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रक हिमखंड स' जल भेटैछ। दोसर धार अरुण—जकर जलग्रहण क्षेत्र 3146 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल हिमखंड। तेसर प्रमुख धार तामूर जाहि मे 656 वर्ग कि.मी. हिमखंड। सन, अरुण ओ तामूर धारा स' कोसीक मुख्य प्रवाह कें क्रमश: 32, 58 ओ 10 प्रतिशत जल भेटैत अछि। सब स' पैघ जल स्रोत अरुण अछि। विभिन्न उद्‌गम (भोटिया, तंबा, दूध ओ वारुद कोसी) स' गंगाक संगम स्थल धरि कोसीक लंबाई 725 किलोमीटर अछि जाहि मे पहाड़ मे 425 किलोमीटर आ मैदान मे मात्र 300 किलोमीटर अपन यात्रा तय करैत अछि। यैह सप्तकौशिकी थिकीह। वर्ष 1731 स' वर्ष 1952 धरि 0.54 वर्ग किलोमीटरक दर स' कोसी नदी पश्चिम दिस 114 किलोमीटर (71 मील) हटि गेल छथि। वर्तमान समय मे महाकोसीक मुख्य धार

मिथिलाक भीमनगर लग प्रवेश करैत छथि।

कोसीक बाढ़ि कें रोकथाम करबाक हेतु 10-12 नवंबर 1937 मे पटनाक सिन्हा लाइब्रेरी मे तत्कालीन राज्यपाल श्री हैवेटक अध्यक्षता मे सम्मेलन भेल छल। एहि स' पूर्व 1893 मे डब्ल्यू. ए. इंगलिश बंगालक तत्कालीन अधीक्षण अभियंता कोसी समस्याक निदानक अध्ययन कयने छलाह। तत्पश्चात् 1945 मे भारतक तत्कालीन वाइसराय लार्ड वैबेल एहि क्षेत्रक हवाई सर्वेक्षण कयने छलाह। 1946 मे केंद्रीय जल, सिंचाइ आ परिवहन आयोगक अध्यक्ष श्री खोसला कोसी नियंत्रण योजना पर एकटा प्राथमिक रपट प्रस्तुत कयने छलाह। 6 अप्रैल 1947 क' निर्मली मे एहि सिफारिश पर विचारार्थ कोसी पीड़ितक एक सम्मेलन भेल, जाहि मे सी. एच. भाभा कोसी योजनाक नव प्रारूप प्रस्तुत कयलनि। एहि प्रारूपक अनुसार चतरा घाटी मे बाराह क्षेत्र लग 750 फीट ऊंच आ 1,10,000 एकड़ फुट क्षमतावला कंक्रीटक बान्ह बनयबाक छल। 1200 मेगावाट क्षमतावला पनबिजली संयंत्र तथा नेपाल ओ बिहार मे 30,00,000 एकड़ भूमि सिंचाइक प्रावधान छल। सिंचाइक हेतु चतराक ठीक नीचां भारत-नेपाल सीमा पर एक बराजक प्रस्ताव छल। 100 करोड़ रुपयाक लागत स' बन'वला ई योजना दस वर्ष मे पूरा होयबाक छल। बाराह परियोजना वर्ष 1946 स' 1953 धरि टलैत रहल। अंतत: 14 जनवरी 1955 मे हनुमाननगर मे 1148.5 मीटरक एकटा बराज आ कोसीक मुख्य धाराक दुनू कात 120 किलोमीटर लंबा पश्चिमी तटबंध एवं 100 किलोमीटर लंबा पूर्वी तटबंध 37.32 करोड़ रुपयाक लागत स' बनब प्रारंभ भेल। 1953 स' दिसंबर 1954 तक प्रारूपे तैयार होइत रहल। जलाशयक (डैम) कोनो प्रावधान नहि। सिंचाइक हेतु जलसंग्रह ओ बाढ़िक रोकथाम सेहो नहि। तें बाढ़ि मुक्ति अभियान ओ बान्हक प्रति भुक्तभोगीक विरोध। पश्चिमी कैनाल जे योजना आयोग स' 1961 मे स्वीकृत भेल जाहि स' मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर जिला लाभान्वित होइत एखन तक पूरा नहि भेल अछि।

बाराह परियोजना 1951 मे एहि हेतु स्वीकृत नहि भेल जे 100 करोड़ रुपयाक अनुमानित लागतक व्यवस्था सरकार कतय स' करत। तत्कालीन अभियंता द्वारा रूपांकित एहि योजना पर ककरो आंगुर उठायब सहज नहि छल। सरकार नहि चाहि रहल छल। तखन कहल गेल जे 1200 मेगावाटक अनुमानित बिजली उत्पादनक उपयोग, भविष्य मे दीर्घकाल तक प्रयोजन नहि। एखन बिजलीक हेतु हाहाकार मचल अछि। मिथिलांचल मे उद्योग-धंधा पनपि नहि सकल। द्रष्टव्य जे एहि कालखंड मे दामोदर, भाखड़ा-नांगल, हीराकुंड आदि बहुउद्देश्यी योजना बनल तथा ओहि क्षेत्रक लोक सब तरहें विकसित छथि ओ हमरा लोकनि कें कोसी, कमला

बागमतीक जल पीबा पर व्यंग्य कयल जाइत अछि।

वर्ष 1965 मे कोसी परियोजनाक मुख्य अभियंताक मत छल जे वर्तमान योजना कोसी समस्याक अंतिम समाधन नहि। 1974 मे कंवर सेनक अध्यक्षता मे गठित कोसी सलाहकार बोर्डक सुझाव छल जे बाराह क्षेत्र बान्हक सर्वाधिक उपयुक्त समय अछि। प्रशासन टालैत रहल। 1979 मे कोसीक पूर्वी तटबंध 122.4 किलोमीटर पर कोपड़ियाक निकट टूटैत-टूटैत बचल। 22 जुलाइ 1980 कें पूर्वी तटबंध टूटि गेल। टूटलाक बाद अभियंता ओ शासन मे हड़कंप मचि गेल।

1981 मे केंद्रीय जल आयोग कोसी डैम परियोजना प्रस्तुत कयलक। तत्कालीन मूल्यक आधार पर 4074 करोड़ रुपयाक अनुमानित व्यय सिंचाइ तथा बिजली उत्पादन मे विभाजित कयल गेल। दिसंबर 1991 मे नेपालक तत्कालीन प्रधानमंत्रीक सद्भावना यात्राक समय विद्युत परियोजना प्रतिवेदन तैयार कयल गेल। एहि परियोजनाक मुख्य उद्देश्य छल—बाढ़ि नियंत्रण तथा प्रबंधन, गाद नियंत्रण। सिंचाइ तथा जल विद्युत उत्पादन। बाद मे नेपाल सरकारक आग्रह पर सन कोसी डैम परियोजना सम्मिलित कयल गेल। जकर मुख्य लक्ष्य छल नेपालक पूर्वी तराइ मे सिंचाइक लेल कमला नदी मे पर्याप्त जल उपलब्ध करायब।

फरवरी 1992 मे काठमांडू मे आयोजित विशेषज्ञ लोकनिक संयुक्त बैठक भेल जाहि मे पुन: कोसी डैमक मुख्य उद्देश्य राखल गेल—बाढ़ि नियंत्रण तथा प्रबंधन गाद नियंत्रण, सिंचाइ तथा जल विद्युत उत्पादन। सप्तकोसी डैमक संगहि कोसी मे नौकायन पर विचार तथा इन्सपेक्सन रिपोर्टक प्रारूप दू-तीन मासक अभ्यंतर मे नेपाल द्वारा तैयार क' लेल जायत।

9 जनवरी 1997 मे संपन्न इन्सपेक्सन रिपोर्टक अतिरिक्त निर्णय भेल जे विस्तृत सप्तकोसी डैम परियोजना प्रतिवेदन तैयार कयल जाय आ आवश्यक निधि भारत सरकार अनुदान मे देथि। जून 2000 तथा 12-13 अक्टूबर 2001 मे जाहि इंस्पेक्सन रिपोर्ट कें अंतिम रूप देल गेल ओहि मे स्पष्ट छल जे पैघ जलाशय योजनाक लाभ नेपालक बाहर विशेष होयत एवं हानि एहि क्षेत्र मे। तदर्थ अनुमानित लाभक मूल्यांकन विभिन्न अवयव—विद्युत, सिंचाइ, बाढ़ि नियंत्रण तथा नौकायन कें ध्यान मे राखल जाय।

नेपालक दिस स' नौकायनक सुविधा पर बल एहि हेतु देल गेल जे अन्य लाभक अलावा नेपालक चतरा स' भारतक हल्दिया बंदरगाह तक जलमार्ग खुजि जायत। बाराह क्षेत्र मे एक जल विद्युत गृहक निर्माण 500 मेगावाट क्षमताक 6 मेन जेनरेटिंग सेट द्वारा 3000 मेगावाट विद्युत उत्पादन। पूर्वीय चतरा नहरि पर 50 मेगावाट क्षमताक दू मेन जेनरेटिंग सेट। चिरलंबित सप्तकोसी हाइ डैम परियोजनाक प्रयास चिन्हित भ' चुकल अछि, कार्यान्वयन लंबित छैक। आब भारत ओ नेपालक नेतृत्व ओ प्रशासकीय तंत्र मे ओ इच्छाशक्ति जागृत हेबाक छैक जाहि स' नेपाल ओ मिथिलाक वर्षों स' तबाह जनमानस अपन समृद्धिक स्वप्न साकार क' सकय। मात्र माटिक तटबंध स' बाढ़िक रोकथाम पर जोर देबाक जे सरकारक प्रवृत्ति अछि ओ हमरासभ कें नष्ट-नाबुतक देने अछि। कोसी, कमला आ खिरोइ पर पहिने तटबंध बनल। बाद मे बागमती पर सेहो बान्ह बनल। तटबंध रहितो कोसी, कमला ओ करेह नदी मिलि क' सागरक दृश्य बना देने अछि।

कुशेश्वरस्थानक विशाल क्षेत्र तथा दरभंगा, समस्तीपुर, सहरसा ओ खगड़िया जिलाक समीपवर्ती क्षेत्र जल-मरूस्थल मे बदलि गेल छैक। सालक अधिकांश भाग मइ स' अक्टूबर तक लाखो एकड़ भूमि जलमग्न रहैत अछि। बाढ़ि रोकयवला तटबंध स्वभावत: काफी जगह छेकैत छैक जे नदीक चपेट मे पड़ि जाइछ। फलस्वरूप तटबंधक बीच जमीन आ जनमानस बाढ़ि मे जीवन-यापनक हेतु बाध्य भ' जाइछ। एकर अतिरिक्त जेना कि कमला, खिरोइ आ बागमतीक उत्तरी क्षेत्रक विशाल भू-भाग मे बाढ़िक जल पसरि जाइछ। तटबंधक कारणें बाढ़िक जलक जमाव तीव्र आ व्यापक भ' जाइछ। यैह जल नेपालक विशाल भूभाग कें जलप्लावित करैत दक्षिण दिस बढ़ैत मिथिला मे तटबंधक दुनू भागक क्षेत्र कें जलमग्न क' दैछ। नेपाल तराइ क्षेत्र कें जलमग्न करयबला बाढ़ि उत्तर दिस नहि जा सकैछ। दक्षिणे दिस बहैत छैक। जखन तटबंधक बाहरी क्षेत्र मे सिंचाइक आवश्यकता होइत छैक तखन पैघ बाधा उपस्थित होइत अछि। तें जनमानस कें आब बाढ़ि निरोधक बान्ह स' मिठास नहि, पैघ खटास भ' गेल छैक।

सरकार कें बाढ़ि, सिंचाइ का बिजलीक अभावक उच्छेद करबाक हेतु बाराह क्षेत्र, शीशापानी ओ नूनथर मे बहुउद्देशीय परियोजना चालू करबाक हेतु राजनैतिक विद्वेष कें त्याग' पड़त। 18 जुलाइ 2002 मे विदेश राज्यमंत्री आश्वासन देल जे नेपाल स' आबयवला बाढ़ि स' बचयबाक हेतु पंचेश्वर ओ महाकाली परियोजना पर काज चलि रहल अछि, खर्च बेसी छैक तें विश्व बैंक स' चर्चा चलि रहल अछि। संगहि नेपाल मित्र राष्ट्र अछि तें ओकर स्वाभिमान ओ आंतरिक स्थिति कें नजरि मे राखि सम्मानजनक पद्धति अपनायल जायत। बात सत्य ओ यथार्थ किंतु भारत सरकारक चुप्पी स' नेपाल गोवार मे कमला परियोजना पर अलग बान्ह निर्माण नहि कयलक जाहि स' पूर्वी पश्चिमी कमला नहरि बेकार भ' गेल छै। स्वत: मूल कमला परियोजना शीशापानी (नेपाल) स' 9 कि.मी. मिरचैया स' आरंभ करबाक छल जे जयनगर स' प्रारंभ कयल गेल। फलस्वरूप 1987क बाढ़ि मे कमलाक पूर्वी ओ पश्चिमी तटबंध पिपराघाट स' झंझारपुर धरि 27 ठाम ढहि गेल छल।

22 जुलाइ 2002 मे बिहार विधान सभा मे सुधा श्रीवास्तव बाढ़िक भयावहताक चर्चा करैत सब राजनैतिक पार्टी स' आग्रह कयल जे दलगत भावना स' उपर उठि क' ठोस समाधान कयल जाय। जल संसाधन मंत्री स्पष्ट कहल जे कमला, बलान तथा बागमती तटबंध नेपाल क्षेत्र मे बनि गेला स' बिहार कें एखनि 50 प्रतिशत अधिक जलक डिस्चार्ज झेल' पड़ैत छैक। संगहि राज्यक 30 स' 70 प्रतिशत तटबंधक क्षमता शेष भ' चुकल अछि। तटबंधक कोनो भरोस नहि। बिहार अपना बुते बाढ़ि पर काबू नहि पाबि सकैछ। हिनका अनुसार कमला, बलान तथा बागमती नदी पर नेपाल मे तटबंधक बिहार सरकार पुरजोर विरोध कयने छल किंतु केंद्र सरकार मित्र राष्ट्र नेपाल स' समझौता क' लेलक आ नेपालक रक्षाक हेतु हुनक जल कें समुद्र तक ल' जयबाक जिम्मेदारी बिहार कें द' देलक। जे क्यो समझौता कयने होइ, मिथिलाबासी कें नारकीय जीवन ओ दहाइत-भसिआइत रहबाक हेतु बाध्य क' देने छथि।

8 अगस्त, 2002 मे केंद्रीय जल संसाधन मंत्री एक शिष्टमंडल कें आश्वस्त कयलनि जे बिहार मे बाढ़िक समस्याक स्थायी समाधानक हेतु सप्तकोशी परियोजनाक प्रयास चिन्हित भ' चुकल छैक आ 25 करोड़ रुपयाक लागत स' नेपालक बाराह क्षेत्र मे एक बहुउद्देशीय परियोजनाक प्रोजेक्ट तैयार कयल जायत। पूर्वमध्य रेलक हाजीपुर मे कार्यालय बनि गेला स' उत्साहित दलगत भावना स' काज करय मे प्रदेशक राजनेता लोकनि कें विश्वास बढ़ि गेलनि। पुन: बिहारक मुख्यमंत्रीक अध्यक्षता मे सर्वदलीय शिष्टमंडल सप्तकोसी डैम परियोजनाक हेतु निवेदन कयलक आ प्रधानमंत्री अपन स्वीकृत द' देलनि।

22 अगस्त, 2003 कें केंद्रीय जल संसाधन मंत्री भारतीय संसद मे घोषणा कयलनि जे उत्तर बिहारक बाढ़िक स्थायी समाधानक हेतु कोसी नदी पर एक ऊंच बान्ह निर्माणक लेल नेपाल सरकारक संग एक बहुउद्देशीय परियोजना—सप्तकोसी डैम परियोजना शुरू कयल गेल अछि। एहि हेतु संयुक्त परियोजना कार्यालय विराटनगर ओ काठमांडू मे रहत। कुल 142 अधिकारी कार्यरत रहताह जाहि मे 100 बिहार स' आ 42 अधिकारी नेपाल स' । एहि प्रस्तावित परियोजना मे करीब 24,600 करोड़ रुपया लागतक अनुमान छैक। ई बाराह परियोजना जे 1951 मे बनल छल लागतक अनुमान 100 करोड़ रुपया। पुन: 1981 मे एहि योजना पर व्यय 4074 करोड़ आंकल गेल छल। यैह आब 24,600 करोड़ रुपया भ' गेल अछि।

ब्रिटिश शासनकाल मे बाराह क्षेत्र परियोजना कें प्राथमिकता देल गेल। मुदा देश स्वतंत्र भेला पर सरकार भाखड़ा-नांगल ओ दामोदर घाटी परियोजनाक कार्यान्वयन कयलक जखन कि मिथिलांचल बाढ़िक अभिशाप स' ग्रसित रहल अछि। एहि अंचलक कुल क्षेत्रफल 58.50 लाख हेक्टेयर भूमि मे 44.47 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल बाढ़ि ग्रस्त रहैत अछि। अर्थात 77 प्रतिशत क्षेत्रफल मे बाढ़िक आशंका रहैत छैक। 22 अगस्त, 2003 कें उपप्रधान मंत्री स्वयं कहलनि जे बिहार सरकारक सूचनाक अनुसार एहि वर्षक बाढ़ि मे एखन तक 79 लोकक मृत्यु, 2.87 लाख हेक्टेयर क्षेत्रक फसिल प्रभावित, 12,860 मकान क्षतिग्रस्त आ लगभग साढ़े तीन करोड़ लोक बाढ़ि स' प्रभावित छथि। कोसी डैम परियोजना शुरू भ' रहल अछि। पैघ आनंदक विषय। कार्यान्वयन मे समय लागत। एहि अंतराल मे बाढ़ि पीड़ित कें ओहिना नहि छोड़ि देल जायत। आपदा राहत कोषक निर्धारित मापदंड ओ प्रक्रियाक अनुसार सामर्थ्य भरि सहायता देल जाय। धांधलीक कोनो गुंजाइश नहि राखल जाय।

विश्वस्त सूत्र स' ज्ञात भेल अछि जे कमला-बलान, बागमती आ बूढ़ी गंडकक हेतु नेपाल सरकार स' चर्चा चलि रहल अछि। केंद्रीय जल संसाधन मंत्री संसद मे प्रश्नोत्तर काल मे कहलनि—जाबत धरि मिथिलांचक सब नदी कें अमेरिकाक मिसीसीपी नदी योजनाक सदृश चेनेलाइज नहि कयल जायत खुशहाली नहि प्राप्त होयत। जल-विद्युत, ताप-विद्युत स' सात गुणा सस्त अछि। जलक भंडार एतय अछि। पनबिजलीक प्रचुर संभावना। देश मे जल ओ ताप विद्युतक अनुपात क्रमश: 25:75 प्रतिशत। 10 म ओ 11म पंचवर्षीय योजना मे जल विद्युतक उत्पादन वर्तमान 29,000 मेगावाट स' 34,000 मेगावाटक लक्ष्य छैक। 2007 तक देशक गाम-गाम मे तथा 2012 तक घरही बिजली पहुंचेबाक लक्ष्य अछि। देखा चाही सप्तकोसी हाइ डैम परियोजना अपन निर्धारित समयक अंदर बनि जाय आ एहि क्षेत्रक जनता कें बाढ़ि स' सुरक्षा भेटि सकय। संगहि पनबिजली आ नौकायन सुविधा स' इलाका संपन्न भ' सकय।

(अक्टूबर-दिसंबर, 2003)

मिथिला मे नदी योजना

मिथिला नदी प्रधान देश अछि। हिमालय स' ई नदी सब 60,000 वर्गमील सम्प्रसारक संग नि:सृत होइत अछि एवं 2000 मील मैदान मे बहैत गंगा मे विलीन भ' जाइत अछि। गंडक, बूढ़ी गंडक, कमला, बलान तिलयुगा, कोसी, बागमती एतयक प्रमुख नदी अछि। एहि नदी सब कें अनेक शाखा नदी छैक। सम्प्रति नदी सब अनियंत्रित रहबाक कारणें करोड़ो रुपयाक सम्पत्ति नष्ट भ' जाइत अछि। उद्योग कें शक्तिक रूप मे बिजली नहि भेटैत अछि। आवागमनक मार्ग अवरुद्ध भ' जाइत अछि। मत्स्य उद्योग कें भारी क्षति होइत अछि। विभिन्न संक्रामक रोगक वृद्धि होइत अछि। एहि स' देशक आर्थिक उन्नति मे बाधा पहुंचैत अछि। एहि विपदा स' त्राणक एकमात्र उपाय अछि मिथिलाक नदी सब कें नियंत्रित करब। बिना से कयने एहि भूभागक उन्नति एवं विकास नहि हैत।

सर्वप्रथम मिथिलाक नदी सब कें नियंत्रित करबाक एक बड्ड सुन्दर पंचवर्षीय योजना मिथला मैथिलीक अनन्य सेवी प्रोफेसर श्री लक्ष्मी नारायण सिंहक बनायल अछि। एहि मे कोसी, गंडक, बूढ़ी गंडक, बागामती, कमला बलान ओ तिलयुगा नदी कें नियंत्रित करबाक योजना अछि। एहि योजना कें कार्यान्वित करबा मे 90 करोड़ पूजी लगेबाक अनुमान कयल गेल अछि। एहि 17 लाख एकड़ भूमि मे नहरि द्वारा सिंचाइक सुविधा भेटत, 90 हजार किलोवाट बिजली प्राप्त हैत, 52,00,000 टन अन्नक उत्पादन मे वृद्धि हैत एवं लगभग 15 करोड़ टाकाक लाभ हैत। निम्नांकित तालिका स' ई योजना स्पष्ट भ' जायत :—

मिथिलाक नदी योजनाक विवरण

योजना	परिव्यय (लाख टाका मे)	सिंचाइक क्षेत्रफल (लाख एकड़ मे)	बिजली (किलोवाट मे)	बाढ़ि स' बचत (लाख टाका मे)
(1) कोसी	5,400	3,350	90,000	1,05,628
(2) गंडक	2,500	2,282	20,000	18,000
(3) अन्य (बूढ़ीगंडक, बाग-मती, कमला, बलान, तिलयुगा)	1,100	3000	10,000	24,000
कुल योग	9,000	7,932	90,000	1,47,628

मिथिलाक आय पर नदी योजनाक प्रभाव (लक्षांक मे)

योजना	खाद्यान्न मे वृद्धि	बाढ़ि नियंत्रण स' बचत	सिंचाइ स' आय मे वृद्धि	माछक व्यवसाय स' आय मे वृद्धि	बिजलीक उपयोग स' आय मे वृद्धि	आय मे संपूर्ण वृद्धि
कोसी	2,319	1,05,628	5,86,250	1800,00	240,00	8958,78
गंडक	1,590	18,000	3,99,350	400,00	80,00	4653,50
अन्य	1,296	24,000	3,50,000	600,00	40,00	4380,20
कुल योग	5,205	1,47,628	13,35,600	2,80,000	36,000	17,99,248

उपर्युक्त तालिकाक अध्ययन कयला स' ई स्पष्ट भ' जायत जे मिथिलाक उन्नति विशेष रूपें एहि योजना पर निर्भर करैत अछि। एहि सम्बन्ध मे आनक कोन कथा भारत सरकारक अभियंता सब एवं अमेरिकाक डा. जे.एल. सैवेज ओ डा.ए. निकेल एवं फ्रांसक श्री एम कोयन प्रभृति विशेषज्ञ लोकनिक स्पष्ट मत छनि जे मिथिलाक नदी सभक समुचित उपयोग स' एतय सम्पत्तिक उत्तरोत्तर वृद्धि हैत— मिथिला कें प्रकृतिक बड्ड पैघ वरदान प्राप्त अछि। केवल समुचित प्रबंधनक आवश्यकता अछि।

बिहार सरकार नदी योजना पर एक 'मास्टर प्लान' बनौलक अछि, जे एखन सचिवालयक कागत-कलम पर प्रगति क' रहल अछि। एहि मे नदी योजना कें तीन भाग मे विभक्त कयल गेल। प्रथम, गंडक घाटी योजना। एहि मे गोगरा और गंडक, गंडक और बूढ़ि गंडक, बूढ़ी गंडक और बागमती योजना अछि। एहि स' चम्पारन, मजफ्फरपुर, दरभंगा एवं भोजपुरक सारन जिला लाभान्वित हैत। दोसर, अधवारा घाटी योजना। एहि मे बागमती और कमला, कमला और बूढ़ी गंडक योजना सम्मिलित अछि। एहि स' दरभंगा एवं उत्तरी मुंगेर जिला लाभान्वित हैत। तेसर, कोसी नदी योजना। एहि मे भुतही बलान और कोसी, कोसी और महानन्दा अबैत

अछि। एहि स' दरभंगा, पूर्णिया एवं सहरसा जिला लाभान्वित हैत। एहि प्लान कें सफल भेला स' 10,340 लाख एकड़ कृषि योग्य भूमि मे स' 64,00,000 एकड़ भूमि कें सिंचाइक सुविधा भेट सकत।

सम्प्रति मिथिला मे नदी योजना निम्नांकित स्थिति मे अछि:—

कोसी नदी योजना

ई नदी हिमालय मे नेपालक पूर्वीय एवं सिंगलिलाक पश्चिमी भाग स' 22,888 वर्ग मील सम्प्रसारक संग निकलैत अछि। एहि नदीक तीन मुख्य धार त्रिवेणी मे मिलैत अछि एवं बाराहक्षेत्र होइत सर्वप्रथम चतरा नामक स्थानक मैदान मे अबैत अछि। एकर जलक बहाव 9,50,000 क्यूसेक अछि। ई पूब मे महानन्दा स' एवं पश्चिम मे तिलयुगा धरि सतत अपन धार बदलैत रहैत अछि। गत एक सय वर्ष मे ई नदी 70 मील पश्चिम चलि आयल अछि एहन अनुमान कयल जाइत अछि। चतरा स' कुरसेला तक 170 मील बहलाक बाद ई गंगा मे कुरसेला पुल लग विलीन भ' जाइत अछि। ई नदी समय-समय पर मिथिलाक दू स' तीन हजार वर्गमील भूमि एवं तराइ भागक तीन सय स' पांच सय वर्गमील भूमि कें क्षतिग्रस्त करैत अछि। सर्वप्रथम 1896-97 मे एहि नदी कें नियंत्रित करबाक प्रयास कयल गेल। एकर बाद 1937 मे, लेकिन कोनो लाभ नहि भेल। 1944 मे एहि क्षेत्र मे बहुत जोर बाढ़ि आयल छल एवं एहि भूभागक दयनीय स्थिति छल। 1945 मे कोसी-पीड़ित सहायता-समिति बनल। ई समिति कोसी-पीड़ित भूभागक क्षेत्रफल, जनसंख्या, क्षति संबंधी प्रामाणिक संख्या एकत्रित कयलक। दिसम्बर 1945 मे एहि समितिक दिस स' मिथिलाक त्यागी एवं कर्मठ समाजसेवी डा. लक्ष्मण झाक अध्यक्षता मे एक प्रतिनिधि मंडल पटना मे नेहरू जी स' भेंट कयल तथा एक स्मृति-पत्र देल। ई स्मृति-पत्र कोसी समस्याक प्रथम वैज्ञानिक विवरण छल। नेहरूजी ध्यान पूर्वक पढ़ल एवं पूछल—

'What would you like me to do ? I am at your disposal. Not just now. When you come to power, as we are sure you would do soon remember us and our suhhering and relieve us oh the calamity brought by the Kosi, was reply. 'Aye that is the least that is to be expected oh a congressman, Said Nehru.

किछु दिनक बाद नेहरूजी कें दिल्लीक गद्दी भेटल। ओ अपन वचन कें बिसरि गेलाह। कोसी स' क्षति दिनोंदिन बढ़ैत गेल एवं ओ एहि इलाका स' एकत्रित कयल करक रुपया भाखरा-नांगल, हीरा कुंड आदि योजना पर खर्च होयब लागल। 1952

मे मिथिला-मैथिलीक आंदोलन एहि देशक निर्भीक एवं कर्मठ नेता डा. लक्ष्मण झाजीक नेतृत्व मे खूब जोर स' शुरू भेल। एहि स' पटनाक एवं दिल्लीक नेहरू सरकार चेत गेल। भारत सरकार सी डब्ल्यू पीसीक अभियंता कें कोसी योजनाक विवरणक लेल, नवंबर 1953 मे नियुक्त कयल। ई लोकनि एहि योजनाक एक संशोधित रूप उपस्थित कयल। दिसंबर 1953 मे भारत सरकार द्वारा ई संशोधित योजना स्वीकृत भेल। एखन एहि अनुसार कोसी नदी पर काज चलि रहल अछि। जाहि मे निम्नलिखित काज हैत—

(1) हनुमाननगर स' तीन मील उपर एक बान्हक निर्माण। ई बान्ह तीन मील नाम हैत जाहि मे 3200 फीट कंक्रीट हैत।

(अ) एहि बान्ह स' उपर तथा नीचा जे बान्ह बान्हल जायत तकरा संबद्ध करत (ब) बाढ़िक संग जे बालू अबैत अछि तकरा रोकत तथा नदीक उतार-चढ़ाव पथ कें अपेक्षाकृत चौरस बनायत। (स) कोसीक 5000 स' 1,00,000 क्यूसेक जल कें पूर्वीय भाग मे स्थित चारि प्राचीन धार घेमुरा, तिलावे, परुवाने और मेंगा— मे खसायल जायत। एहि स' सिंचाइक अतिरिक्त सुविधा भेटत।

(2) दू बान्ह बान्हल जायत—एक पश्चिम मे झमटा तक, दोसर पूरब मे बनगांव तक। एकर लंबाई करीब 152 मील हैत। एहि दुनू बान्हक बीच तीन मील स' 10 मील तक अंतर रहत।

(3) पूर्वीय नहरि योजना।

(4) भीमनगर स' अररिया तक एक नहरिक निर्माण हैत ओ चारि शाखा—सुपौल, प्रतापगंज, पुरनिया, अररिया—द्वारा नहरिक सुविधा जनता कें पहुंचायल जायत।

(5) बेल्काक निकट जतय संप्रति अत्यधिक भूमिक ह्रास भ' रहल अछि तकरा रोकबाक हेतु पहाड़ मे तथा भीमरनगर लग बान्ह बान्हल जायत।

एहि योजना पर अनुमानित खर्च 4,476 करोड़ टाका हैत। एहि स' 1,375 लाख एकड़ भूमि मे सिंचाइ हैत। Gross commanded area 1,823 लाख एकड़ भूमि अछि। अनुमान अछि जे खाद्यान्नक उत्पादन मे 10,730 लाख मोन वार्षिक वृद्धि हैत। मार्च 1959 तक 1,507 करोड़ टाका व्यय भ' चुकल अछि। भारत सेवक समाज एहि योजना पर अनेक काज कयलक अछि। National Projects Construction Corporation Ltd. 1958 मे 490 लाख टाकाक कार्य कयलक अछि।

कोसी नियंत्रणक ई योजना बड्ड निम्नकोटिक बनल अछि। बाढ़ि नियंत्रणक अत्यंत प्राचीन पद्धति अपनायल गेल अछि। योजनाक वैह पद्धति अपनायल गेल अछि जे पद्धतिक विषय मे कहल जाइत अछि जे मिथिलाक कियो पराक्रमी नेता

चतरा गद्दी स' गंगा धरि बान्ह बनाब', चाहि रहल छलाह जकर भग्नावशेष 'बीर बान्ह' एवं 'मयूरनी खत्ता' प्रसिद्ध अछि। दामोदर, हीराकुंड, भाखरा–नांगल योजना मे जे जलकोष—सेतु पद्धति अपनायल गेल से एहि मे नहि कयल गेल। एहि योजनाक अनुसार चतरा–हनुमाननगर–झमटा–कुरसेला बला नदीक लंबाई 150 मील अछि। एकर दुनू दिस रक्षा बान्हक मध्य भूमिक औसत चौड़ाई 9 मील रहत। झमटा तक एहि बाढ़ि ग्रस्त भूमि (हनुमाननगर स' उत्तर 20 मील और दक्षिण 60 मील)क क्षेत्रफल 450 वर्ग मील अछि। एहि मे करीब तीन लाख एकड़ भूमि कें बाढ़ि मे भसियेबाक हेतु छोड़ि देल जायत। प्राचीन सोझ धार कें छोड़ि एखुनक टेढ़ धारा कें स्थायी बनयबाक हेतु 3,00,000 एकड़ भूमि कें नष्ट करबा मे सरकारक की नीति अछि, से अस्पष्ट अछि। कोसीक पश्चिमी नहरि बना क' 12,00,000 एकड़ भूमिक सिंचाइक व्यवस्था कयल जा सकैत छल। जाहि मे 12 करोड़ टाका खर्चक अनुमान छल, लेकिन ई योजना खटाइ मे फुलि रहल अछि। सरकार कहैत अछि जे टाकाक अभाव अछि, लेकिन मुख्य प्रशासक कें पटना स' वीरपुर (योजनाक मुख्य कार्यालय) दस खेप महीनवारी यातायात करय पड़ैत अछि। प्रत्येक खेप मे 600' टाका खर्च होइत अछि। संगहि संग अधीक्षण एवं कार्यपालक अभियंता कें पटना यातायात मे हजारों टाकाक खर्च होइत अछि। एहन अनुपयोगी सब खर्चक अनुमान क' करीब प्रतिमाह एक लाख टाका एहि बाढ़ि पीड़ित जनताक नष्ट भ' जाइत अछि। योजनाक मुख्य कार्यालय मे मुख्य प्रशासक कें नहि रहलाह स' मात्र ई खर्च होइत अछि। जखन कि हिनका हेतु बीरपुर मे बंगला बनायल गेल अछि। एहन–एहन अनेक कोषक दुरुपयोग एवं पटना सरकारक धांधली बाढ़ि पीड़ित निरीह जनताक उपर भ' रहल अछि जे एक पृथक लेख मे स्पष्ट करब।

गंडक योजना

गंडक नदी हिमालयक केंद्रीय भाग स' पश्चिम मे धौलागिरीक चोटी और पूरब मे मन्ना और रसु आगढ़ीक चोटी 14612 वर्गमील सम्प्रसार क्षेत्रक संग निकलैत अछि। ई सोमेश्वर पहाड़क पश्चिम भाग होइत मैदान मे उतरैत अछि। एतय ई त्रिवेणी नाम स' प्रसिद्ध अछि। ई नदी 192 मील मैदान मे बहैत अछि ओ हाजीपुरक निकट गंगा मे विलीन भ' जाइत अछि। एहि नदी कें नियंत्रित करबाक हेतु सरकार 1871 स' सोचि रहल अछि। 1907क बाढ़ि बड्ड भयंकर छल। जाहि मे बगहा एवं छितौनी घाट होइत गोरखपुर जयबाक रेलवे लाइन नष्ट भेल छल, जे एखन तक ओही स्थिति मे अछि। सरकारक प्रयास असफल होइत रहल। 1947 मे जखन राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय सरकारक खाद्य एवं कृषि मंत्री छलाह एहि नदी कें नियंत्रित करबाक

सुझाव देने छलाह। बहुत दिन तक सरकारक कागत–कलम पर प्रगति कयलाक बाद 4 दिसंबर, 1959 कें भारत एवं नेपाल सरकारक बीच एहि योजना पर समझौताक बाद हस्ताक्षर भेल। ओहि दिन स' गंडक योजनाक काज शुरू भेल। एहि स' मिथिला, अवध, भोजपुर एवं नेपालक एहि भूभागक बाढ़ि पीडित जनता लाभान्वित हैत। योजना आयोग एकर सिफारिश मे कहल जे सब स' सस्त योजना हैत एवं The irrigation cost is Rs. 125-per acre oh the command area. बिहारक अभियंता द्वारा एकर प्रारूप बनायल गेल अछि।

भारत एवं नेपालक सीमा पर भैंसालोटन नामक स्थान मे बान्ह बनयबाक योजना अछि। भारत मे सब स' उच्च यैह बान्ह हैत—Cisten level स' 30 फीट उपर। बान्हक लंबाई 2800 फीट हैत। त्रिवेणी स' रक्षाक हेतु एक बान्ह बान्हल जायत। चारि गोट नहरि बनायल जायत। प्रथम 18 मील पश्चिमी नहरि जे भैरवा जिला स' जायत। दोसर, 53 मील पूर्वीय नहरि जे बारा, परसा एवं रौतहट होइत जायत। तेसर, सारन नहरि योजना जे अवध मे 80 मील तक जायत। चारिम एक पृथक पूर्वीय नहरि योजना अछि जाहि स' चंपारन, मुजफ्फरपुर एवं दरभंगा जिला लाभान्वित हैत। एहि स' नेपाल मे अनुमानित 1,43,000 एकड़ (जाहि मे मिथिलाक बारा, परसा एवं रौतहट जिलाक 1,03,000 एकड़ भूमि, मिथिला मे 31,00,000 एकड़ (एहि मे भोजपुरक सारन जिला सम्मिलित अछि) एवं अवध मे 8,00,000 एकड़ भूमि मे सिंचाइ हैत। एहि स' 20,000 किलोवाट बिजली प्राप्त हैत। दू टा विद्युत शक्ति उत्पादन गृह (Power House) बनत। नेपाल क्षेत्र मे बिजली खपत बढ़यबाक हेतु भारत सरकार नेपाल स्थित विद्युतशक्ति उत्पादन गृह स' भैंसालोटनक पास एखनुका मिथिलाक सीमा तक और सुगौली स' रक्सौल तक परेषण लाइन (Transmission Line) बनयबाक योजना बनेलक अछि। एहि योजना मे 51 करोड़ टाका लगबाक अनुमान अछि एवं यदि कोषक सुविधा भ' सकत त' पांच वर्ष मे ई योजना पूरा भ' जायत। लेकिन बिहार सरकार एहि योजना पर 40 कोटि टाका खर्च करबाक निश्चय कयलक अछि। अक्टूबर 1960 तक एहि योजनाक प्राथमिक काज मे 4407 लाख टाका व्यय भ' चुकल अछि। एहि योजना मे कोष जुटायबाक हेतु बिहार सरकार गंडक बौंड (Gandak Bond) बेचबाक निश्चय कयलक अछि। एहि हेतु भारत सरकार एवं रिजर्व बैंक स' अनुमति भेटि चुकल छैक। प्रथम वर्ष मे पांच कोटिक बौंड बेचल जायत। एहि बौंड पर ब्याज भेटत, लेकिन आयकर स' मुक्त नहि हैत। योजना पर काज चलि रहल अछि।

बागमती योजना

बागमती नदी नेपालक उत्तर पूर्वीय भाग स' 1700 वर्ग मील उद्गम भूमिक संग निकलैत अछि। ई नदी 155 मील मैदान मे बहैत अछि। ई रौतहट, सरलाही, मुजफ्फरपुर एवं दरभंगा जिला होइत बेलाही कुसेश्वरस्थानक दक्षिण-पूब मे कोसी नदी स' मिलैत अछि। एकर बाद ई एकटा अलग धार बनबैत अछि एवं तिलकेश्वर मे तिलयुगा स' मिल जाइत अछि। एहि नदी मे बहुत जोर बाढ़ि अबैत अछि, जाहि स' एहि इलाकाक करोड़ो टाकाक क्षति होइत छैक। लेकिन दुर्भाग्यवश पटनाक सरकार एहि योजना कें तेसर पंचसाला योजना मे स्थान नहि देलक। नेपालक गोरखा सरकार एहि नदी कें नियंत्रित करबाक एक योजना बना रहल अछि। एहि योजना कें बनयबा मे इटलीक विशेषज्ञ लोकनि एहि सरकार कें मदति कयलकनि अछि। गौड़ जिला स' 12 मील दूर मंगलपुर करन्हैया मे एक बान्ह बनयबाक योजना अछि। एहि स' रौतहट जिलाक संपूर्ण भाग, बारा जिलाक पूर्वीय भाग एवं सरलाहीक अधिकांश भाग मे सिंचाइक सुविधा भ' सकत। एहि स' एहि इलाकाक 3,00,000 एकड़ भूमि मे सिंचाइ हैत। एहि योजना मे ई सरकार 6,50,000 नेपाली रुपया खर्च करबाक अनुमान कयलक अछि। योजनाक प्रारंभिक काज शुरू भ' गेल अछि।

कमला-बलान तटबंध

कमला-बलान मे सरकार बान्ह बान्हलक अछि। एहि स' जनता कें कोनो लाभ नहि भेल अछि। कींग कैनाल मे सुधारक आवश्यकता छैक। ई नहरि कमला-बलान स' निकालि क' रतनसारि नामक पोखरि मे खसायल गेल अछि। ई पोखरि झीलक सदृश अछि। ई नहरि ध्वस्त भ' गेल अछि। यदि एहि नहरि कें कमला-बलान तटबंधक स्लुईस गेट स' निकालि क' रतनसारि पोखरि मे मिला देल जाय ओ पुनः एहि पोखरिक पूब मे नहरि निकालि क' दूर तक बढ़ायल जाय त' हजारों एकड़ भूमि मे सुविधा स' सिंचाइ भ' सकत। एहि पोखरि कें पैघ जलागार बनायल जा सकैत अछि। एहि तटबंध कें आगू तक नहि बढ़ायल गेल अछि जाहि स' बहेड़ा थानाक करीब 40 गाम एहि बेर बाढ़ि स' क्षतिग्रस्त भेल छल। दरभंगाक समाहर्त्ता एवं पटना सरकारक सिंचाइ मंत्री एहि दिस ध्यान देथु जाहि स' अग्रिम वर्ष ई इलाका क्षतिग्रस्त नहि हो।

भुतही-बलान तटबंध

पटनाक सरकार 1956 मे एहि तटबंध योजना कें स्वीकृत कयलक। एहि योजना मे 52,000 टाका खर्चक निश्चय कयल गेल छल। ई बान्ह दरभंगा जिलाक बलान

पट्टी स' नरहिया (फुलपरास) तक पांच मील बनयबाक छल। लेकिन बिहार सरकार एहि योजना पर एखन तक काज शुरू नहि कयलक अछि, जाहि स' 15 लाख टाकाक क्षति एहि बेरक बाढ़ि स' भेल अछि। 50,000 जनसंख्या प्रभावित भेल अछि। 40,000 एकड़ उपजाऊ भूमि बंजर भ' गेल। एहि स' बड़ही, रामनगर, पुसा, धनसाही, ब्रह्मपुर, ड्योढ़, सुरियाही, धानखोर पट्टी आदि ग्राम क्षतिग्रस्त भेल छल। सरकार कहैत अछि जे कोषक अभाव मे नहि कयल जा सकैछ। ई सरकारक अन्यायपूर्ण दलील मात्र अछि। एहि क्षेत्रक जनता एहि अन्यायपूर्ण नीतिक लेल आंदोलन करबाक निश्चिय कयलक अछि।

मिथिलाक अन्य मुख्य नदीक उद्गम स्थान एवं प्रसार एहि तरहें अछि। बूढ़ी गंडक नदी सोमेश्वर पहाड़क पश्चिम भाग हर्हा दर्रा (Harha pass)क समीप स' 900 वर्गमील संप्रसारक संग निकलैत अछि। एकर धार बड्ड भयानक अछि एवं 270 मील मैदान मे बहलाक बाद खगड़ियाक समीप गंगा मे विलीन भ' जाइत अछि। लंबाई मे ई मिथिलाक सब स' पैघ नदी अछि। चंपारण जिला मे सिकरनाक नाम स' प्रसिद्ध अछि। कमला नदी सिंदुलिगढ़ी पहाड़ीक समीप स' 1200 वर्गमील संप्रसारक संग निकलैत अछि, त्रिवेणी मे एकर तीन धार आबि क' मिलैत अछि एवं सीसापानी मे मैदान पर अबैत अछि। एकर मुख्य धार जयनगरक पूब होइत बहैत अछि ओ बाबूबड़ही—राजनगरक उत्तर पूब मे बलान स' मिल जाइत अछि। एकर पुरान धारक नाम जीवछ अछि। खजौली, राजनगर, मधुबनी, पंडौल और तारसराय होइत ई झामटा मे कोसी स' मिल जाइत अछि। एकर दोसर पुरान धार जयनगर एवं मधुबनीक पश्चिम स' एवं दरभंगाक पूब (गौंसा घाट) बहैत बागमती स' मिल जाइत अछि। बलान उदयपुर गढ़ीक दक्षिन-पश्चिम पहाड़ी स' निकलैत अछि एवं मुखसरीक मैदान मे अबैत अछि। ई बाबूबड़हीक पास कमला स' मिलैत अछि एवं संयुक्त धार भीठभगवानपुरक दक्षिन कोसी मे मिल जाइत अछि। भुतही बलान उदयपुरक गढ़ीक पहाड़ी स' निकलैत अछि आ निर्मली ओ घोघड़डीहाक बीच रेलवे लाइन कें पार करैत कोसी मे विलीन भ' जाइत अछि। तिलयुगा उदयपुर गढ़ीक पूब महाभारत पहाड़ स' निकलैत अछि आ सप्तरी ओ सहरसा जिला होइत निर्मलीक पूब कोसी मे मिल जाइत अछि। महानदी हिमालय पर्वतमालाक चिमेत्यक पास कार्सियांग करमोंक पूब महाल्दोरम् पहाड़ी स' निकलैत अछि आ गंगा मे विलीन भ' जाइत अछि। ई नदी 220 मील मैदान मे बहैत अछि। कनकई, मेची, चेंगा, बालसुन एकर शाखा नदी अछि। गंगा नदी मिथिलाक दक्षिण मे 220 मील मे बहैत अछि आ बंगालक खाड़ी (गंगासागर) मे विलीन भ' जाइत अछि।

मिथिलाक नदी आ नदी योजनाक संक्षिप्त विवरणक अधार पर ई स्पष्ट भ'

जाइछ जे मिथिलाक उन्नति एहि पर निर्भर अछि। एहि स' सिंचाइ, बिजली आ यातायात सुविधा भेट सकत। लेकिन एहि योजना सबहक हेतु एकमात्र असुविधा अछि जे ई 60,000 वर्गमील संप्रसार क्षेत्र संप्रति नेपाल मे पड़ैत अछि, जे कहियो नहि छल। सब स' प्राचीन ग्रंथ वेद मे कहल अछि—मिथिलाक उत्तर मे हिमालय, नेपाल नहि। शासनक सुविधाक लेल इतिहास प्रसिद्ध सुगौली संधिक अनुसार अंग्रेज सरकार एहि मिथिलाक कें उर्वर भूभाग कें नेपालक गोरखा कें द' देल। खुट्टा-खुट्टी आ पायाक द्वारा भारत आ नेपालक सीमा रेखा बनल। कोनो दू देशक बीच पहाड़, नदी आ अन्य भौगोलिक आधार पर सीमा रेखा बनैत अछि। देशक सीमा रेखा भैयारीक भिन्न-भिन्नाउज नहि जे खुट्टी आ टाट स' बनत। एहि स' ई भूभागक अनेक क्षति होइत अछि। कोनो नदी योजना शुरू करबाक हेतु नेपालक गोरखा स' समझौता करय पड़ैछ। पटनाक सरकार आ दिल्लीक नेहरू सरकार कें एहि माटि-पानिक हेतु कनेको ममता नहि, कोनो लाभ नहि बुझैछ। एहि दुनू सरकार मे अपना लोकनिक प्रतिनिधि सभ आन्हर छथि। ते हेतु समस्त मिथिलावासी आपसक गोलसी कें छोड़ि मिथिलाक एहि भूभागक हेतु आंदोलन शुरू क' देथि। एकरा अंतरराष्ट्रीय आंदोलन कहि शत्रु दल झांपय चाहताह। लेकिन 14 जून 1960 क' काठमांडू मे साम्यवादी द्वारा Indo Nepalase Gandek Pact Projectक हेतु हड़ताल कयल गेल, ओ की छल? किछु दिन पूर्व नेपालक महाराज कोइराला मंत्रिमंडल कें बर्खास्त कयल जकर एक कारण मे नेपाली पत्रक एक संपादकीय मे कहल गेल छल जे गंडक योजना सदृश राष्ट्र-विद्रोही आचरणक हेतु मंत्रिमंडल बर्खास्त भेल। ई केहन प्रचार भेल? की आबहु अपना माटि-पानिक हेतु ममता जागृत नहि होइत अछि? आउ सबजन मिलि क' अपना छाती परक ई कील-कांटा आ पाया कें उखाड़ि फेंक दिअ। मिथिलाक उन्नतिक हेतु ई महत्त्वपूर्ण काज हैत। एहि स' सिंचाइ, बिजली, पाथर, उद्योग कें चलयबाक हेतु कच्चा माल सुविधा स' आ परिपूर्ण भेटि सकत।

(मार्च, 1961)

गंडक योजना

पांच लाख वर्ष पूर्व हिमालय ओ विंध्याचलक मध्य समुद्र छल। हिमालय स' निःसृत नदी सब अपना स्रोतक संग माटि आनि एहि समुद्र कें भरय लागल जाहि मे गंडक नदी जे 'सदानीरा' कहबैत छलि अपन प्रमुख स्थान रखैत अछि। एकरा 'सालग्रामी' आकि 'नारायणी' सेहो कहल जाइत अछि। ई नदी हिमालय स' निःसृत होइत अछि एवं गंगा मे विलीन भ' जाइत अछि। मिथिलाक पश्चिमीय भाग मे ई नदी बहइत अछि। प्रायः पांच हजार वर्ष पूर्व आर्य लोकनि एहि नदी कें पार क' मिथिला अयलाह जकर वर्णन 'शतपथ ब्राह्मण' (1500 बी.सी.) मे अछि। संप्रति भारत एवं नेपाल सरकार दुनू गोटे मिलि क' एक योजना बनौलक अछि जाहि स' गंडक नदी मे बान्ह बान्हल जायत एवं ओहि स' मिथिला, नेपाल एवं उत्तरप्रदेश मे सिंचाइ, जलविद्युत एवं यातायाताक सुविधा भ' सकत।

गंडक नदी हिमालयक केंद्रीय भाग स' 14,612 वर्गमीटर संप्रसार क्षेत्रक संग निकलैत अछि। एहि मे सात गोट धार अछि एवं 'सप्त गंडकी' कहबैत अछि। ई सोमेश्वर पहाड़क पश्चिम भाग द' मैदान मे उतरैत अछि। एतय ई 'त्रिवेणी'क नाम स' प्रख्यात अछि। ई नदी 192 मील मैदान मे बहैत अछि एवं हाजीपुरक निकट गंगा मे विलीन भ' जाइत अछि। एहि नदीक पाट एक मीलक चौथाइ भाग अछि लेकिन वर्षाकाल मे बहुत बेसी भ' जाइत अछि। एकर जलक बहाव 10,000 घनफीट प्रति सेकेंड एवं अधिक स' अधिक 7,00,000 घनफीट अछि। 4 दिसंबर 1959 मे भारत एवं नेपाल सरकारक बीच एहि योजनाक हेतु हस्ताक्षर भेल अछि। बिहारक अभियंता द्वारा एहि योजनाक पूर्ण विवरण तैयार कयल गेल अछि।

भैंसा लोटन मे बान्ह बनयबाक योजना अछि। जाहि स' नेपाल मे अनुमानित 1,43,000 एकड़, बिहार मे 31,00,000 एकड़ एवं उत्तर प्रदेश मे 8,00,000 एकड़ भूमि मे सिंचाइ हैत। एहि स' मिथिलांचल मे धान, कुसियार, मकई गहूम, जौ, राहड़ि, जूट, तमाकू, आलू एवं तेलहनक उपज मे सुविधा हैत एवं उपज मे वृद्धि

हैत। गंडक नदी स' संबंधित मैदान खूब उपजाऊ अछि एवं बाढ़ि स' प्रतिवर्ष जे क्षति भ' रहल अछि से बंद भ' जायत। एहि स' 20,000 किलोवाट बिजली उत्पन्न कयल जायत। दू गोट शक्ति-घर (Power House) बनत—एक मिथिला मे एवं दोसर नेपाल मे। एहि योजना कें पूर्ण होयबा मे दस वर्ष समय लागत एहन अनुमान अछि।

एहि योजना स' मिथिलांचल मे अनुमानित 16 लाख टन अन्नक वृद्धि एवं बाढ़ि नियंत्रण स' 180 लाखक बचत हैत जे नष्ट भ' जाइत छल। माछक व्यवसाय मे चारि सय लाखक आय, सिंचाइ स' 4,000 लाखक आय, बिजली स' करीब 80 लाखक आय हैत, यदि एकर दर प्रति यूनिट दस नवका पइसा हो। बांध पर पुल बनायल जायत जाहि स' मिथिला एवं नेपाल मे यातायात, टेलीग्राम एवं रेडियोक सुविधा भ' सकत। एहि मे बिहार, भारत एवं नेपाल सरकार सब खर्चक भार ग्रहण कयलक अछि। एहि योजना मे जे पूजी विनियोग कयल जायत ओहि पर 5% लाभांशक संभावना छैक।

बगहा जे चंपारन जिला मे अछि एवं उत्तर पूर्वीय रेलगाड़ीक लाइन स' संयुक्त अछि, ओतय स' भैंसालोटन तक रेलगाड़ीक लाइन शीघ्रातिशीघ्र होयबाक संभावना अछि। सुनबा मे आयल अछि जे गंडक योजनाक अधिकारी लोकनि एहन सुझाव केंद्रीय सरकार कें देने छथिन। संगहि-संग पैघ-पैघ हवाइ जाहज कें उतरबाक लेल पक्का रनवे बनयबाक सेहो योजना अछि। जाहि स' मशीन एवं यंत्र सब योजना कें पूरा करय मे आसानी स' आबि सकत। एखन बगहा स' भैंसालोटन तक जयबाक लेल एकमात्र कच्ची सड़क अछि। एक 28 मीलक जंगली रास्ता जे एकरा बगहा रेलवे टीसन स' मिलबैत छैक, एखन बनि रहल अछि।

एहि योजनाक घोषणा स' मिथिलावासी परम प्रसन्न छथि। किंतु खेदक विषय अछि जे नेपालक भूतपूर्व प्रधानमंत्री 26 दिसंबर, 1959 मे प्रेस संवाददाताक बीच लखनऊ मे बजलाह जे ओ किछु दिनक बाद सत्याग्रह करताह। कारण एहि योजना स' नेपालक कोनो लाभ नहि छैक एवं नेपालक बहुतो भाग भारतवर्षक नियंत्रण मे चलि जायत। एहि तरहक हिनक आपत्ति छनि।

एहि धमकी कें सुनि दिल्ली एवं पटनाक सरकारक निंद नहि टूटल। गंडक योजनाक अधिकारी लोकनि एहि पर कोनो वक्तव्य नहि देल। अपना इलाकाक एम. पी. एवं एम. एल. ए. लोकनि कोनो ध्यान नहि देल। हिनका लोकनिक लेल त' इजरायल, गोआ, चीन, आदिक समस्या महत्त्वपूर्ण अछि। मिथिलाक समस्याक ध्यान हिनका लोकनि कें नहि छनि। तें हेतु मिथिलाक समस्त मैथिल बंधु लोकनि कें एहि धमकी कें सुनि अपन आलस्य एवं गोलसी कें छोड़ि एहि दिस ध्यान देबाक चाही। अपन काज लोक अपने करैत अछि। अपना देशक त्यागी एवं सचेष्ट नेताक कहल मानू। जवाहर लाल एवं श्री कृष्ण सिंहक पाछू-पाछू नहि घूमल फिरू। अपन क्षेत्रक उपकार अपने क्षेत्रक नेता स' होइत छैक।

एखन नेपाल सरकार स' एहि योजनाक लेल जे समझौता करय पड़ल अछि, ई नहि करय पड़ैत। स्मरण हैत जे मिथिला मे बड्ड पैघ योजना—कोसी योजनाक लेल एहन स्थिति उपस्थित भेल छल एवं नेपालक सरकार स' समझौता करय पड़ल छलै। ई भाग जाहि मे मिथिलाक देशक समस्त नदी सबहक उद्गम स्थल अछि, संप्रति नेपाल सरकारक अधीन अछि। ई भाग नेपालक अधीन कहियो नहि छल। सब स' प्राचीन ग्रंथ वेद मे कहल गेल अछि जे मिथिलाक उत्तर मे हिमालय। तखन अंग्रेज बहादुरक समय नेपालक संग बराबरि झगड़ा होइत रहल। ओ लोकनि अपन शासनक सुविधाक लेल इतिहास प्रसिद्ध 'सुगौलीक संधि' मे नेपालक संग एहन बटबारा कयलनि। तें हेतु समस्त मिथिला वासी आबहु जागि जाउ। विश्वक सब देश जागि उठल अछि। मिथिलाक एहि भूभागक लेल आंदोलन शुरू क' दिअ। मिथिलाक लेल ई बहुत महत्त्वपूर्ण भाग अछि। एहि स' सिंचाइ, बिजली, खाद्यान्न मे वृद्धि, यातायात, घर एवं सड़क बनयबाक हेतु पाथर, उद्योग कें चलयबाक हेतु कच्चा माल सुविधा स' एवं परिपूर्ण भेटि सकत। एहि हेतु सचेष्ट भ' जाऊ। अपना मे विश्वास राखू जे हमरा लोकनि अयाचीक संतान ककरो स' दानक भीख नहि मांगि रहल छियनि। हमरा लोकनिक चीज हमरा लोकनि कें घुरा देल जाय।

(जून, 1960)

मिथिला मे बाढ़ि : विनाश आ विकास

भारतवर्षक उत्तर-पूब भाग मे 25,000 वर्गमील क्षेत्रफल ओ 2001क जनगणनाक अनुसार 4,39,71,581 जनसंख्यावला भू-भाग मिथिलाक भूमिक उर्वरा शक्ति, वन, जल, पशु आदि धन मे तथा बुद्धिक तीव्रता मे ककरो स' न्यून नहि। किन्तु तकर जनमानस आइ निर्धन, नि:सहाय, निराश, दीन-हीन अवस्था मे छथि। हिमालय स' गंगा धरि 100 मील ओ पूब स' पश्चिम धरि 250 मील। हिमालय संसारक सर्वोच्च पहाड़ सुखकर खनिज द्रव्यक आगार अछि। वनौषधिक भंडार, पर्यावरण ओ अरण्य स' भरपूर। मिथिलाक सब नदीक मातृभूमि। विश्व मे बहुतो सभ्यता नदीक कछेर मे विकसित भेल यथा नील, दजला, फरात ओ सिंधु आदि घाटीक सभ्यता। मिथिलांचलक लोक नदी किनार मे बसैत गेल छथि तें एहि अंचल कें तीरभुक्ति स' आब तिरहुत सेहो कहल जाइछ। महाभारत-भीष्म पर्व-9/37-38 मे वेदव्यास नदी कें विश्वक माता रूप मे देखने छथि। प्रसद्धि अर्थशास्त्रज्ञ चाणक्यक कथन छनि जे जतय धनीक (ऋण दाता) क्षोत्रिय (पुरोहित), राजा, वैद्य तथा नदी नहि हो निवास नहि करबाक थिक। नदी स' सिंचित जमीन कें नदीमातृक ओ वर्षा पर आधारित खेतीक जमीन कें देवमातृक कहल गेल छैक। नदीक किनार मे जखन खेती शुरू भेल तखन बाढ़िक खतरा सेहो उत्पन्न भेल। एहि क्षेत्र मे मुख्य सात नदी—गण्डक, बूढ़ी गण्डक, बागमती, अधवारा समूहक नदी सब, कमला, कोसी तथा महानन्दा। बूढ़ी गण्डक ओ महानंदा कें छोड़ि सब नदीक उद्‌गम स्थान हिमालय पर्वत श्रेणी मे अछि।

कोसी नदी नेपालक पूर्वी भाग ओ सिंगलोलाक पश्चिमी भाग मे हिमालय पहाड़ स' निकलैछ। नदीक जलग्रहण क्षेत्र 74,500 वर्ग कि.मी.। एकर 85 प्रतिशत भाग नेपाल ओ तिब्बत मे छैक बाकी मात्र 15 प्रतिशत मिथिला मे। नदीक कुल लम्बाई 468 कि.मी. जाहि मे एहि क्षेत्र मे लम्बाई मात्र 248 कि.मी.। एहि नदीक सर्वाधिक प्रवाह बाराह क्षेत्र (नेपाल) मे 25,880 घन सेक। वर्ष मे लगभग 6,828

करोड़ घन मीटर पानि एहि नदी मे प्रवाहित होइछ एवं वर्ष मे औसतन 9,495 हेक्टेयर मीटर माटि-बालु अबैछ। एहि क्षेत्रक जलग्रहण-क्षेत्र मे औसतन 1276 मिलीमीटर वर्षा होइछ। कोसी तराइ नेपालक सप्तरी जिला मे चतराक पास मैदान मे उतरैछ एवं लगभग 50 कि.मी. यात्रा क' क' 'भीमनगर' सुपौल जिलाक पास मिथिला मे प्रवेश करैत अछि। सुपौल, सहरसा, मधेपुरा, अररिया, किसनगंज, पूर्णिया ओ कटिहार जिलाक एको इंच जमीन एहन नहि हैत जाहि पर स' शिवक कन्याक धार नहि बहल हो। गत 250 वर्ष मे ई नदी 112 कि.मी. पश्चिम खसकि गेल छैक। धारा परिवर्तनक हेतु ख्याति प्राप्त कोसी नदी कटिहार जिलाक कुरसेला लग गंगा मे विलीन भ' जाइत अछि।

नेपाल मे नारायणी आ शालग्रामीक नाम स' प्रसिद्ध गंडक नदी हिमालयक केंद्रीय भाग स' पश्चिम 7620 मीटरक ऊंचाई धौलागिरी ओ पूव मे मन्ना ओ रसुआगढ़ीक चोटी स' 14,612 वर्गमीटर सम्प्रसार क्षेत्रक संग नि:सृत होइत छथि। एहि मे सात जोड़ धार अछि तें सप्तगंडकी एवं सोमेश्वर पहाड़क पश्चिम भाग होइत मैदान मे प्रवेश करैछ एवं त्रिवेणी नाम स' जानल जाइछ। पश्चिमी चम्पारण जिलाक वाल्मीकिनगर (भैंसालोटन) मे मिथिलांचल मे प्रवेश करैछ। नेपालक सीमा स' गंगाक संगम धरि एहि नदीक लंबाई 277 कि.मी., नेपाल, उत्तरप्रदेश, गोपालगंज एवं मिथिलांचल मे बहैत सोनपुर लग कौन्हराघाट (गज-ग्राहक उद्धार) मे गंगा मे विलीन भ' जाइछ। मिथिला ओ गोपालगंज क्षेत्र मे एहि नदीक जल-ग्रहण क्षेत्र मात्र 4.188 वर्ग कि.मी. अछि जखन कि वाल्मीकिनगरक उत्तर नेपाल/तिब्बत मे 35,470 कि.मी.। नदीक जलग्रहण क्षेत्रक उपरका भाग मे 2000 मिली. मी. तथा निचला भाग मे 1250 मिली.मी. वर्षा होइछ। पहाड़ स' मैदान मे उतरलाक बाद नदीक घाटी तल प्राय: सपाट आ 10-15 सेंटीमीटर प्रति किलोमीटर तक सीमित छैक। धारा परिवर्तन कोसी नदीक तुलना मे नगण्य। पूर्वी ओ पश्चिमी चंपारण जिलाक 43 चौर कें देखला स' स्पष्ट हैत जे गंडकी एहि चौर होइत अवश्य बहैत हेतीह।

बागमती हिमालयक दक्षिणी ढलान नेपाल घाटीक उत्तरी-पूर्वी भाग काठमांडू लग 8000 मीटर ऊंचाइ गोसाईनाथ शिखर स' 1700 वर्गमील सम्प्रसारक संग नि:सृत होइत अछि। मिथिलांचल मे ई नदी आदम बांध गाम लग प्रवेश करैत मुख्यत: सीतामढ़ी, दरभंगा, सहरसा आ खगड़िया जिला मे प्रवाहित होइत कुशेश्वरस्थानक दक्षिण-पूब बेलाही लग कोसी मे विलीन भ' जाइत अछि। कुल जलग्रहण क्षेत्र 13,400 वर्ग कि.मी. मे मात्र 6,320 कि.मी. मिथिलांचल मे आ बाद बाकी नेपाल मे। हिमालय स' निकलयबाली लालबकेया, लखनदेई ओ अधवारा समूहक नदी

सब मिथिलांचल प्रवाह क्षेत्रक प्रमुख सहायक नदी अछि। लालबकेया सीतामढ़ी जिलाक पिपराही प्रखंडक अदउरी गाम मे, लखनदेई कटरा गाम लग एवं अधवारा समूहक नदी आपस मे मिलैत दरभंगा जिलाक हायाघाट मे एहि नदी मे विलीन भ' जाइछ। अधवारा नदी समूहक संगमक बाद ई करेह नाम स' जानल जाइत अछि।

मिथिलांचलक सीतामढ़ी, शिवहर, मधुबनी ओ दरभंगा जिलाक भूभाग पर करीब दू दर्जन पैघ-छोट नदीक जाल अछि जे अधवारा समूहक नाम स' जानल जाइछ। एहि मे अधवारा, हरदो, लखनदेई, खिरोई, हरसिघी, बढ़नद, बरदे, करेह, बागमती (दरभंगा) आदि नदी सब सम्मलित छैक। एहि नदी समूहक प्रमुख जलस्रोत हिमालय एवं तराइ नेपाल स' नि:सृत होबयवाली बरसाती नदी अछि। कुल जलग्रहण क्षेत्र लगभग 5,000 वर्ग कि.मी छैक। प्रवाहक दृष्टि स' एहि नदी समूह कें दू भाग मे बांटल जा सकैछ आ दुनू प्रमुख धार दरभंगाक एकमी घाट मे मिलैत अछि एवं आगू जा क' हायाघाट लग बागमती मे समाहित भ' जाइछ। एहि समूहक नदी उथर छैक, जाहि स' वर्षाकाल मे बाढ़िक सृजन पैघ मात्रा मे एवं सुखाड़ मे नदीक धार कें ताकल नहि जा सकैछ।

लखनदेई (लक्ष्मण) सिन्धुल गढ़ीक पश्चिम-दक्षिण पहाड़ स' नि:सृत मारसंड गाम लग मिथिलाक सीमा मे प्रवेश करैछ। ई नदी मुजफ्फरपुर-सीतामढ़ी सड़क कें सैदपुर लग पार क' राजखंड होइत कलेजर धारक समीप बागमती मे विलीन भ' जाइछ। नेपाल तराइ मे 42 मील एवं मुजफ्फरपुर जिला मे 93 मील लंबा बहैत अछि एवं एहि नदी मे सालोभरि जल रहैछ।

बूढ़ी गण्डक नदी सोमेश्वर पहाड़क पश्चिम भाग हरहा दर्राक समीप स' 900 वर्गमील सम्प्रसारक संग निकलैत अछि। पश्चिमी चंपारण जिलाक पाड़रखाप गामक समीप चौतरवा चौर स' मिलैत अछि। चौर लग तियर नदी स' संबद्ध होइछ। एहि नदी मे 32 धारक पानि समाहित होइछ। भसान ओ पण्डेय एकर सहायक नदी अछि। एहि नदीक कुल जलग्रहण क्षेत्र 12,500 वर्गमील जाहि मे 10,150 वर्गमील मिथिला मे आ बाकी 2350 वर्गमील नेपाल तराइ मे।

कमला नदी नेपालक सगरमाथा अचंलक उदयपुर जिलाक उत्तरी छोर मे हिमालय पहाड़क महाभारत पर्वतमाला शिखर स' नि:सृत होइछ। पहाड़ मे 29 कि.मी. तथा नेपाल मे 32 कि.मी. बहलाक बाद मधुबनी जिलाक जयनगर मे प्रवेश करैछ। कुल जलग्रहण क्षेत्र 5545 वर्ग कि.मी. छैक जाहि मे मिथिला मे मात्र 3000 वर्ग कि.मी. बाकी नेपाल मे। नदी अपन जलधारा खूब परिवर्तन करैत अछि। अठारहम शताब्दी मे ई नदी जयनगर-मधुबनीक पश्चिम तथा दरभंगा स' 5 कि.मी. पूब गौंसाघाट स' प्रवाहित होइत फुहिया गामक समीप करेह नदी मे समाहित भ'

जाइत छल। कालांतर मे कमला नदीक प्रवाह जयनगर स' पूब होइत बलथरमा गाम लग त्रियुगा मे मिल गेल छल। 1922 मे एकर एक धार झमटा गामक समीप जीबछ नदी मे मिल गेल। पुन: 1930, 1939 ओ 1940 मे धार मे परिवर्तन भेल। 1954क बाढ़ि मे ई नदी बलान मे समाहित भ' गेल ओ बलान आगू चलि क' कोसी मे विलीन भ' जाइछ। ई नदी कमला-बलान नाम स' सेहो जानल जाइछ। एकर एक शाखा मनीगाछी लग रेललाइन कें पार क' झुमटा मे कोसी मे विलीन भ' जाइत अछि।

त्रियुगा उदयपुर गढ़ीक पूब महाभारत पहाड़ स' नि:सृत होइछ। तराइक सप्तरी ओ मिथिलाक सहरसा जिला होइत सुपौल जिलाक निर्मली लग कोसी मे विलीन भ' जाइछ। मिथिलाक सब स' शांत नदी। वैशाख मास मे अक्षय तृतीयाक दिन स्नान कयला स' सब प्रकारक क्षति स' लोक उबरि जाइत छथि, ई किंबदन्ती अछि। ई नदी आब कोसीक पेट मे चल गेल छथि।

महानंदा नदीक उद्‌गम स्थान छैक कर्सियांगक पूब 2060 मीटरक ऊंचाई स' महाल्दीराम पहाड़क समीप एवं मालदह (पश्चिम बंगाल) जिला होइत गंगा मे समाहित होइत अछि। एहि नदीक जलग्रहण क्षेत्र 25,000 वर्ग कि. मी. मैदानी इलाका मे। मुख्यत: ई नदी कोसी एवं तिस्ताक (बंगाल) बीच प्रवाहित होइछ। ई नदी पूर्णिया जिलाक पोठिया प्रखंड मे प्रवेश क' ठाकुरगंज प्रखंडक सीमा पर नेपाल स' नि:सृत मेची नदी स' संगम करैत अछि। मेची संगम धरि ई नदी पूर्णिया जिला मे 34 कि.मी. प्रवाहित होइछ। तदुपरांत ई नदी किशनगंज आ बाइसी मे प्रवाहित होइत कटिहार जिलाक कदवा प्रखंड मे प्रवेश करैत अछि। एतय महानंदा दू धार मे विभाजित अछि। एक धारा दक्षिण दिस आजमनगर, प्राणपुर, मनिहारी एवं अमदाबाद प्रखंड मे प्रवाहित होइत कटिहार जिलाक सीमा पार करैत अछि। दोसर धारा पूब दिस मुड़ि क' कटिहार-बारसोई रेललाइन कें बारसोईक समीप पार क' कटिहार जिलाक सीमा स' बाहर निकलि जाइछ। कंकई, नागर परमान, मेथी एवं दाउक महानंदा नदीक सहायक नदी अछि।

मिथिलाक गिनती भारतक सर्वाधिक बाढ़ि प्रवण क्षेत्र मे होइछ। राष्ट्रीय बाढ़ि आयोग 1980क अनुसार देशक कुल बाढ़ि प्रवण क्षेत्रक 16.5 प्रतिशत हिस्सा मिथिला मे एतहि देशक कुल बाढ़ि प्रभावित जनसंख्याक 22.1 प्रतिशत आबादी अछि। एकर अर्थ भेल अपेक्षाकृत कम क्षेत्र पर बाढ़ि स' त्रस्त अधिक लोक मिथिला मे निवास करैत छथि। मिथिलाक क्षेत्रफल 58.50 लाख हेक्टेयर ओ बाढ़िग्रस्त क्षेत्र 44.47 लाख हेक्टेयर। अर्थात 77 प्रतिशत क्षेत्रफल मे बाढ़िक आशंका बनल रहैछ। बाढ़ि एहि क्षेत्रक अस्तित्व स' जुड़ल एक महत्त्वपूर्ण प्राकृतिक प्रक्रिया अछि, जे एकर अस्तित्व कें संवारलक अछि। वर्षों स' उपरोक्त प्रकृत प्रदत्त नदी सब एकर

पोर-पोर कें उर्वर माटि, पांक ओ पानि स' सिंचैत रहल। एहि नदी सभक लगभग 61 प्रतिशत जलग्रहण क्षेत्र हिमालय मे पड़ैछ। हिमालयक ग्लेशियर एवं ओतय होयबला वर्षा एहि नदी सभक जलस्रोत अछि। हिमालय मे पैघ दूरी तय कयलाक बाद ई नदी सब पूर्ण मात्रा मे साद-गाद लबैछ जे एतयक जमीन मे जमा होइछ। हिमालय पर्वतमाला अपन निर्माणक प्रारंभिक दौर मे अछि एवं भुरभुरी माटिक ढेर। एहन माटि आसानी स' नदीक कटाव करैत माटि-बालू कें मैदान मे पहुंचा दैछ। पहाड़ स' मैदान मे उतरलाक बाद पानिक वेग कम भ' जाइछ। जल, माटि, बालू विस्तीर्ण क्षेत्र पर पसरि जाइछ जाहि स' नदीक कछेरक निर्माण होइछ। कछेर मे जमल माटि-बालू अगिला बरसातक मौसम मे नदीक रुकावट बनैछ जकरा काटि क' नदी अपन नव रास्ता बनबैछ। हिमालय स' नि:सृत उपरोक्त नदीक कछेरक निर्माणक प्रक्रिया एखन तक नहि रुकल छैक ओ धारा परिवर्तन सेहो नहि बंद भेल छैक, तें बाढ़ि अबैत छैक। बाढ़ि स' कृषि भूमि पर नव माटि पड़ैत छैक जे ओकरा पोषक तत्व दैत छैक। उपजाऊ माटि ओ जलक पर्याप्तता नदीक कछेर मे बसबाक लेल लोक कें आकर्षित कयलक। बसैत सेहो गेला। तें बाढ़िबला क्षेत्र मे जनसंख्याक घनत्व मे वृद्धि भेल। मिथिलांचल मे यैह भेल छैक। भूमि एवं जल प्रकृति प्रदत्त दू साधन उपलब्ध अछि।

मिथिलांचल मे बाढ़ि एवं एहि स' क्षतिक पैघ इतिहास अछि। 1943 मे बंगालक अकाल ब्रिटिश शासन कें डोला देलक। लिनलिथगो कें वापस लंदन जाय पड़लनि आओर वाबेल वाइसराय बनि क' अयलाह। 1944 मे कोसी क्षेत्र मे भयंकर बाढ़ि आयल छल। खेती नष्ट भ' गेल। माल-जाल, मनुष्य बहुत संख्या मे मरल। मनुष्य गृहविहीन निराहार भ' गेलाह। मलेरिया, कालाजार, निमोनिया, हैजा एवं अन्य व्याधिक महामारी भ' गेल। सर्वप्रथम लार्ड वाबेल सरकारी पदाधिकारी एहि दिस ध्यान देल। स्वयं हवाई सर्वेक्षण क' अस्थायी निदान ओ तत्काल राहत काज पर ध्यान देल। मुदा स्थायी निदान नहि क' सकलाह। मात्र बीरबांध बनल जाहि स' बाढ़िक रोकथाम नहि भ' सकल। एतय क्षतिक किछु आंकड़ा उपस्थित अछि जाहि स' बाढ़िक भयानक संहारक आकलन कयल जा सकय।

(1) 1989-90 मे 6.36 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल, 18.79 लाख जनसंख्या, 1.65 लाख हेक्टेयर कृषि क्षेत्रफल, 704.88 लाख टाकाक जजाति नष्ट, 0.08 लाख मकान क्षतिग्रस्त, 83.7 लाख टाकाक आधारभूत संरचनाक क्षति एवं कुल क्षति आंकल गेल छल 949.31 लाख।

(2) 1993-94 मे 15.64 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल, 53.52 लाख जनसंख्या, 11.35 लाख हेक्टेयर कृषि क्षेत्रफल, 13,050.17 लाख टाकाक फसिल नष्ट, 2.2 लाख मकान क्षतिग्रस्त, 3040.86 लाख टाकाक आधारभूत संरचना एवं कुल क्षति आंकल गेल छल 24,905 लाख टाकाक।

(3) 1999-2000 मे 5.35 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल, 71.02 लाख जनसंख्या, 2.73 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल कृषि, फसिल नष्ट 22,280.70 लाख टाकाक, 1.43 लाख मकान क्षतिग्रस्त, 1358.25 लाख टाकाक आधारभूत संरचना, कुल क्षति अप्राप्त।

(4) 2000-2001 मे 5.36 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल, 53.01 लाख जनसंख्या, 3.04 लाख हेक्टेयर कृषि क्षेत्रफल, 16,245.31 लाख टाकाक फसिल नष्ट, 1.41 लाख मकान क्षतिग्रस्त, आधारभूत संरचना 1474.96 लाख टाकाक नष्ट, कुल क्षति अप्राप्त।

2000-01 मे जे तटबंध टूटल—(1) चंपारण तटबंध—(i) नगदाहाक पास, टूट स्थल 100 फीट स' बढ़िक' 14000 फीट (ii) चंपारण तटबंधक एस. के. रिंग बांध 31-32 मील पर टूटल जकरा सरकार कहलक जे ग्रामीण कटलनि (iii) 29-30 मील पर स्लूईस गेट क्षतिग्रस्त (iv) तटबंध 47म मील पर टूटल, सरकारक अनुसार ग्रामीण काटि देलनि (v) तटबंध भोरे गामक निकट टूटल—टूट लगभग 50 फीट।

(2) सारण तटबंध—(i) हीरा पाकड़ छरकीक बाद तटबंध टूटल—सरकार कहलक ग्रामीण कटलनि (ii) देवापुरक निकट यैह तटबंध टूटल—छरकी टुटलाक बाद तटबंध कें ग्रामीण काटि देलनि, सरकारक कथन।

(3) कमला बलानक बामा तटबंध—दू स्थान पर 67.9 कि.मी. (गैप 30 स' बढ़िक' 200 फीट) तथा 66.70 कि.मी. (गैप 30 स' बढ़िक' 1400 फीट) पर टूटल।

(4) एकर अतिरिक्त अनेक छोट बांध, जमींदारी बांध एवं छरकी टूटल मुदा उपरोक्त जगहक ग्रामीण सरकारक कथन कें नकारि देने छथि। तटबंध रखरखाबक कारण टूटल छल। सरकारी आंकड़ाक अनुसार बाढि स' मात्र 227 लोक मरलाह।

1953 स' मिथिलांचल जे बाढ़िक चपेट मे अबैछ ओकर वास्तविक दोषी नेपाल सरकार। नेपाल सरकार द्वारा प्रतिवर्ष वाल्मीकिनगर बराज स' पानि छोड़ल जाइत छल। किंतु बिहारक सीवान, छपरा तथा गोपालगंज मे सेहो 2001 स' बाढ़ि आबि जाइछ। पहाड़ मे वर्षा भेला पर एतयक नदी तीन दिनक बाद जलमग्न भ' जाइछ। बिहार सरकारक जल संसाधन विभाग नेपाल द्वारा जल छोड़बाक पूर्व हिदायत कयलक जे बाढ़िक इलाकाक लोक ऊंच जगह पर अपन जान-माल ल' क' चल जाइथ। की संभव अछि जे बांध, सड़क पर एहि अंचलक निवासी जीवन

किछुओ दिन लेल व्यतीत क' सकथि? फलस्वरूप समस्त बाढ़ि क्षेत्र जलमग्न भ' गेल, लोक घर-द्वारिबिहीन भ' गेलाह, जान-माल आ महामारी स' पीड़ित भ' गेल। राहतक नाम पर ढाकक तीन पात।

30 सितंबर, 2002—एही प्रकारें 25 जुलाइ 2002 स' लए 30 सितंबर 2002 धरि तीन बेर विभिन्न बांध टूटल आ समस्त मिथिलांचल मे त्राहि-त्राहि मचल। नदी पर तटबंध, बाढ़ि सुरक्षा, पटौनी, जलविद्युत एवं अन्य अनेक आर्थिक विकास कें विकसित करबा मे सहायक होइछ मिथिला सदृश भौगोलिक अंचलक लेल। जखनहि नदी पर तटबंध बनत, जलाशय बनत तखनहि नदीक प्रवाह क्षेत्र कम भ' जायत, नदीक चौड़ाई ओ गहराई बढ़ि जायत। तखनहि नदी मे पानि दुनू पाटक बीच स' बहय लागत तथा बाढ़ि स्वाभाविक रूपें कम भ' जायत। बिजली जे औद्योगिक विकासक लेल आजुक युग मे अत्यावश्यक साधन मानल जाइछ, प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध होयत। तटबंधक पक्ष मे तकनीकी पक्ष एतेक प्रबल ओ पुष्ट अछि जे विपक्षक तकनीक परास्त भ' गेल अछि किंतु मिथिलांचल मे राजनैतिक मुद्दा स्थिति कें भयंकर रूपें ओझरौने अछि। जाहि स' एहि क्षेत्रक विकास अवरुद्ध भेल छैक।

मिथिलांचल मे तटबंधक इतिहास बहुत प्राचीन अछि। 12म शताब्दी मे राजा लक्ष्मण द्वारा कोसी नदीक पश्चिमी क्षेत्र कें बचयबाक हेतु 'बीरबांध' बनायल गेल छल। 1756 मे बिहारक सूबेदार मुहम्मद कासिम खांक नायब धौसीराम गंडक पर तटबंध बनौलनि। 1810 मे कांटी (मुजफ्फरपुर) नील फैक्टरी कें बचयबाक हेतु बागमती पर तटबंध बनायल गेल। 1944 मे लाट साहेब वाबेलक भारत आगमनक पश्चात तटबंधक प्रक्रिया जोर-सोर स' शुरू भेल। 1945क मध्य मे जवाहरलाल नेहरू जेल स' छुटलाक बाद पटना मे कोसी क्षेत्रक एक डेलीगेसन स' सौहार्दपूर्ण गप्प कयल। तटबंधक संबंध मे कहल जे एखन नहि। ''हम सब अतिशीघ्र सत्ता मे आबयबला छी आ एक कांग्रेसी स' अहां सब ई उम्मीद राखू।'' एहि स्मारपत्र मे कोसी तटबंधक वृहत योजना छल जे एखनो चर्चा मे अछि। एकर बिना मिथिलाक आर्थिक विकास असंभव। नेहरूजी कें 1947 मे राज-पाट भेटलनि। अपन देल वचन कें बिसरि गेलाह। दामोदार घाटी, भाखड़ा नांगल, हीराकुंड ओ रिहांड बहुद्देशीय नदी घाटी योजना कें पूरा करय मे लागि गेलाह।

कोसी पर बाढ़ि नियंत्रणक हेतु पैघ बांधक प्रस्ताव सर्वप्रथम 1937 मे आयल। पुन: 1945 मे उठल। एहि मे बाराह क्षेत्र मे बांध ओ बहुद्देशीय नदी घाटी योजना छल। एकर घोषणा सी.एच.भाभा 6 अप्रैल, 1947 निर्मली (सुपौल जिला) मे कयल। बाराह क्षेत्र मे बांध, भारत आओर नेपाल मे 12 लाख हेक्टेयर क्षेत्र मे सिंचाइ, 3300 मेगावाट बिजली, बाढ़ि सुरक्षाक प्रस्ताव एवं अन्य। कुल लागत 100 करोड़

टाका आंकल गेल छल, जे 1952 मे 177 करोड़ टाका भ' गेल। 1944क सिंचाइ आयोग एहि बांधक लागत 4074 करोड़ टाका (2677 करोड़ विद्युत उत्पादन मे, 1347 करोड़ टाका सिंचाइ मद मे एवं 50 करोड़ टाका जल छाजन ओ भूमि संरक्षण तथा गाद-साद निवारण हेतु) अंकलनि। अगस्त 2002 मे भारतीय जनता पार्टी एवं सर्वदलीय प्रतिनिध मंडल बिहारक मुख्यमंत्रीक नेतृत्व मे प्रधानमंत्री स' भेट कयल ओ बाराह क्षेत्र मे सप्तकोसी पर हाई डैम कें पूरा करबाक आश्वासन लेलक। 25 करोड़ टाकाक लागत स' प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार करायल जा रहल अछि। नेपाल (काठमांडू) मे कार्यालय खुजि चुकल अछि एवं एहि बहुउद्देशीय नदी घाटी योजना कें आब पूरा कर' मे 25,000 करोड़ टाका लागत हैत जे 1947 मे मात्र 100 करोड़ टाका छल।

मिथिलांचल मे नदी घाटी योजना एवं तटबंध आब अंतरराष्ट्रीय प्रश्न भ' गेल छैक जे एहि अंचलक औद्योगिक तथा आर्थिक विकास मे पैघ बाधक छैक। ईस्ट इंडिया कंपनी गोरखा स' 1816 मे जे सुगौली (चंपारण) संधि कयलक ओहि स' मिथिलांचलक 5000 वर्गमील आओर उत्तर प्रदेशक 3000 वर्गमील गोरखा सरकार के द' देबय पड़लै। हुनका एहि क्षेत्रक विकास स' कोन मतलब? अंग्रेजक शासन काल मे भारतीय अर्थव्यवस्था स्वार्थी, शोषक एवं दोषपूर्ण नीतिक कारण दिवालियापनक शिकार भेल। मिथिलाक अधोगतिक एक प्रमुख कारण ईहो अछि।

हिमालय (नेपाल) स' नि:सृत नदीक जलक सम्यक उपयोग लेल भारत तथा नेपालक बीच बीसमे शताब्दी स' वार्ता चलि रहल छैक। एखन तक कोनो ठोस निष्कर्ष नहि। 1953 मे कोसी नदीक पानिक उपयोगक संदर्भ मे समझौता भेल। तखनहि हनुमाननगर मे 114.5 मीटर एकटा बराज तथा कोसीक मुख्य धाराक दुनू कात 120 कि.मी. लंबा पश्चिमी तटबंध एवं 100 कि.मी. पूर्वी तटबंध बनयबाक योजना 37.32 करोड़ टाकाक लागत स' कार्यान्वयन हेतु प्रथम पंचवर्षीय योजना मे शामिल कयल गेल, जकर उद्घाटन बिहारक तत्कालीन मुख्यमंत्री डा. श्रीकृष्ण सिंह 14 जनवरी 1955 मे भूतहा गाम (निर्मली) मे कयलनि। 80 करोड़ घनफुट माटि काटल गेल। 101 कि.मी. लंबा पूर्वी कोसी तटबंध भीमनगर स' मैना (सहरसा) धरि तथा 118 कि.मी. लंबा पश्चिमी कोसी तटबंध भारदासं स' भंती धरि बनायल गेल। 1962 मे पश्चिमी कोसी तटबंधक लंबाई 4 कि.मी. घोंधैयपुर धरि बढ़ायल गेल। पूर्वी तटबंध कें मैना स' कोपड़िया धरि 25 कि.मी. बढ़ायल गेल। पूर्वी कोसी तटबंधक लंबाई कुल 126 कि.मी. ओ पश्चिमी तटबंधक लंबाई 122 कि.मी.। बराजक बाम भाग स' बथनाहा धरि मुख्य नहरि निकालल गेल। एहि स' मुरलीगंज, जानकीनगर, पूर्णिया ओ सहरसा मे सिंचाइक हेतु राजपुर शाखा नहरि

निकालल गेल जे परियोजनाक मूल प्रारूप मे नहि छल। एहि स' 1968 मे सिंचाइ शुरू भेल। पूर्व निर्मित चारू शाखा नहरि स' 9 जुलाइ 1964 स' पटौनी होमय लागल। एहि नहरि प्रणाली द्वारा सहरसा, मधेपुरा, पूर्णिया ओ कटिहार जिलाक 22.69 एकड़ क्षेत्रफल मे 2887 कि.मी. नहरिक जाल स' 15.13 लाख एकड़ भूमिक सिंचाइ संभव भ' सकल। भारत-नेपाल सहायता कार्यक्रमक अधीन 15 करोड़ लागत स' कोसी नदीक पूब मे एक नहरि प्रणाली विकसित कयल गेल जाहि स' 1975 स' तराइक मोरंग ओ सप्तरी जिला मे 2,70,000 एकड़ भूमिक सिंचाइ होमय लागल। एहि नहरि प्रणाली कें चीनी विशेषज्ञ आधुनिकीकरण कयने छथि। पश्चिमी कोसी नहरिक काज एखन तक पूरा नहि भेल छैक किंतु उद्‌घाटन क्रमशः जगजीवन राम, विनोदानंद झा, लालबहादुर शास्त्री, इंदिरा गांधी आ अंत मे ललित नारायण मिश्र द्वारा कयल गेल। नेपाल मे एहि नहरि प्रणालीक अधिकांश भाग पूर्ण भ' गेल छैक। कुल 9.76 लाख एकड़ कमांड क्षेत्र 6.45 लाख एकड़ भूमि जमीन सिंचाइक व्यवस्था छल। पूर्वी तथा पश्चिमी कोसी तटबंधक बीच 304 गामक लोक कें नारकीय जीवन जीवाक हेतु छोड़ि देल गेल। महिषीक 46 गाम, किशुनपुरक 32 गाम, निर्मलीक 42 गाम, मरौनाक 36 गाम, तथा बीरपुरक 21 गाम एवं बाद बाकी मधुबनी ओ दरभंगा जिलाक गाम। 6550 परिवार के तटबंधक बाहर बसायल गेल तथा 35,000 परिवार एखन धरि दुनू तटबंधक बीच छोड़ि देल गेल अछि। पूर्वी कोसी नहरि मे लगभग 4 मीटर जलप्रपातक उपयोग स' 20 मेगावाट जल विद्युतक लेल 2.20 करोड़ टाका लागत स' कटैया नामक स्थान मे बनल जाहि मे मात्र 6 मेगावाट बिजली उत्पादन भ' सकैछ जे नेपाल कें देल जाइत छल।

गंडक परियोजनाक स्वीकृति 4 नवंबर 1959क' नेपाल सरकार स' भेटल किंतु 4 मइ 1964क' तत्कालीन महाराजाधिराज महेंद्र एहि योजनाक उद्‌घाटन वाल्मीकिनगर लग बराजक शिलान्यास स' कयल। मुजफ्फरपुर, वैशाली, समस्तीपुर, पूर्वी चंपारण, पश्चिमी चंपारण जिला मिथिलाक तथा गोपालगंज, सीवान ओ सारण जिलाक 33.93 एकड़ भूमि एवं नेपाल मे बारा, रौतहट, परसा ओ भैरवा जिलाक 1,56,000 एकड़ भूमि, आओर उत्तर प्रदेशक 11 लाख भूमि मे सिंचाइ लक्ष्य राखल गेल। सूरजपुरा (नेपाल तराइ) मे 15 मेगावाट क्षमतावला एक विद्युत गृहक निर्माण पश्चिमी मुख्य नहरि पर निर्धारित छल। गंडक परियोजनाक अंतर्गत बिहार मे 95 कि.मी. लंबा दोन शाखा स' 68,296 एकड़, 165 कि.मी. लंबा तिरहुत नहरि स' 16,95,000 एकड़ एवं 61 कि.मी. लंबा सारण मुख्य नहरि स' 14,08,000 एकड़ भूमि मे सिंचाइ व्यवस्था भ' गेल छैक। 1969-70 तक मुख्य ओ शाखा नहरि तैयार भ' सकल जकर लक्ष्य 1966 मे पूरा करबाक छल। 16.95 करोड़ टाका लगातक लक्ष्य छल जे 1985 मे काज पूरा भेला पर 365.59 करोड़ टाका व्यय भेल। मात्र प्रथम चरणक काज पूरा भेल छैक। 15 मेगावाट बिजलीक क्षमता छैक। उत्पादन अत्यल्प अछि।

1953-54 मे बागमती नदीक दहिना-बामा तट पर दू टा तटबंधक निर्माण शुरू भेल जे 1956 मे एहि नदीक बामा तट पर सिरसिया स' फुहिया धरि 73 कि.मी. एवं दहिना तट पर सुरगार हाट स' हायाघाट धरि 17 कि.मी. तथा हायाघाट स' बदलाघाट धरि 80 कि.मी. तटबंध बनायल गेल। संप्रति हायाघाट स' नीचा कोसीक संगम धरि तटबंध बनल अछि। ढेंग लग प्रस्तावित बराज स्थल स' रुन्नीसैदपुरक पश्चिमोत्तर आ मुजफ्फरपुर-सीतामढ़ी मार्गक पश्चिमी तटबंधक निर्माण भ' गेल अछि, किंतु रुन्नीसैदपुर स' हायाघाट धरि लगभग 79 किलोमीटर धरि निर्माण काज पूरा नहि कयल गेल छैक। फलस्वरूप तटबंधक कारण सुरक्षित बैरगनिया प्रखंड, हायाघाट-एक्मीघाटक पार्श्ववर्ती गाम तथा दरभंगा-नरकटियागंज रेल लाइनक उत्तर ओ दक्षिण बसल गाम सब मे 5-6 मास धरि जलजमाव रहैत अछि। बागमती बाढ़ि नियंत्रण परियोजनाक अंतहीन कथा एखनो चलि रहल अछि।

1954क भीषण बाढ़िक पश्चात् अधवारा समूहक नदी कें नियंत्रित करबाक योजना बनल। 65 लाख टाकाक अनुमानित लागत स' सोनबरसा स' एग्रोपट्टी धरि तटबंध पूरा कयल गेल जाहि स' 68.50 एकड़ भूमि कें बाढ़ि स' सुरक्षाक अनुमान कयल गेल। एग्रोपट्टी स' एक्मीघाट धरि खिरोई नदीक धार कें गहीर कयल गेल एवं दुनू तटबंध कें दरभंगा-बागमती मे मिला देल गेल। एकर अतिरिक्त दरभंगा-लहेरियासराय शहरक सुरक्षाक दृष्टि स' 1976 मे मब्बी स' सिरनिया धरि तटबंध बनायल गेल आ एकरा करेहक बामा तटबंध स' जोड़ि देल गेल। 1989 मे बिहार सरकार द्वारा अधबारा समूह बाढ़ि नियंत्रण योजना बनल, शिलान्यास भेल किंतु ई योजना एखन धरि लड़खराइत अछि।

लखनदेई नदी मे सैदपुर स' आगू राजखंडक समीप उपयुक्त स्थान पर बीयर बनक' पटौनी व्यवस्था कयल जाय त' बागमती योजना स' वंचित दक्षिण ओ पूबक एक क्षेत्र मे पटौनीक व्यवस्था भ' सकैछ, जाहि स' मुजफ्फरपुर जिलाक सैदपुर, औराई, राजखंड, कटरा एवं दरभंगा जिलाक जाले प्रखंड लाभान्वित हैत। संगहि बाढ़िक रोकथाम सेहो।

बूढ़ीगंडक नदीक पश्चिमी-दक्षिणी भाग गंडक सिंचाइ योजनाक अंतर्गत अछि। यदि जलक सदुपयोग कयल जाय त' चंपारण जिलाक पूर्वी-उत्तरी भाग, मुजफ्फरपुर जिलाक पूर्वी-उत्तरी हिस्सा एवं दरभंगा जिलाक पश्चिमी भाग मे सिंचाइक व्यवस्था भ' सकैछ। चंपारण जिलाक लालबेगेया घाट तथा बरनाबा घाटक

मध्य कोनो उपयुक्त स्थल पर बराज निर्माण कयला स' एहि नदीक उत्तरी-पूर्वी भाग छोड़ादानो, घोड़ासाहन, ढाका, चिरैया, पताही, मधुबन तथा मेहषी प्रखंड मे पटौनीक व्यवस्था भ' सकैछ। यदि एहि नदीक समानांतर बाम भाग स' एकटा नहरि निकालि मधुबनी प्रखंड होइत बागमती नदीक दहिना नहरि स' मीनापुर प्रखंड कें संयोजित कयल जाय त' मुजफ्फरपुर जिलाक बोचहा, गायघाटी, कटरा, राजखंड तथा दरभंगा जिलाक कल्याणपुर, बरौली, पूसा और समस्तीपुर प्रखंड मे सुविधा पूर्वक पटौनी व्यवस्था कयल जा सकैछ।

1954 मे मिथिलांचलक 4.73 लाख एकड़ भूमि कें बाढ़ि सुरक्षा हेतु कमला बलान पर तटबंध बनयबाक निर्णय बिहार सरकार लेलक। 1956 मे 1.11 करोड़ टाकाक लागत स' एहि तटबंधक काज शुरू भेल जे 1959-73 मे संपन्न भेल मात्र प्रथम चरणक काज। द्वितीय चरणक काज तृतीय पंचवर्षीय योजना काल मे शुरू भेल। 1941क आसपास निर्मित किंग्स नहरि प्रणालीक जीर्णोद्धार 17 लाख टाकाक लागत स' 1951 मे कयल गेल। कमलाबलान तटबंधक उत्तरी सीरा मे 48.67 लाख टाकाक लागत स' 300 मीटर लंबा एक बीयर बनायल गेल एवं बीयरक दुनू छोर स' एक मुख्य नहरि निकालल गेल छैक। एहि नहरि कें किंग्स कैनाल स' जोड़ि देल गेल तथा नव नहरिक निर्माण तृतीय पंचवर्षीय योजनाकाल मे कयल गेल। एहि तरहें 45 कि.मी. लंबा किंग्स कैनाल, 24.20 कि.मी. लंबा मुख्य नहरि आ 163 कि. मी. लंबा शाखा नहरि प्रणाली तैयार कयल गेल। एकर कुल कमांड क्षेत्र 1.69 लाख एकड़ अछि। मुख्यत: मधुबनी जिलाक भूमिक सिंचाइ होइछ। 1963, 1964, 1971 एवं 1987क बाढ़ि स' कतेको ठाम तटबंध टुटि गेल। मात्र 1987क बाढ़ि मे पूर्वी ओ पश्चिमी तटबंध पिपराघाट स' झंझारपुर धरि 27 ठाम ढहि गेल। 1990 मे शीशापानी मे तटबंधक योजना छल जे क्रियान्वित नहि भेल। मधुबनी जिलाक खजौली गाम लग कमला सिफनक निर्माण 55 करोड़ टाका लागत स' मार्च 2000 तक पूरा भ' जयबाक छल, जे लटकले अछि।

1965 मे सर्वप्रथम महानंदा तथा कारी कोसी पर तटबंधक प्रस्ताव भेल जे 1970 मे स्वीकृत भेल, जकर लागत 530.13 लाख आंकल गेल। गंगा पर बनल काढ़ागोला तटबंध तथा कुरसेला-जौनिया-बरंडी तटबंध ओ बरंडी नदीक दुनू कछेड़ पर बनल तटबंध कें आब महानंदा परियोजना मे सम्मिलित क' लेल गेल छैक, जाहि स' तटबंधक लंबाई आब 336 कि. मी. भ' गेल छैक। महानंदा तटबंधक दूरी लगभग दू कि.मी. अछि।

मिथिलांचलक कोनो नहरि योजना अपन सिंचाइक लक्ष्य कें पूरा नहि क' सकल अछि। 1984 मे नौहट्टाक पास कोसी तटबंध टूटि गेल जे भयानक साबित

भेल। 1991 मे भरदाहक पास जोगिनिया गाम मे कोसीक पश्चिमी तटबंध कटि गेल जखन कि नदीक प्रवाह मात्र 1,60,000 घनसेक छल। बिहारक जल संसाधन मंत्री कें त्यागपत्र देबय पड़ल, जे मंजूर नहि भेल। एहि दुनू हादसाक फलस्वरूप नेपाल आर भारतक बीच तनावक स्थिति उत्पन्न भ' गेल। तनावक दोसर कारण छल कोसीक पूर्वी नहरि मे स्थित कटैया जल विद्यत केंद्र तथा गंडक पश्चिमी नहरि मे स्थित सूरपूरा जल विद्युत केंद्र। समझौताक अनुसार बिजली नेपाल कें देबाक छल। मुदा बिहारी अभियंता द्वारा एहि दुनू बिजली केंद्रक सफल निर्माण नहि भ' सकल एवं लक्ष्य मे निर्धारित उत्पादन नहि क' सकल। तें नेपाल कें बिजली नहि देल जा सकल। दुनू देशक बीच वैमनस्यक मुख्य कारण यैह छल।

मिथिलांचल मे 45-50 वर्ष पूर्व बाढ़ि नियंत्रण लेल जे तटबंध बनल छल, आब बेकार साबित भ' रहल अछि। अक्टूबर 2001 मे योजना आयोग सर्वप्रथम बिहारक बाढ़ि ओ जल जमावक समस्या कें क्षेत्रीय नहि वरन पहिले बेर अंतरराष्ट्रीय समस्याक रूप मे रेखांकित कयलक। जकर समाधान आब बिहार नहि क' सकत। केंद्र सरकार ओ नेपाल पर निर्भर करैत अछि। बाढ़ि स' सुरक्षाक दीर्घकालीन समस्याक समाधान जाहि मे मिथिलाक उपरी जल-ग्रहण क्षेत्र मे जलाशय फ्लड कुशनिंगक प्रावधन, सप्तकोसी हाइ डैमक निर्माण बाराह क्षेत्र मे प्रस्तावित छैक। करनाली नदी पर प्रस्तावित शीशापानी बांध (विद्युत उत्पादन क्षमता 16,000 मेगावाट), महाकाली नदी पर प्रस्तावित पंचेश्वर बांध (क्षमता 2000 मेगावाट) तथा कोसी नदी पर प्रस्तावित बाराह क्षेत्र बांध (स्थापित क्षमता 3300 मेगावाट)। प्रचुर मात्रा मे विद्युत उत्पादन, यदि एहि तीन योजना पर समझौता भ' जायत, तखन नुनथर मे बागमती नदी पर, शीशापानी मे कमला नदी पर तथा गंडकक सहायक धार पर प्रस्तावित बांधक मार्ग प्रशस्त भ' जायत।

बाढ़ि नियंत्रणक जे आधुनिक टेक्नोलोजी संप्रति विश्व मे आयल अछि एवं चीन अपनौने अछि 'हुआंग हो' नदीक उद्‌गम स्थान जतय स' पानिक दबाव आगू बढ़ैत छल। पैघ-पैघ डैम बनायल गेल जाहि स' भरपूर बिजली उत्पादन, बाढ़िक रोकथाम ओ सिंचाइक सुविधा भेटय लागल। भूटानक 'चुक्का' डैम जे भारतीय अभियंता द्वारा निर्मित अछि, प्रोजेक्टक प्रवेश द्वार पर लिखल छैक 'नदीक पानि नहि ऊजला सोना'। सप्तकोसी डैम स' नेपाल, बिहार, उत्तर प्रदेश ओ पश्चिम बंगालक कायाकल्प भ' जायत। आजुक जमाना मे उद्योगीकरण बिजलीक बिना संभव नहि। ऐने समस्याक समाधान लाओस मे कांग नदी पर पैघ-पैघ डैम, मित्र देश ओ विश्व बैंकक मददि स' बनौलक अछि। जकर एक चौथाई लाओस मे खपत होइछ एवं तीन चौथाई थाईलैंड खरीद लैछ।

मिथिलांचलक बाढ़ि, रौदी स' मुक्ति बिजलीक आपूर्ति एवं विकासक मार्ग खुजि जायत यदि सप्तकोसी डैमक निर्धारित अवधि मे क्रियान्वयन भ' जाय। नेपाल सरकारक संग समझौता अंतिम दौर मे अछि। बिना हाईडैम कें मिथिला कें बाढ़िक तबाही स' नहि बचायल जा सकैछ। सुरक्षित जलक अभाव मे पटौनी व्यवस्था संभव नहि भ' रहल अछि। कोनो प्रखंडक एक भाग मे दाही आ दोसर भाग मे रौदी। एहि तबाहीक मुख्य कारण तकनीकी भूल ओ सरकारक गलत नीति। बिना जलाशय निर्माण कयने तटबंध निर्माण करब पैघ भूल छैक। बाराह क्षेत्रक उच्च डैम, नूनथर शीशापानी सहित जल-विद्युत उत्पादन एहि क्षेत्रक उद्धारक पैघ साधन हैत। थर्मल पावरक तुलाना मे पनबिजली सात गुणा सस्त हैत। बाढ़ि आ रौदी स' मुक्ति भेटतै। सस्त उर्जा शक्ति भेटतै। राजमार्गक निर्माण जोर स' चलि रहल अछि। 12 राष्ट्रीय मार्ग पर काज भ' रहल अछि। सिंचाइक शाश्वत व्यवस्था स' मिथिलांचल अन्नक भंडार मे बदलि जायत। कृषि उत्पादनक मामिला मे आत्मनिर्भर भ' जायत। सस्त पनबिजलीक आपूर्त्ति स' कृषि आधारित उद्योग, गृह, लघु एवं मध्यम उद्योगक कर्मशाला बनि जायत। रोजगारक विपुल सुअवसर भेटत।

21 सितंबर 2002क आंध्र प्रदेशक मुख्यमंत्री 1970 मे के. एल. राव प्रस्तावित गंगा-कावेरी लिंक प्रोजेक्टक पुरजोर चर्च कयने छथि। किंतु श्री रावक योजना कें केंद्रीय जल संसाधन कमीशन 1995 मे 70,000 करोड़ लागतक कारण अनुशंसा नहि कयलक। आब तीन लाख करोड़ टाका व्यय अनुमानित अछि। 2460 कि. मी. गंगा कावेरी लिंक परियोजना स' आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, मध्यप्रदेश, गुजरात एवं बिहार लाभान्वित हैत। हिनका मतें यदि चतुष्कोणीय सड़क योजना सफल होमय जा रहल अछि तखन ई योजना किएक नहि सफल हैत। 2025 तक जलक पैघ अभावक आशंका छैक।

दृढ़ राजनैतिक इच्छाक अभाव मे प्रत्येक साल मिथिला मे बाढ़ि अबैछ, लोक तबाह ओ बर्बाद होइत छथि। आस्ते-आस्ते बाढ़िक पानि उतरि जाइछ। लोक दुर्गापूजा एवं दियाबाती मे लागि जाइत छथि। विधायक ओ सांसद अपन वचन कें बिसरि जाइत छथि। की जनमानस दृढ़प्रतिज्ञ भ' मुट्ठी भरि बाढ़ि राहत सामग्री कें ठोकरा नहि सकैत छथि? की प्रत्येक मास अपन जनप्रतिनिधि स्थायी निदानक हेतु सरकार पर दबाव नहि दिया सकैत छथि? जनताक एकता मे शक्ति अछि। एहि समस्याक समाधान मे राजनैतिक चालि नहि। तखनहि एहि भयंकर प्रलयंकारी समस्याक समाधान होयत।

(जनवरी, 2003)

मिथिलांचल मे खाद्य संकट

मैथिली भाषी क्षेत्र एहि वर्ष अनावृष्टिक कारण अकालक चपेट मे पड़ि गेल अछि। पुर्णिया, सहरसा, उत्तरी मुंगेर, उत्तरी भागलपुर, मोतिहारी, दरभंगा, दुमका, गोड्डा भीषण जलाभावक स्थिति मे अछि। एहि राज्यक 2.53 करोड़ जनता वर्षाक अभाव मे पीड़ित छथि। एहि स' 26 लाख टन अन्नक अभाव होयत। उत्तरी मुंगेर, उत्तरी भागलपुर, पुर्णिया आ सहरसा मे बादक वर्षा स' स्थिति मे सुधार भेल छैक एवं अगहनी फसिलक आशा कयल जा सकैछ। दरभंगा जिलाक स्थिति भयंकर अछि। एहि जिला मे 26 लाख 40 हजार जनता वर्षाक अभाव मे पीड़ित छथि। मधुबनी अनुमंडलक स्थिति संतोषजनक अछि त' दरभंगा सगरे मरुभूमि बुझना जाइछ। एहि जिला मे 16 लाख खेतिहर मजदूर छथि, जाहि मे मात्र 3 लाख मजदूरक लेल कठिन श्रम योजनान्तर्गत रोजी-रोटीक व्यवस्था भेल अछि आ बाद बाकी 13 लाख खेतिहर मजदूर भुखमरीक समस्या स' ग्रस्त छथि। मोतिहारी अनुमंडल मे 70% गरमा धान, 50% गरमा मकै, 50% भदै धान, तथा 20% भदै मकैं नष्ट भेल अछि। मात्र मोतिहारी अनुमंडल मे 11,83,140 मन खाद्यान्न नष्ट भेल अछि। जिला अधिकारी स्वयं स्वीकार कयलनि जे खाद्यान्नक स्थिति अत्यंत सोचनीय अछि। गोड्डा आ दुमकाक स्थिति सेहो सोचनीय अछि। हालक वर्षा स' मात्र 15-20 प्रतिशत रोपनी भ' सकल। अकाल पीड़ित जनताक लेल दुनू सांझ भोजनक कोनो व्यवस्था नहि छनि। भोज्यान्नक अभाव मे मृत्युक समाचार सेहो प्रकाशित भेल जकरा राज्य सरकार अमान्य घोषित कयलक। अन्नाभाव ओ जलाभावक स्थिति मे दुर्भीक्ष वास्तविक अछि। एहि ध्रुव सत्य कें राज्य सरकार कोना टारि सकैछ।

मैथिली भाषी क्षेत्रक 92% जनता ग्राम मे निवास करैत छथि एवं 77%क जीविका कृषि छनि। राज्य सरकारक आधा आय कृषि स' अबैछ। दू तिहाई गृहस्थ स्वयं जमीनक स्वामी छथि आ बाद बाकी एक तेहाइ जमीन मे बटाइ होइछ।पुर्णिया 22% भूस्वामी कें एक एकड़ स' कम भूमि छनि, करीब 4% भूस्वामी कें दुर्दिन मे अपन भूमि सूदि भरना आ कि केवाला कर' पड़ैत छनि। भूमि स' प्रति एकड़

आय एत' देशक तुलना मे सब स' कम अछि। आर्थिक दृष्टि स' 2.5 एकड़ भूमि मे कृषि कें अलाभकर कहल गेल अछि। एत' आपसी बटवाराक कारण जमीनक प्लाट बड्ड छोट-छोट भ' गेल अछि। फलस्वरूप वैज्ञानिक कृषि योग्य जोत नहि। एहि सब कारण स' कृषि उत्पादन एत' ह्रासोन्मुख अछि एवं एहि वर्षक अनावृष्टि स्थिति कें दयनीय एवं सोचनीय बना देलक अछि।

अकालक विभीषिका स' परिचित होयबाक हेतु प्रधानमंत्री दिल्ली स' स्वयं अयलीह। भयंकर स्थिति कें देखि स्वीकारक प्रतिश्रुति देलनि। राज्यक मुख्यमंत्री केंद्रीय सरकार स' 104 करोड़ टाका मांग कयलनि जाहि मे 30 करोड़ टाका उपभोक्ता ऋण, 36 करोड़ टाका कृषि उत्पादनक हेतु आ 38 करोड़ टाका सहायता कार्यक हेतु। मुख्यमंत्री आश्वासन देलनि जे हुनक प्रशासन रिलीफ खाद्यान्न एवं कठिन श्रम योजना संचालनक हेतु सक्षम छनि किंतु जखन रौदी प्रारंभ भेल तखनो 1967 मे कीनल 155 पंप बेकार रहल। धानक बीया जरि रहल छल आ गरीब जनताक कर स' 35 लाख टाका मे कीनल पंप कर्महीन छल। गत वर्ष छोट-छोट कृषकक हेतु 6 करोड़ टाका अनुदान स्वीकृत छल, जाहि मे मात्र 25 लाख टाका व्यय भेल आ बाद बाकी घुरा देल गेल। राज्य सरकार कतेक सक्रिय एवं सक्षम अछि एहि स' अनुमान कयल जा सकैछ।

राज्य सरकार 1970 धरि 202 करोड़ टाका सिंचाइ कार्य मे व्यय कयलक। एहि स' राज्यक 26 मिलियन एकड़ कृषि योग्य भूमि मे स' मात्र 30 लाख एकड़ भूमि मे सिंचाइक व्यवस्था भ' सकल। मिथिलांचल कृषि प्रधान अछि। अनावृष्टि स' प्रत्येक वर्ष क्षति होइछ। स्वतंत्रता प्राप्तिक 25 वर्ष बादो एखन धरि एत'क स्थायी सिंचाइ व्यवस्था नहि भेल। राज्य सरकार मिथिलांचल कें तीन सिंचाइ क्षेत्र मे विभक्त कयलक (1) पूब मे कोसी क्षेत्र (2) पश्चिम मे गंडक आ (3) एहि दुनूक मध्य क्षेत्र जाहि मे चंपारनक पूर्वीय भाग, मुजफ्फरपुरक उत्तरी भाग आ दरभंगा जिलाक पश्चिमी भाग एवं प्रमुख नदी बूढ़ी गंडक, बागमती, लखनदेइ, अधवारा समूहक नदी, कमला-बलान आदि। किंतु राज्य सरकार सुनियोजित ढंग स' सिंचाइ परिकल्पना नहि कयलक जाहि स' मिथिलांचल लाभान्वित भ' सकय एवं राष्ट्रीय खाद्य समस्याक सेहो समाधान क' सकय।

रौदी स' 40% जूटक फसिल सेहो नष्ट भेल एवं 14 करोड़ टाकाक अनुमानित घाटा भेल अछि। 4 लाख एकड़ मे जूट आ एक लाख एकड़ भूमि मे येस्ता उत्पादनक योजना छल जाहि मे मात्र 3 लाख एकड़ मे जूट आ 50,000 एकड़ मे येस्ता भेल। जुट एत'क मुख्य नगदी उपजा थिक। एकर उत्पादन कम भेल, मांग बेसी अछि किंतु किसनगंज, फारबिसगंज, गुलाबबाग आ ठाकुरगंजक बजार मे जूटक मूल्य कम भ' गेल अछि। उत्तम कोटिक मालक दाम साठि टाका स' पैंतालीस टाका प्रति मन भ' गेल अछि। ओहि स' न्यून कोटिक मूल्य 35 टाका प्रति मन भ' गेल अछि। कहल जाइछ पैघ व्यापारी क' एहन स्थिति उत्पन्न कयलनि जे खद्यान्नक अभाव मे गर्जू भ' क' कृषक कें कम मूल्य मे बेच' पड़य। जूट आयोग कें एहि दिस अविलंब ध्यान देबाक चाही आ कृषक कें उचित मूल्य भेटनि, एहन प्रयास होयबाक चाही।

राज्य सरकार 'युद्ध-स्तर पर दुर्भीक्षा स' लड़बाक' प्रण लेलक अछि। अकालक स्थिति कें बिगाड़ि क' जे कोनो राजनैतिक दल वा व्यक्ति अपन हित चाहि रहल अछि तकर चालि कें निष्फल अवश्य कयल जाय। एखन सब स' पैघ समस्या अछि जे राज्यक लोक कें अकालक चाङुर स' कोना बाहर कयल जाय। जनता रौदी स' पीड़ित अछि आ मुख्यमंत्री अपन मंत्रिमंडलक विभागक पुनर्वितरण मे व्यस्त। एहि स' कतोक मंत्री कें असंतोष भ' गेलनि। एहि विपत्तिक समय मे आवश्यकता छल जे एकजुट भ' खाद्यान्नक समस्याक समाधान कयल जाय किंतु खाद्य संकटक संग मंत्रिमंडलक संकट एवं विरोधी दलक राजनैतिक दाओ पेंच सेहो उपस्थित भ' गेल अछि।

अकाल सहायता काज असंतोषजनक अछि। नलकूप सब मे बिजली लगयबाक आश्वासन, नव-नव नलकूपक निर्माण, श्रम योजना आदिक आश्वासन देल जा रहल अछि मुदा खाद्यान्नक स्थिति गुरुतर भेल जा रहल अछि। मजदूर कें काज देल जायत खूब प्रचार होइत छैक किंतु काजक पत्ते नहि। गाम-गाम मे कम मूल्यक अन्नक दोकान खुजत खूब प्रचार भेल, नवका दोकानक कोन कथा पहिलुका दोकान कें नियमित रूपें अन्न नहि भेटैछ। प्रधानमंत्री आ केंद्रीय खाद्य मंत्रीक आश्वासन जे अन्नक भंडार भरल अछि, कोनो क्षेत्र मे अन्नक कमी नहि होयत, मात्र बोल-भरोस रहल। मजदूर कें काज भेटबा मे, अन्नक बटबारा मे आ अन्य सहायतामूलक काज मे भ्रष्टाचार कें प्रश्रय भेटि रहल छैक। भ्रष्टाचार कें रोकब कठिन अछि, कारण वरिष्ठ लोकक एहि मे हाथ छनि। प्रधानमंत्री कें सेहो बुझल छनि किंतु एकर निदान कोना होयत, क्यो नहि सोचि रहल छथि। एहनो लोक सब छथि जे पीड़ित मनुष्य आ मालजालक मुंहक ग्रास छीनि धनिक बनि जयबाक योजना मे रहैत छथि आ एहि मे सफलो होइत छथि। साहाय्य ते गोलमाल होइते अछि, कर्ज लेबा मे किछु प्रतिशत घूस आ श्रम योजना मे मजदूर कें बोनि मे किछु प्रतिशत अनिवार्य रूप स' घूस देब' पड़ैछ। यदि सरकार एहि भ्रष्टाचारक पराकाष्ठा कें नहि रोकि सकल त' खाद्यान्न आ केंद्रीय सहायता रस्ते मे बिला जायत आ अन्नाभाव मे दुर्भीक्ष पीड़ित लोक भूख-भूख क' मरि जायत।

(नवंबर, 1972)

मिथिलांचलक जर्जर सड़क यातायात

राष्ट्रक आर्थिक विकास मे यातायात साधनक विशेष महत्त्व अछि। सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक एवं प्रशासकीय दृष्टिकोण स' एकर महत्त्व छैक। आजुक आर्थिक व्यवस्थाक अंतिम उद्देश्य उत्पादने नहि उत्पादनक उद्देश्य उपभोग स' अछि। एहि हेतु वस्तु ओ सेवाक विनिमय एवं वितरण मे यातायातक सर्वोपरि स्थान छैक। मानव सभ्यताक इतिहास यातायात साधनक विकासक इतिहास कहल जाइछ। सभ्यताक इतिहास मे सड़क निर्माण करयबला पथ-प्रदर्शकक काज कयने छथि। ओ आगां बढ़ैत गेला आ सभ्यता हुनक अनुसरण करैत गेल। सड़कक संगहि गाम ओ नगरक निर्माण ओ विकास भेल। एहि स' वाणिज्य ओ व्यवसायक विकास होमय लागल ओ संपूर्ण विश्व एकसूत्र मे बन्हा गेल। प्राचीन पथ-पद्धति एहि क्षेत्रक खूब विकसित छल। प्राक् ऐतिहासिक काल मे मिथिलाक विदेहक स्थान प्रख्यात व्यापारीक रूप मे मानल जाइछ। तक्षशिला होइत पथ काशी एवं मिथिला धरि छल। जातक स' ज्ञात होइछ जे बनारस स' तक्षशिलाक रास्ता घनघोर जंगलक मध्य छल जाहि मे डाकू ओ हिंसक पशुक भय सतत बनल रहैत छल। तक्षशिला ओहि युगक भारतीय तथा विदेशी व्यापारक केंद्र स्थल छल। लखनऊ स' उत्तरी रास्ता गंगाक उत्तर होइत तिरहुत पहुंचैत छल तथा ओतय स' कटिहार तथा पार्वतीपुर होइत आसाम पहुंचि जाइत छल। दक्षिणी रास्ता प्रयाग स' काशी होइत गंगाक दहिन तट स' भागलपुर होइत कलकत्ता पहुंचि जाइत छल अथवा पटना होइत कलकत्ता धरि जाइत छल। मिथिलांचलक पथ-पद्धतिक उल्लेख प्रसिद्ध चीनी यात्री युवान च्वांडक यात्रा विवरण मे सेहो अछि।

उनैसम शताब्दीक पूर्वार्द्ध धरि एहि अंचल मे सड़कक अत्यंत अभाव छल। सड़कक निर्माण मे नीलक खेती मे लागल कोठीवाल साहेब किछु सड़कक निर्माण कयलनि। 1873-74 मे अकाल सहायता काजक अंतर्गत अनेक नवीन सड़क बनल। दरभंगा ओ मुजफ्फरपुर जिलाक 555 मील, खगड़ियाक 8 मील, पूर्णिया-किसनगंज जिला मे 371 मील तथा अन्य। 1876 ई. मे कुल सड़कक लंबाई 3939 मील छल। सब कच्ची सड़क प्रतिवर्ष बाढ़ि स' क्षतिग्रस्त भ' जाइछ एवं वर्षाकाल मे मार्ग अवरुद्ध सेहो। बीसम शताब्दीक आरंभ मे 7892 मील सड़क छल। पश्चिमी ओ पूर्वी चंपारण मे 1307 मील, मुजफ्फरपुर, वैशाली-सीतामढ़ी मे 1604 मील, दरभंगा-समस्तीपुर-मधुबनी मे 1734 मील, खगड़िया मे 794 मील, सहरसा-सुपौल मे 300 मील एवं पूर्णिया-किसनगंज-अररिया मे 2113 मील लंबा सड़क छल। सब कच्ची सड़क छल। वर्ष 1947 धरि एहि अंचल मे एकोटा पक्की सड़क नहि छल। देश स्वतंत्र भेलाक बाद 917 मील पक्की सड़क निम्न मार्ग मे बनल। बगहा, बेतिया, मोतिहारी, मुजफ्फरपुर, हाजीपुर, सुरसंड, सीतामढ़ी, जयनगर, दरभंगा, समस्तीपुर, बछवारा, बेगूसराय, पिपरा, मधेपुरा, पूर्णिया, किसनगंज, जोगबनी-सरसो-पूर्णिया एवं पूर्णिया-मनिहारी घाट। 1961-62 धरि दरभंगा-मधुबनी-समस्तीपुर जिला मे राज्य सरकारक सड़क विभागक अधीन 18 मार्ग मे 246 मील पक्की सड़क छल तथा 8 मार्ग मे 161 मील कच्ची सड़क छल। एकर अलावा 30 मील सड़क चीनी मीलक अधीन छल जे रैयाम, सकरी, समस्तीपुर ओ हसनपुर चीनीक कारखाना स' जुड़ल छल। मुजफ्फरपुर-वैशाली-सीतामढ़ी-शिवहर जिला मे राज्य सरकारक अधीन वर्ष 1962-63 मे 18 मार्ग 288 मील सड़क छल तथा एकर अलावा 244 मील सड़क। 18 मार्ग मे जीर्णोद्धार भ' रहल छल। वर्ष 1966-67 मे अररिया-किसनगंज-पूर्णिया जिला मे 585 कि. मी. पक्की सड़क एवं 5089 कि. मी. कच्ची सड़क छल। पक्की सड़क मे 130 कि. मी. राष्ट्रीय राजपथ-31 छल। 1974-75 मे बिहार सरकारक योजना विभाग आर्थिक प्रगतिक अध्ययन कयलक जाहि मे सड़क निर्माणक स्थिति अत्यंत दयनीय छल। एतय प्रत्येक एक लाख व्यक्ति पर 5 मील पक्की सड़क छल जखन कि देश मे 89 मील, इंगलैंड मे 392 मील, फ्रांस मे 914 मील तथा संयुक्त राज्य अमेरिका मे 2500 मील छल। एहि अवधि मे मिथिलांचल मे 100 वर्गमील मे 4 मील पक्की सड़क छल जखन कि भारतवर्ष मे 22 मील छल। एहि स' एहि अवधि मे एहिठामक सड़कक स्थिति अत्यंत कमजोर साबित होइछ। 1977-78 धरि मिथिलांचल मे राष्ट्रीय राजपथ 327 कि.मी., राज्य पथ 1414 कि. मी., जिला सड़क मेजर 2932 कि.मी. तथा जिला सड़क अन्य 1732 कि.मी. छल। जखन कि बिहार राज्य योजना बोर्ड एहि अवधि मे एहि अंचल मे सड़कक आवश्यकता—राष्ट्रीय राजपथ 939 कि.मी., राज्यपथ 1536 कि.मी., जिला सड़क मेजर 2392 कि.मी. तथा जिला सड़क अन्य 1732 कि.मी. आकलन कयने छल। अर्थात आवश्यकताक अनुसार 18,325 कि. मी. कम सड़क छल एहि अंचल मे। राष्ट्रीय राजपथ मात्र 5 जिला मे छल जखन कि

आवश्यकता सब जिला मे छल। राजपथक निर्माण मे पश्चिम चंपारण, समस्तीपुर, पूर्णिया ओ कटिहार जिला मे योजनाक अनरूप सड़क नहि बनल।

भारत सरकार पंचम पंचवर्षीय योजना मे 'न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम'क अंतर्गत ग्रामीण सड़क निर्माण पर जोर देलक। छठम पंचवर्षीय योजना (1980-85) काल मे ग्रामीण सड़क निर्माण कें प्रमुखता भेटलै। एहि योजना मे लक्ष्य राखल गेल जे डेढ़ हजार आबादीबला सब गाम कें सड़क मार्ग स' जोड़ि देल जाय। एहि योजनाक अंतर्गत राज्य सरकार मिथिलांचलक 16 जिला मे 4112 गामक 7743 कि. मी. लंबाई मे सड़क स' जोड़बाक प्रारूप तैयार कयलक, मुदा एकर कार्यान्वयन त' नहिये भेल जे एहि अंचल मे सड़क यातायात दिनानुदिन खराबे होइत गेल।

पश्चिम चंपारण पर दिसंबर, 2003 मे एक सर्वेक्षण आयल, 'एक किलोमीटर यात्रा मे हजार हिचकोले'। सरकारी आंकड़ा मे विभिन्न विभागक अधीन करीब 1000 कि. मी. लंबा सड़क। एहि मे 130 कि. मी. छपवा स' बाल्मीकिनगर तक राजकीय सड़क। राष्ट्रीय उच्चपथक दर्जा एखनो लंबित अछि। गंडक नदी पर बगहा-छितौनीक बीच करोड़ो रुपयाक लागति स' बनल सड़क पुल निरर्थक भ' रहल अछि। राजकीय उच्च पथ बेतिया-अरेराजक मात्र 18 कि. मी. तक एहि जिला मे अछि। शेष सड़क राजकीय उच्च पथक श्रेणी मे नहि अछि। पथ प्रमंडल बेतिया ओ रामनगरक अधीन करीब 307 कि. मी. सड़क अस्तित्वहीन अछि। वर्ष 2003 मे छपवा स' त्रिवेणी, बेतिया स' गोविंदगंज ओ मझौलिया स' जगदीशपुर पथक नवीकरण भेल। एक करोड़ 414 लाख रुपया स्वीकृत भेल मुदा संवेदकक बहिष्कारक कारणें निविदा रद्द भ' गेल। एहिना पैच घाटक काजक हेतु स्वीकृत एक करोड़ रुपया हाट मिक्सिंग प्लांटक आभाव मे पड़ले छैक। ग्रामीण अभियंत्रण संगठनक अधीन कुल 450 कि.मी. सड़क गड्ढा बनि गेल। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजनाक तहत सात पैकेज मे पैकेज 7 ओ 8 हेतु अनेक बेर निविदा भेल आ स्थगित भेल। भिखनाठोरी स' पाथर नहि निकलला स' बेतिया, नौतन, मझौलिया, योगापट्टी दूरस्थ प्रखंड मे पर्याप्त मात्रा मे पाथर उपलब्ध नहि भ' रहल छैक। करीब डेढ़ वर्ष स' पाथर खनन बंद रहला स' स्थिति गंभीर अछि। जिला परिषदक अधीन करीब 200 कि.मी. सड़क निर्माण खटाइ मे पड़ल छैक। राष्ट्रीय उच्च पथक मानचित्र मे एहि जिलाक जुड़बाक नसीब नहि प्राप्त छैक। बाढ़ि स' प्रत्येक वर्ष सड़क टुटैत अछि।

मोतिहारी मे सड़क पर होइछ धानक रोपनी। शहरक व्यस्त सड़क चांदमारी चौक पर वर्ष 2003क वर्षा काल मे लोकसभ धनक रोपनी क' अपन मोनक भड़ास निकाललक। वर्ष 2002 मे सांसद कोष स' 26 लाख रुपया खर्च क' क' बनल

छल ई सड़क। ज्ञान बाबू चौक स' चैलहां मोड़ तक सड़क फिलहाल रबीक बौआइक लेल तैयार अछि। पी. डब्लू. डी.क ई सड़क भारत-नेपाल कें जोड़यबला एन.एच. 29 ए मे चैलहां लग मिलि जाइछ। 50 कि. मी. लंबाई मे रक्सौल तक सड़क वाहनक हेतु भ्रमक स्थिति उत्पन्न करैछ। सड़कक कछेर मे वृक्ष नहि हो त' सड़क ओ खेत मे फर्क करब असंभव भ' जाइछ। सड़क संख्या 104 बाढ़ि मे क्षतिग्रस्त भेल छल। 20.88 लाख रुपया आवंटित कयल गेल मुदा भौतिक प्रगति शून्ये रहल। 5 स' 20 कि. मी.क गति मे वाहन चलैछ। सुगौलीक बाद रक्सौल तकक यात्रा मृत्यु कें आमंत्रण दैछ। एहि जिला मे प्रधानमंत्री सड़क योजनाक बंटाढ़ार भ' गेल। एहि योजनाक तहत 17 सड़क मे मात्र 3 पर कार्य भेल छैक। वर्ष 2001-02 मे एहि योजना पर 856.89 लाख रुपयाक आवंटन छल किंतु अगस्त 2003 तक मात्र 114.49 लाख रुपया खर्च कयल गेल। कुल 42.46 कि. मी. लंबा सड़क बनबाक छलै जाहि मे मात्र 8.54 कि. मी. मे सड़क बनि सकल। 33.92 कि. मी. सड़क आधा-अधूरा छैक। संग्रामपुर स' बरियारिया बरई टोल बिंदवलिया होइत अरेराज जायवला सड़क 20 वर्ष पहिने विश्व बैंकक सहायता स' बनल छल। सड़कक स्थिति खस्ताहाल छैक। आवागमन बाधित। मोतिहारी-ढाका सड़कक चौड़ीकरण नहि कयल गेल। एहि मार्ग स' नेपाल एवं सीमावर्ती सीतामढ़ी-शिवहर आदि जगहक लोकक हेतु कम समय लगैछ। हरदम सड़क व्यस्त रहैछ मुदा चौड़ीकरण नहि कयल गेल।

बागमती नदीक कोर मे बसल शिवहर जिला कें पूर्वी चंपारण, मुजफ्फरपुर तथा सीतामढ़ी स' जोड़यबला सड़कक बदहालीक कारण बाढ़ि-बरसात के कहय अनदिनो ई क्षेत्र टापू सदृश देखबा मे अबैछ। शिवहर-मधुबन पूर्वी चंपारण एन एच 104 मे फतहपुर गामक निकट, शिवहर-मुजफ्फरपुर पथ मे समौहुती तथा शिवहर-सीतामढ़ी एन.एच. 104 मे डुब्बा घाट पुल कें ध्वस्त भ' गेला स' आवागमन कष्टकर होइछ। एहि जिलाक दू दर्जन गाम मे पक्की सड़कक कोन कथा कच्ची सड़क सेहो नहि अछि। सीतामढ़ी जिलाक कुल 1200 कि. मी. लंबा सड़क मे 372.42 कि. मी. सड़क पथ निर्माण विभागक अधीन, 595 कि. मी. सड़क ग्राम्य अभियंत्रण संगठनक देख-रेख मे तथा 156 कि. मी. सड़क जिला परिषदक नियंत्रण मे अछि। शेष सड़क सीतामढ़ी नगर परिषद डुमरा, बैरगनिया, बेलसंड ओ पुपरी नगर पंचायतक अधीन अछि। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजनाक अधीन 40.83 कि. मी. सड़क 751.063 लाख रुपया स' निर्माणक लेल स्वीकृत अछि। जनवरी 2004 तक एक कि. मी. सड़क नहि बनल। सीतामढ़ी-रीगा-मेजरगंज, सीतामढ़ी-बाजपट्टी-पुपरी, रून्नीसैदपुर-नानपुर-पुपरी, सीतामढ़ी-परसौनी-बेलसंड, रून्नीसैदपुर-बेलसंड,

सीतामढ़ी–बेला–परिहार, बेलसंड–छतौनी आदि तमाम सड़कक स्थिति दयनीय अछि। एहि जिला मे 120 कि. मी. राष्ट्रीय राजमार्ग अछि। सीतामढ़ी–मुजफ्फरपुर, शिवहर–सीतामढ़ी–भिट्ठा मोड़ तथा सीतामढ़ी–सोनबरसा राष्ट्रीय उच्च पथक श्रेणी मे छैक। बाढ़ि ओ अभियंता–संवेदकक भ्रष्ट कार्य संस्कृतिक शिकार अछि सड़क सभ। तीन वित्तीय वर्ष मे 30 करोड़ रुपया व्यय भेल। विधानसभा मे जखन एक करोड़ रुपया स' निर्मित कटौझा ब्रिजक मामिला उठल तखन सरकार जांचक आदेश देलक। भनसपट्टी–हरिरामपुर तक जिला कें राज्यक अन्य भाग स' जोड़यबला 60 कि. मी. लंबा सड़क मे आधा दर्जन पुलक स्थिति जानलेवा अछि। एन.एच. 77क लेल लगभग 15 करोड़ रुपया आवंटित भेल अछि, मुदा काज नहि भ' रहल छैक। विकासक सुंदर स्वप्नक कब्र थिक सीतामढ़ीक सड़क।

मुजफ्फरपुर जिला मे पैर पूछैत छैक जे सड़क कहां अछि? प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजनाक तहत एहि जिलाक 29 ग्रामीण सड़क 84.25 कि. मी. चयन कयल गेल। दू चरण मे काज पूरा करबाक छल। पहिल चरण मे 15.71 करोड़ रुपैयाक खर्च स्वीकृत भेल जाहि मे मात्र 2.74 करोड़ रुपया खर्च भ' सकल। दू सड़कक कालीकरण भेल। एनएच 28 दिघरा स' नारायणपुर अन्नत तथा सरबदीपुर स' गुरमी जायवला 4.4 कि. मी. सड़क छल। प्रथम चरणक चयनित 11 योजना अपूर्ण अछि तथा 3.72 करोड़ रुपया पड़ल छैक। दोसर चरण मे 8 पैकेज 18 ग्रामीण सड़क 56.12 कि. मी. लंबा 10.14 करोड़ रुपयाक मंजूरी लेल गेल। एकोटा पूरा नहि भेलै जनवरी 2004 तक। सब सड़क जर्जर अछि। मुजफ्फरपुर–हाजीपुर राष्ट्रीय उच्च पथ 77 उत्तर बिहारक 'जीवन रेखा' 17 जिलाक अतिरिक्त नेपाल कें जोड़ैत अछि। 25–45 कि. मी.क बीच स्थिति खराब अछि। 53म कि. मी. पर स्थित पुल जर्जर। कखनो पैघ दुर्घटना संभव अछि। एहि राजमार्गक विकासक हेतु 385.55 लाख तथा अनुरक्षण ओ मरम्मति लेल 1643.15 लाख रुपया स्वीकृत कयल गेल छैक। केंद्रीय सड़क निधि स' अधूरा दू पुलक हेतु 1506 लाख रुपया स्वीकृत ओ अनुमोदित अछि। एहि सड़क पर प्रत्येक वर्ष लाखों रुपया खर्च होइछ तथापि 'गड्ढा मे सड़क आकि सड़क मे गड्ढा कें' चरितार्थ करैछ। बिदुपुर प्रखंड जे पूर्व मुख्यमंत्रीक निर्वाचन क्षेत्र मे अछि तथा आदर्श प्रखंड बनयबाक घोषणा भेल छल, परंतु प्रखंडक प्रमुख मार्ग हाजीपुर–महनार पथ कें जोड़ल नहि गेल तथा 8 कि. मी. चौड़ीकरण योजना खटाइ मे पड़ल अछि एहि स' अंदाज कयल जा सकैछ जे राज्यक अन्य परियोजना मे केहन मुस्तैदी स' काज होइत होयत। वैशाली जिलाक हाजीपुर–जनदाहा, हाजीपुर–महनार, महुआ–मुजफ्फरपुर, महुआ–ताजपुर, जनहादा–महुआ, जनदाहा–महनार, महनार–मोहद्दीनगर, समस्तीपुर–जनदाहा स' मुसरीघरारी,

जनदाहा–पटोरी समेत अनेक सड़क काफी जर्जर अछि। दर्जनों पुल पर रेलिंग नहि छैक। सिंगल लेन पुल।

मधुबनी जिलाक तीन राष्ट्रीय उच्चपथ—57, 104 ओ 105—तथा अन्य ग्रामीण सड़कक हालत दयनीय अछि। डेढ़ स' दू फीट खाधि, उखड़ल–पुखड़ल इंटा ओ पाथरक टुकड़ा, अलकतराक नामोनिशान नहि। वाहनक कोन कथा, पैदल चलब खतरा मोल लेब थिक। जखन कि तीनू पथ भारत–नेपाल सीमा कें जोड़ैत छैक। उच्च पथ संख्या–57 चारि लेनक होयत। सकरी–झंझारपुर–फुलपरास तक 60 कि. मी. लंबा। एहि पथ पर जनवरी 2004 मे काज लागल छल। मनीगाछी स' गंगौली पाही पुल स' नरूआर मे काज चलि रहल छल। मुदा विदेश्वर स्थान स' पाही पुल तक सड़कक नामोनिशान नहि। भारत–नेपाल सीमाक सामान्तर उच्च पथ रंख्या 104 एहि जिला मे बासुकी बिहारी मे प्रवेश क' उमगाम, हरलाखी, बासोपट्टी, जयनगर, लदनियां, लौकहा होइत लौकही मे नरहिया मे समाप्त होइछ। सड़क एहन जे यात्रा कयनिहार 'हे भगवान! सही–सलामत पहुंचा देब', गोहरबैत रहैत छथि। वर्ष 2002–03 मे एक करोड़ 10 लाख रुपया स' उमगाम स' हरलाखी मे काज भेल। हरलाखी स' जयनगर तक चौड़ीकरण हेतु 6 करोड़ 95 लाख आवंटित भेल। राष्ट्रीय उच्चपथ 105 चारि लेनवला एन. एच.–57 ओ 104 कें उत्तर स' दक्षिण तक जोड़ैत अछि। वर्ष 2002–03 मे 3 करोड़ रुपयाक लागति स' पाराडीह स' मुरैठ तक 22 कि. मी. सड़क बनल। कमतौल–बसैठा–मधवापुर पथक मरम्मति कैक वर्ष स' नहि भेल छैक। मधुबनी–सकरी बीच 15 कि.मी. मुख्य पथ 13म 14म कि. मी.क मृत्युक द्वार कहल जा सकैछ। ग्रामीण सड़कक चर्चा उचित नहि जखन कि मुख्य पथक खस्ताहाल अछि। अररिया चौकक तोरिया–मधेपुर सड़क एवं खोपा चौक स' चिकना–घोघड़डीहा सड़क ओ पुल अपन दुर्दशा वर्षो स' कहि रहल अछि। तहिना हाल छैक मनीगाछी स' झंझारपुर एवं खोपा चौक स' घोघड़डीहा, कृष्णापट्टी, निर्मली, कुनौली जायबला सड़कक।

दरभंगा जिला मे परिवहनक मुख्य सहारा पगडंडी, नाव ओ घोड़ागाड़ी अछि। 21म सदी मे 14म सदीक चेहरा। जिलाक पूर्वी भाग किरतपुर, गोड़ा–बौराम, घनश्यामपुर तथा कुशेश्वरस्थान प्रखंडक पंचायत मे घोड़ा मुख्य सवारी। वर्षा काल मे नाव। जिला परिषदक अधीन 1685 कि. मी. सड़क मुदा अस्तित्वहीन। जिलाक सीमा स' कुल 67 कि. मी. लंबा मे राष्ट्रीय उच्च पथ। एहि मे उच्च पथ संख्या 57 दरभंगा–मुजफ्फरपुर ओ दरभंगा–झंझारपुर तथा राष्ट्रीय पथ संख्या 105 दरभंगा–जयनगर पथ कें राष्ट्रीय उच्च पथ कहब अनर्गल होयत। जीर्णोद्धार ओ मरम्मति नदारद। दरभंगा–समस्तीपुर मुख्य मार्ग चारि लेन सड़क एहि जिलाक सीमा मे 20

कि. मी. किछु ठीक अछि। शेषक खस्ताहाल। जिला मुख्यालय कें प्रखंड स' जोड़यबला सब स' लंबा लहेरियासराय, कुशेश्वरस्थान पथ, बहादुरपुर, हायाघाट, बहेड़ी, बिरौल, सिंघिया ओ कुशेश्वरस्थान प्रखंडक 70 कि. मी. लंबा दू सड़क बहेड़ीक बाद खेत ओ गड्ढ़ा मे विलीन भ' गेल अछि। विरौल स' कुशेश्वरस्थान 26 कि. मी. सड़क अस्तित्वहीन अछि। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजनाक तहत 60 कि. मी. सड़क जीर्णोद्धारक स्वीकृति भेल। एहि योजनाक तहत वर्ष 2000-01 मे आवंटित 5 करोड़ 71 लाख रुपया स' 50 कि. मी. सड़कक निर्माण ओ मरम्मति चलि रहल छैक, मुदा गति बहुत मद्धिम अछि।

राष्ट्रीय उच्च पथ संख्या 28 समस्तीपुर, बेगूसराय, रोसड़ा, पूसा सहित अनेक मुख्य इलाका कें जोड़ैत दरभंगा, मधुबनी, जयनगर ओ नेपाल कें छूबैत अछि। मुदा मुसरीघरारी स' उत्तरी समस्तीपुर शहर 10 कि. मी. कहुना यात्रा पूरा कयल जा सकैछ। मगरदहीघाट कें पार क' कल्याणपुर दरभंगाक रास्ता मे अनेक जगह पोखरिक दृश्य देखबा मे आओत। सड़कक नामोनिशान नहि छैक। यैह दुर्दशा कल्याणपुर स' जठमलपुर पूल तक छैक। तकरीबन 20 कि. मी.। 74 लाख रुपया आवंटित भेल मरम्मतिक लेल। मुदा बाहुबलीक कारणें निविदा रद्द भ' गेल। समस्तीपुर-दरभंगा-मधुबनी-हाजीपुर तक सड़क 900 करोड़क लागति स' हाइवे मे परिणत भेल वर्ष 2000-01 मे। 251 करोड़ 59 लाख रुपयाक लागति स' प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजनाक निर्माण तय भेल। तैयो अधिकांश सड़कक काज अपूर्ण अछि। गुणवत्ता स' कोनो वास्ता नहि। बनैत गेल, टुटैत गेल सड़क। विभागीय लूट-खसोट, जनप्रतिनिधिक नकारात्मक सोच एवं जिला प्रशासनक उदासीनताक कारणें सड़कक ई दुर्दशा अछि।

पूर्णिया, कटिहार, अररिया, किसनगंज, जोगबनी, सहरसा, सुपौल, ओ मधेपुरा मे सड़क निर्माणक नामोनिशान नहि अछि। सड़क पर माछ पोसल जा सकैछ आ माल-जाल कें नहाओल-धोल जा सकैछ। पूर्णिया पथ प्रमंडल मे राष्ट्रीय उच्च पथ 31,81 ओ 107क मरम्मति हेतु 50 लाख रुपयाक निविदा नहि भेल। मुदा रुपयाक निकासी भ' गेल। निर्मली प्रखंड सह अनुमंडल मुख्यालयक मुख्य व्यापारिक मंडीक संबंध दरभंगा मंडी स' छल। विगत वर्ष मे दरभंगा मंडी स' जोड़यबला प्रमुख अंतरराष्ट्रीय महत्त्वक पथ वैलहा जीरोमाइल, निर्मली 16 कि. मी. लिंक रोड तथा एकरे संग सात काठ पुल मे दू ध्वस्त भ' गेल तथा पांच झुलानुमा अछि। निर्मली स' नेपाल कें जोड़यवला जल संसाधन विभागक पश्चिमी कोसी तटबंध सह पथ 46 कि. मी. अति जर्जर अछि। बीरपुर स' मधेपुरा होइत बीहपुर तक एन.एच. 106 तथा महेशखूंट स' सिमरी बख्तियारपुर, बरियाही, सहरसा-

पूर्णिया तक यात्राक लेल एन. एच. 107 'जीवन-रेखा' अछि, मुदा वाहन स' यात्रा करब बेस त्रासद अछि।

महेशखूंट स' सहरसा तक सड़क तकलो स' नहि भेटत। सहरसा स' सुपौल दुर्दशापूर्ण सड़क यात्रा। कोसी प्रमंडलक सड़क 'मृत्यु कूप' मे बदलि गेल छैक। मधेपुरा-सुखासन सड़क जर्जर हालति मे अछि। खगड़ियाक गंबइ सड़क मटिया मेट भ' गेल। शोकहरा चौक स' बरौनी फ्लैग तक सड़क जर्जर अछि। एहि क्षेत्रक सड़कक मरम्मति नहि भ' रहल अछि।

प्रधानमंत्री सड़क योजना स' देशक एक हजार आबादी बला गाम ओ 500 आबादीबला टोल कें हर मौसम लायक सड़क स' जोड़बाक लक्ष्य निर्धारित कयल गेल छैक। देश मे वर्ष 2000-2001 मे एहि योजना कें प्रारंभ कयल गेल। केंद्रक ई योजना 2007 मे बन्न भ' जायत। प्रथम वर्ष कुल 13,016 सड़कक हेतु 2,435 करोड़ टाका जारी कयल गेल। बिहार कें मार्च 2001 मे 149.50 करोड़ रुपया भेटल जाहि स' 298 सड़क बनबाक छल। तामिलनाडु, आंध्र, गोवा, मेघालय, त्रिपुरा ओ सिक्किम शत-प्रतिशत आवंटित राशि खर्च क' लेलक। उत्तर प्रदेश 99.37 प्रतिशत खर्च कयलक मुदा बिहार सरकार मात्र 589 करोड़ राशि खर्च क' सकल। अर्थात् मात्र 38.80 प्रतिशत व्यय कयलक। वर्ष 2001-02 मे केंद्र सरकार बिहार कें एहि योजनाक अंतर्गत 666 सड़कक हेतु 302.98 करोड़ रुपया स्वीकृत कयलक एहि शर्तक संग जे 80 प्रतिशत खर्च कयला पर पुन: राशि आवंटित होयत। राज्य सरकार तीन साल मे एहि योजना पर मात्र 63 करोड़ रुपया खर्च कयने अछि। खर्चक अभाव मे राज्य सरकारक 1200 करोड़ रुपया एहि योजना मदक घुमि जयबाक खतरा छैक। काछुक चालि स' राज्य सरकार एहि योजना पर काज क' रहल अछि। यैह हाल अछि राष्ट्रीय राजमार्ग 77क कटौंझा ओ मकसूदपुर मे बागमती नदी पर बनय बाला पुलक। सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय 15.06 करोड़ रुपया स्वीकृत कयलक 10 दिसंबर 2003 कें। मुदा जे शर्त्त देलक शायदे राज्य पथ निर्माण विभाग पूरा क' सकत। फलस्वरूप, पूरा आवंटित राशि लैप्स क' जायत। प्रगति नदारद। राज्य सरकारक काज करबाक पद्धति असंगत ओ अनियमित अछि।

पेट्रोल ओ डीजल पर लगयबला एक टाका अधिकोष स' केंद्र द्वारा गठित सेंट्रल रोड फंड (सी आर एफ)क तहत राज्य सरकार वर्ष 2001-02 मे 51 करोड़ रुपया स' राज्यक 27 सड़कक जीर्णोद्धार करत। राज्य सरकार 303 करोड़ रुपया सड़क निर्माणक हेतु प्रस्ताव कयने छल जे स्वीकृत भ' गेल। मिथिलांचल मे अररिया-संग्राम-तमौरिया-मधेपुर-जयंतिपुर-वात-बहेड़ी-रोसड़ा-समस्तीपुर होइत बेगूसराय तक जीर्णोद्धार मे 7 करोड़ 50 लाख रुपया व्ययक अनुमान छल। महनार-

मोहद्दीनगर-बछवारा सड़क लेल 1.73 करोड़ रुपया आवंटित भेल। दरभंगा-कुशेश्वरस्थान रोडक हेतु 2 करोड़ 11 लाख रुपया तथा पूसा-ताजपुर-समस्तीपुर रोड, अररिया-बहादुरपुर-ठाकुरगंज रोड, सुपौल-सिंहेश्वरस्थान रोड, फारबिसगंज-वीरपुर सड़कक नव निर्माण सीआरएफ स' भेटयबला पैसा स' कयल जायत। राष्ट्रीय राजमार्गक विकास मे भारत सरकार काज प्रारंभ कयने अछि। एहि अंचलक 12 सड़क पर काज चलि रहल छैक। चौड़ीकरण मे सड़क पर माटिक काज पूरा भ' गेल छै। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 28 उत्तर प्रदेश बिहार सीमांचल बरौनी तक 267.43 कि.मी., राजमार्ग संख्या 281 पिपराकोठी स' बरौनी तक 267.43 कि. मी., राजमार्ग संख्या 281 पिपराकोठी सं-रक्सौल 67 कि. मी., राजमार्ग संख्या 57 मुजफ्फरपुर-दरभंगा-झंझारपुर-फारबिसगंज-अररिया-पूर्णिया 281 कि. मी., संख्या 77 हाजीपुर-मुजफ्फरपुर-सोनबरसा-142 कि. मी., संख्या 81 कोरा-कटिहार पश्चिम बंगालक महिदह तक 100 कि. मी., संख्या 102 छपड़ा सड़क संख्या 19 स' रेवाघाट स' जोड़ैत संख्या 77 स' मुसरीघरारी सड़क संख्या 28 55 कि.मी., संख्या 104 चकिया सड़क संख्या 28 स' जोड़ैत नरहर-पकरीपुल-मधुबन-शिवहर-सीतामढ़ी-हरलाखी-उमगाम-जयनगर-खुटौना, नहैरिया संख्या 57 तक 110 कि. मी. संख्या 105 दरभंगा सड़क संख्या 57 औंसी स' जोड़ैत जयनगर मे भारत-नेपाल सीमा तक 66 कि. मी., सड़क संख्या 106 भारत-नेपाल सीमा बीरपुर स' मधेपुरा कें जोड़ैत बीहपुर सड़क संख्या 31 तक 130 कि. मी., संख्या 107 महेशखूंट सड़क संख्या 31 स' सोनबरसा-सिमरी बख्तियारपुर-सहरसा-बैजनाथपुर-मधेपुरा-मुरलीगंज पूर्णिया सड़क संख्या 31 तक 145 कि. मी. । एहि तरहें एहि अंचल मे 1541.43 कि. मी. राष्ट्रीय राजमार्ग पर काज चलि रहल छैक।

स्वतंत्रता प्राप्त भेना 57 वर्ष बीत गेल, मुदा अपन सरकार मिथिलांचल मे बाढ़िक प्रकोपक स्थायी निदान नहि कयलक। प्रत्येक वर्ष करोड़ो रुपयाक सार्वजनिक ओ व्यक्तिगत क्षति होइछ। मनुष्य ओ माल-जाल हजारोंक संख्या मे मरि जाइत अछि। भयंकर महामारी पसरि जाइछ। एहि बेर केंद्रीय दल, जे बाढ़ि सर्वेक्षणक हेतु आयल छल, कें लोक स्पष्ट कहलक जे राहत नहि बाढ़िक स्थायी निदान चाही। एहि बेर 9 अगस्त, 2004 स' 24 अगस्त, 2004 तक घनघोर वर्षा ओ अभूतपूर्व बाढ़ि स' एहि क्षेत्रक प्रत्येक जनपद ग्रसित छल तथा 41,356 कि. मी. सड़क क्षतिग्रस्त भेल। सड़कक स्थिति सुधारबाक हेतु राज्य सरकार तत्काल केंद्र स' 413.57 करोड़ रुपयाक मांग कयलक किंतु क्षतिक संपूर्ण आकलनक बाद 1000 करोड़ रुपया तक पहुंचल। बाढ़ि स' 988.3 कि. मी. राष्ट्रीय उच्च पथ एवं एहि पर बनल सात पुल ध्वस्त भ' गेल। 2150 कि. मी. राजमार्ग ओ ओहि पर

बनल 407 पुल क्षतिग्रस्त, मुख्य जिलामार्ग ओ ओहि पर बनल 407 पुल क्षतिगस्त, मुख्य जिलामार्ग ओ ग्रामीण सड़कक व्यापक नोकसान। पथ निर्माण मंत्री बाढ़ि मे टुटल सड़क पर यातायात चालू करयबाक जे समय-सीमा निर्धारित कयने छलाह से पार क' गेल, मुदा ओ मिथिलांचलक जिला मुख्यालय प्रखंड कार्यालय स' जोड़ल नहि जा सकल। मुख्य सड़क मार्ग गढ़पुरा-बेगूसराय, समस्तीपुर-दरभंगा, दरभंगा-मुजफ्फरपुर, दरभंगा-जयनगर दर्जनो जगह पर विखंडित, मधुबनी स' झंझारपुर, जयनगर, बेनीपट्टी, झंझारपुर स' लखनौर, मधेपुर, भेजा, फुलपरास, घोघड़डीहा प्रखंडक सड़क विखंडित तथा बेनीपट्टी अनुमंडल मुख्यालय स' मधवापुर, हरलाखी, बिस्फी, बासोपट्टी जायवला सड़क पर आवागमन पूर्णतः ठप। नावक सहारा। यदि बाढ़िक स्थायी निदान नहि होयत त' एहि क्षेत्रक सड़क टुटैत रहत, करोड़ो रुपया वार्षिक क्षति होइत रहत तथा हजारो मानव ओ माल-जाल मरैत रहत। बहुत विलंब भेल। आबहु एहि दिशा मे स्थायी काज कयल जयबाक चाही।

बिहार मे 700 करोड़ रुपया निर्माणक योजना हवा मे झूलि रहल अछि। कारण आम राय स' प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजनाक काज केंद्रीय एजेंसी स' करयबाक विचार भेल। एहि सहमति पर केंद्र सरकार प्रतिवर्ष 150 करोड़ राशिक आवंटन कें बढ़क' 325 करोड़ रुपया क' देलक। एहि योजनाक तहत तिरहुत प्रमंडलक पश्चिमी चंपारण, पूर्वी चंपारण, सीतामढ़ी, शिवहर, वैशाली ओ मुजफ्फरपुर जिलाक काज एनएचपीसी कें सौंपल गेल जाहि मे 520 करोड़ अनुमानित व्यय स' 1300 कि. मी. सड़कक निर्माणक योजना छल। बाढ़िग्रस्त क्षेत्रक कारण प्रति कि. मी. लागत 30-40 लाख रुपया व्यय होयत। केंद्र स' 135 करोड़ रुपया स्वीकृत भ' गेल छैक। निविदा मे गुणवत्तावला ठेकेदार नहि भेट रहल छैक। एनएचपीसी हाथ पर हाथ राखि बैसल अछि। यैह सीपीडब्लू, एनपीसीसी ओ इरकान छैक। 05 मइ, 2005 तक यैह स्थिति छल। 700 करोड़ रुपया सड़क निर्माणक हेतु राखल छैक, मुदा काज शुरू नहि भ' सकल।

(जून-जुलाइ, 2005)

मिथिलांचल मे विद्युतक समस्या

आधुनिक वैज्ञानिक एवं यांत्रिक युग मे विद्युत-शक्ति विकासक आधारशिला मानल जाइछ। विद्युत-शक्तिक अभाव मे सर्वांगीण विकास असंभव। सुलभ, सुदृढ़, सस्त निर्भर योग्य उर्जा साधनक उपलब्धि पर कोनो भूभागक आर्थिक विकास संभव। आधारभूत संरचना मे, जाहि पर औद्योगिक विकास निर्भर करैछ, उर्जाक महत्त्वपूर्ण स्थान छैक। किंतु मिथिलांचल मे प्रति व्यक्ति बिजलीक खपत मात्र 18 किलोवाट छैक। संपूर्ण बिहारक कुल बिजलीक खपत मात्र 14 प्रतिशत अछि। एहि नगण्य बिजलीक आपूर्ति स' की एहि क्षेत्रक आर्थिक विकास भ' सकैछ? असंभव।

प्रथम पंचवर्षीय योजना काल मे राज्य सरकार द्वारा 10 मेगावाट क्षमताबला छोट डिजिल विद्युत केंद्र सकरी, समस्तीपुर, पूसा, हाजीपुर, बैरगिनिया, चकिया, बेतिया, कटिहार, किसनगंज, फारसिगंज एवं सहरसा मे खोलल गेल। एहि स' 200 बिजली नल-कूप कें शक्ति देल गेल। 1957 मे उत्पादन 7,500 किलोवाट छल जे संपूर्ण बिहार राज्यक 3 प्रतिशत छल। एहि छोट-छोट विद्युत केंद्रक संचालन बिहार राज्य विद्युत-परिषद् अपना हाथ मे लेलक। द्वितीय पंचवर्षीय योजनाक अंत मे परिषद मात्र किछु शहरक अलावा 93,000 गामक उपभोक्ता कें बिजली देलक। 1969 मे केंद्रीय जल एवं विद्युत आयोग एहि भूभागक एक सर्वेक्षण कयलक एवं सूचित कयलक जे चतुर्थ पंचवर्षीय योजनाक अंत मे 200 मेगावाट, पंचम पंचवर्षीय योजनाक अंत मे 530 मेगावाट तथा छठम पंचवर्षीय योजनाक अंत मे 1123 मेगावाट बिजलीक आवश्यकता एहि अंचल कें छैक। राज्य विद्युत परिषद 1971-81 धरि मे तीन विद्युत उत्पादन केंद्रक योजना बनौलक (1) बरौनी ताप-विद्युत केंद्र मे वृद्धि—1×110 मेगावाट, (2) मुजफ्फरपुर, समस्तीपुर मे नव ताप विद्युत केंद्र—2×110×120 मेगावाट, (3) कटिहार मे नव ताप विद्युत केंद्र—2×110×120 मेगावाट। बरौनी कें छोड़ि अन्यत्र बिजली उत्पादन केंद्र नहि बनल।

बरौनी मे क्रमश: सात इकाई बिजली उत्पादन केंद्र बनायल गेल जे निम्नांकित अछि—

इकाई	**क्षमता**	**तिथि**
1 इकाई	15 MW	26.01.62
2 इकाई	15 MW	16.11.63
3 इकाई	15 MW	20.10.63
4 इकाई	50 MW	09.11.69
5 इकाई	50 MW	01.12.71
6 इकाई	110 MW	06.12.80
7 इकाई	110 MW	10.06.98

बरौनी मे 1962 मे 15 मेगावाटक जे तीन यूनिट बनल, ओहि मे एक तेल स' आ दू कोयला स' चलैत छल। 1969 मे 50-50 मेगावाटक दू इकाई लागल। प्रदूषण नियंत्रण स' संबंधित एक मशीन ईएपीक अभाव मे बंद पड़ल छैक। बाद मे 110 मेगावाट क्षमताबला यूनिट 6 एवं 7 चालू कयल गेल। एहि तरहें बरौनी ताप विद्युत केंद्रक कुल उत्पादन क्षमता 365 मेगावाट अछि किंतु संप्रति 40 मेगावाट स' अधिक उत्पादन नहिये भ' रहल छैक।

कांटी, मुजफ्फरपुर मे दू विद्युत ताप केंद्र 220 मेगावाट (2×110) 1988 स' उत्पादन मे आयल। एकटा यूनिट तकनीकी गड़बड़ीक कारण पूर्णरूपेण बंद अछि। दोसर यूनिट अपना क्षमताक अनुरूप कहियो बिजली उत्पादन नहि करैछ। मात्र 40 मेगावाट बिजली उत्पादन संभव भ' रहल छैक।

बिहार विभाजनक बाद मात्र यैह दू बिजली उत्पादन क्षेत्र रहि गेल अछि, जे दुनू मिथिलांचल मे अछि। नवंबर 2002 मे बिहार राज्य विद्युत बोर्ड बरौनी एवं कांटीक उत्पादन क्षमता कें बढ़यबाक योजना बनौलक अछि। एकर आधुनिकीकरण योजना मे 420 करोड़ टाका व्ययक अनुमान छैक। बरौनी ताप विद्युत केंद्रक हेतु 300 करोड़ टाका एवं कांटी उत्पादन केंद्रक हेतु 120 करोड़ टाका। समुचित रख-रखावक अभाव मे बरौनी ओ कांटी युनिटक स्थिति ठीक नहि छैक। यदि विद्युत बोर्डक ई योजना कार्यान्वित भ' जायत तखन दुनूक उत्पादन क्षमता 300 मेगावाट भ' जायत।

राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम बिहार राज्य विद्युत बोर्ड कें बिजली बेचने अछि एवं राज्य विद्युत बोर्ड अगस्त, 2002 तक 2212 करोड़ टाका एहि निगम कें बकिऔता रखने छैक। राज्य विद्युत बोर्ड भयंकर आर्थिक संकट मे अछि। टाका देबाक स्थिति मे नहि। निगम राज्य सरकार कें एकर बावत मुजफ्फरपुर कांटी विद्युत

ताप केंद्र कें किनबाक प्रस्ताव देलक। एहि तरहें निगम उंचाहर (उत्तर प्रदेश) ओ तालचर (उड़ीसा)क ताप विद्युत केंद्र कीनि चुकल। बरौनी तथा कांटी विद्युत केंद्र कें केंद्रीय सरकार कोयलाक बकिऔता नहि भुगतान करबाक कारण कोयलाक आपूर्ति बंद क' देने छल। प्रतिमाह एहि दुनू केंद्र कें 70,000 टन कोयलाक आवश्यकता छैक। यदि कांटी विद्युत केंद्र कें राष्ट्रीय ताप विद्युत केंद्र अपना अधीन क' लैछ तखनहि मिथिलांचलक एहि क्षेत्रक उद्धार भ' सकत। राज्य सरकार एहि केंद्र स' पूर्ण क्षमताक अनुसार बिजली कहियो उत्पादन नहि क' सकल। ताहि पर बिजलीक चोरी। अगस्त 1999 मे नियंत्रक ओ महालेखा परीक्षक, भारत सरकार अपन प्रतिवेदन, जे बिहार विधान सभा मे प्रस्तुत कयल, कहल जे कांटी ताप विद्युत केंद्र कें अप्रैल 1994 स' मार्च 1998 तक 3.27 करोड़ टाकाक घाटा भेल। 294 लाख किलोवाट बिजलीक बिल नहि बनल। उत्पादनक मात्र 5.76 प्रतिशत बिजलीक बिल बनल। कांटी केंद्रक 92 प्रतिशत मीटर जे आवासीय कालोनी मे लागल छैक, खराब छैक। जखन एहि केंद्रक कर्मचारी कें मात्र 50 किलोवाट बिजली मुफ्त देल जाइत छनि। राज्य विद्युत बोर्ड बिजलीक चोरी कें बंद करबा मे सब तरहें असमर्थ साबित भेल अछि।

मिथिलांचल नदी मातृक देश अछि। बूढ़ी गंडक ओ महानंदा नदी कें छोड़ि सब नदीक उद्गम स्थान हिमालयक पर्वत श्रेणी मे अछि। नदीक जलग्रहण क्षेत्र बड्ड पैघ अछि, जे जल विद्युतक पैघ साधन। एहि प्रकृति प्रदत्त साधनक उपयोग एहि क्षेत्र मे नहि होइत अछि। मिथिलांचलक बहुउद्देशीय नदी घाटी योजना आब अंतरराष्ट्रीय प्रश्न भ' गेल छैक। 1816 मे अंग्रेज सरकार नेपालक गोरखा स' तंग आबि सुगौली (चंपारण) मे जे संधि कयलनि ओहि स' मात्र मिथिलांचलक 5000 वर्गमील क्षेत्र, जे पश्चिमी चंपारण स' पूर्णिया तक हुनका अधीन चल गेल जाहि मे एहि क्षेत्रक नदीक नि:सृत स्थल ओ जलग्रहण क्षेत्र पड़ैत छैक। तें बाढ़ि, बिजली, पटौनी आदि मे बड्ड पैघ बाधा पड़ैत छैक जे एहि क्षेत्रक अधोगतिक मुख्य कारण अछि।

बाढ़ि नियंत्रण ओ जल विद्युतक जे आधुनिक टेक्नालोजी संप्रति विश्व मे आयल अछि ओ बहुतो देश अपनौने अछि। सर्वप्रथम अमेरिका मे प्रयोग मे लायल गेल। चीन सेहो अपनौने अछि। कोसी स' बहुतो कष्टदायक हुआंग हो नदीक उद्गम स्थान, जतय स' पानिक दबाव आगू बढ़ैत छल, पैघ-पैघ डैम बनायल गेल जाहि स' भरपूर बिजली उत्पादन, बाढ़िक रोकथाम ओ सिंचाइ सुविधा उपलब्ध भ' गेल। भूटानक चुक्का डैम जे भारतीय अभियंता द्वारा निर्मित अछि, ओकर प्रवेश द्वार पर लिखल छैक 'नदीक पानि नहि उजला सोना' तहिना लाओसक मेकांग नदी पर पैघ-

पैघ डैम मित्र देश ओ विश्व बैंकक सहायता स' बनौलक अछि। जल विद्युतक चौथाई अंश लाओस मे खपत होइछ एवं तीन चौथाई थाइलैंड सरकार कीनि लैत अछि। तहिना संप्रति बाराह क्षेत्र मे सप्तकोसी हाई डैमक जोरदार चर्चा अछि। करनाली नदी पर प्रस्तावित शीशापानी बांध (विद्युत उत्पादन क्षमता 16,000 मेगावाट, महाकाली नदी पर प्रस्तावित पंचेश्वर बांध (विद्युत उत्पादन क्षमता 2000 मेगावाट तथा कोसी नदी पर प्रस्तावित बाराह क्षेत्र बांध विद्युत उत्पादन क्षमता 3,300 मेगावाट)। एहि योजनाक कार्यान्वित भेला पर मिथिलांचल मे प्रचुर बिजली उत्पादन हैत आ तखनहि औद्योगिक ओ आर्थिक विकास संभव।

तृतीय पंचवर्षीय योजना काल मे सर्वप्रथम मिथिलांचल मे जल विद्युतक लेल 2.20 करोड़ टाकाक लागत स' पनबिजली घरक निर्माण कें स्वीकृति भेटल। एहि परियोजनाक तहत मुख्य पूर्वी कोसी नहर मे लगभग 4 मीटर पूर्व निर्मित जलप्रपातक उपयोग स' 20 मेगावाट जल विद्युतक उत्पादन लक्ष्य राखल गेल। 1964 मे मुख्य पूर्वी कोसी नहरिक कटैया स्थान मे पांच-पांच मेगावाटक चारिटा टरबाइनक निर्माणक काज चालू भेल जे 1971-72 मे पूरा भेल। चाक टरबाइन जापान स' खरीदल गेल। निर्माणक बाद प्रति टरबाइनक क्षमता साढ़े चारि मेगावाट संभव भ' सकल किंतु सिल्ट इजेक्टरक अभाव मे बालुक भराव होइछ एवं टरबाइनक संचालन बाधित। संप्रति तीन मेगावाट बिजली उत्पादन भ' रहल अछि। तकनीकी अज्ञानताक कारण ई जल विद्युत योजना असफल रहल।

गंडक नदी परियोजनाक स्वीकृति 4 नवंबर, 1959 कें नेपाल सरकार स' भेटल किंतु, 4 मइ 1964 कें नोपलक तत्कालीन महाराजाधिराज महेंद्र एहि योजनाक उद्घाटन बाल्मीकिनगर लग बराजक शिलान्यास स' कयल। पांच मेगावाटक तीन जल विद्युत इकाईक प्रावधान एहि योजना मे छल। 1983 मे परियोजनाक लागत 1740 लाख टाका छल जे 1996 मे 6600 लाख टाका भ' गेल। एहि योजनाक कार्यान्वयन बिहार राज्य जल विद्युत निगम करैछ एवं पूर्वी गंडक, बाल्मीकिनगर, पश्चिम चंपारण नाम स' जानल जाइछ। विद्युत उत्पाद भ' रहल छैक। दिसंबर 2001 मे 30 लाख यूनिट विद्युत उत्पादन भेल छल। ट्रांसमिशन ओ डिस्ट्रीब्यूशन बिहार राज्य विद्युत बोर्डक अधीन छैक। अनेक समस्या बिजली उत्पादन मे भ' रहल छैक यथा—

1. तिरहुत नहरि बंद भेला पर पावर हाउस स' विद्युतक उत्पादन ठप।
2. तिरहुत मुख्य नहरिक शून्य आर. डी. स' 6.70 आर. डी. तक सिल्ट भरब, जलस्राव बाधित एवं शक्ति गृह कें पर्याप्त मात्रा मे जलक अभाव।
3. पूर्वी गंडक नहरि पावर चैनेलक 1260 मीटर लंबाई मे सिल्ट भरब तथा

शक्ति गृह कें पर्याप्त जलक अभाव।

4. तीनू यूनिटक हेतु, 10,500 क्यूसेक जलक आवश्यकता मुदा जल संसाधन विभाग मात्र 7,000 क्यूसेक जल दैछ जाहि स' विद्युत उत्पादन मे कमी।

5. ई यूनिट सूरजपुरा नेपाल स' सिंक्रोनाईज्ड अछि, अत: कखनो काल नेपालक मांगक अनुरूप बिजली नहि रहला पर शक्ति गृह कें बंद करय पड़ैछ।

6. जापानी तकनीक स' बनल छैक तें स्पेयर्सक अभाव मे बंदी।

7. यूनिट के ट्रीप कयला स' पावर चैनल मे जलक वृद्धि ओ नहरिक उपरी भाग कें टूटबाक डर।

8. ट्रेस रैक मे जंगल झाड़ फंसि गेला स' उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव। राज्य सरकार द्वारा संचालित एहि योजना कें भदबे लगैत छैक। सुचारू रूपेण संचालन संकट मे।

मिथिलांचल मे एहि निगम द्वारा दोसर परियोजना त्रिवेणी, पश्चिमी चंपारण मे 1.5 मेगावाटक दू यूनिट 1992 मे स्वीकृत भेल। लागत 915 लाख टाका। 21.09.2002 कें प्रारंभिक सर्वे, नहरिक जलक सर्वेक्षण जियोलोजिकल सर्वेक्षण, पावर हाउस एवं स्वीच यार्ड क्षेत्रक रेसिस्टीबिटी टेस्ट प्रारंभ कयल गेल छैक। कहिया बिजली उत्पादन हैत एकर अनुमान एहि स' लगायल जाय जे 1992क स्वीकृत योजना राज्य सरकार 9 वर्षक बाद मात्र प्रारंभिक सर्वेक्षणक शुरुआत कयने अछि।

तेसर परियोजना मिथिलांचलक सुपौल जिला मे स्वीकृत अछि। ई लघु जलविद्युत योजना सुपौलक राजापुर मे 700 कि.मि. वाट क्षमताबला 347 लाख टाका प्राक्कलित लागत स' बनत। कहिया से हैत?

मिथिलांचल मे विद्युत उत्पादनक स्थिति नगण्य अछि। अहू स' बेसी संचरण ओ वितरण (ट्रांसमिशन एवं डिस्ट्रीब्यूशन) व्यवस्था चौपट अछि। एहि क्षेत्र मे 220 के. बी. लाइनक एक्को ग्रिड नहि, जखन कि गंगाक दक्षिण मे पांच टा 132 के. बी. लाइनक 58 ग्रिड स्टेशन मे मिथिलांचल मे मात्र 18/220 के. बी. लाइन जे बेगूसराय जीरो माइल मे निर्माणाधीन छल, जून 2002 तक चालू संभवना छल। लटकले अछि। एहि ग्रिड स' दरभंगा विद्युत एरिया बोर्ड-पंडौल विद्युत क्षेत्र मुजफ्फरपुर लाइन 40 वर्ष पुरान भ' गेल छैक। एहि क्षेत्र कें बिजली आपूर्ति हेतु एकमात्र साधन मोकामा पुलक केबुल लाइन (हाथीदह क्रांसिंग) बरौनी ताप विद्युत केंद्रक समीप छैक। एहि दोहरा पथ स' 100-150 मेगावाट बिजली संचरणक व्यवस्था छल। 1955 मे एकटा परिपथ जरि गेल जकर मरम्मति आब लगचियाल छैक। दू संचरण लिंक—

(1) बरौनी-बिहारशरीफ दोहरा परिपथ 220 के. बी. लाइनक

(2) मुजफ्फरपुर-फतवार बिहारशरीफ-बोधगया-दोहरा परिपथ 220 के.बी. विद्युत शक्ति वितरणक हेतु, 33 के.बी.क अनेक उपकेंद्र कार्यरत छैक। जरल ट्रांसफार्मरक मरम्मति समय पर नहि। आठम पंचवर्षीय योजनाक अंत धर 2000 मेगावाटक कुल मांग मे मात्र 1408 मेगावाट उपलब्ध भ' सकल। मरम्मति आदि मे 21 करोड़ टाका एवं दीर्घकालीन योजनाक हेतु (उत्पादन 1008+ संचरण एवं वितरण 258+ उपकेंद्र 104) कुल 1370 करोड़ टाका आंकल गेल छल। मिथिलांचल मे प्रतिव्यक्ति 70 किलोवाट बिजलीक उपयोग आंकल गेल छल जे मात्र 18 किलोवाट भेटल। 1998-99 मे संचरण व्यवस्था पर 100 करोड़ टाका खर्च करबाक योजना छल, जाहि मे हाथीदह गंगाक्रांसिंग 148 किलोमीटर, बेगूसराय स' पूर्णिया धरि 384 किलोमीटर एवं मुजफ्फरपुर स' बेगूसराय लिंक लाइन 2000 तक पूरा करबाक छल मुदा एखनो लटकले अछि।

मिथिलाक अधिकांश गाम मे देश कें 55 वर्ष स्वतंत्र भेलाक बादो बिजलीक आलोक एखन तक पसरि नहि सकल। प्रकाशक लेल डिबिया आ लालटेन। सामर्थ्यवानक दलान पर पेट्रोमैक्सक दर्शन। राज्य सरकारक फाइल पर विशेष ग्रामीण विद्युतीकरण। 14,000 गाम मे संचिका पर कारी मोंसि स' बिजलीक संचरण ओ वितरण। स्वयं राज्य सरकार एहि आरोप कें स्वीकार कयलक। केंद्र सरकार एहि हेतु पहिने करोड़ो टाका दैत छल, जे 1994 स' बंद क' देलक। फलस्वरूप, 1994-97 तक ग्राम्य विद्युतीकरणक काज ठप रहल। 1996-97 स' राज्य योजना स' 100 करोड़ टाका ग्राम विद्युतीकरण लेल स्वीकृत। गाम मे विद्युत चोरीक समस्या गंभीर छैक। अधिकांश लोक पटौनीक हेतु एक एच. पी.क लाइन लैत अछि किंतु तीन एच.पी.क मोटर चलबैत अछि। एहि स' ट्रांसफारमर पर लोड पड़ैछ आ जरि जाइछ। ट्रांसफारमर कें जरि गेलाक बाद राशिक अभाव मे ई बदलल नहि जाइछ। नतीजा अन्हार कूप। सरकारक बिजली विभागक कथन छैक जे ग्रामीण क्षेत्र मे विद्युत उपभोगक शुल्क लोक देबय नहि चाहैत छथि। ट्रांसफारमर लगायल जाइछ। राज्य सरकार जे दावा करैछ, दरअसल विद्युत उत्पादन हो आकि संचरणक विस्तार अथवा नीचा स्तर धरि एकर वितरणक व्यवस्था एहि अंचल कें प्रत्येक स्थल पर तिरस्कार भेल छैक। एहना स्थिति मे मिथिलाक आर्थिक विकास कें अवरुद्ध होयब स्वाभाविक। बिहारक मुख्यमंत्री 22 नवंबर 2002 कें घोषणा कयलनि जे 2007 तक राज्यक समस्त गाम बिजली स' आलोकित भ' जायत।

राज्य सरकारक बिजली विभाग बिजलीक चोरी स' परेशान अछि त' बिजली उपभोक्ता लोड शेडिंग स'। लाईलाज दुनू बीमारी अर्थव्यवस्था कें ध्वस्त करैछ। पूरा राज्य मे 80 प्रतिशत लोक बिजलीक चोरी करैत छथि। अनेक तरीका प्रयुक्त:

बिजलीक मीटर जरा देब, मीटर बंद क' देब, मीटर उल्टा घुमा देब; बिजलीक खम्भा स' सोझे लुप लगाक' बिजलीक आपूर्ति, दुकानदार द्वारा 90 प्रतिशत बिजली चोरी, सरकारी कार्यालय मे बेरोक-टोक बिजलीक चोरी, कल कारखाना द्वारा बिजली चोरी, ए.सी. मशीन सामान्य दर मे चलायब आदि। एहि चोरी मे बिजली विभागक अधिकारीक मिलीभगत रहैछ। इलेक्ट्रोनिक मीटर एहि चोरी कें बंद क' सकैछ। लोह आ लोहार दुनूक दोष छैक। दक्षिण भारत-तामिलनाडुक प्रत्येक गाम मे बिजली पहुंचि गेल छैक ओ विद्युत चोरीक नामोनिशान नहि।

भगवान भास्करक प्रकाश जे करोड़ो मील दूर छथि ओकरा धरती पर पहुंचय मे लगभग 8 मिनट लागि जाइछ। यदि एहि प्रकाश कें संचित कयल जाय त' वैकल्पिक उर्जाक रूप मे जनजीवनक प्रति पैघ उपकार हैत। एहि मे विस्फोटक रासायनिक प्रक्रियाक कारण तापमान 6000 डिग्री आकल जाइछ। प्रति सेकेंड हजारो लाख टन गैस हिलियम मे परिवर्तित होयबाक कारण लगातार एतेक उर्जा उपलब्ध होइछ जे करोड़ो वर्ष धरि खतम नहि भ' सकैछ। एहि उर्जा स्रोतक उपयोग हेतु वैज्ञानिक 'फोटो बोल्टीय सेल' (सोलर मोडयूल्स) उपकरण कें विकसित कयलनि अछि। एकरा बैट्री मे मात्र भंडारण संभव भेल छैक। एहि सोलर स' पंप द्वारा खींचब ओ सिंचाइ, पानि गर्म करब, वैक्सीन रेफ्रीजिरेटर घर मे बिजली तथा बैट्री ओ कनवर्टरक सहायता स' घर-बाहर बिजली ओ बिजली स' चलयबला छोट-छोट उपकरण कें उर्जान्वित कयल जा सकैछ। टाटाक प्रतिष्ठान ब्रिटिश पेट्रोलियमक सहयोग स' अनेक उपकरण बजार मे प्रस्तुत कयलक। सौर उर्जाक निर्माण मे वैज्ञानिक नित्य नव-नव प्रयोग क' रहल छथि। मिथिलांचल मे एकर पूर्ण उपयोग होयबाक चाही।

अपारंपरिक उर्जा स्रोत मे बायो गैस एक प्रमुख साधन अछि। मिथिलांचल मे माल-जाल पोसल जाइछ। जाहि गाम मे पर्याप्त गोबर उपलब्ध हो ओहि गामक हेतु एक आदर्श संयत्र थिक बायो गैस।85 घन. मी. क्षमताक एक संयंत्रण स' लगभग चालीस परिवारक भोजन बनयबा योग्य गैसक आपूर्ति संभव। एहि स' पटौनी ओ बायो गैस लेंप स' रोशनीक व्यवस्था सेहो संभव। पारिवारिक बायो गैस संयंत्र गैसक रूप मे सख्त ओ स्वच्छ ईंधन गैस चूल्हा तथा गैस लैंप प्रकाशक काज करैत छैक। पवन पंप स' पटौनी तथा सामुदायिक पेयजल उपलब्ध कयल जाइछ। सोलर ड्रायर स' मिरचाई एवं अन्य फसिल कें सुखबय मे ओ लकड़ी कें सिजनिंग कयल जाइछ। बायो गैस संयत्र लगयबाक हेतु सरकारी साहाय्य उपलब्ध होइत छैक। जिला प्रशासन आ कि पटनाक 'ब्रेडा' कार्यालय स' संपर्क करय पड़त।

की राज्य सरकारक बिजली विभाग लालटेन युग मे पुन: प्रवेश करय जा रहल

अछि? बिजलीक उत्पादन, संचरण ओ वितरणक स्थिति एकर द्योतक। विभाजित बिहार मे बिजली उत्पादनक क्षमता 540 मेगावाट जखन कि महाराष्ट्र मे 7,571 मेगावाट, पड़ोसी उत्तर प्रदेश मे 6085 मेगावाट, तामिलनाडु मे 5,788 मेगावाट ओ उड़ीसा मे 1,693 मेगावाट। हम सभ उड़ीसा स' सेहो पछुआयल छी। परकैपिटा खपत अपना राज्य मे वर्ष मे 60 यूनिट जखन कि पंजाब मे 861 यूनिट। कुल 38,475 गाम मे मात्र 19,000 गाम मे बिजली पहुंचल अछि जे पचास प्रतिशत स' कम अछि, जखन कि राष्ट्रीय ग्रामीण विद्युतीकरण 84 प्रतिशत छैक। शहरी विद्युतीकरण मात्र 6 प्रतिशत अपना राज्य मे। स्पष्ट अछि बिहार राज्य डिबिया युग मे प्रवेश क' रहल अछि। बिजली ओ एकर सामानक चोरी एवं प्राकृतिक आपदाक कारण 13,306 गाम स' बिजलीक संचरण ओ वितरण कें बिहार राज्य विद्युत बोर्ड हटा देलक। की दुखद स्थिति? आर्थिक विकास ओ उद्योगीकरण असंभव!

मिथिलांचल मे प्रकृति प्रदत्त प्रचुर साधन रहितहुं विपन्नता। एकर सही उपयोग नहि भेल। जल विद्युतक पैघ भंडार अछि। थर्मल पावरक तुलना मे पनबिजली सात गुणा सस्ता। विश्वक आधुनिक टेक्नोलोजी कें अपनाबय पड़त। जाबत सप्तकोसीक हाइडैम बाराह क्षेत्र मे नहि बनत, मिथिलावासीक आर्थिक स्थिति नहि सुधरत। ई काज राज्य सरकार नहि क' सकैछ। भारत सरकार एहि हेतु कृत संकल्प अछि। राज्य सरकार सेहो केंद्र सरकार स' एहि योजना कें पूरा करबाक हेतु अपील कयने अछि। जनताक एकता मे शक्ति अछि। मिथिलांचलक बिजलीक समस्याक समाधान राजनैतिक चालि नहि। जन प्रतिनिधि कें प्रत्येक मास उर्जाक स्थायी निदानक हेतु सरकार पर दबाव बनेने रहय पड़त। दृढ़ राजनैतिक इच्छाक अभाव मे लालटेन युग मे जनमानस धकेलल जा रहल अछि। बाराह क्षेत्रक सप्तकोसी डैमक जल विद्युत योजना कें सफल करहि पड़त। तखने कृषि, कृषि आधारित उद्योग (गृह, लघु ओ मध्यम), आइ. टी. ओ अन्य उद्योग विकसित भ' सकत। रोजगारक विपुल सुअवसर भेटत।

(अक्टूबर-दिसंबर, 2002)

मिथिला मे चीनी उद्योग

बिहार सरकारक मान्यता अछि जे झारखंड अलग राज्य बनि गेला स' चीनी उद्योग एकमात्र उद्योगक रूप मे बचि गेल छैक। चारि लाख कुशल ओ अकुशल मजदूर तथा कुसियार उत्पादकक जीविकोपार्जनक मुख्य स्रोत आब यैह अछि। राज्य सरकार कें एहि उद्योग स' लगभग सात करोड़ रुपया राजस्व प्रतिवर्ष प्राप्त होइछ। आजादीक समय चीनी उत्पादन मे बिहारक दोसर स्थान छल। चीनी उत्पादनक 40 प्रतिशत हिस्सा बिहार स' प्राप्त होइत छल जे आब घटि क' 4 प्रतिशत रहि गेल अछि। बाढ़ि ओ रौदी स' पीड़ित एहि राज्यक कृषक कें कुसियारक खेती पैघ सहायक होयतनि, कारण ई नगदी फसिलक खेती अछि। किसानक अर्थव्यवस्था एहि स' जुड़ल अछि। कुसियारक खेतीक पूर्ण संभावना ओ राज्यक बंटबाराक बाद एहि उद्योगक विकास पर विशेष ध्यान देबाक प्रयोजन अछि।

मिथिलांचलक मुख्य उद्योग—चीनी उद्योगक विकास एतय 1932 स' प्रारंभ होइछ। सर्वप्रथम एहि उद्योग कें तखनहि संरक्षण देल गेल छल। ओना उन्नैसम शताब्दीक पूर्वार्द्ध धरि ई उद्योग एतय प्रगति पर छल। 1850 मे नीलक मूल्य मे वृद्धि भेला स' नील उद्योग आकर्षक भ' गेल ओ पूर्ण विकसित सेहो। एहि अंचल मे चीनी उद्योग डच्च व्यापारी द्वारा विकसित कयल गेल। 1904-05 मे इंडिया डेवलपमेंट कंपनी एहि उद्योग मे अत्यधिक सफलता प्राप्त कयलक। एहि सफलता स' एहि उद्योग कें एहि अंचल मे विकसित होयबा मे प्रेरणा भेटल। संप्रति मिथिलांचल मे 17 गोट चीनी मिल कार्यरत अछि। यथा, पूर्वी ओ पश्चिमी चंपारण जिला मे-9, मुजफ्फरपुर-सीतामढ़ी मे-3 ओ दरभंगा-समस्तीपुर एवं मधुबनी जिला मे पांच टा अछि। एकर अतिरिक्त सहकारिता क्षेत्र मे एक चीनी मिल पूर्णिया जिलाक बनमनखी मे अछि।

भारतीय चीनी उद्योगक विकास वस्तुत: 1931 स' प्रारंभ होइछ। एहि वर्ष सरकार एहि उद्योग कें संरक्षण देलक। एहि वर्ष भारत सरकार सात वर्षक लेल

चीनी आयात पर आयात कर लगौलक। फलस्वरूप चीनी आयात कमि गेल आ देश मे भरपूर चीनी उत्पादन होबय लागल। मिथिलांचल एहि उद्योग मे अग्रणी भ' गेल। 1960-61 मे चीनीक उत्पादन अत्यधिक भेल। तृतीय पंचवर्षीय योजना मे चीनीक उत्पादन अनुमान स' बेसी भेल। एहि योजना काल मे भारत मे चीनी मिल यंत्र एवं उपकरण निर्माण मे सेहो आत्मनिर्भर भ' गेल। चीनीक निर्यात मे सेहो वृद्धि भेल। एहि भूभाग मे एहि उद्योगक विकास मे निम्नांकित बाधा उपस्थित अछि-

सुलभ-सस्त दर पर पटौनीक व्यवस्था, कुसियारक नव-नव भेद ओ प्रभेद प्रारंभ करब, कुसियारक विकास मे अत्यधिक मात्रा मे उपकरणक प्रयोग, कुसियारक खेत स' मिल धरि यातायात (सड़क, रेल, ट्राली आदि) सुविधा जाहि स' यातायात खर्च कम हो एवं सुखाओन सेहो नहि जाय। कुसियारक उत्पादन हेतु प्रोत्साहन, उप उत्पादक सुंदर उपयोग, यंत्र एवं उपकरणक प्रतिस्थापन मे आर्थिक असुविधा। एहिठाम चीनी मिलक संग डिस्टीलरी मिलक संयोग सेहो नहि अछि। मिथिलांचलक चीनी मिल सब अत्यंत पुरान भ' गेल अछि। सतरहो मिलक यंत्र ओ उपकरण जर्जर भ' गेल छैक। चीनी मिलक यंत्रक जीवन मात्र 25 वर्ष आंकल गेल छैक। एहिठामक सब मिलक जीवन एहि स' बहुतो बेसी भ' गेल छैक। एकर प्रतिस्थापन ओ आधुनिकीकरण नहि भ' सकल अछि। चीनी मिल आर्थिक संकट मे अछि। राष्ट्रीयकरण ओ भूमिक हदबंदी भ' गेला स' उद्योगपति सभ पूजी विनियोजन नहि करय चाहि रहल छथि। चीनीक उत्पादन मूल्य ओ वितरण पर सरकारी नियंत्रण अछि। सरकार चीनीक स्टॉकक नियंत्रण, भंडारण, वस्तु क्रय, पैकिंग, ग्रेडिंग, नाप-तौल आदि पर नियंत्रण रखने अछि। उप-उत्पादक निर्वतन मौलेसेस कंट्रोल आर्डर 1961क अंतर्गत करैछ।

कुसियारक खेती मिथिलांचलक कृषक नगदी आमदनीक दृष्टि स' मुख्य रूपें करैत छलाह सभ मुदा कृषक सभ समय पर उचित मूल्य चीनी मिल द्वारा आ पूर्जी मे हेराफेरीक कारण एहि नगदी खेती स' विमुख भ' गेल छथि। उत्तम कोटिक कुसियारक बीज सेहो नहि उपलब्ध होइछ। पहिने पूसा सुगरकेन इंस्टीच्यूट (समस्तीपुर) एहि अंचल मे अनुसंधान द्वारा नव-नव प्रजातिक कुसियार उपजयबाक प्रयास करैत छल किंतु जहिया स' ई इंस्टीच्यूट राजेंद्र कृषि विद्यालयक अंग भ' गेल छैक, कुसियारक खेतीक विकासक लेल उचित काज नहि भ' रहल अछि। संगहि माटि ओ वनस्पतिक जांच सेहो नहि भ' रहल छैक। कच्चा माल, निर्मित माल ओ उपोत्पादकक उचित मूल्य नहि भेटला स' चीनी मिल मालिक कें आर्थिक बदहाली ओ कोषक अभाव मे मिलक आधुनिकीकरण संभव नहि भेल छैक।

बिहार सरकार चीनी उद्योगक बहुमुखी विकास हेतु 1974-75 मे कंपनी

अधिनियमक अंतर्गत बिहार स्टेट शुगर कारपोरेशन लिमिटेडक स्थापना कयलक। क्रमश: 15रुग्ण चीनी मिल कें अपना अधीन कयलक, जाहि मे एहि अंचलक रैयाम, लोहट, सकरी, समस्तीपुर, गोरौल, बनमनखी, लौरिया, मोतीपुर, गुरारू एवं सुगौली आ बाद बाकी मिल सिवान ओ मध्य बिहार मे अवस्थित छैक। रुग्ण मिलक समस्याक समाधान ओ आधुनिकीकरण मुख्य उद्देश्य छल। निगमक अधीन आयल मिल एकोटा बंद नहि छल, सब कार्यरत मुदा निगम अपन उद्देश्यक विपरीते काज कयलक। 1984-85 मे निगमक चीनी उत्पादनक विवरण जे विधान सभा मे मंत्री प्रस्तुत कयलनि ओ आर्थिक दृष्टि स' असंगत छल। प्रश्न छल जे एक क्विंटल चीनी उत्पादन मे कतेक खर्च? उत्तर छल—चीनी निगमक मिल मे 3,082.89 रुपया जखन कि निजी मिल मे एक क्विंटल चीनी उत्पादन मे मात्र 384 रुपया। चीनी निगम मे राज्य सरकारक 997 लाख हिस्सा पूजी लागल अछि एवं घाटा 919.85 लाख रुपया भ' चुकल। 2100 कर्मचारी स्थायी एवं 8500 मौसमी स्थायी। पेराई चालू रहला पर दैनिक मजदूर। 5-10 साल स' कर्मचारी कें वेतन नहि भेटल छनि। मात्र वेतन मद मे निगम कें 125 करोड़ रुपया देय अछि। भविष्य निधि, कर्मचारी बीमा आदि एकर अतिरिक्त। गन्ना किसान कें करोड़ो मे देय। डा. एस.पी. ठाकुरक नेतृत्ववला चारि सदस्यीय समिति अपन जांच रिपोर्ट मे घाटाक कारण—गबन, धोखाधड़ी, हिसाब-किताब मे फेरबदल ओ जालसाजीक ठोस उदाहरण पेश कयलक। सरकार स' हिनका लोकनिक खिलाफ मुकदमा ओ संपति स' असूलीक सिफारिश कयल गेल। भ्रष्ट पदाधिकारी लोकनि अपन संरक्षक द्वारा बचा लेल गेलाह। भ्रष्ट अफसर आ कर्मचारी बचि गेलाह एवं निगम डूबि गेल। 15 मिलक चीनी उत्पादन ठप भ' गेल। वर्ष 1997 मे पटना उच्च न्यायालय एक मामिला मे निर्णय देलक जे निगमक बंद चीनी मिल कें चालू कयल जाय, निगम कर्मचारी कें बकाया भुगतान कयल जाय अथवा निगम कें परिसमापनक आदेश देल जाय। राज्य सरकारक गन्ना विभाग कोनो कारवाई नहि कयलक। तखन कोर्ट अल्टीमेटम देलक। राज्य सरकार 12 अगस्त, 2002 कें परिसमापनक आवेदन कयलक। एतेक भेल जे तीनटा मिल कें पुरान मालिक सरकारी शर्त्त पर चलयबाक हेतु प्रस्तुत भेलाह मुदा कार्यान्वयन नहि भेल। एहि मे मोतीपुर ओ गोरौल चीनी मिल सेहो छल। डा. एस. सी. झा अध्यक्ष बिहार स्टेट फाइनेंस कमीशन अपन प्रतिवेदन मे बिहार राज्य चीनी निगम कें अविलंब परिसमापनक सिफारिश राज्य सरकार स' कयने छथि।

निजी क्षेत्रक चीनी मिल मे हरिनगर सुगर मिल्स प्रतिदिन 5000 मेट्रिक टन क्षमता स' पेराई क' रहल अछि ओ निजी क्षेत्र मे बढ़िया लाभ अर्जन क' रहल अछि। नरकटियागंज, मझौलिया, रीगा, मोतिहारी ओ हसनपुर प्रतिदिन 2000 मैट्रिक

टन अपन पेराईक क्षमता रखने अछि। 3 फरवरी 2003 कें हरिनगर सुगर मिल मे छोट गन्ना कृषक कुसियारक मूल्यक वृद्धि लेल आंदोलन कयलनि। हिनक मांग प्रति क्विंटल 91 रुपया छल, जखन कि मिल मालिक मात्र 76.88 रुपया द' रहल छल। यैह स्थिति सीतामढ़ीक रीगा मे उपस्थित भेल। गत वर्ष कुसियारक मूल्य 86 रुपया प्रति क्विंटल भुगतान भेल छल, जखन कि एहि वर्ष मिल मालिक 64.50 रुपया प्रति क्विंटल स' बेसी देबाक हेतु तैयार नहि भेल। फलस्वरूप मात्र भिठ्ठामोर ओ रक्सौले नहि नेपाल सीमा स' सटल अंचलक अधिकांश कुसियार नेपालक चीनी मिल मे चल गेल जतय गन्ना कृषक कें 125 रुपया प्रति क्विंटल मूल्य भेट जाइत छनि। बिहार सरकारक गन्ना विभाग एहि समस्याक समाधान नहि क' पाबि रहल अछि। तखन एहि अंचलक चीनी उद्योगक विकास कोना होयत? की एक कल्याणकारी सरकारक दायित्व नहि अछि जे वृहत संख्या मे एहि उद्योग मे लागल कर्मचारीक हितक विषय मे सोचय?

चीनी उद्योगक समस्याक अध्ययन भारत सरकार एक समिति बना क' कयने छल आ राष्ट्रीय चीनी प्राधिकारक सृजनक प्रस्ताव रखलक। एकर मुख्य उद्देश्य देशक अंदर चीनीक उपयोग, चीनीक निर्यातक पता लगायब तथा उत्पादन ओ बिक्रीक पूर्ण व्यवस्था करब निर्धारित भेल। योजनाक अनुसार प्रत्येक वर्ष सरकार कृषि मूल्य निगमक परामर्श पर चीनी उद्योगक हेतु कुसियारक मूल्य निश्चित करब छल। मूल्य निर्धारण मे विभिन्न क्षेत्रक आवश्यकतानुसार परिवर्तन कयल जा सकैछ। अखिल भारतीय चीनी मिल मालिक संघ एकर प्रतिवाद कयलक। 1998 मे कुसियारक मूल्य मे 16 प्रतिशत वृद्धि ओ चीनीक मूल्य मे मात्र 5.5 प्रतिशत वृद्धि भेलै। एकर अतिरिक्त बिहार सरकार बजार शुल्क, कुसियार, चीनी ओ छोआ पर एवं क्रय-कर कुसियार पर लैत अछि।

3 दिसंबर, 2002 कें केंद्र सरकार चीनी उद्योग तथा गन्ना कृषकक समस्याक स्थायी समाधानक लेल एक दीर्घकालीक नीति निर्धारण करबाक घोषणा कयलक। अल्पकालीन उपायक तहत सरकार चीनीक 28 लाख टन बफर स्टॉक बना रहल अछि। जाहि हेतु 412 करोड़ रुपया चीनी विकास कोष स' लेल जा रहल छैक। गन्ना कृषक बकाया भुगतानक हेतु चीनी विकास कोष स' 786 करोड़ रुपया द' रहल छैक। चीनी उद्योगक समस्याक निदानक हेतु 80 लाख मैट्रिक टन चीनी निर्यातक घोषणा सेहो अछि। राज्य सरकार 10 दिसंबर, 2002 कें एक उच्चस्तरीय विभागीय समीक्षा कयलक। विभागीय मंत्री कहलनि जे राज्य मे 2 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल मे गन्नाक खेती भेल छल जकर पेराई 10 मिल द्वारा कयल गेल एवं उत्पादन मे 25-30 प्रतिशत वृद्धि गत वर्षक तुलना मे भेल। गन्ना कृषक कें 95 प्रतिशत

भुगतान कयल जा चुकल अछि। मात्र 10.50 करोड़ रुपया बकाया भुगतान एखनो तक कृषक कें नहि कयल गेल छनि। एहि हेतु मिल मालिक पर दबाव देल जा रहल छैक। राजस्व मे वृद्धि भेल छैक जे आब 7 करोड़ रुपैया प्राप्त भेल छैक। किंतु अपन समीक्षा मे बंद पड़ल 19 मिल एवं 11000 मृतप्राय कर्मचारीक कोनो चर्चा नहि अछि। संगहि एहि उद्योगक विकास कोना होयत ताहि पर विचार-विमर्श कयलाक बाद 4 फरवरी 2003 कें गन्ना विकास मंत्री, बिहार सरकार सरकारक समक्ष योजना प्रस्तुत कयल जे कुसियारक सिट्ठी स' 60 मेगावाट बिजली तैयार कयल जा सकैछ। जे 10 मिल कार्यरत अछि ताहि स' 20 जिला कें 25 वर्ष तक बिजली देल जा सकैछ मुदा एहि योजना पर कोनो काज नहि भेल। चीनी उद्योगक विकासक हेतु डा. ईरानी कमीशन (बिहार इंडस्ट्रीज कमीशन, 2001) जे अपन परामर्श देलक तकर कार्यान्वन नहि कयल गेल। ई कमीशन चैप्टर 6 पेज 48-56 एवं चैप्टर 13 मे 'रिवाइवल ऑफ सिक यूनिट' एहि विषय पर विस्तृत सुझाव देने अछि।

1995-96 मे केंद्र सरकार कुसियारक विकासक हेतु सुबैक्स योजना चलौलक। एकर अंतर्गत फसिल प्रत्यक्ष, प्रशिक्षण, कृषि यंत्र, क्रय, बीज गुणन हेतु आर्थिक साहाय्य तथा ड्रिप सिंचाइक आधारभूत संरचनाक निर्माण छल। राज्य सरकार सेहो मानि रहल अछि जे सिंचाइ सुविधाक अभाव, जलजमावक समस्या, ऋण सुविधाक अभाव एवं कम उपजाऊ भूमि पर खेतीक कारण बिहार मे कुसियारक उत्पादकता कम अछि। कुसियारक राष्ट्रीय उत्पादकता 70 टन अछि जखन कि बिहार मे प्रति हेक्टेयर 45-50 टन। चीनी उद्योग मुख्य रूप स' कुसियारक फसिल पर आधारित अछि। सकल उत्पादन मे वृद्धिक लेल नव तकनीक प्रयोग मे आयल अछि। वर्ष 2002-03 मे 'मैक्रायोड ऑफ एग्रीकलचर'क तहत केंद्र चालित योजना मे 220 लाख रुपयाक कार्य योजना प्रस्तावित अछि जाहि मे राज्य सरकार कें 10 प्रतिशत अर्थात 22 लाख रुपया देबाक छैक मुदा योजनाक कार्यान्वन भेले पर सफलताक आशा कयल जा सकैछ।

बिहार सुगर मिल्स एसोसिएशनक मंतव्य छैक जे बिहार राज्य चीनी निगमक अंतर्गत चीनी मिलक एहन दुर्दशा क' देल गेल छैक जे निजी उद्यमी आब एकरा नहि चला सकैत छथि। आजुक तारीख मे बिहार मे निजी क्षेत्र मे जे 10 मिल चलि रहल अछि ओ मिल मालिकक मात्र निजी प्रयास स' । सरकार चीनी मिल पर टैक्स बढ़ा देने अछि। केन सेस एक रुपयाक जगह 1.75 रुपया तथा गन्ना पर कमीशन प्रति क्विंटल जे 15 पैसा छल से आब 1.50 रुपया अछि। हिनक कथन छनि जे चीनी उद्योग स' जुड़ल अधिकतर नीतिगत फैसला केंद्र सरकारक स्तर स' कयल

जाइछ। देशक अन्य राज्य सरकार नीति निर्धारण मे प्रभावशाली प्रयास करैछ। एकर विपरीत बिहार सरकार एहि दिशा मे उदासीन रहैछ। गन्नाक खेतीक आधारभूत संरचना, सिंचाइ, जल निकासी, परिवहन आदि कें राज्य सरकार द्वारा विकसित नहि कयल गेल छैक।

इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ सुगरकेन रिसर्च, 1994 मे गुड़ ओ खांडसारी चीनीक पक्ष मे अपन ओकालत कयने अछि। एकर मते 40-45 प्रतिशत कुसियार स' गुड़ ओ खांडसारी बनाओल जाइछ तथा 42 प्रतिशत देशक चीनी उद्योगक काज मे अबैछ। स्वास्थक दृष्टि स' गुड़क उपयोग लाभप्रद अछि। मात्र गुड़क रखरखाव आधुनिक पद्धति स' होयबाक चाही। गुड़क विकास स' ग्रामीण विकासक मार्ग मे अत्यधिक सहायता भेटत। समान आर्थिक विनियोग स' चीनीक तुलना मे गुड़ 10 गुना विशेष नोकरी सृजन करबाक क्षमता रखैछ। कुसियार स' गुड़ मे 10 प्रतिशत चीनी उपलब्ध होइछ त' खांडसारी मे मात्र 8.5 प्रतिशत। गुड़क निर्यात ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, ईरान, मिस्त्र, अरब गणराज्य, जर्मनी, मलेशिया आदि जगह मे होइछ। एहि उद्योग कें विकसित कयला स' विदेशी आय मे वृद्धि होयत।

बिहार मे 29 चीनी मिल अछि मुदा एखन तक एकर उप-उत्पादकक समुचित व्यवस्था नहि भेल अछि। कुसियारक सिट्ठी स' कागत बनाओल जा सकैछ, जकरा एखन तक विकसित नहि कयल गेल छैक। इथीनौलक संग अन्य केमिकल पदार्थ बनाओल जा सकैछ। सब स' पैघ शीरा-छौआ स' मद्य निर्माण अत्यधिक भ' सकैछ। एखनो राज्य मे मद्य निर्माणशालाक अभाव अछि। 1994 मे भारत सरकार मोलसेस (छोआ) नियंत्रण विधान कें समाप्त क' देलक। बिहार छोड़ि अन्य राज्य नियंत्रण हटा लेलक। बिहार सरकार कें सेहो हटा लेबाक चाही। डा. ईरानीक मते चीनी उद्योगक सही विकास भेला स' 45 लाख क्विंटल शीराक उत्पादन होयत जाहि मे संप्रति राज्यक मद्य निर्माणशाला मे 23 लाख क्विंटल खपतक क्षतमा छैक। शेष एतय स' निर्यात करय पड़त अथवा नव भव्य निर्माणशलाक निर्माण करय पड़त।

(जून-जुलाइ, 2003)

मिथिला मे कृषि आधारित उद्योग

मिथिलाक आर्थिक विकास गामक विकास स' साक्षात जुड़ल अछि। ग्रामीण विकास कृषि, पशुपालन, मत्स्यपालन ओ कुटीर एवं लघु उद्योगक विकास पर निर्भर छैक। ओतय एहि कार्यक लेल आधारभूत संसाधनक उपलब्धता तथा ग्रामीण रोजगार सेहो आवश्यक। एहि स' गामक निर्धनता दूर हैत एवं कायाकल्प हैत। ई भू-भाग कृषि प्रधान क्षेत्र अछि। कृषि आधारित उद्योगक विकास-विस्तार स' ग्रामीण विकास हएत। कारण ग्रामीण बेरोजगारी कें दूर करब एवं अर्थव्यवस्था मे सुधार आनबाक क्षमता कृषि आधारित उद्योग मे समाहित अछि।

आजुक बिहारक भौगोलिक क्षेत्रफल 93.81 लाख हेक्टेयर छैक जाहि मे मिथिलाक क्षेत्रफल 58.50 लाख हेक्टेयर अछि। कुल भौगोलिक क्षेत्रफलक 62.36 प्रतिशत। कुल बिहारक 38 जिला मे 21 जिला मिथिला मे अछि। नवगछिया एखन तक जिला नहि बनल अछि, पुलिस प्रशासनक जिला अछि। उत्तर मे हिमालय-नेपाल, दक्षिण मे गंगा नदी, पूर्व मे महानंदा आ पश्चिम मे उत्तर प्रदेश। ई नदीमातृक अंचल अछि, नदीक बाहुल्य ओ नदीक तीर मे लोक सब बसैत गेलाह तें तिरहुत नाम स' सेहो जानल जाइछ। गंगा, गंडक, कोसी, बलान, बागमती, कमला, करेह, अधवारा समूहक नदी ओ महानंदा एतयक मुख्य नदी। एत' जनसंख्याक घनत्व अधिक अछि, अर्थात् जमीन कम लोकक संख्या अधिक।

नदी, जल, श्रम संसाधन संपन्न मिथिलाक वस्तुत: कृषि क्षेत्र मे विकास के बिना मानचित्र नहि बदलि सकैछ। कृषि उत्पादकताक संग कृषि मे सुधारक बिना विकासक कल्पना अर्थहीन। कृषि उत्पादकता कें बढ़ायक कृषि पर आधारित उद्योग कें बढ़ाबा देबाक संग, कृषि मे पूजी निवेशक गतिशीलता मे तेजी लाबए पड़त। खाद, बीज, आधुनिक उपकरण कें किसान तक पहुंचाबय पड़त। समस्या मात्र बाढ़ि नहि, जल-जमाव सेहो गंभीर समस्या अछि। मात्र कांटी (मुजफ्फरपुर) एवं बरौनीक ताप विद्युत स' बिजली समस्याक समाधन नहि हैत। 1946 मे केंद्रीय जल, सिंचाइ

ओ परिवहन आयोग द्वारा अनुशंसित चतराघाटी मे बाराह क्षेत्रक पास 750 फीट उंच, 1,10,000 एकड़ फूट क्षमताबला कंक्रीट बांध, 1200 मेगावाट क्षमतावला जल-विद्युत संयंत्र तथा नेपाल-बिहार मे 30,00,000 एकड़ भूमि सिंचाइ क्षमतावला योजना कें नकारि देल गेल। अंत मे 1953 मे हनुमाननगर मे कोसी तटबंध बनव प्रारंभ भेल जे एखन तक पूरा नहि भए सकल छैक। जाबत नेपाल सरकार स' समझौता क' बहुद्देशीय नदी घाटी योजना पूरा नहि कयल जायत मिथिलांचल बाढ़ि, जल-जमाव, बिजलीक पूर्ण आपूर्ति, यातायात सुविधा ओ अन्न स' वंचित रहि जायत। संगहि एहि अंचलक भूमि मुलायम एवं कमजोर अछि। कारण नेपालक पहाड़ स' गाछ-वृक्ष कटि गेला स' ओतए स' आबएवला पानि आब बालू लबैत अछि। फलस्वरूप एहि क्षेत्र मे भारी उद्योग नहि लगायल जा सकैछ। भूकंपक खतरा सेहो बनल रहैछ। खेती मे नवीन उद्यमिता पूजीक निर्माण करए पड़त एवं यैह पूजी गैर कृषि काज मे लगबय पड़त। कृषि संबंध मे सुधार-श्रम, पूजी उद्यमिता स' । वास्तविक खेती करयबला कें जमीन पर स्वामीत्व ओ सुरक्षाक गारंटी। छोट-छोट कृषि आधारित उद्योगक लेल अभियान चलाबए पड़त। एहन अभियान नहि जे संप्रति बिहार राज्य मे 30,000 छोट-छोट इकाइ रुगण पड़ल छैक। मिथिलाक प्रतिभा (योजना आयोगक एक सर्वेक्षणक मुताबिक अविभाजित बिहारक तीस लाख लोक) ओ पूजीक पलायन कें रोकय पड़त। पूजी निवेश कें आकर्षित करय पड़त। संगहि सड़क एवं अन्य मूलभूत आवश्यकता पर जोर देला स' एहि क्षेत्रक अपेक्षित विकास कें संभव कयल जा सकैछ।

चीनी, कागत ओ जूट उद्योग एहि क्षेत्र मे वृहत् उद्योगक रूप मे विकसित छल। 18 चीनी मिल कार्यरत छल। पूर्वी ओ पश्चिमी चंपारण मे 8, मुजफ्फरपुर-सीतामढ़ी मे 3, दरभंगा, समस्तीपुर एवं मधुबनी मे 5, पूर्णिया मे मात्र एक। 11 कागतक कारखाना अछि—दरभंगा 2, बगहा-बरौनी 2, मुजफ्फरपुर, समस्तीपुर 1, पूर्णिया 3 ओ कटिहार एक। चीनी ओ कागत उद्योग रुग्ण अवस्था मे अछि, नवीकरण अपेक्षित। कटिहार मे 2 जूट मिल, समस्तीपुर मे एक ओ विराटनगर (नेपाल) मे दू मिल छैक। पूर्णिया मे 28 छोट-छोट कारखाना अछि जाहि मे 650 श्रमिक कार्यरत छथि। किसनगंज मे 16,000 एमटीक एक आधुनिक जूट निर्माणक सरकारी कारखाना अपन निर्माणावस्था मे दम तोड़ि रहल अछि। दरभंगा मे 3000 एम.टी.क एक जूट ट्वाइन प्लांट अछि। एतयक सब वृहत उद्योग आधुनिकीकरण, नवीन टेकनोलॉजी एवं पूजी निवेश मांगि रहल छैक।

कृषि विकास स' मात्र कृषक समुदाय के बांछित सुख-संपन्नता उपलब्ध नहि भ' सकैछ। एहि पर अर्थशास्त्री लोकनि एमकत भ' गेल छथि। ई संपन्नता तखने

संभव अछि जखन कृषि आ ग्रामीण उद्योगक समागम कें वैज्ञानिक ओ सही दिशा देल जायत। गामक हेतु कृषि उद्योग एवं अन्य ग्रामीण उद्योगक हेतु संसाधन जुटाबए पड़त। एहन उद्योगक हेतु कच्चा माल ओ श्रमशक्ति गामे मे उपलब्ध अछि। कृषि एवं ग्रामोद्योगक नव प्रौद्योगिकीक आवश्यकता ओ जानकारी मात्र अपेक्षित अछि।

खाद्य ओ कृषि प्रसंस्करण उद्योग

मिथिलांचल मे फल ओ साग-सब्जी अत्यधिक मात्रा मे उपजायल जाइछ। साग-सब्जी मे आलू, प्याज, लहसुन, पड़ोर, भांटा, रामतोरय, मटरक छिमी, बीन आदि प्रमुख अछि। फल मे आम, लीची, केरा, लताम, अनानस, कटहर, पपीता, बैर, जामुन आदि। आम ओ केराक अनेक विभेद एतय उपजाएल जाइछ। मसाला मे मिरचाई, धनी, हरदि, मैथी आदि। कुसियार, तमाकू, चाह ओ जूट सेहो उपजाओल जाइछ। निम्नलिखित खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मे पूजी निवेश लाभप्रद होयत—

1. टमाटर प्रसंस्करण, 2.आलू आधारित उद्योग, 3. डिब्बाबंद सब्जी उद्योग, 4. फलक पल्प ओ रस उद्योग (आम, लीची, जामुन ओ अनानस), 5. डिब्बा बंद फल, 6. केरा आधारित सामान, 7. फल आधारित स्वैस ओ वीभरेज, 8. आम ओ लीचीक पैकेजिंग (देशी ओ विदेशी व्यापारक योग्य), 9. मसालाक पाउडर (मिरचाई, धनी लहसुन ओ आद), 10. चाउर, दालि, चूड़ा, आंटा, मैदा, सातु ओ बेसन मिल, 11. तमाकू आधारित—जर्दा, सिगरेट, बीड़ी ओ पीनी, 12. जूटक सामान, सजावट ओ अन्य।

भारत सरकार खाद्य प्रसंस्करण उद्योगक बैंक ओ वित्तीय संस्था द्वारा ऋणक हेतु वरीयता क्षेत्रक परिभाषाक अंतर्गत स्थान देलक अछि। खाद्य प्रसंस्करण उद्योगक स्थापना, विस्तार एवं आधुनिकीकरणक हेतु ऋण उपलब्ध करायल जायत। 1991-2000क बजट प्रावधान मे कृषि उत्पादनक हेतु प्रशोधन शृंखला सुविधा स्थापित करबाक वास्ते कर मे छूटक माध्यम स' विशेष प्रोत्साहन देल अछि। 2001क केंद्रीय बजट मे प्रसंस्कृत खाद्य पर उत्पाद शुल्क कें समाप्त कयल गेल ओ नवीन निर्यात-आयात नीति मे कृषि क्षेत्र स' निर्यात कें विशेष प्रोत्साहन देला स' एहि उद्योग मे आशाक नव किरण जागल अछि। संगहि कोटा पाबंदी कें समाप्त भेला स' प्रतिस्पर्द्धाक कठिन चुनौती ठाढ़ भेल छैक। एहि वर्षक केंद्रीय बजट मे फल एवं सब्जीक प्रसंस्करण पर 16 प्रतिशत उत्पाद शुल्क कें समाप्त क' देल गेल अछि, जाहि स' 20 प्रतिशत स' अधिक वृद्धि दर हासिल होयबाक उम्मीद छैक। यद्यपि प्रसंस्कृत उत्पाद मे मध्यवर्ती समान पर उत्पाद शुल्क छैक तथापि सरकारक छूट कें उद्योग सकारात्म मानलक।

अखिल भारतीय खाद्य प्रसंस्करण संघक मत छनि जे प्रत्येक वर्ष 35 हजार करोड़ टाका स' अधिकक फल ओ सब्जीक नोकशान होइछ। विश्व मे फल ओ सब्जीक उत्पादन मे भारतवर्ष दोसर स्थान पर छैक। मिथिलांचल मे भारतक कुल उत्पादन मे सब्जीक उत्पादन दोसर स्थान ओ फलक उत्पादन मे तेसर स्थान छैक। भारतीय उद्योग परिसंघ मिथिला मे एहि उद्योगक विकासक लेल सविस्तार सुझाव देने अछि। अपन सुझाव मे कहल जे 35 लाख टन फल—आम, लीची, केरा, लताम, अनानस आदि तथा 20 लाख टन सब्जी—आलू, प्याज, रामतोरय, पड़ोर, मटरक छिमी, टमाटर, भांटा, सीम आदिक उत्पादन होइछ। मिरचाई, लहसुन, हरदि, धनी आदिक उत्पादन मे अग्रणी अछि। एहि हेतु कृषिक आधुनिकीकरण, उन्नत पटौनी प्रणाली, बायोटेक्नोलॉजी, पोस्ट हारवेस्ट टेक्नोलॉजी तथा खाद्य ओ फल प्रसंस्करण उद्योग मे पूजी निवेश स्वागतयोग्य अछि। एहि उद्योगक विकासक लेल बिहार सरकार हाजीपुर मे वृहत निगम स्थापित कयल जे संप्रति मृतप्राय अछि। निजी क्षेत्र मे ई उद्योग लगायल गेल जे विकसित नहि भ' सकल। बिहार सरकार नवम पंचवर्षीय योजना मे एहि उद्योगक हेतु कोनो प्रावधान नहि कयलक। मुदा भारत सरकारक खाद्य प्रसंस्करण विभाग 32 राज्य ओ केंद्रीय सरकारी क्षेत्र मे नोडल एजेंसी बनौलक अछि। एहि उद्योगक आधारभूत संरचनाक हेतु 4 करोड़ टाका एवं एहि उद्योगक लेल औद्योगिक प्रांगण, पार्क, अनुसंधानशाला, शीतगृह भंडारक हेतु 4 करोड़ टाकाक प्रवधान कयने छैक।

फल, सब्जी एवं बागवानी

मिथिला फल एवं सब्जीक उत्पादन मे देशक छिट्टाक रूप मे जानल जाइछ। भारतवर्षक कुल उत्पादन मे लीची 76.64 प्रतिशत, लताम 20.88 प्रतिशत, आम 19.38 प्रतिशत, पपीता 13.07 प्रतिशत, केरा 4.60 प्रतिशत एहि अंचल मे भेल छल। लीचीक उत्पादन मे एकाधिकार प्राप्त अछि। केरा एतय प्रति हेक्टेयर भूमि मे मात्र 15 टन होइछ जखन कि महाराष्ट्र मे 53 टन भ' रहल छैक। वैज्ञानिक कृषि पद्धति अपनयला पर चारि गुणा उत्पादन बढ़ि सकैत अछि। जतबे जमीन पर एखन एकर खेती भ' रहल छैक ओतबे पर उन्नत बीज, तकनीकी सलाह, परीक्षण, कीटनाशक औषधिक प्रयोग, वैज्ञानिक ओ आधुनिक कृषि पद्धति, भंडारण, शीतगृहक व्यवस्था ओ सरकारी सहायता स' संभव छैक। शीत भंडारणक कमीक कारण एतय फल सब्जीक कुल उत्पादनक लगभग 25 प्रतिशत भाग नष्ट भ' जाइछ। प्रसंस्करण इकाईक अभाव मे एहि उत्पादक मूल्यवर्द्धन नहि भ' पबैछ। कृषि उपज कें अधिक स' अधिक मूल्यवर्धित करबाक उद्देश्य स' राज्य सरकार ओहि सहकारी संस्था कें

अनुदान देबाक प्रयास क' रहल अछि जे समिति खाद्यान्न, तेलहन, फल एवं सब्जी क्रय करबाक क्षेत्र मे अपन रुचि देखा रहल छथि। संप्रति कृषि विपणन व्यवस्था कें मजबूत करब एवं मूल्यवर्धनक लेल रेफ्रिजरेटर बैंक स्पेसलाईज ट्रांसपोर्ट व्हेकिल' उपलब्ध करयबाक योजना छैक। 2001-02 मे प्रदेशक विभिन्न क्षेत्र मे कम स' कम 100 शीतभंडारक निर्माणक निर्णय छैक। 10 शीतभंडारक निर्माण प्राथमिक कृषि साख सहयोग समिति, व्यापार मंडल, शीत भंडार सहयोग समिति द्वारा कयल जा रहल अछि। एहि हेतु राष्ट्रीय सहकारिता विकास निगम (एनसीडीसी) द्वारा ऋण ओ अनुदान मुहैया करायल जायत। एहि निगमक 53म सामान्य परिषदक बैठक मे कंद्रीय कृषि मंत्री 4 अक्टूबर 2001 कें स्पष्ट कयलनि जे सहकारिताक गतिविधि कें पेशेवर ओ लोकतांत्रिक बनयबाक हेतु नव सहकारिता नीति कें अंतिम रूप देल जा रहल छैक। विश्व व्यापार संगठनक (डब्लू. टी. ओ.) चुनौती कें संभावना मे बदलबाक हेतु कृषि उत्पादक कुशल विपणनक हेतु सहकारिता क्षेत्र मे विपणन क्रांति लाबय पड़त। 2000-2001क दौरान विपणन ओ निवेश कार्यकलापक हेतु निगम द्वारा 148.77 करोड़ टाका वितरित कयल गेल। सब राज्य मे समान बिक्री करक सुविधा भेला स' कृषि उत्पादक निर्यात वृद्धिक विभिन्न विकल्प पर विचार-विमर्श परमावश्यक। मुदा बिहार राज्य मे आधारभूत सुविधाक अभाव मे पांच करोड़ आवंटित राशि खर्च नहि भ' सकल, जखन कि महाराष्ट्र ओ केरल राज्य तीस करोड़ तक खर्च कयलक। एहना स्थिति मे विकासक कल्पना निरर्थक।

मत्स्यपालन

मिथिलांचल मे मत्स्य उद्योग प्राचीन धंधाक रूप मे विख्यात अछि। नदी, पोखरि ओ झील आदिकाल स' एतय पर्याप्त संख्या मे छैक। कैल्शियम, फास्फोरस, आयोडीन, मैग्नेशियम, लोहा आ तामा तत्व माछ मे छैक। एहि अंचल मे माछ पालन कार्य सामान्यत: परंपरागत रूप स' मल्लाह जाति द्वारा कयल जा रहल अछि। वैज्ञानिक विधिक अज्ञानता ओ व्यापारिक महत्त्वक अभाव मे उत्पादन कम होइछ। आंध्रप्रदेश व पश्चिम बंगाल मे 2500-4000 किलोग्राम प्रति एकड़ प्रतिवर्ष उत्पादन होइछ। आंध्रप्रदेश सरकार एहि धंधा कें प्रोत्साहित कयलक अछि। फलस्वरूप एहि क्षेत्रक सुदूर गामक हाट मे आंध्रक माछ उपलब्ध रहैछ। मिथिला मे मत्स्य पालन ओ एकर विपणन अर्द्ध विकसित रूप मे छैक। 1995 मे मत्स्य पालन एहि तरहें भेल—मत्स्य उत्पादन 200.7 हजार एम. टी, क्षेत्र 205 हेक्टेयर, पोखरि 95,100 हेक्टेयर, मोनि एवं चौरी 35,000 हेक्टेयर, जलाशय 74,500 हेक्टेयर, ओ सदानीरा नदी एवं नहरि 3200 कि.मी.।

मत्स्य पालनक हेतु जैविक खादक (गोबर) प्रयोग उत्तम मानल गेल अछि। एहि मे सुगरक गोबर आ मूत्र कें बढ़िया कहल जाइछ। पोखरिक भीड़ पर प्रति एकड़ 16 टा सुगर पोसल जाय त' अन्य खादक आवश्यकता नहि। एहि तरहें एक एकड़ जल क्षेत्रक लेल 200 मुर्गी आकि 15 हंस पोसल जाय त' अन्य खादक आवश्यकता नहि। पश्चिम बंगाल, आसाम ओ केरल मे धानक खेत मे माछ पालल जाइछ। एहि प्रयोग स' धानक उत्पादन 15 प्रतिशत अधिक होइछ। धान रोपलाक 15-20 दिनक अंदर माछक जीरा द' देल जाइत छैक जे खेतक कीड़ा-मकोड़ा कें खाइत रहैत छैक। धानक फसिल कटि गेला पर माछ स्वत: निचला भाग मे चलि जाइछ। एहि तरहें समेकित मत्स्य पालन कयल जा सकैछ। एहि अंचल मे चौर बहुत अधिक अछि। 50 एकड़ खेत मे 10 लाख टाका लागत स' माछ, मखान, सिंहाड़ा, मुर्गीपालन, सब्जी आदि उपजायल जा सकैछ। बड्ड पैघ लाभकारी धंधा हैत। एहि उद्योगक हेतु भंडारण, शीतगृह एवं त्वरित स्पेसलाइज्ड ट्रांसपोर्ट व्हेकिल उपलब्ध करयबाक आवश्यकता छैक। भारत सरकार द्वारा 40 मत्स्यपालन अभिकरण कार्यरत अछि। गत वित्तीय वर्ष मे राष्ट्रीय सहकारिता निगम 64.73 करोड़ टाका विपणन ओ निवेश कार्यकलापक हेतु वितरित कयलक। राज्य सरकार मधेपुरा जिलाक सिंहेश्वर प्रखंड मे हेंचरी निर्माणक स्वीकृति देने अछि। जखन कि सरकारी क्षेत्र मे बनयबाला रामपट्टी (मधुबनी) एवं सीतामढ़ीबला हेंचरी 10 वर्ष स' निर्माणाधीने अछि। बिहार औद्योगिक आयोग 2000-01 एहि क्षेत्रक आर्थिक विकासक हेतु एहि उद्योगक अनुशंसा कयने अछि।

पानक खेती

महाभारत काल स' पानक खेती एतय भ' रहल अछि। मुदा व्यावसायिक रूप नहि देल गेल छैक। पाचन क्रिया, दमा, कफ, गला ओ हृदयक कष्ट मे औषधिक काज करैछ। पूर्वी चंपारण, पश्चिमी चंपारण, मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर, बेगूसराय, खगड़िया, पूर्णिया, कटिहार, अररिया, किसनगंज, मधेपुरा ओ सहरसा जिला मे उपजायल जाइछ। एकर विकास मे पूजीक अभाव बाधक अछि। मगही पानक विकास भेला स' विदेशी मुद्राक उपार्जन बढ़िया रहल। पूसा मे (समस्तीपुर) आधुनिक ढंगक पानक खेतीक विकास ओ कृषक कें प्रशिक्षण एवं सुझाव देबाक व्यवस्था भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा करायल जा रहल अछि। भंडारण ओ पैकेजिंगक नव पद्धति आवश्यक।

तमाकू उद्योग

वैशाली, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, बेगूसराय, सीतामढ़ी, मधुबनी जिला मे तमाकूक खेती होइत अछि। सी. एम. आइ (जिला प्रोफाइल 1993)क अनुसार 1991 मे 16,099 टन तमाकू मिथिलांचल मे उपजायल गेल छल। ओना अपना खयबाक लेल लोक बाड़ी मे सेहो उपजबैत छथि। सरैसा कोटिक तमाकू (सरैसा-दलसिंगसराय) विश्वप्रसिद्ध अछि। सर्वप्रथम पूसा मे आ दोसर दलसिंगसराय मे सिगरेटक कारखाना खुलल छल। पूसा मे उच्च कोटिक सिगार बनैत छल। परिवहनक असुविधाक कारणें बंद भ' गेल। हाजीपुर ओ दलसिंगसराय मे आधुनिक ढंगक सिगरेटक कारखाना बनायल जा सकैछ। मुजफ्फरपुर मे आधुनिक ढंगक एक जर्दा फैक्टरी कार्यरत अछि। तमाकू स' बीड़ी आ पिनी सेहो बनायल जाइछ जे कुटीर उद्योगक रूप मे चलि रहल अछि।

चाहक खेती

चाहक खेती सर्वप्रथम किसनगंज जिला मे 1992 मे प्रारंभ कयल गेल। एतय प्राकृतिक अवदान सिलीगुड़ीक (पश्चिम बंगाल) समान छैक। 1000 एकड़ भूमि मे चाहक खेती मे 6 करोड़ टाका लागत छैक। 1998 मे 6000 एकड़ भूमि मे चाहक खेती भेल छल। 10 फरवरी 1999 कें बिहार सरकार चाह उत्पादन कें उद्योगक श्रेणी मे मंजूरी द' देलक। टी बोर्ड कलकत्ताक अनुसार 1999-2000 मे 23 लाख किलोग्राम, 10,000 एकड़ भूमि खेती ओ 15,000 कृषक कार्यरत छलाह। किसनगंज, कोढिया, ठाकुरगंज ओ दिघालचक प्रखंड कें टी बोर्ड पारंपरिक कृषि भूमि स' वंचित करा विकासक सब सुविधा उपलब्ध करा रहल अछि। आवश्यकता छैक बिहार सरकार भूमि हदबंदी विधानक धारा 21 (1) (ए) मे एतयक भूमि कें परिगणित करय। नवीन प्रसंस्करण इकाईक स्थापना ओ वित्तीय सहायता सरकार स' भेटब आवश्यकता।

नाबार्ड एहि वर्ष एहि अंचल मे चाहक खेती कें प्रचारित ओ कृषक कें एकरा प्रति रुझानक लेल 4.76 करोड़ टाका देबाक निर्णय कयने अछि। जे भारतीय स्टेट बैंकक मार्फत देल जा रहल अछि। अत्यधिक मूल्यवर्धनक उद्देश्य स' फैक्टरी लगयबाक हेतु वित्तीय सहायता उपलब्ध करयबाक सेहो योजना अछि।

मखानक खेती/उद्योग

मखान मिथिलांचलक मुख्य उपज एवं भारतवर्षक कुल उत्पादनक 75 प्रतिशत एतहि होइछ। मधुबनी, दरभंगा, सहरसा, कटिहार, पूर्णिया ओ दूनु चंपारण जिला मे

उपजायल जाइछ। अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस ओ गल्फ देश मे मुख्य निर्यात होइछ। बिहार सरकार एहि उद्योग कें कोनो सहायता नहि करैछ। पहिने 25,000 हेक्टेयर भूमि मे उपजायल जाइत छल जे घटि क' 10,000 हेक्टेयर भूमि मे होइछ। वैज्ञानिक खेती, उन्नत बीज, भंडारणक प्रबंध ओ यांत्रिक प्रयोग स' पैकेजिंग एहि उद्योगक हेतु परमावश्यक।

मुर्गीपालन, खरगोश पालन, सुअर पालन, मधुमाछी पालन (वैशाली जिलाक मिरजानगर गाम स' 40 मैट्रिक टन 22 लाख मूल्यक मधु 1998 मे जर्मनीक हैम्बर्ग मे निर्यात भेल छल), पशुपालन, मशरूम, नारियल, फूलक खेती, पपीता, पपीन, नीमक बीआ एवं अन्य औषधीय वृक्षक उत्पादन, जलकुंभी स' खाद उद्योग, सौर उर्जा, बायो गैस, सलाइ उद्योग, सापवटन ओ गहना उद्योग, सूर्यमुखी स' तेल, दूध ओ ओहि स' निर्मित पदार्थ, पशु आहार उत्पादन उद्योग एवं अन्य कृषि आधारित उद्योग जे मिथिलांचल मे अविकसित अवस्था मे अछि, विकसित कयल जा सकैछ। कृषि पर जीवन निर्वाह करयबालाक खेती पर स' भार कम हैत ओ बेकारी समस्याक निदान हैत। जीविकाक लेल अन्य राज्य मे भटकय नहि पड़त।

(दिसंबर, 2002)

मिथिला मे संगठित उद्योग

संगठित उद्योग आजुक आर्थिक युगक प्रमुख आधार अछि। उद्योगक आधार पर कोनो अंचलक आर्थिक विकास नापल जाइछ। एहि स' संपन्नता ओ प्रति व्यक्ति आय वृद्धि ओ सामाजिक प्रगतिक नव मार्ग प्रशस्त होइछ। विकासक कार्यक्रम मे संगठित उद्योगक महत्त्वपूर्ण भूमिका छैक। वस्तुत: उद्योगीकरण ओ आर्थिक विकास कें उच्च जीवन-स्तरक कुंजी कहल जाइछ। एहि स' प्राकृतिक संसाधनक अधिकाधिक लाभप्रद उपयोग होइत छैक। उद्योगीकरण कें राष्ट्रक भौतिक उन्नतिक पर्याय मानल गेल अछि। मिथिलांचल औद्योगिक दृष्टि स' एक पिछड़ल भूभाग अछि। आधारभूत उद्योग—लोहा एवं इस्पात, खान, मैकेनिकल ओ इलेक्ट्रीकल इंजीनियरिंग आदिक सर्वथा अभाव। कृषि आधारित संगठित उद्योग विकसित छल किंतु अधिकांश संप्रति रुग्णावस्था आ कि मृत्युशय्या पर। बिहार विभाजनक बाद एहि रुग्णा उद्योगक आधुनिकीकरण ओ प्रतिस्थापन कयला स' आर्थिक विकास ओ बेकारीक समस्या कें दूर कयल जा सकैछ मुदा एहि दिस एखन तक कोनो समीचीन प्रयास नहि कयल गेल छैक।

चीनी उद्योग—मिथिलाक संगठित उद्योग मे चीनी उद्योगक प्रमुख स्थान छैक। चीनी मिलक क्षेत्र गंगा नदीक उत्तर मे बागमती नदीक पश्चिम स' सुदूर अंचलक सीमा रेखा तक विस्तृत अछि। ई उद्योग एतयक नकदी फसिलक अर्थव्यवस्था तथा एहि क्षेत्रक संरचना मे महत्त्वपूर्ण। पूर्वी ओ पश्चिमी चंपारण जिला मे 9, मुजफ्फरपुर-सीतामढ़ी मे 3, दरभंगा, समस्तीपुर ओ मधुबनी मे 5—कुल 17 चीनी मिल। एकर अतिरिक्त सहकारी क्षेत्र मे पूर्णिया (बनमनखी) मे एक अत्याधुनिक मिल अछि। एहि अंचलक लगभग 4-5 लाख कृषक परिवार एवं 40,000 श्रमिकक जीविकोपार्जन एहि उद्योग पर निर्भर अछि।

19म शताब्दीक पूर्वाद्ध तक चीनी उद्योग प्रगति पर छल। डच व्यापारी द्वारा प्रोत्साहित कयल गेल छल। 1904-05 मे इंडिया डेवलपमेंट कंपनी एहि उद्योग मे अत्यधिक सफलता अर्जित कयलक। मुख्यत: चीनी उद्योगक विकास एतय 1932 स' प्रारंभ होइछ। सर्वप्रथम भारत सरकार एहि समय मे संरक्षण प्रदान कयलक। चीनीक उत्पादन दिनानुदिन बढ़ैत गेल। 1960-61 मे चीनीक उत्पादन अत्यधिक मात्रा मे भेल। तृतीय पंचवर्षीय योजना काल मे चीनीक उत्पादन अनुमान स' अधिक भेल। एहि योजना काल मे चीनी मिल यंत्र ओ उपकरणक निर्माण मे देश आत्मनिर्भर भ' चुकल छल। चीनीक निर्यात मे वृद्धि भेल।

मिथिलाक चीनी मिल अत्यंत अछि पुरान। सब मिलक यंत्र ओ उपकरण पुरान भ' गेल छैक। चीनी मिलक जीवन मात्र पचीस वर्ष आंकल गेल अछि। एतयक मिलक प्रतिस्थापन ओ आधुनिकीकरण नहि कयल गेल। मिल सब आर्थिक संकट मे। राष्ट्रीयकरण एवं भूमिक हदबंदी भ' गेला स' उद्योगपति पूजी विनियोग नहि कयलनि। चीनीक उत्पादन मूल्य निर्धारण ओ वितरण पर सरकारी नियंत्रण,स्टॉक नियंत्रण, भंडारण, वस्तु-क्रय, पैकेजिंग, ग्रेडिंग, नाप-तौल आदि पर पूर्ण नियंत्रण रखने अछि। उप-उत्पादक निर्वतन 'मोलैसेस कंट्रोल ऑर्डर 1961क अधीन। खांडसारी इकाई द्वारा एक रुपया प्रति क्विंटलक दर स' क्रय करक वसूली शुरू कयल गेल। बिहार ईख आपूर्ति एवं खरीद विनियमन अधिनियम 1981क प्रावधानक अनुसार बिहारक चीनी मिल द्वारा ईखक खरीद पर 15 पैसा प्रति क्विंटल ईख कमीशन-सहकारिता कमीशन सहकारी संघ कें 7 पैसा ओ क्षेत्रीय विकास परिषद कें 8 पैसा भुगतान करय पड़ैत छलै। 1984-85 मे ईखक उत्पादन मात्र 35 लाख टन भेल। 1985-86 मे सरकार उत्पादनक एहि ह्रास स' निपटबाक लेल ईख विकास कार्यक्रम चालू कयलक। एकर अन्तर्गत बीज परिवहन अनुदान, ईख बीज उत्पादनक प्रोत्साहन हेतु अनुदान, ईख प्रत्यक्षण, खूंटी फसिल पर यूरियाक छिड़काव, कीटनाशक दवाइ पर कृषक कें अनुदान, विकसित कृषि यंत्रक हेतु अनुदान, ईख अनुदान संस्थान पूसा (समस्तीपुर) कें शोध कार्यक लेल सुदृढ़ करवा पर व्यय आदि। ई सब योजना ईख उत्पादन विकासक दृष्टि स' महत्त्वपूर्ण रहल।

रुग्ण एवं बंद चीनी मिलक संचालन ओ ओकरा पुनर्जीवित करबाक उद्देश्य स' 28 दिसंबर 1974 कें बिहार राज्य चीनी निगमक स्थापना कंपनी अधिनियमक अंतर्गत कयल गेल। एहि मे मिथिलांचलक 10 सुगर मिल कें एहि निगमक अंदर अधिग्रहण भेल। शेष 5 मिल अन्य क्षेत्रक। कुल 15 मिल निगमक अंतर्गत आयल किंतु चीनी निगम जाहि उद्देश्य स' रुग्ण चीनी मिल कें अपना अधीन कयलक ओकर परिणाम विपरीत भेल। ईख उत्पादन मे कृषक कें कोनो प्रोत्साहन नहि भेटल, समय पर खेत स' मिल धरि ईख नहि पहुंचल, किसान कें समय पर ईख मुहैयाक पूर्जी नहि भेटल। फलस्वरूप, समय पर ईख मिल नहि पहुंचला स' वांछित उत्पादन नहि भ' सकल। दिनानुदिन मिलक घाटा बढ़ैत गेल। व्यवस्था खर्चा मे वृद्धि भेल। 25

करोड़ रुपया घाटा निगम कें भ' गेलै। गन्ना कृषकक करोड़ो रुपया निगम मे बाकी रहय लागल। कृषक गन्ना उत्पादन छोड़ि गहुमक खेती दिस आकर्षित भ' गेलाह। 1998 मे पटना उच्च न्यायालय चीनी निगमक प्रति कड़ा रुख अपनौलक। सरकार बाध्य भ' क' 21.89 करोड़ रुपया निगम कें देलक, जाहि मे कड़ा निर्देश छल जे गन्ना किसानक बाकी पैसा द' देल जाय। निगम 9 करोड़ रुपया भविष्य निधिक बकिऔता मे भुगतान क' देलक। कृषकक रुपया बाकी रहि गेल। कर्मचारीक 75 करोड़ रुपया वेतन मद मे बाकी भ' गेल। न्यायालय आदेश देलक जे कंपनीक संपत्ति कें बेच क' कर्मचारीक भुगतान कयल जाय। राज्य सरकार न्यायालयक एहि आदेशक अवमानना कयलक। एहि निगमक शेयर कैपिटल 997 लाख एवं हानि 919.85 लाख रुपया भ' गेल। फलस्वरूप, बिहार स्टेट फाइनेंस कमीशन फरवरी 2002 मे अपन समर्पित प्रतिवेदन मे एहि निगम कें बंद करबाक अनुशंसा कयलक।

मिथिला मे निजी क्षेत्र मे 6 चीनी मिल—हरिनगर, नरकटियागंज, मझौलिया, रीगा, मोतिहारी एवं हसनपुर—कार्यरत अछि। हरिनगरक दैनिक पेराई क्षमता 5000 मै. टन तथा अन्य पांचक पेराई क्षमता 5000 मै. टन तथा अन्य पांचक पेराई क्षमता 2500 मै. टन छैक। सब मिल कार्यरत अछि, किछु मिलक आधुनिकीकरण ओ विकासक काज चलि रहल अछि। राज्य सरकार 6 आधुनिक ढंगक चीनी मिलक स्थापनाक प्रस्ताव कयल किंतु एखन तक सब योजना खटाइ मे।

1994 मे इंडियन इंस्टीच्यूट आफ सुगरकेन रिसर्च गुड़ एवं खांडसारी चीनीक पक्ष मे अपन वकालत कयल। कहलक जे 40-45 प्रतिशत ईख स' गुड़ ओ खांडसारी बनायल जाइछ। 42 प्रतिशत ईख स' चीनी बनैछ। समान आर्थिक विनियोग स' चीनीक तुलना मे गुड़ उद्योग 10 गुणा अधिक नोकरी सृजन करैछ। गुड़क निर्यात ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, मिश्र, अरब गणराज्य, ईरान, कुवैत, सिंगापुर, मलेशिया आदि देश मे कयल जाइछ।

मिथिला मे चीनी उद्योगक समक्ष अनेक समस्या अछि जाहि मे (1) चीनी मिल कें पर्याप्त मात्रा मे गन्ना उपलब्ध नहि होइछ। उत्पादन घटैत-बढ़ैत रहैत अछि तथा गुड़ ओ खांडसारी उद्योग द्वारा बेसी गन्ना कीन लेल जाइछ, (2) उप उत्पादक सेहो उपयोग नहि भ' पाबि रहल छैक। गन्नाक सिट्ठी, छोआ एवं गन्नाक रस जे जमल रहैछ तकर लाभदायक उपयोग नहि भ' पबैत छैक, (3) गन्ना ओ चीनीक मूल्य पर वैधानिक अड़चन, (4) टैक्सक समस्या, (5) मिलक उत्पादन क्षमताक पूर्ण उपयोग नहि, (6) उत्पादन लागत अत्यधिक होइत छैक, (7) आधुनिकीकरण ओ एहि क्षेत्रक मिल मे एकदम नहि भेल छैक, (8) रुग्ण मिलक समस्याक समाधान, (9) चीनीक आंतरिक उपयोग बढ़ि गेला स' घटैत निर्यात किंतु चीनी उद्योगक दशा-दुर्दशा

सुधारल जा सकैछ। एहि हेतु (1) चीनी मिल कें उचित मूल्य पर गन्नाक आपूर्ति, (2) गन्नाक किस्म एवं उत्पादक मे सुधार, (3) उपोत्पादक उचित उपयोग, (4) उत्पादन शुल्क मे कमी, (5) मिलक उत्पादन क्षमता कें आर्थिक दृष्टि स' वृद्धि, (6) रुग्ण मिल कें वित्तीय सुविधाक उपलब्धता विकासक लेल सघन समन्वय कृषकक आवश्यकताक अनुसार। इरानी औद्योगिक विकास आयोग अपन प्रतिवेदन मे एहि उद्योगक विकास लेल अनेक सुझाव देलक। किंतु एखन तक राज्य सरकार एहि उद्योगक विकासक लेल कोनो कारवाई नहि कयल।

जूट उद्योग—अदौ काल स' मिथिला मे जूट (पटुआ) उपजायल जाइछ। मइ मास मे नॉरवेस्टर स' प्राप्त हल्का पूर्वी मानसून (112 मी.मी.) उच्च तापमान, उच्च आर्द्रता ओ उपजाऊ जलोढ़ माटि एकर उत्पादनक लेल आवश्यक। जूट प्रधानतः पूर्णिया, किशनगंज, कटिहार, सहरसा, सुपौल, अररिया ओ मधेपुरा जिला मे उपजायल जाइछ। स्वतंत्रताक बाद पूर्वी चंपारण, पश्चिमी चंपारण, मधुबनी ओ दरभंगा जिला मे एकर खेतीक विस्तार कयल गेल। मिथिलांचल मे जूटक खेती 1.44 लाख हेक्टेयर मे कयल जाइछ आ उत्पादन 14 लाख गांठ होइत अछि।

19म सदीक अंत तक किशनगंज जिला मे हाथ स' बोरा बनायल जाइत छल। बाद मे कटिहार मे कटिहार जूट मिल्स लिमिटेड एवं आर.बी.एच. मिल आ समस्तीपुर मे रामेश्वर जूट मिल्स कंपनी लिमिटेड बनल। तराइ नेपालक विराटनगर मे दू जूट मिल अछि। फारबिसगंज, अररिया, कटिहार, गुलाबबाग, किशनगंज, मधेपुरा, सहरसा, झंझारपुर, निर्मली आदि स्थान स' कच्चा जूट एहि मिल द्वारा कीनल जाइछ। एहि मिल सब मे 1100 लूम कार्यरत अछि आ उत्पादन 23 हजार टन स' उपर होइत अछि। एकर अलावा 28 छोट-छोट कारखाना पूर्णिया मे अछि, जाहि मे 650 श्रमिक कार्यरत छथि। समस्तीपुरक रामेश्वर जूट मिल्स लिमिटेड आब बिड़ला ब्रदर्श द्वारा (पहिने महाराज दरभंगा) संचालित होइत अछि। 1962 मे मिलक आधुनिकीरण ओ कयल गेल, जाहि स' उत्पादन क्षमता प्रति माह 900 टन भ' गेल। कटिहारक दुनू मिल मृतप्राय अछि। एकटा राज्य सरकारक अधीन छल। काज ठप्प अछि। श्रमिक बेकार बैसल। मिथिलाक जूट उत्पादनक 20 प्रतिशत कच्चा जूट खपत एतय होइछ आ बाद बाकी 80 प्रतिशत पश्चिमी बंगालक जूट मिल खरीद लैत अछि।

1987 मे जूट स' बनयबला समानक निर्माण ओ स्थानीय स्तर पर जूट व्यवसाय कें प्रोत्साहन देबाक उद्देश्य स' पूर्णिया जिलाक काझा नामक स्थान पर 'जूट व्यवसाय प्रशिक्षण सह उत्पादन केंद्र' खोलल गेल। एहि केंद्र स' जूटक कालीन, बैग, आकर्षक सजावटक सामान ओ अन्य उपयोगी सामान बनय लागल किंतु संसाधनक अभाव मे संप्रति बंद अछि। बिहार स्टेट टेक्सटाइल निगमक माध्सम स' 16,000 एम. टी.क

एक आधुनिक जूट मिलक निर्माण राज्य सरकारक अधीन बनय लागल। भूमि अधिग्रहण किशनगंज जिला मे कयल गेल। अर्थाभावक कारण कारखाना नहि बनि सकल। फारबिसगंज मे एक आधुनिक ढंगक कारखाना निर्माणाधीन छल। दरभंगा मे 3000 एम.टी.क एक जूट ट्वाइन प्लांट लगायल गेल अछि।

जूट उद्योगक समक्ष निम्नांकित समस्या अछि, जकर निदान युद्धस्तर पर होयबाक चाही। (1) कच्चा जूटक अभाव—देशक विभाजनक बाद 80 प्रतिशत जूट उत्पादक क्षेत्र बांग्लादेश मे चल गेल। संप्रति एहि अंचल मे जूट उत्पादन मे वृद्धि भेल छैक किंतु मूल्य एक न्यूनतम स्तर पर स्थिर करबाक प्रयास अपेक्षित। जूटक किसिम पर ध्यान, बंजर भूमिक उद्धार, धान ओ जूटक सम्मिलित खेती तथा अंचलक पूर्वोत्तर क्षेत्रक अतरिक्त अन्य क्षेत्र मे जूटक खेतीक विकास परमावश्यक। (2) यंत्र एवं उपकरणक आधुनिकीरण अनिवार्य। एहि स' जूट उत्पादनक लागत मे ह्रास हैत, (3) व्यवसाय मे सट्टेबाजी—एहि उद्योग मे सट्टेबाजीक प्रचलन अछि, जे जूट उद्योगक हेतु घातक। (4) अत्यधिक मूल्य एवं स्थानापन्न वस्तुक समस्या—जूटक मूल्य अधिक रहबाक कारण स्थानापन्न वस्तुक प्रयोग चालू भ' गेल छैक। वेस्टइंडीज, फिलिपाइन्स ओ ब्राजिल मे अन्य प्रकारक पौधा स' जूट सदृश सामान बनय लागल छैक। अमेरिका मे जूटक जगह कागत एवं पोलिथिन प्रचलित भ' गेल छैक। (5) किसिम मे सुधार तथा जूटक नवीन उपयोगक खोज—घटिया किसिमक जूट उपलब्ध होइछ। सुधार आवश्यक। जूटक नव-नव उपयोगक खोज अनुसंधान आवश्यक। (6) उर्जा शक्तिक अभाव—एहि क्षेत्र मे बिजलीक कमीक कारण जूटक उद्योग कें अत्यधिक घाटा होइत छैक।

1953 मे भारत सरकार जूट उद्योग एवं कच्चा जूट उत्पादनक संबंध मे जूट जांच समिति नियुक्ति कयलक। ई समिति 1954 मे प्रतिवेदन देलक। 1969 मे भारत सरकार जूट टेक्सटाइल सलाहकार समिति नियुक्त कयल। उत्पादन, विविधिकरण, आधुनिकीकरण, निर्यात आदि समस्या पर सलाहक हेतु 1971 मे भारतीय जूट निगमक स्थापना एहि उद्देश्य स' कयल गेल, जाहि स' निर्धारित मूल्य पर जूटक क्रय ओ समय पर बिक्री हैत। एहि स' किसान कें जूटक बिक्री मे घोर सट्टेबाजी स' राहत भेटल। 1984 मे ढाका मे अंतरराष्ट्रीय जूट संगठन कार्यरत भेल। जूट वस्तुक उत्पादन मे आय ओ व्ययक अनुसंधान होबय लागल। 1992 मे संयुक्त राष्ट्र संघ (UNDP) भारतक वस्त्र मंत्रालयक सहयोग स' एतयक संकटग्रस्त जूट उद्योग कें नव दिशा मे काज करबाक योजना प्रस्तुत कयलक। दरी, कंबल, बेड कभर, सजावटक सामान एवं अन्य दैनिक उपयोगक सामान बनयबाक हेतु उत्साहित कयलक।

कागत उद्योग—उनैसम शताब्दी मे एहि अंचल मे हस्तनिर्मित कागत बनैत

छल। किशनगंज जिला एहि मे प्रमुख छल। पाटक गुद्धा बना क' ओ चून मे भिजा क' पुन: साफ क' कागत बनायल जाइत छल। कागत कें चिक्कन करबाक हेतु मांडक उपयोग होइत छल। असंगठित कुटीर उद्योगक रूप मे ई उद्योग पसरल छल। स्वतंत्राक पश्चात् अखिल भारतीय खादी ग्रामोद्योग संघ कें एहि उद्योगक विकासक जिम्मेदारी देल गेल के 1953 मे खादी ग्रामोद्योग बोर्डक विकास लेल सरकारी उपयोग मे आबयवला कागत ओ एहि स' निर्मित फाइल आदिक उपयोग बाध्य क' देल गेल। हस्त निर्मित कागतक मांग बढ़ल किंतु बिना सरकारी आर्थिक सहायताक एहि उद्योगक समुचित विकास संभव नहि।

भारतवर्ष मे आधुनिक मशीन एवं यंत्र स' कागत उत्पादनक लेल 1832 मे पश्चिम बंगाल मे श्रीरामपुर मे एक कारखाना खुजल। मिथिलांचल मे 1955 मे समस्तीपुर मे ठाकुर पेपर मिल्स लिमिटेडक निर्माण प्रारंभ भेल। 40 लाख अंश पूजी, भारतीय औद्योगिक वित्त निगम स' 19 लाख आ बिहार राज्य वित्त निगम स' 10 लाख कर्ज पूजी स' एहि मिलक निर्माण काज पूरा भेल। कारखानाक क्षमता 10 टन कागत प्रतिदिन उत्पादनक छल। जापानी तकनीकक प्रयोग भेल छल। पुआर-नार ओ घास स' कागत बनैत छल। कारखाना उत्पादनक पूर्ण क्षमताक कागत बनबैत छल। बजार मे एहि-मिल निर्मित कागतक खपत बढ़िया छल किंतु निदेशक मंडलक अव्यावहारिक अनैतिक आचरणक कारण कार्यशील पूजीक अभाव भेल। कागतक उत्पादन बंद भ' गेल। मिल एखनो बंदे पड़ल अछि।

दोसर कारखाना दरभंगा-लहेरिया सराय स' सात मील दक्षिण करेह नदीक तट पर रामेश्वर नगर 29 अगस्त 1957 कें अशोक पेपर मिल्स लिमिटेडक मे निर्माण शुरू भेल। बांस आ सावे घास स' कागत बनैत छल। 320 एकड़ भूमि अधिग्रहण कयल गेल। फ्रांसक तकनीकी सहयोग स' 15,000 टन प्रतिवर्ष उत्पादन क्षमतावला मिलक निर्माण महाराजा दरभंगा, वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन, बिहार सरकार ओ जीवन बीमा निगमक द्वारा कयल गेल। यैह मुख्य अंशधारी छलाह। 1965 तक एहि मिल पर 625 लाख रुपया व्यय भेलो पर कागतक उत्पादन नहि भ' सकल। आर्थिक संकट मे काम-काज ठप्प भ' गेल। बाद मे औद्योगिक बैंक 1340 करोड़ रुपया कर्ज देलक। बिहार-आसाम सरकारक संयुक्त सहयोग स' उत्पादन शुरू भेल। आसाम मे 120 टन आ दरभंगा मे 20 टन कागत बनय लागल। 1200 श्रमिक कार्यरत भ' गेलाह। मिल पुन: बंद भ' गेल। निजी क्षेत्र कें देबाक प्रयास भ' रहल छैक।

तेसर कारखाना सहरसा जिलाक बैजनाथपुर मे बिहार पेपर मिल्स लिमिटेड 156.12 लाख रुपया अंश पूजी स' 13 वर्ष स' निर्माणाधीन अछि। विदेश स' मशीन एवं उपकरण आबि चुकल अछि। बिहार राज्य उद्योग विकास निगम एहि कागतक

कारखानाक प्रर्वतक अछि। चारिम कारखाना बरौनी पेपर इंडस्ट्रीज लिमिटेड बरौनी मे बनल। तेलहनक डांट स' क्राफ्ट पेपर बनैत छल। बिहार राज्य रासायनिक एवं औषधि विकास निगम द्वारा 42.41 लाख रुपया लागत स' झंझारपुर पेपर इंडस्ट्रीज लिमिटेड बनि रहल छल। 13 वर्ष उपरांत एहि मिल स' कागत एखन तक नहि बनि सकल। मिथिला मे निम्नांकित कागत कारखाना बनल। किंतु एखन उत्पादन नहि भ' रहल अछि। औद्योगिक विकास, अंचलक बेकारी एवं आर्थिक प्रगतिक लेल बंद ओ रुग्ण कागत मिल कें चालू करबाक सब प्रयास होयबाक चाही। अखबारक लेल कोनो मिल कागत नहि बनबैत अछि।

क्रम	नाम	स्थान	उत्पादन क्षमता
1.	ठाकुर पेपर मिल्स लिमिटेड	समस्तीपुर	3000 टी.पी.ए.
2.	अशोक पेपर मिल्स लिमिटेड	दरभंगा	13,500 टी.पी.ए.
3.	नौर्थ बिहार सुगर मिल्स लिमिटेड	बगहा	7,500 टी.पी.ए.
4.	बरौनी पेपर इंडस्ट्रीज लिमिटेड	बरौनी	2,250 टी.पी.ए. (क्राफ्ट पेपर)
5.	आर्यभट्ट पेपर मिल्स लिमिटेड	दरभंगा	1,800 टी.पी.ए.
6.	जयचंदिका पेपर मिल्स लिमिटेड	बरौनी	1,950 टी.पी.ए.
7.	उपेंद्र पेपर मिल्स लिमिटेड	मुजफ्फरपुर	900 टी.पी.ए.
8.	विश्वनाथ पेपर मिल्स लिमिटेड	पूर्णिया	अनुपलब्ध
9.	बैद्यनाथ पेपर मिल्स लिमिटेड	पूर्णिया	1500 टी.पी.ए. (स्ट्रा बोर्ड)
10.	क्राफ्टवेल पेपर मिल्स लिमिटेड	पूर्णिया	अनुपलब्ध
11.	कटिहार पेपर मिल्स लिमिटेड	कटिहार	अनुपलब्ध
12.	बिहार पेपर मिल्स लिमिटेड	सहरसा	अनुपलब्ध
13.	झंझारपुर पेपर इंडस्ट्रीज लिमिटेड	झंझारपुर	अनुपलब्ध

सूतीवस्त्र उद्योग—सूत काटब ओ बुनब एतयक प्राचीन विकसित उद्योग छल। जोल्हा ओ ततमा जातिक मुख्य धंधा। सूती, रेशमी, मलमल, भोटिया कपड़ा बनायल जाइछ छल। पूर्णिया रेशमी वस्त्रक मुख्य केंद्र छल। मधुबनी जिला विश्व प्रसिद्ध मलमल वस्त्रक केंद्र छल। मौरा, कपसिया आ पंडौल मुख्य उत्पादनक केंद्र छल। मद्धिम कोटिक कपड़ा मुजफ्फरपुर, चंपारण, दरभंगा एवं पूर्णिया मे बनैत छल। पूर्णिया जिला मे 10,000 लूम कार्यरत छल किंतु मिल निर्मित वस्त्र उपलब्ध भेला पर हस्तनिर्मित उद्योगक अवनति होमय लागत।

आधुनिक ढंगक सूती वस्त्र मिल सर्वप्रथम मधुबनी जिलाक पंडौल मे 1983 मे सहकारिता क्षेत्र मे पंडौल कोआपरेटिव स्पीनिंग मिल्स लिमिटेड स्थापित कयल

गेल। बिहार राज्य वस्त्र निगम एवं बिहार सरकार मुख्य रूपें पूजी निवेश कयलक। 10 करोड़ रुपयाक लागत स' 700 श्रमिक एवं 125 कार्यालय कर्मचारी द्वारा ई मिल पूर्ण क्षतमा स' सूत उत्पादन करय लागल। स्थानीय बुनकर कें सस्ता दर पर सूत उपलब्ध कयल जाइछ छल किंतु कार्यशील पूजी, बिजली एवं समुचित व्यवस्थाक अभाव मे उत्पादन बंद भ' गेल। वस्त्र निगमक माध्यम स' 1988 मे पूर्णियाक औद्योगिक प्रांगण मे 'इंडस्ट्रीयल कॉटन यार्न प्रोजेक्ट स्थापित कयल गेल। दरी, कनवास, जाल, टायर कौर्ड, फिल्टर कपड़ा आदि हेतु सूत उत्पादन करय लागल। 96.82 लाख लागत स' बनल ई कारखाना 1993 तक कार्यरत रहल। कार्यशील पूजीक अभाव मे उत्पादन बंद भ' गेल। 67 लाख लागत स' सीतामढ़ी मे निर्माणाधीन 'ओपेन एंड स्पॉनिंग मिल' वस्त्र निगम द्वारा स्थापित मिल पूजीक अभाव मे पूर्ण नहि भेल। उत्पादन नहि भेल।

औद्योगिक प्रांगण—राज्य सरकार लघु उद्योगक विकास हेतु मिथिलाक विभिन्न क्षेत्र मे औद्योगिक प्रांगणक निर्माण कयलक। एहि प्रांगण मे शेड, रोड, बिजली, जल एवं बिहार राज्य वित्त निगमक शाखा ओ बैंकक शाखाक प्रबंध कयल। एहि योजनाक अंतर्गत दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर, बेगूसराय, पूर्णिया, सुपौल, किशनगंज, कटिहार, मधेपुरा, अररिया, सहरसा, मुजफ्फरपुर, हाजीपुर मे औद्योगिक प्रांगण बनल। 30 करोड़ रुपयाक लागत स' 619 भूखंड उद्यमी कें देल गेल। जाहि मे अधिकांशक अकालमृत्यु ओ रुगणावस्था कें प्राप्त कयल। अत्यल्प कार्यरत अछि। एहि प्रांगण मे राज्य सरकार निर्मित उद्योग सेहो बंद पड़ल अछि। पूजीक समुचित व्यवस्थाक अभाव मे।

सार्वजनिक उपक्रम—स्वतंत्रताक बाद भारत सरकार पूर्णत: स्वामित्व आकि कम स' कम 51 प्रतिशत स' अधिक अंश पूजी सरकारक हाथ मे रहयबला अनेक उपक्रम खोललक। मिथिला मे एकोटा नहि खुजल। शाखा खुजल। एहि मे भारतीय तेलशोधक कारखानाक एक इकाई 'बरौनी तेल शोधक कारखाना' बरौनी मे कार्यरत अछि। बिहार सरकार 50 लाख रुपया भूमि अर्जन मे, 5 लाख रुपया 100 विस्थापित परिवार कें बसबय मे एवं 20 लाख रुपया बरौनी नगर बनबय मे खर्च कयल। भारतीय तेल शोधक कारखाना 15 लाख रुपया स' हाथीदह मे गंगा पुल योजना स' मकान खरीदलक। सड़क निर्माण मे पर्याप्त रुपया व्यय कयल गेल। एहि प्रतिष्ठानक तेल शोधक क्षमता 3 मिलियन टन छल। एतय स' इंडियन एक्सप्लोसिव लिमिटेड, कानपुर कें नेप्थाक आपूर्ति कयल जाइछ। एहि तेल शोधक कारखानाक आधुनिकीकरण ओ नवीकरण कयल गेल। एकरा हल्दिया पेट्रोकंपलेक्स स' जोड़ि देल गेल छैक। 1995 मे 950 करोड़ लागत स' ई काज कयल गेल। तेल शोधन क्षमता 3.3 मिलियन टन

स' बढ़िक' 4.2 मिलियन टन भ' गेल। जून 1998 मे 30,705 एम.टी. पेट्रोलक उत्पादन भेल। पुन: भारत सरकार एहि इकाईक क्षमता 4.2 मि. टीन स' 6 मिलियन टन कयल ओ एहि हेतु 1700 करोड़ रुपया खर्च कयल। ई तेल शोधक कारखाना हल्दिया-बरौनी एवं कांडला-भटिंडा पाइप लाइन स' प्राप्त जरूरति स' अधिक ऑप्टिक फाइबर केबुल टेलीफोन संचार कंपनी कें देबाक योजना बनौलक अछि।

बरौनी खाद कारखाना—बरौनी मे हिंदुस्तान उर्वरक निगमक एक इकाई अछि। एहि कारखानाक उत्पादन क्षमता शुरू मे 1,40,000 टन छल। 1992 मे एहि कारखाना कें रुग्ण घोषित क' देल गेल। 21.09.1995 मे बी.आई.एफ.आर.क समक्ष नवीनकरण लेल आवेदन कयल गेल। आवेदन स्वीकृत भेल। 156 करोड़ रुपयाक लागत स' उत्पादन क्षमता 4,00,000 टन स' बढ़ाक' 10,00,000 टन आंकल गेल। 6,00,000 टन वृद्धि स' 540 करोड़ रुपया उत्पादन वृद्धि ओ 15 करोड़ रुपयाक डॉलर खाद आयात मे बचत संभव छल। किंतु, विदेशी खाद उत्पादक एवं नोकरशाहक दुरभि संधि स' नवीकरणक योजना सफल नहि भ' सकल। नियमत: प्रत्येक 9 वर्षक अंतराल पर रासायनिक कारखानाक नवीकरण अत्यावश्यक। बरौनी खाद कारखाना कें जीर्णोद्धार स' वंचित राखल गेल।

इंडियन ड्रग्स एंड फार्मास्यूटिकल्स, मुजफ्फरपुर शाखा—भारत सरकार अपन अंग्रेजी दवाइक प्रमुख उत्पादक एवं अलकोहलक पैघ आपूर्तिकर्त्ताक एक शाखा मुजफ्फरपुर मे स्थापित कयलक। दवाइ उद्योग मे बहुराष्ट्रीय कंपनीक पूजी निवेशक कारण ई इकाई उपेक्षित रहल। राज्य सरकारक पूर्ण असहयोग, आवश्यक कच्चा माल, छोया आदिक आपूर्ति नहि कयल गेल। बिजलीक अभाव एवं अन्य सरकारी नीतिक कारण कारखाना बंद अछि।

भारत वैगन लिमिटेड, मुजफ्फरपुर—मुजफ्फरपुर मे एहि कंपनीक इकाई बहुत प्राचीन अछि। मोकामा मे मुख्य इकाई अछि। भारतीय रेलक लेल ई कारखाना वैगन बनबैत अछि किंतु रेलवे बराबरि एहि इकाई कें वैगन निर्माणक हेतु आदेश नहि दैत अछि। कारखाना कार्यरत अछि। आर्थिक स्थिति खराब छैक। मुजफ्फरपुर इकाई बंदीक कगार पर।

उपरोक्त संगठित उद्योगक संक्षिप्त अध्ययन स' ई स्पष्ट होइत अछि जे सरकार मिथिलांचलक औद्योगिक विकास एवं जनताक आर्थिक विकासक लेल उदासीन अछि। विकासक लेल ईरानी औद्योगिक आयोग एवं एस.सी. झा वित्तीय आयोग सरकार कें अपन प्रतिवेदन प्रस्तुत कयल किंतु एहि दुनू आयोगक सुझाव पर आर्थिक संकट बरकरार अछि।

(मइ, 2002)

मिथिलांचल मे मत्स्य पालन व्यवसाय

मिथिलांचल मे मत्स्य उद्योग प्राचीन धंधाक रूप मे अदौकाल स' विख्यात अछि। नदी, पोखरि ओ झील आदिकाल स' एतय पर्याप्त संख्या मे छैक। कैल्सियम, फॉस्फोरस, आयोडीन, मैग्नेशियम, लोहा आ तांबा तत्व माछ मे छैक। एहि अंचल मे माछ पालन कार्य सामान्यत: परंपरागत रूप स' मल्लाह जाति द्वारा कयल जा रहल अछि। वैज्ञानिक विधिक अज्ञानता ओ व्यापारिक महत्त्वक अभाव मे उत्पादन कम होइछ। आंध्र प्रदेश ओ पश्चिम बंगाल मे 2500-4000 किलोग्राम प्रति एकड़ प्रतिवर्ष होइछ। आंध्र प्रदेश सरकार वैज्ञानिक ढंग स' एहि धंधा कें प्रोत्साहित कयलक, जकर फलस्वरूप सुदूर गामक हाट मे आंध्र प्रदेशक माछ पहुंचि गेल। मिथिला मे मत्स्य पालन ओ एकर विपणन अर्द्धविकसित अवस्था मे अछि। वर्ष 1995 मे मत्स्य पालन मात्र 200.71 हजार एम.टी.भेल। जल क्षेत्र 2.05 हेक्टेयर क्षेत्र मे—पोखरि 95,100 हेक्टेयर, मोनि एवं चौर 3500 हेक्टेयर, जलाशय 74,500 हेक्टेयर ओ सदाबहार नदी एवं नहरि 3200 कि.मी. अछि।

माछ आ मिथिलाक संबंध पुरान आ प्रगाढ़ छैक। प्रमाण अछि एहि अंचलक परंपरा मे माछक विशेष स्थान। बच्चाक छठिहारक दिन परिवार मे माछ खएबाक परिपाटी, विवाह मे माछ-दहीक भारक परंपरा, माछ देखि यात्रा करबाक विधान, जितिया पाबनि मे माछ-मडुआक रोटी खएबाक परिपाटी, श्राद्ध-कर्म मे माछक प्रयोग एवं श्राद्ध-कर्मक समापन माछ-माउसक भोज स' । एहि तरहें जन्म स' मृत्यु पर्यंत बिना माछक कल्याण नहि। मिथिला आ माछक संबंध मे अनेक फकड़ा प्रचलित अछि। जाहि मे सुकठिक बनिज आ पशुपतिक दर्शन, पानि मे माछ आ नौ-नौ कुटिया बखरा, इचना-पोठी चाल दिअए रहुक सिर बिसाय ओ अन्य। दरभंगाक महाराज अपन प्रतीक चिह्न माछ कें रखने छलाह। एहि तरहें मिथिलाक संस्कृति मे माछक पैघ महत्त्व छैक।

मत्स्य पालन आब 'जलीय खेती'क नाम स' जानल जाइछ। एहि खेती मे

माछ, सिंघाड़ा, मखान, घोंघा आदि। जहिना कृषि स' अधिक उत्पादन हेतु उन्नत बीज, खाद, उर्वरक, चून आदि देल जाइत छैक, तहिना जलीय खेतीक हेतु उन्नत जीरा, खाद, उर्वरक, चून अतिरिक्त भोजन एवं संचयक बाद एकर देखभाल आवश्यक छैक। ई निर्विवाद अछि जे पानि मे माछ कें भोजन स्वत: भेटैत छैक, किंतु खाद आदिक उपयोग स' माछक बढ़त होइत छैक। मिथिलांचल मे पोखरि, नदी, चौर, मोइन, पैघ जलाशय मे मत्स्य पालन कयल जाइत अछि। एतय पोखरिक संख्या अत्यधिक अछि—सरकारी पोखरि 12,520 तथा निजी पोखरिक संख्या 12,486 अछि। जिलावार विवरण एहि तरहें अछि—

जिला	**सरकारी पोखरि**	**निजी पोखरि**
मुजफ्फरपुर	744	184
सीतामढ़ी	1354	1582
शिवहर	232	105
वैशाली	667	438
पूर्वी चंपारण	519	341
पश्चिमी चंपारण	1813	1100
दरभंगा	1623	2301
मधुबनी	3430	1753
समस्तीपुर	607	157
सहरसा	81	860
सुपौल	147	447
पूर्णिया	1091	1773
कटिहार	212	1445

अररिया, मधेपुरा ओ किशनगंजक पोखरिक संख्या अनुपलब्ध। जमींदारी उन्मूलनक बाद बहुतो पोखरि सरकारी भ' गेल। पोखरिक रखरखाव, सफाई ओ समय पर उड़ाहल नहि जयबाक कारण जलक भंडारण कम भ' गेल छैक, तें मत्स्य उत्पादन मे दिनोंदिन ह्रास भेल अछि। मत्स्य उत्पादन मे विकासक लेल पोखरिक उत्तम कोटिक रखरखाव परमावश्यक।

एहि तरहें मिथिला मे 36,478 हेक्टेयर क्षेत्रफल मे चौर अछि। चौर पूर्णत: अविकसित अवस्था मे अछि। चौरक भीड़ पर मवेशी पालन, मुर्गी पालन ओ सब्जीक उत्पादन सुगमता स' संभव छैक। चौरक चारूकात पंपक माध्यम स' सिंचाइक उत्तम प्रबंध संभव अछि। चौर मे मत्स्य पालनक प्रचुर संभावना। माछ मे प्रजनन शक्ति अत्यधिक छैक। एक किलोग्राम एक गोट छोट माछ प्राय: एक लाख अंडा दैत अछि।

एहि अंचल मे चौर एहि तरहें अछि—

जिला	**क्षेत्रफल (हेक्टेयर)**
दरभंगा	12,141
वैशाली	13,500
बेगूसराय	7,000
सहरसा	1,425
पूर्वी चंपारण	850
पश्चिमी चंपारण	882
मुजफ्फरपुर	680

मिथिलाक विभिन्न जिला मे मोइन एहि तरहें अछि—

पूर्वी चंपारण	2076
पश्चिमी चंपारण	1651
मुजफ्फरपुर	680
समस्तीपुर	60
बेगूसराय	180

एहि तरहें 4755 हेक्टेयर क्षेत्रफल मे मोइन जे पूर्णत: अविकसित। उपरोक्त जलाशय सब कें समुचित विकास कयने बिना मत्स्य उद्योगक यथोचित विकास असंभव। एकर विकास स' बेरोजगारी कम हैत। एहि व्यवसाय मे स्त्री-पुरुषक भागीदारी समान रूप मे छनि। मत्स्य पालन वैज्ञानिक ओ समन्वित कयल जयबाक चाही।

मिश्रित मत्स्य पालन—अत्यंत प्राचीन विधि। एहि पद्धति मे 6 प्रकारक माछ एक संग पोखरि मे पोसल जाइछ। कतला ओ सिल्वर कार्प पोखरिक उपरका सतह, रोहु एवं ग्रास कार्प मध्य तल तथा मृगल ओ कॉमन कार्प निचला तल पर रहैछ एवं उपलब्ध भोजन खाइछ। गोबर, चून, डी.ए.पी., जीरा, सरिसोक खली ओ धानक गुड़ा सभ खाद्यान्न सही मात्रा मे प्रयोग कयला स' माछक बढ़त उत्तम होयत एवं कुल उत्पादन कम स' कम 2500 किलो प्रति एकड़ संभव छैक।

माछक प्रजनन ओ बीज उत्पादन—एहि अंचल मे कुल मांगक मात्र 30 प्रतिशत जीरा उपलब्ध छैक आ बाद बाकी पड़ोसी राज्य पश्चिम बंगाल आ बांग्लादेश स' अबैछ। सदाबहार पोखरि जाहि मे सालोभरि जल रहैछ ओ 2-3 वर्ष पुरान माछ ओ थोड़ेक वैज्ञानिक प्रशिक्षण स' अपने गाम मे जीरा उत्पादन क' सकैत छथि। छोट-छोट मौसमी पोखरि मे सेहो जीरा उत्पादन भ' सकैछ।

माछ सह पशुपालन—मत्स्य पालनक हेतु जैविक खादक (गोबर) प्रयोग उत्तम मानल गेल अछि। एहि मे सुगरक गोबर ओ मूत्र कें बढ़िया कहल जाइछ।

पोखरिक भीड़ पर प्रति एकड़ 16 टा सुगर पोसल जाय त' अन्य खादक आवश्यकता नहि। एहि तरहें एक एकड़ जल क्षेत्रक हेतु 200 मुर्गी आकि 150 बत्तख पोसला स' जैविक खाद उपलब्ध हैत। पोखरि मे कोनो पशुक मल-मूत्र आकि गोबर गैसक संयंत्र स' प्राप्त होमयबला खादक प्रयोग कयल जा सकैछ। एहि स' कृषक कें मात्र आमदनी नहि दीर्घकालीन रोजगार ओ पोखरिक भीड़क समुचित रखरखाव संभव अछि।

धानक खेती ओ मत्स्य पालन—मिथिलांचल मे अधिक वर्षावला क्षेत्र आकि एहन क्षेत्र जतय अधिक दिन तक जलजमाव रहैछ माछ सह धानक खेती सहज ढंग स' कयल जा सकैछ। धानक संग मात्र कॉमन कार्प, कतला, नैनी, मांगुर, सिंघी, कबई, गरई आदिक खेती कयल जा सकैछ। एकर वर्ज्य पदार्थ धानक खेतक लेल उर्वरकक काज करैछ। माछ धानक खेतक अनावश्यक कीड़ा-मकोड़ा कें नियंत्रित करैत अछि। वायु श्वासी माछ कीचड़ मे घुसल रहैछ एवं भोजनक हेतु माटि कें कुतरैत अछि। जाहि स' खेतक जुताई जैविक विधि स' भ' जाइछ। माछक समन्वित खेती स' धानक उत्पादन चारि स' पांच फीसदी तक बढ़ि जाइछ। प्रथम, धानक खेती मध्य मे ओ दुनू दिस माछक खेती। दोसर, धानक खेतक चतुर्दिक मत्स्य पालन। तेसर, धानक खेतक बीच मे माछक पालन। गहींर पानि मे उपजयवला धान। धानक खेत मे जल आठ सेंटीमीटर तक रहयक चाही।

मत्स्य पालन सह फल-सब्जीक खेती—पोखरिक कीचड़क उपयोग साग-सब्जी ओ फलक लेल उर्वरकक काज करैत अछि तथा फल ओ सब्जीक पत्ती पोखरिक माछक लेल भोजनक रूप मे उपयोगी। पोखरिक भीड़ पर बौना प्रजातिक केरा ओ पपीता लगायल जाइत छैक। विभिन्न किस्मक पपीता जे आठ मास मे फल देबय लगैत अछि तथा प्रति गाछ 50 स' 100 किलो फल होइत छैक। पपीता कें पोखरिक भीड़ पर दू कतार मे लगाय एवं एकर बीच मे सब्जीक खेती सहज छैक। सब्जी मे भांटा, फूलकोबी, टमाटर, बांधाकोबी, मूर, सीम, कदीमा, सजमनि, लाल ओ पालक साग, रामतरोई आदिक खेती संभव। पोखरि स' लगभग 50 टन तलीय मांटि प्रति हेक्टेयर प्रतिवर्ष निकालल जा सकैछ जे फल ओ सब्जीक लेल खादक काज करत। तहिना ग्रास कार्प प्रतिकिलो वृद्धिक लेल 50-60 किलो फल-सब्जीक पात खाइछ।

मत्स्य पालन सह जड़ी-बूटीक खेती—समन्वित मत्स्य पालनक संग औषधीय जड़ी-बूटीक खेती संभव ओ श्रेयस्कर। जड़ी-बूटी मे मुख्य रूपें अश्वगंधा, सर्पगंधा, सनाय, जेष्ठी मधु, तुलसी, सतावर आदिक खेती संभव। पोखरिक भीड़ पर खेती कयल जाइत छैक। पोखरिक तलीय कीचड़ हर्बल पौधाक लेल उर्वरकक

काज करैत अछि। माछ मे रोगरोधक क्षमता मे वृद्धि होइत छैक।

मत्स्य पालन सह बांस ओ कुसियारक खेती—माछक संग बांस ओ कुसियारक खेती आसानी स' कयल जा सकैत अछि। पोखरिक भीड़ पर बांस ओ कुसियारक खेती संभव। मुख्यक' बांस के एक बेर लगा देला स' एकर देख रेख ओ पटौनीक कोनो तरदुत नहि। बांस कें हरियर सोना कहल गेल छैक। एहि स' अनेक उत्पाद बनि रहल अछि तथा बजार सेहो तेजी स' बढ़ि रहल छैक।

मत्स्य पालन सह मलबरोक खेती—पोखरिक कीचड़ कें निकालि शहतूतक पौधा लगबैत छी त' पौधाक वृद्धि आश्चर्यजनक। एकर पौधा पर रोशमक कीड़ा पालत जाइछ जाहि स' रेशम तैयार होइत अछि। रेशमक कीड़ा द्वारा निकलल बर्ज्य पदार्थ पोखरिक लेल कार्बनिक उर्वरकक काज करैछ जे माछक पूरक आहार होइछ।

एकल पद्धति द्वारा वायुश्वासी मत्स्य पालन—मांगुर, सिंघी, कवई, गरई आदि माछ मांसाहारी होइत अछि। एकर पालन एकल पद्धति द्वारा कयल जाइछ। ई माछ सब वायुश्वासी कहल जाइछ। एहि माछ मे वायुमंडलीय आक्सीजन एवं पानी मे घुलल आक्सीजन दुनू ग्रहण करबाक क्षमता पायल जाइछ। तें एहि तहरक माछ कें कम पानि मे पालल जा सकैछ। मत्स्य पालनक दृष्टिकोण स' मांगुर माछ अधिक उपयुक्त। थाई मांगुर एहि राज्य मे पालन पर प्रतिबंध अछि। देसी मांगुर 6 मास मे 250 ग्रामक भ' जाइछ। सिंघी ओ कबईक औसत वजन एतबहि अछि। एहि माछक उत्पादन लेल पोखरि आयातकार ओ पानी 2.50-3 फीट तक। तीन जीरा प्रति वर्ग फीट। पैघ ओ छोट माछक अलग छंटाई आवश्यक। कारण पैघ माछ छोट कें खा जाइछ। मूल्यवान श्रेणीक माछ अछि।

झींगा माछक उत्पादन—झींगा माछक अंतरराष्ट्रीयक बजार उत्तम अछि। एहि माछक उत्पादन मे पश्चिम बंगाल ओ उड़ीसा पुरजोर रूप स' लागल अछि। मिथिलांचलक पोखरि मे नव ढंग स' पैघ स्तर पर झींगा माछक उत्पादन ओ विपणनक व्यवस्था कयल गेल अछि। बिहार (उन्नत प्रभेद) उत्पादक संघ, समुद्री उत्पाद निर्यात संवर्धन प्राधिकार ओ केंद्रीय वाणिज्य मंत्रालयक देखरेख मे मिथिलाक प्राय: एक दर्जन जिला मे वैज्ञानिक रीति स' झींगाक उत्पादन कयल जा रहल अछि। प्रायोगिक स्तर पर मोतिहारी जिलाक बिखरी चपरा गामक पोखरि मे कयल गेल झींगा माछक उत्पादक परिणाम बहुत उत्साहवर्द्धक रहल। एतय एक हेक्टेयर जल क्षेत्र मे एक टन झींगा माछक उत्पादन भेल। एक माछक ओजन एक सय ग्राम स' अधिक तथा 300 रुपया प्रतिकिलो मूल्य मे बिकायल। एहि माछक उत्पादनक लेल मुजफ्फरपुर जिलाक कांटी प्रखंडक बड़का गाम, दरभंगा जिलाक केवटी प्रखंड मे सिमरी आ सीतामढ़ी जिलाक रुन्नीसैदपुरक पैघ-पैघ पोखरि मे झींगा पालन कें

विकसित कयल जा रहल अछि। शिवहर, पश्चिमी चंपारण, समस्तीपुर, मधुबनी, सहरसा, सुपौल ओ पूर्णिया जिला मे झींगा उत्पादन लक्ष्य छैक। मात्र झींगा माछेक उत्पादन स' मिथिला कें अनुमानत: दस अरब रुपया प्रतिवर्ष आय संभव अछि।

मत्स्य उत्पादनक लेल विभिन्न माछक हेतु जीरा प्रचुर मात्रा मे आवश्यक छैक। बिहार राज्य मत्स्य बीज विकास निगम एहि दिशा मे वैज्ञानिक ढंग स' प्रयास कयलक। पटना-दानापुर मार्ग मे मुसौला मे अत्यंत आधुनिक ढंगक जीराक हेतु हेचरी बनौलक। ई निगम रामपट्टी (मधुबनी) ओ सीतामढ़ी मे सेहो हेचरी निर्माणक प्रयास कयल। रामपट्टी हेचरी मे जलक आधुनिक व्यवस्था सफल नहि भेला स' सफलता नहि भेटल। सीतामढ़ी इकाई निर्माणाधीने रहल। वर्तमान सरकार मत्स्य पालन कें विकसित करबाक हेतु अनेक योजना बनौलक अछि। मत्स्य किसान के प्रशिक्षित करबाक लेल प्रयास कयल। कतेको किसान कें आंध्रप्रदेश मे प्रशिक्षित कयल गेल अछि। भंडारण, शीतगृह एवं त्वरित शीत परिवहनक समुचित व्यवस्था स' कृषक लाभान्वित होयताह। कृषक कें आर्थिक साहाय्य ओ ऋणक व्यवस्था, सरकारी जलकरक समय पर प्रबंध, वैज्ञानिक मत्स्य उत्पादनक शिक्षण-प्रशिक्षण प्रयोजनीय। संप्रति खगड़िया, अररिया, मधेपुरा ओ सहरसा स' माछ पटना ओ कोलक ताक बजार मे चल जाइछ। असल लाभ बिचौलिया कमाइत छथि। संपूर्ण अंचल मे मत्स्य पालन ओ विपणन आधुनिक ढंग स' कयला स' बेरोजगारी समस्याक बड़ पैघ निदान हैत।

(2003)

मिथिला मे मखानक व्यवसाय

नदी मातृक देश मिथिलाक सामाजिक जनजीवन आ संस्कृति मे मखान ओ माछक अदौ काल स' विशिष्ट महत्त्व अछि। मखान ओ माछ मिथिलाक पर्याय एवं 'पग पग पोखरि माछ मखान' कें चरितार्थ करैत आबि रहल अछि। संपूर्ण मिथिला पैघ ओ छोट नदी, ओकर छाड़नि, पोखरि, चौर, मोइन स' पाटल छैक। कटोरा सदृश एकर भू-आकृति जलजमावक प्रमुख कारण। ओहि मे उपजायल जाइछ मिथिलाक विशिष्ट फसिल मखान। मखानक खेती प्राचीन ओ अवैज्ञानिक ढंग स' होइछ अहू 21म शताब्दी मे। मखानक संबंध मे अत्यअल्प वैज्ञानिक शोध भेल छैक। शीत कटिबंधीय पौधा। अपना देशक अतिरिक्त ई चीन, जापान, कोरिया, अमेरिका, मंचुरिया, नेपाल आ बांग्लादेश मे उपजायल जाइछ। एकर वैज्ञानिक नाम यूरियल फेरोक्स तथा ई निम्फेसी परिवारक सदस्य अछि। मखानक प्रादुर्भाव संस्कृत 'मखान्न' शब्द स' भेल। कमलक कली आ अंकुर थिक। यूरोप एवं स्कॉटलेंडक पुरावैज्ञानिकक अनुसार हजारो वर्ष पूर्व एकर जीवाश्म प्राप्त भेल। संभव जे यूरोपक ठंडा भाग मे पक्षी तथा मानवीय आव्रजनक कारणें दक्षिण-पूर्वी एशियाक उष्ण-कटिबंधीय क्षेत्र मे मखानक पदार्पण भेल हो। मिथिलाक जलीय परिवेश, एतयक विशिष्ट सांस्कृतिक जीवन परंपरा, स्वाद, पौष्टिकता तथा औषधीय गुणक कारणें एकर महत्ता आब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भ' गेल छैक।

चून रहित माटि हखानक खेतीक लेल सर्वाधिक उपयुक्त। एहन माटि मुख्यत: कोसी, कमला आ महानंदाक कछेर मे पायल जाइछ। एहि क्षेत्र मे हजारो चौर, मोनि, डबरा, पोखरि, खत्ता सदृश छोट-छोट जलाशय मे एकर खेती कयल जाइछ। मिथिला मे 36,478 हेक्टेयर क्षेत्र मे चौर अछि जाहि मे वैशाली जिला मे सब स' बेसी 13,500 हेक्टेयर आ सब स' कम 680 हेक्टेयर, मुजफ्फरपुर जिला मे। दरभंगा दोसर स्थान 12,141 हेक्टेयर। मोइनक कुल संख्या 4,755 हेक्टेयर जाहि मे मात्र पूर्वी चंपारण मे 2,076 हेक्टेयर। मखानक उत्पादनक लेल पोखरिक गहराइ, एकर माटि ओ

जलवायु बड्ड महत्त्वपूर्ण छैक। पोखरिक दोमट माटि उपयुक्त। कारण एहन माटि मे जीवाश्मक मात्रा तथा जलधारणक क्षमता अधिक होइत छैक। मखानक रोपनी स' तैयारी तक जलाशय मे दू मीटर पानि रहयक चाही। मइ मास मे पानीक अभाव कें पटौनी स' पूरा करय पड़ैत छैक। अक्टूबर-नवम्बर मास मे पोखरिक सफाई परमावश्यक। बलुआही माटिवला पोखरि मखानक खेतीक हेतु अनुपयुक्त। बागमती, गंडक क्षेत्रक जलाशय मे किंचित कतहु-कतहु एकर खेती होइछ। एक बेर बीया बौग कयला स' अधिकांश क्षेत्र मे तीन फसिल होइत छैक। फरवरी-मइ तक कमायल जाइछ। उत्तम उत्पादनक हेतु तथा गाछ मे एकरूपताक लेल एक हेक्टेयर क्षेत्र मे पांच क्विंटल खाद, अंडाक खल्ली, यूरिया, कैलशियम आ अमोनिया नाइट्रेट मिला क' जलाशय मे छिड़काव आवश्यक। एक एकड़ क्षेत्र मे 35 किलो उत्तम कोटिक बीज देला स' मखानक उत्पादन 5-6 क्विंटल बीजक रूप मे तथा लाबाक रूप मे दू क्विंटल प्राप्त होइछ। एकर खेती कयनिहार विशेषत: एक वर्गक लोक छथि जे मल्लाह, केवट, निषाद, चौधरी आदि नाम स' जानल जाइत छथि। ई सभ माछक पालन एवं व्यवसाय, मखानक खेती एवं अन्य सहायक उद्योग पर अपन जीविकोपार्जन क' रहल छथि। सामाजिक एवं आर्थिक रूप स' कमजोर ई वर्ग अपन जीविकाक हेतु सरकार आकि निजी पोखरिक मालिक स' ठीका पर पोखरि ल' माछ ओ मखानक धंधा करैत छथि किंतु बिचोलिया हिनका लोकनिक बेहिसाब शोषण करैत छनि।

पारंपरिक कृषि तकनीक एखनो व्यवहार मे अछि। बीया खसयबा स' ल' क' पौधा रोपनाइ, पोषक तत्वक व्यवहार, कीट व्याधि प्रबंधन, गुड़ी संकलन, प्रसंस्करण प्राचीन ओ श्रमप्रधान अछि। फलस्वरूप, मखानक क्षेत्र ओ उत्पादन अविकसित। पोखरिक भीतर माटि पर खसल बीआ कें बांसक बनल गांजक सहायता स' जमा कयल जाइछ। पानि ओ माटि स' सानल बीआ कें बढ़िया स' धोल जाइछ तथा हल्लुक रौद मे तीन-चारि दिन सुखायलाक बाद चालनि स' चालल जाइछ। एकर बाद माटिक बर्तन मे हल्का भूजल जाइत छैक। पुन: दू-तीन-दिनक बाद जखन छिलका मुलायम होइत छैक फेर भूजल जाइत छैक आ लावाक रूप बनि जाइत छैक। तकर बाद लकड़ीक विशेष प्रकारक तख्ता पर हलुक हाथे पीटल गेलाक बाद खबया योग्य मखान प्राप्त होइत अछि। डुबकी लगाक गांज आदिक मदति स' खयबा योग्य मखानक उत्पादन कयल जाइछ। लाबा फोरय मे महिला बेसी निपुण होइत छथि।

आहार विशेषज्ञक अनुसार मानव शरीरक संतुलित विकासक हेतु मखान एक पौष्टिक आहार थिक। एहि मे कार्बोहाइड्रेट 76.6 प्रतिशत, जल 12.8 प्रतिशत, प्रोटिन 9.7 प्रतिशत, वसा 0.9 प्रतिशत मात्र 100 ग्राम मखानक फोका मे एवं 100

ग्राम लावा से 328 किलो कैलोरी ऊर्जा प्राप्त होइछ। वसाक मात्रा अत्यल्प होयबाक कारण मखान अत्यधिक सुपाच्य ओ अस्वस्थ लोकक हेतु उत्तम आहार। हृदय रोग मे विशेष लाभकर। प्रोटीन कारण एकरा काजू तथा अखरोट स' उत्तम मानल जाइछ। औषधीय गुणक दृष्टिकोण स' आयुर्वेदीय एवं यूनानी चिकित्सा पद्धति मे एकर सेवन स' पाचन, प्रजनन, नि:सर्जन, रक्त संचारण संबंधी अनेक विकार ओ व्याधि दूर होइत छैक। मणिपुर ओ कोलकाता मे एकर पात, डंटी ओ अति पुष्ट बीजक चटनी, सलाद ओ रसदार व्यंजन सेहो बनैत छैक।

मखान उत्पादनक अनेक समस्या। पारंपरिक कृषि तकनीक मे बीया, पौध रोपण, पोषक तत्वक व्यवहार, कीट-व्याधि प्रबंधन, गुड़ी संकलन, लाबा बनयबाक प्रक्रिया मे एखन तक कोनो परिवर्तन नहि भेल छैक। उत्पादन क्षेत्र मे सेहो कोनो विस्तार नहि भेल अछि। कृषि विज्ञान मे अनेक शोध भेल उन्नत बीजक हेतु। मुदा मखानक लेल उन्नत बीज विकसित नहि कयल गेल। एकर खेती मे कीट-व्याधिक समस्या बड्ड नुकसानदेह जाहि स' एकर गुणवत्ता ओ उत्पादन प्रभावित होइछ। एहि मे लाह-कीटक समस्या, तितली जातिक कीड़ा तथा पानि मे भेटयवला बोटल नामक कीड़ा (डोनेसिया), एसोफेट, नीमक दवाइ ओ नीमक खल्ली स' कीड़ा-व्याधिक प्रकोप स' बचल जा सकैछ। एकर मुख्य उत्पादन क्षेत्र अछि मिथिला। जतय बाढ़ि एक प्रमुख समस्या अछि। एहि स' मखानक उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ैत छैक। मखानक उत्पादन कें फसिल बीमाक अधीन अवश्य कयल जाय। एहि स' उत्पादन मे ह्रास भेला पर मखान कृषकक आय स्थिर रहतनि तथा ओ पूर्ण मनोयोग ओ अर्थ स' मखानक खेती मे निवेश करताह। यद्यपि मिथिलाक कृषक अत्यंत निर्धन छथि। पूजीक अभाव छनि। अधिक ब्याज दर पर ग्रामीण महाजन स' रुपया लेबय पड़ैत छनि। अत: हिनका लेल अलाभकर मखानक खेती साबित भ' रहल छैक। संस्थागत वित्तीय साहाय्य परमावश्यक छैक। नावार्ड द्वारा सहकारिता बैंकक माध्यम स' मखानक खेती मे निवेश कयल जा सकैछ। 1978 मे बिहार मे 270 मत्स्यजीवी सहयोग समिति छल एवं कुल सदस्यता 30,000 छल। एहि समितिक उद्देश्य छल सदस्यक बीच मितव्ययिता, आत्मनिर्भता एवं सहयोग क' दशा सुधारबाक। संगहि मखान, सिंघाड़ा आदि जल स' उत्पन्न होअएबला वस्तुक उत्पादन, वितरण एवं खपतक उचित व्यवस्था करब। बिहार सरकार किछु नहि क' सकल। मत्स्यजीवी किसान असंगठित छथि। केरल ओ महाराष्ट्रक कृषक संगठित भ' गेल छथि। जाहि स' हिनका उत्पादन, प्रसंस्करण ओ विपणनक समस्याक समाधान भ' जाइत छनि।

मखानक लाबा बनयबाक हेतु भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर ओ राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा मशीनक विकास कयलक मुदा एकरा प्रचारित नहि

कयल गेल। व्यापारिक ओ व्यावसायिक रूप नहि देल गेल। एकर प्रदर्शन (डिमोस्ट्रेशन) नहि कयल गेल। फलस्वरूप, एहि मशीनक विकास पर भेल खर्चा पानि मे गेल तथा मखानक कृषक लाभान्वित नहि भ' सकलाह। आबहु बिहार सरकारक कृषि विभाग एकरा अत्यधिक रूप मे प्रचारित करय जाहि स' कृषकक श्रम कम होनि ओ बचल श्रम कें दोसर काज मे लगाबथि।

कृषि आधारित उद्योग मे मखान प्रसंस्करण उद्योग कें उद्योगक श्रेणी मे सरकार मोजर नहि देलक अछि। फरवरी 1996 मे भारत सरकारक कृषि मंत्रालय मखानक उत्पादक एकटा योजना बनायल मुदा सरकारक ई योजना सरकारी संचिका मे सड़ि गेल। क्रमशः मखानक लोकप्रियता बढ़ल आ विदेशी मुद्रा अर्जन करबाक क्षमता एहि कृषि उत्पाद कें भ' गेल छैक। एहि स' प्रभावित भ' तत्कालीन कृषि मंत्री भारत सरकार भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा पटना मे मखानक लेल राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्रक कैंप कार्यालय खुजल जे आब मिथिला विश्वविद्यालक यूरोपियन गेस्ट हाउसक प्रथम तल पर निःशुल्क कार्यरत अछि। राज्य सरकार वासुदेवपुर, दरभंगा हवाइ जहाजक अड्डाक निकट कृषि फार्मक लेल 25 एकड़ भूमि लीज पर द' रहल अछि जतय एहि मखान अनुसंधान केंद्रक भवन, प्रयोगशाला ओ अन्य बनत। एहि स' पूर्व राजेंद्र कृषि विश्वविद्यायक कटिहार स्थिति जूट अनुसंधान केंद्र मे मखानक शोध चलि रहल छल। मखान कें जैविक खाद्यक रूप मे मान्यताक तैयारी छैक, जकर मुख्य ध्येय छैक मखानक प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद। एकर निर्यात स' विदेशी मुद्रा अर्जन मे सहुलियत हैत। एहि अनुसंधान केंद्रक स्थापना स' पटनाक किदवईपुरी मे शक्ति सुधा इंडस्ट्रीज कार्यरत भेल अछि एवं मखानक फ्लेक, पॉप, खीर मिक्स, सेबै खीर मिक्स आदि बजार मे आनल अछि। एहि मे नव स्थापित राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्रक सहयोग छैक। मलेशिया स' आयातित एक रिफाइंड तेल मे एकरा भूजल जाइछ। एहि उद्योगक मुख्य प्रबंधक छथि श्री सत्यजीत कुमार सिंह। मखानक प्रति समर्पित लोक छथि। एहि स' प्रसन्न भ' भारत सरकार द्वारा 'चौधरी चरण सिंह पुरस्कार' स' सम्मानित भेल छथि। राष्ट्रीय सम विकास योजना अंतर्गत योजना आयोग द्वारा 30 करोड़ रुपया लागत स' 'मखान परियोजना' मधुबनी जिलाक हेतु स्वीकृत कयने छैक। मखानक विपणन पूर्णतः असंगठित। सामान्य विपणन शृंखला मे उत्पादक-कृषक-स्थानीय व्यापारी-थोक विक्रेता-कमीशन एजेंट-खुदरा विक्रेता ओ उपभोक्ता अबैत छथि। यैह स्थिति एहि क्षेत्र स' बाहरक बिक्रीक अछि। दिल्ली, कानपुर, कोलकाता, वाराणसी मे मखानक बजार विस्तृत भेल छैक। विपणन मे पैघ बाधा अछि मखान राखय लेल समुचित गोदामक। एखन धरि, अधिकांश मखान कृषकक पास एहि फसिल कें सुरक्षित रखबाक हेतु समुचित गोदाम नहि

छनि। बिहार सरकार गोदामक व्यवस्था नहि कयने अछि। परिणामस्वरूप थोक व्यापारी कें कम दाम मे अपन फसिल बेचय पड़ैत छनि। मखान कृषक कें अपन फसिल बेचला स' उचित लाभ नहि भेट रहल छनि। मखानक मूल्य संबर्द्धन आवश्यकता छैक जाहि स' कृषक कें मूल्य मे बढ़ोतरी होयतनि आ एकर बजार मांग बढ़त। नावार्डक अनुसार देश ओ विदेश मे 20,000 करोड़ रुपयाक बजार छैक। शक्ति सुधा 6 करोड़ रुपयाक मखान दरभंगा ओ मधुबनी जिलाक मखान कृषक स' खरीदक व्यवस्था कयने छथि। 1700 कृषक स' 50-125 प्रति किलो मखान क्रयक व्यवस्था छैक, जाहि मे कृषक कें दरभंगाक मखान अनुसंधान केंद्र स' ऋणक व्यवस्था कयल गेल छनि। बिचौलियाक वर्चस्व अछि एकर व्यापार मे। पटनाक बाजर मे 100 ग्राम लाबाक मूल्य तीस रुपया। पटना ओ पटना स' बाहर एक किलो लाबाक मूल्य 300-400 रुपया, जखन कि कृषक कें मात्र 40 रुपया प्रति किलो भेटैत छनि जे मखान फसिलक भरण-पोषणक लेल 8-9 मास जल मे काज करैत छथि। बड्ड पैघ शोषण! निर्यात प्रोत्साहनक लेल संगठित रूप स' 'एपीजी'क प्रयासक आवश्यकता छैक। एकरा विश्व बजार मे पहुंचेबाक हेतु अंतरराष्ट्रीय फुड प्लाजा सभ मे प्रदर्शित कयल जाय। सरकार समर्थन देथि। पेटेंट सेहो प्राप्त कयल जाय। भविष्य मे एकर लाभ हैत। नहि त' बासमती चाउर जकां न्यायक लेल मामिला-मोकदमा करय पड़त। मखानक फसिल कें व्यावसायिक फसिलक रूप देबय पड़तै जाहि स' मिथिलांचल मे रोजगारक साधन मे अप्रत्याशित वृद्धिक संभावना छैक।

मिथिलाक आर्थिक व्यवस्था मे सुव्यवस्थित यातायात पैघ बाधक अछि। सड़क यातायात कोनो क्षेत्र मे दू-तीन कि.मी. व्यवस्थित नहि छैक। सड़क मार्ग स' मखानक व्यापार कष्टकर। रेल यातायात मे व्यापारी कें जगहक हिसाब स' (आयतनक अनुसार) भाड़ा भुगतान करय पड़ै छनि। यदि रेल व्यवस्था वजन हिसाब स' भाड़ा लेत तखने व्यापारी कें भाड़ा कम लगतनि। एहि स' मखानक मूल्य मे वृद्धि भ' जाइछ।

मिथिलाक अतिरिक्त मखानक खेती पश्चिम बंगाल, आसाम, त्रिपुरा, मणिपुर, उड़ीसा राज्य मे होइत अछि। आसाम मे मखान कें 'निखोरी' कहल जाइछ। आसाम मे मखान बाहर कर'क हेतु एतहि स' कृषक जाइत छथि। बहाड़ल गुड़ी कें कटिहार, दरभंगा ओ मधुबनी मे आनि क' फोड़ल जाइछ। मल्लाह जाति मे विशेषतः बौनि पर उपजातिक लोक बहाड़ै ओ लाबाक निर्माण मे परंपरागत रूपें लागल छथि। एमहर किछु मुसहर जातिक लोक सेहो मल्लाह सब स' बहरिया ओ लाबाक काज शुरू कयने छथि। मनीगाछी प्रखंडक चनौर पंचायतक इनराधरि ओ नजरा पंचायतक मुसहर लोकनि सेहो एकरा जीविका साधन बना लेने छथि। मिथिला मे मखान

व्यवसायक समक्ष अनेक समस्या छैक। सब स' पैघ असुविधा बिचौलियाक शोषण। कर्जग्रस्त गरीब मखान कृषक स' कम दाम मे गुड़ी की फेर ओहि कृषक स' फोड़बा अधिक दाम मे बेचि लाभ कमयबाक व्यवस्था प्रचलन मे अछि। वित्तीय संस्था ओ नावार्डक माध्यम स' अल्प ब्याज पर वित्तीय साहाय्यक अतिशीघ्र व्यवस्था परमावश्यक। आब नावार्ड सक्रिय भेल अछि एहि दिशा मे। 20,000 करोड़ रुपयाक विदेशी व्यापारक पूर्ण संभावना अछि।

(अक्टूबर, 2005)

अर्थतंत्र

आर्थिक उदारीकरण

1990 तक भारत मे पूजी-बाहुल्य प्राद्यौगिकी अपनयलाक एक कुफल ई भेल जे रोजगार वृद्धि नहि भ' क' रोजगारक अवसर कम भ' गेल। आजादीक शुरूक किछु वर्ष मे व्यवस्थित क्षेत्र मे रोजगार वृद्धि आठ प्रतिशत छल जे कमि क' एक प्रतिशत स' कम भ' गेल। अत: बेरोजगारीक वृद्धि स' गरीबी बढ़ल, संगहि देश मे अराजकता तेजी स' बढ़ल। प्रत्येक क्षेत्र मे काजक प्रति निष्ठा, प्रेरणा ओ लग्नक द्रुतगति स' ह्रास भेल। दोसर, बढ़ैत विदेशी कर्जक कारण भारत अंतरराष्ट्रीय मुद्रा बजार मे 1991 मे दिवालियापनक कगार पर पहुंचि गेल। भारत विश्व बैंक ओ अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष स' कड़ा शर्त पर कर्जक लेल इकरारनामा कयलक। जुलाइ, 1991 मे आर्थिक चुनौतीक सामना करबाक लेल आर्थिक उदारीकरणक रास्ता अपनौलक तथा भारत कें 21म सदीक लेल विकसित राष्ट्रक रूप मे तैयार करबाक संकल्प लेलक। 24 जुलाइ 1991 कें घोषित औद्योगिक नीतिक अंतर्गत किछु उद्योग कें छोड़ि क' शेषक लेल लाइसेंसक आवश्यकता नहि रहल। विदेशी व्यापारक विस्तार ओ आयात-निर्यात कें आसान बनायल गेल। एकाधिकार ओ प्रतिबंधित व्यापारक संपत्रि सीमा जे पहिने 100 करोड़ रुपया छल, समाप्त क' देल गेल। विदेशी पूजी निवेशक सीमा 40 प्रतिशत स' बढ़ा क' 51 प्रतिशत कयल गेल। सार्वजनिक क्षेत्रक कंपनीक अंश आब निजी क्षेत्र द्वारा क्रय करबाक प्रावधान कयल। पंजीकरण व्यवस्था कें समाप्त क' देल गेल तथा दस लाख स' कम आबादी बला शहर मे औद्योगिक इकाईक स्थापनाक लेल पूर्व अनुमतिक कोनो आवश्यकता नहि रहल। नव आर्थिक नीतिक उद्देश्य राष्ट्रीय ओ अंतरराष्ट्रीय आर्थिक परिवेश मे परिवर्तनक अनुरूप पुन: नीति निर्धारण करब। एहि नीतिक लक्ष्य शीघ्र प्रगति करब, लाभकरी रोजगार मे तेजी स' वृद्धि करब, क्षेत्रीय वृद्धि मे साहाय्य, उत्पादकता मे सुधार, निर्यात कें प्रोत्साहित करब, तकनीकी स्तर कें उंच उठायब, अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता मे बनल रहब, उद्योगक लाइसेंस प्रणालीक समाप्ति, पूजी, माल तथा कच्चा काल कें सरल तरीका

स' प्राप्त करब, उद्यमी कें निर्णय करबाक स्वतंत्रता तथा विदेशी तकनीक कें प्राप्त करब।

आर्थिक विकासक नव-नव आयाम मे शासन सुस्पष्ट कार्यक्रम प्रारंभ कयलक। वित्तीय घाटा कें कम करब, अनावश्यक खर्च समाप्त करब, विविध उद्योग मे विदेशी मुद्राक निवेशक लेल स्वदेशी उद्योग पर नियंत्रण समाप्त करब ओ अन्य। उपरोक्त सुधारक मूलभूत उद्देश्य त्वरित विकास, आधुनिकीरण तथा प्रौद्योगिकी उन्नतिक माध्यम स' अर्थव्यवस्था मे नवीन गति प्रदान करब एवं गरीबी ओ बेराजगारीक समस्या स' निपटबाक हेतु अपन क्षमताक वृद्धि करब। मुदा, नवीन आर्थिक नीति कृषि क्षेत्रक प्रति मौन रहल। ई अविवेकपूर्ण बात। भारतीय अर्थव्यवस्थाक सब स' महत्त्वपूर्ण क्षेत्र कृषिक उपेक्षा भेल। जखन कि राष्ट्रीय आयक 50 प्रतिशत कृषि स' प्राप्त होइछ तथा 70 प्रतिशत स' अधिक लोक कृषि स' जीविका प्राप्त करैत छथि। एकर अतिरिक्त दुग्धशाला ओ वन पर आधारित उद्योगक विकास पर कोनो नीति नहि तय कयल गेल तथा ने कोनो प्रोत्साहनक भावना प्रस्तुत कयल गेल।

उदारीकरण एवं निजीकरण मोटा मोटी एकहि सिक्काक दू रूप कहल जा सकैछ किंतु एक दोसर स' भिन्न अछि। उदारीकरण एक नव विचारधारा कहल जा सकैत अछि, जे विकासक प्रत्येक क्षेत्र मे आसानी स' लागू कयल जा सकैछ, जखन कि निजीकरण कें अपन एक सीमा छैक तथा विकासक प्रत्येक क्षेत्र अपनाएब असंभव। उदारीकरण मे शासकीय नियंत्रणक अधीन उद्योग कें फलय-फूलयबाक अवसर देल जाइछ। निजीकरण मे पूर्ण स्वामित्व एवं नियंत्रणक लेल व्यक्ति पूर्ण रूपेण स्वतंत्र रहैत छथि तथा लाभ-हानि स्वयं वहन करैत छथि। उदारीकरण औद्योगिक विकास ओ सार्वजनिक लाभक भावना कें ध्यान मे राखि अपनाएल जाइछ। निजीकरण औद्योगिक विकासक संगहि संग निजी लाभक भावना स' प्रेरित रहैछ। उद्योग कें समयबद्ध आधुनिकीकरण ओ विस्तार सुनिश्चित करबाक लेल उदारीकरणक भूमिका अहम छैक। सार्वजनिक क्षेत्र पर पर्याप्त नियंत्रण रखैत उदारीकरण कें प्रवृतिक माध्यम स' निजी क्षेत्रक प्रवेशक लेल प्रोत्साहन देल जा रहल छैक। यैह मुख्य कारण अछि जे औद्योगिक एवं व्यावसायिक क्षेत्र मे निजीकरण अधिक लोकप्रिय अछि। दोसर विश्वक विकसित राष्ट्रक दबावक फलस्वरूप निजीकरण कें पर्याप्त प्रोत्साहन भेटल छैक।

उदारीकरण स' आर्थिक सुधारक प्रारंभिक चरण मे ठोस लाभ भेल छैक। वित्तीय व्यापार, उद्योग एवं वित्त सदृश व्यापक क्षेत्र मे सुधारक प्रगतिक मूल्यांकन करबाक लेल वृहत आर्थिक सिद्धांत पर उचित ध्यान देबय पड़त। किछु क्षेत्र कें

छोड़ि क' आर्थिक उदारीकरणक प्रयास देश मे व्यापक समर्थन हासिल कयलक। यद्यपि देश मे किछु दंगा, मुंबई विस्फोट, बाढ़ि तथा भूकंप सदृश प्राकृतिक आपदाक कारी छाया अर्थव्यवस्था पर पड़ल। 11 अक्टूबर, 1993 मे भारतीय रिजर्व बैंकक ऋणक वैधानिक तरलता अनुपात कें 37.25 प्रतिशत स' 34.75 प्रतिशत ओ वृद्धिगत जमा राशि पर 30 प्रतिशत स' कम 25 प्रतिशत क' क' वित्तीय क्षेत्र मे सुधार कें आगू बढ़ायल गेल। एहि स' व्यापारिक क्षेत्र कें ऋण देबाक लेल 4,000 करोड़ रुपया अतिरिक्त उपलब्ध भ' गेल। ऋण देबाक तरीका कें लचीला बनायल गेल आ सहायता संघ कें ऋणदाता बैंकक काज आसान भेल। 1991 मे न्यूनतम दर 20 प्रतिशत छल जे घटक' 15 प्रतिशत क' देल गेल आ अधिकतम जमा दर 10 प्रतिशत भ' गेल।

मार्च 1997 तक केंद्र मे वित्तीय घाटा कें 3 प्रतिशत, वैधानिक तरलता कें 25 प्रतिशत तथा आयात सीमा शुल्क व्यवस्था कें लगभग 50 प्रतिशत अधिकतम दर स' 20 प्रतिशत करबाक लेल प्रतिबद्ध भेल। एहि क्षेत्र मे बहुत किछु करबाक छैक—आर्थिक सहायता विशेष क' खाद्य सब्सिडी जे वास्तविक जरूरमंद कें देल जाइछ कें आस्ते-आस्ते कम क' क' राजस्व मजबूतीक प्रयास, औद्योगिक ढांचाक पुनर्गठन जाहि स' कामगारक हितक देखरेख कयल जा सकय, व्यापार प्रणालीक अधिक उदारीकरण तथा वित्तीय प्रणालीक पुनर्गठन।

देश, काल एवं परिस्थितिक अनुरूप आर्थिक विकासक स्वरूप मे परिवर्तन वांछनीय किंतु नवीन आर्थिक सुधारक समीक्षा करबा काल हमारा अपन देशक अर्थव्यवस्था कें ध्यान मे राखय पड़त जे अन्य देश स' काफी भिन्न अछि। भारत कृषि प्रधान देश, एतय बेरोजगारीक बाहुल्य, अर्द्धबेरोजगारी चरम पर तथा गरीबी गंभीर समस्या। आर्थिक विषमता—धन तथा आयक विषमता निरंतर बढ़ैत जा रहल अछि। जनसंख्या तथा निरक्षरता तेजी स' बढ़ि रहल छैक तथा शहरीकरण दिस झुकाव दिनानुदिन बढ़ि रहल अछि। नवीन आर्थिक सुधार लागू करबाक काल एहि कठोर सत्य कें ध्यान मे राखयक छल जे विकासक अर्थ संपूर्ण देश ओ संपूर्ण आबादीक विकास। विकास आवश्यक, तेजी स' विकास परमावश्यक, किंतु, एहू स' अधिक आवश्यक संतुलित विकास। आर्थिक उदारीकरण स' समाजक गरीब वर्ग लाभान्वित नहि भेल। धनी वर्ग धन्ना सेठ अवश्य भ' रहल।

वर्तमान भारतीय अर्थव्यवस्थाक संबंध मे 1994-95क आर्थिक सर्वेक्षण मे सरकार दावा कयलक जे 1991क आर्थिक संकटक कठीन दौरक बाद स' अर्थव्यवस्था मे उल्लेखनीय प्रगति भेल छैक। वर्ष 1991-92 मे सरकारी आंकड़ा मे समग्र आर्थिक वृद्धिक दर 0.9 प्रतिशत दर्शाओल गेल छल जकरा वर्ष 1994-

95 मे 5.3 प्रतिशत अनुमानित कयल गेल। एहि तरहें औद्योगिक उत्पादन जे 1991–92 मे गतिहीन भ' गेल ओ 1994–95 मे 8 प्रतिशत तक वृद्धिक आशा प्राप्त कयलक। वर्ष 1991–92 मे खाद्यान्न उत्पादन मे ह्रास भेल जे 168 मिलियन छल। खाद्यान्न उत्पादन 1994–95 मे 185 मिलियन टन उम्मीद कयल गेल। विदेशी मुद्राक परिपेक्ष्य मे निर्यात मे वृद्धि भेल छैक। सरकारक अनुसार 31 मार्च 1991 मे समाप्त भेल वर्ष मे भारत पर विदेशी ऋण खाता मे 8 मिलियन डॉलरक वृद्धि भेल छल। 1994–95क पूर्वार्द्ध मे लगभग 300 मिलियन डॉलरक गिरावट आंकल गेल। विदेशी मुद्रा कोष जे 1991 मे एक मिलियन डॉलर छल ओ फरवरी 1995 तक 19.5 मिलियन डॉलर स' अधिक भ' चुकल छल।

'इंडिया टुडे'क लेल विपणन सर्वेक्षण एजेंसी 'मार्ग' संपूर्ण देशक 1172 शहरी मध्यवर्गीय घरक खर्चा ओ आर्थिक उदारीकरणक अन्वेषण कयलक। सर्वाधिक चिंता महंगाई मुद्दा छल। 61 प्रतिशत लोक महंगाई रोकबा मे सरकार कें निहायत अक्षम कहलक। एहि अवधि मे प्रति व्यक्ति मुश्किल स' एक प्रतिशत बढ़ल। वेतन मे वृद्धि भेल मुदा चीजक मूल्यवृद्धिक तुलना मे कम। आर्थिक उदारीकरण एवं आर्थिक नीतिक संबंध मे उपरोक्त जनमत सर्वेक्षण एहि तरहें छल—

सरकारक नव आर्थिक नीतिक प्रभाव	**उदारीकण नीतिक मुख्य असर की हैत**
(i) जीवन बेहतर भेल 18 %	(i) मात्र अमीर के फायदा हैत 67 %
(ii) हमरा पर कोनो असर नहि 54 %	(ii) मूल्य मे वृद्धि 79 %
(iii) जीवन बदतर भेल 28 %	(iii) भ्रष्टाचार बढ़त 68 %

अर्थशास्त्री कमलनयन काबरा 1994–95क एहि आर्थिक सर्वेक्षण कें तर्कहीन मानैत छथि। हिनक कथन जे सरकारी आंकड़ा मात्र एक वर्षक आकलन पर आधारित अछि तथा अनुमानित। एहि मे कोनो शक नहि जे वृद्धि दर बढ़ल छैक आ ई एकपक्षीय अछि। जेएनयूक प्राध्यापक अरुण घोषक शब्द मे पूजीगत वस्तुक उत्पादन नहि बढ़ल। ऑटोमोबाइल, विद्युत, कंप्यूटर ओ रसायन उद्योग मे विकासक गति छैक, किंतु आइ जरूरति एहन उद्योगक छैक जतय रोजगारक उपलब्धता, क्षेत्रीय संतुलन ओ पर्यावरण प्रभाव कें महत्त्व देल जाय। वामपंथी आर्थिक सुधारक लेल वैकल्पिक सुझाव पेश कयने छलाह, जेना आयात मे भारी कमी, उत्पादक सरकारी खर्च मे कटौती, सार्वजनिक क्षेत्रक अकुशलता कें कम करब ओ ओकरा निर्यातोन्मुख बनायब, चोरुक्काधन पर छापा, लालफीताशाही कम करब, एहन प्रौद्योगिक विकास करब जे आधुनिक हो तथा हमर संसाधन ओ श्रम-शक्तिक पूर्णरुपेण उपयोग करय, अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष ओ विश्व बैंक स' कर्ज लेबाक बदला अनिवासी भारतीय

कें पूजी निवेश हेतु प्रेरित करब, देशक धनाढ्यक विदेश मे जमा कुल धन कें देश मे आनयक पूर्ण प्रयास, व्यापक रूपे घरेलू बजार मे वृद्धि करब ओ अन्य। एहि आर्थिक नीतिक पश्चिम बंगालक साम्यवादी सरकार शुरू मे विरोध कयलक मुदा 1994–95 मे आर्थिक उदारीकरणक नीति ओहो अपना लेलक। महाराष्ट्रक बाद दोसर नंबर पर विदेशी निवेश पश्चिम बंगाल मे आयल। एतय श्रमिक संगठन जे विधिवत अपन रपट सरकार कें प्रस्तुत नहि करैत अछि ओहि संगठनक पंजीकरण समाप्त कयल जा रहल अछि। आंध्रक तेलगू देशम सरकार आर्थिक उदारीकरण नीति अपनौलक। कर्नाटकक जनता दल सरकार एहि नीतिक समर्थन कयलक। भारतीय जनता पार्टी द्वारा समर्थित महाराष्ट्र, गुजरात एवं राजस्थानक सरकार पूर्वहि स' एहि नीतिक समर्थक अछि। निष्कर्ष यैह जे आब देशक सब राज्य सरकार आर्थिक उदारीकरणक नीतिक समर्थन क' रहल जे पूर्व मे विरोध कयने छल। चीन 1991 मे आर्थिक उदारीकरणक नीति कें अपनौलक किंतु एतयक क्रियान्वनक तरीका भारत स' भिन्न अछि। उम्मीद कयल जाइछ जे 21म सदी मे चीन विश्वक महान आर्थिक शक्तिवला देश भ' जायत, कारण एतय विकास दर बहुत तीव्र छैक।

दोसर नंबर पर विश्व बैंक स' विदेशी ऋण–118 बिलियन डॉलर पाबयबला देश मैक्सिको आइ आर्थिक संकट भोगि रहल अछि जखन कि मात्र पांच मास पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति ओतयक अर्थव्यवस्था ओ वित्तीय प्रबंधन कें आदर्श मानने छलाह किंतु आइ विश्वक सब अर्थशास्त्री कहि रहल छथि जे सरपट गति स' संपन्न बनयक प्रयास मे मैक्सिकोक दुर्गति भेल छैक। भारत विदेशी ऋण–91.78 बिलियन डॉलर पाबयवला तेसर नवंबरक देश अछि। प्रश्न अछि जे एकरो की यैह हश्र हैत। 20 विलियन विदेशी मुद्रा भंडारक संग भारत अन्य विकसित देशक तुलना मे उत्तम स्थिति मे अछि किंतु विश्व बैंकक अर्थशास्त्री चेतावनी देलक अछि जे भारत गैर सरकारी स्तर पर विदेशी पूजीक आवकक द्वार खोलि देने अछि, ओहि पर चौकसी परमावश्यक तथा कथमपि चालू खाताक घाटाक समायोजन मे एकर उपयोग नहि होयबाक चाही। वस्तुत: अल्पावधिक लेल अबैत ई पूजी निर्यात आयक विकल्प नहि भ' सकैछ। पर्याप्त निर्यात स' भारी विदेशी ऋणक लागत निकालल जा सकैत अछि। कर्जक किस्त एवं ब्याजक भुगतान भ' सकैछ। मैक्सिकोक वर्तमान संकटक यैह कारण छैक। एतय ट्रेजरी बिलक भुगतानक लेल विदेशी कर्जक उपयोग कयल गेल। संगहि अमेरिकी जीवन शैलीक निर्वाहक लेल उपभोक्ता सामग्रीक निर्यात कतेको गुणा आयात कयल गेल। 'ऋणं कृत्वा धृतं पीबेत' कें चरितार्थ कयल। कर्जक दुरुपयोग। कर्ज स' अर्जित आय स' कतेको गुणा बेसी लागत। कर्जभार स' ई देश डूबि गेल।

उदार अर्थव्यवस्था ओ नवीन विश्व बजार व्यवस्थाक सकारात्मक कारणक लेल जरूरी अछि राजनैतिक स्थिरता, इच्छाशक्ति, बजट घाटा मे कटौती ओ राजवंशीय शैली मे बांटयवला रियायत पर रोक। एकर आशय ई नहि जे सरकारी अनुदान तत्काल बंद क' देल जाय, जे एकर वास्तविक हकदार छथि। अर्थशास्त्रीक सलाह छनि जे सरकारी अनुदानक सीमा कर वसूली स' कथमपि बेसी नहि हो। विदेशी कर्ज स' अनुदान एकदम नहि। खाद्य पदार्थ, खाद, ऊर्जा, जल, शिक्षा ओ स्वास्थ्य सेवाक लेल देल गेल अनुदान वास्तविक गरीब कें देल जाय। अनुदानक राशि करक माध्यम स' समर्थ ओ संपन्न व्यक्ति स' वोसूलल जाय।

भारतक संविधान मूलतः विदेश आधारित। एतयक शासकीय प्रणाली सेहो विदेशी द्वारा निर्मित। आब ई खुल्लमखुला साम्राज्यवादक दलाली क' रहल अछि। विदेशी कर्जक भार देश पर बढ़ैत जा रहल अछि। प्रौद्योगिकी विदेशी होइत जा रहल अछि। देशक उत्पादन प्रणाली पर बहुराष्ट्रीय कंपनी मुख्य रूप स' हावी भ' रहल छथि। एतयक आर्थिक नीति विदेशीक निगरानी मे बनि रहल अछि। फलस्वरूप, देश मे भ्रष्टाचार, बेरोजगारी ओ अराजकताक दिनानुदिन वृद्धि भ' रहल अछि।

(2005)

डंकल प्रस्ताव ओ हमर विज्ञान

अंतरराष्ट्रीय व्यापार संबंधी प्रतिबंध कें दूर करबाक उद्देश्य स' द्वितीय विश्वयुद्धक समाप्तिक बाद संयुक्त राष्ट्रसंघक तत्वावधान मे विजेता देशक बीच 1947 मे व्यापार एवं तटकर संबंधी सामान्य समझौता (गैट-GATT) भेल छल। कालांतर मे गैट एक बहुपक्षीय व्यापार संस्थाक रूप मे विकसित भ' गेल आ एकरा माध्यम स' व्यापारिक प्रतिबंध कें कम करबाक पूर्ण चेष्टा कयल गेल। एखन धरि सात बेर गैट-वार्ता संपन्न भ' चुकल अछि आ प्रत्येक वार्ता मे तटकर कम करबाक प्रस्ताव राखल गेल छल। 1986 मे वार्ताक आठम चक्र उरुग्वे मे आरंभ भेल छल जे एखन धरि अंतिम स्वरूप ग्रहण नहि क' सकल अछि। गैटक कार्यकारी महानिदेशक आर्थर डंकल 470 पृष्ठक मसविदा दस्तावेज एहि व्यापारिक समझौताक नीति-निर्देशकक रूप मे उपस्थित कयलनि तें ई प्रस्ताव डंकल प्रस्तावक नाम स' बहुचर्चित भेल अछि।

प्रारंभ मे एहि समझौता स' मात्र 23 गोट देश संबद्ध छल एवं 1975 धरि एकर विचारणीय क्षेत्र मे मात्र दू गोट मुद्दा छल—सीमा शुल्क एवं सीमा शुल्केतर प्रतिबंधक अनुकूलन। संप्रति 107 गोट देश एहि स' संबद्ध अछि मुदा एकर लगाम आ नीति-निर्धारण मात्र पांच टा देशक समूह (जी-5)क हाथ मे अछि। वार्ताक एहि चक्र मे आर्थर डंकल अपन प्रस्ताव मे विकसित एवं विकासशील देशक मुद्दा जोड़ि देने छथि, जे एहि तरहें अछि—उष्ण कटिबंधीय देशक उत्पादन, प्राकृतिक संसाधन पर आधारित उत्पादन, कपड़ा उद्योग ओ पोसाक, कृषि, गैटक नियमावली, सुरक्षा प्रावधान, बहुव्यापारीय वार्तालाप, सब्सीडी एवं ओकरा निरस्त करबाक उपाय, आपसी विवादक समाधान एवं गैट-प्रणालीक कार्य-विधि। प्रत्येक सदस्य देश स' एहि प्रस्ताव पर अपन सहमति-असहमति व्यक्त करबाक हेतु कहल गेल अछि। भारत सरकार कें सेहो ई प्रस्ताव विचारार्थ पठाओल गेल छैक। एहि प्रस्तावक विशेषता ई छैक जे प्रस्तावक संपूर्ण पैकेज कें बिना कोनो शर्त कें मानय पड़त।

एहि प्रस्ताव मे कृषिक संबंध मे चारिटा बात मुख्य अछि—

1. बुनियादी समझौता,
2. पूरक समझौता जे कृषि-सुधार कार्यक्रमक अंतर्गत विभिन्न देशक जवाबदेहीक सीमा निर्धारित करैछ,
3. खाद्यान्नक आयात करयवला देश कें मददि करबाक उपाय,
4. पर्यावरण संरक्षण संबंधी समझौता।

डंकलक मुख्य लक्ष्य अछि कृषि उत्पादक कें विश्व भरिक बजार मुहैया करब। एहि क्रम मे राखल गेल छैक बुनियादी समझौता परिणामी सीमा-शुल्क मे 1993-94क बीच 36 प्रतिशत कटौती—प्रत्येक सीमा-शुल्क लाइनक लेल कम स' कम 15 प्रतिशत कटौतीक सलाह देल गेल छैक। वर्तमान मे जतय कोनो खास आयात नहि होइछ, ओतय घरेलू उपभोगक कम स' कम 3 प्रतिशत आयात करय पड़त एवं 1999 धरि एकरा 5 प्रतिशत बढ़बय पड़त। डंकल सब्सीडी कें दू श्रेणी मे बंटने छथि। पहिल श्रेणी मे ओहि सामग्रीक उत्पादन, भंडारण ओ बजार संबंधी नीति, जकरा सरकार प्रोत्साहित करय चाहैछ। एहि मे वनोत्पादज सेहो अछि। एहि सामग्री स' संबंधित सब्सीडी मे पर्याप्त कटौती कयल जायत। दोसर श्रेणी मे अछि—आम सरकारी सेवा, अनुसंधान, रोग नियंत्रण अधिसंरचना, पर्यावरण सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा आदिक हेतु अहानिकर नीति। अहानिकर सब्सीडी कें हटयबाक प्रयास कयल गेल छैक संगहि 1993 स' 1999 धरि 20 प्रतिशत सब्सीडी घटयबाक योजना छैक। एहि पैकेज कें लागू रहबाक अवधि मे प्राप्त अनुभवक सार-संकलन करबाक हेतु कृषि-कमेटीक गठनक सुझाव देल गेल अछि एवं अनुमोदित सुधार कार्यक्रम कें लागू करबा मे साहाय्य हेतु प्रावधान सेहो कयल गेल अछि, जाहि स' स्थानीय प्रतिरोध कें कमाओल जा सकय। डंकलक धारणा छनि जे जं प्रत्येक देश अपना ओतय सब्सीडी समाप्त क' दैत अछि त' अंतरराष्ट्रीय बजार मे कृषि-पदार्थक उचित मूल्य भेटत ओ कृषि-पदार्थक निर्यात कें प्रोत्साहन भेटत।

एहि बात कें ध्यान मे राखि प्रस्ताव मे सब देश स' अनुरोध कयल गेल अछि जे कृषि क्षेत्र मे देल जाइत छूट—बीज ओ उर्वरक कें कम मूल्य पर उपलब्ध करब, कम मूल्य पर सिंचाइ व्यवस्था ओ रियासती मूल्य पर कृषि उत्पादक सरकारी खरीद कें बंद करब। एहि क्षेत्र मे सब्सीडी समाप्त क' देला स' कृषि उपजाक मूल्य बढ़त एवं एहि स' कृषि-क्षेत्र मे स्वस्थ प्रतियोगिता कें प्रोत्साहन भेटत।

भारतक किसान नेतालोकनि एहि प्रस्तावक संबंध मे विभाजित भ' गेल छथि। एहि प्रस्तावक विरोध मे 3 मार्च कें दिल्लीक लाल किला मैदान मे भारतीय किसान यूनियनक महेंद्र सिंह टिकैत किसान पंचायतक आयोजित कयने छलाह। एहि

पंचायत मे संकल्प लेल गेल छल जे डंकल प्रस्ताव द्वारा भारतक संप्रभुता मे सेन्ह लगयबाक विदेशी मंशा कें विफल करब। संगहि चेताओल गेल जे जं भारत सरकार पश्चिमी देश ओ बहुराष्ट्रीय कंपनी सबहक समक्ष समर्पण कयलक त' एहि देशक कृषक स' ओ सोझासोझी टकरयबाक हेतु प्रस्तुत रहय। सब स' पहिने एहि प्रस्तावक विरोध जर्मनीक हाइडिलवर्ग विश्वविद्यालय मे जैनेटिकक प्रोफेसर डा. सुमन सहाय कयलनि। एकर ठीक विपरीत एहि प्रस्तावक पक्ष मे शेतकारी संघटनक शरद जोशी ओ भूपिंदर सिंह मान शुरू स' छथि। 31 मार्च कें ई सब रैली सेहो कयने छलाह। कर्नाटक राज्य रैयत संघक अध्यक्ष प्रो. एम डी नांजुंदास्वामी शरद जोशी कें किसान नेता नहि मानैत एहि प्रस्तावक विरोध करैत छथि। वामपंथी नेता लोकनिक मतें एहि प्रस्तावक सब स' मारक प्रभाव कृषिक हेतु सरकारक समस्त अप्रत्यक्ष निवेश ओ सब्सीडीक समाप्ति पर पड़त। एहि तरहें सिंचाइ ओ विद्युत उत्पादन, राष्ट्रीय प्रसार योजना मे विस्तार, सहकारी ऋण-व्यवस्था, बैंक द्वारा ग्राम विकासक हेतु ऋण, गाम स' मंडीक बीच सड़क, संचार ओ परिवहन व्यवस्थाक विस्तार पर खतरा उत्पन्न भ' जायत। कृषि अनुसंधानक भट्ठा बैसि जायत ओ उन्नत बीजक हेतु पश्चिमी देश पर निर्भर रहय पड़त। कृषि प्रधान देश भारतक प्रसार ओ विकास कथमपि पश्चिमी देशक हाथ मे नहि जयबाक चाही।

भारत सरकार फरवरी 1992 मे राजनैतिक पार्टी, बुद्धिजीवी, उद्योगपति ओ व्यापारी लोकनि कें एहि प्रस्तावक पक्ष मे करबाक उद्देश्य स' एक मंत्रिमंडलीय उप समितिक गठन कयलक। एहि प्रस्ताव कें दिसंबर 1992 मे बहसक हेतु लोकसभा मे प्रस्तुत कयल गेल। मार्च 1993 स' विभिन्न राजनैतिक पार्टी—सीपी आई, सीपीआइ (एम), जनता दल, जनता पार्टी, तेलगु देशम आदि स' राय-मशविरा चलि रहल अछि। मंत्रिमंडलीय उपसमिति ट्रेड यूनियन ओ किसान नेता लोकनि कें सहमत करबाक चेष्टा क' रहल अछि। भारत सरकार कें दिसंबर 1993 धरि एहि प्रस्ताव कें स्वीकार करबाक बाध्यता छैक। अन्यथा अमेरिका अपन विशेष धारा 301 भारत पर लागू क' देत, अर्थात भारतक नाकेबंदी क' देल जायत।

डंकल प्रस्ताव कें आंखि मुनि क' मानि लेला स' सर्वाधिक क्षति कृषि क्षेत्र कें होयत। सरकारी खरीद, समर्थन मूल्य, उर्वरक पर छूट, कम मूल्य पर बीज, बिजली ओ पानिक सुविधा समाप्त भेला स' भारतीय किसानक आर्थिक स्थिति दयनीय भ' जयबाक आशंका अछि। पौधाक प्रजातिक पेटेंट स' भारत समेत अन्य विकासशील देशक कृषिक कें समृद्ध देश पर निर्भर रहय पड़त। भारत सरकार विश्व बैंक, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ओ अमेरिकी दबाव मे एहि प्रस्ताव कें मंजूर करबाक चेष्टा मे बुझना जाइछ। सरकारक राय छैक जे पेटेंटीकरणक प्रावधान भारतीय विज्ञान

एवं कृषि अनुसंधानक लेल वरदान साबित होयत। एहि स' शोध कार्यक धोखाधड़ी समाप्त भ' जायत। योजना आयोगक उपाध्यक्ष ओ केंद्रीय वाणिज्य मंत्री प्रणव मुखर्जी डंकल प्रस्तावक पेटेंट प्रावधानक प्रति विशेष चिंतित छथि एवं कृषि सब्सीडीक प्रति कम। भारतीय संसद मे एहि प्रस्ताव पर गहन चर्चा कयल गेल अछि आ प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव आश्वस्त कयलनि अछि जे सर्वदलीय बैठक मे एहि पर निर्णय लेल जायत।

(सितंबर, 1993)

अनिवासी भारतीय ओ हमर अर्थव्यवस्था

स्वतंत्रता पूर्व अंग्रेजक शासन व्यवस्थाक शोषण-दोहन मूलक नीति एवं भारतीय अर्थव्यवस्थाक प्रति उपेक्षात्मक नीतिक परिणामस्वरूप एतयक आर्थिक स्थिति दयनीय भ' गेल छल। दयनीय आर्थिक स्थिति कें सुधार'क उद्देश्य स' स्वतंत्रताक बाद आर्थिक ओ सामाजिक विकासक हेतु नियोजित प्रणाली अपनायल गेल, जाहि स' विकासक द्वार खुजल। सातम योजनाक आरंभ मे आर्थिक नीति मे नवीन प्रवृतिक संचार कयल गेल, जे नव आर्थिक नीतिक रूप मे जानल जाइछ। निजी क्षेत्रक विकास पर बल देल गेल। एहि हेतु औद्योगिक लाइसेंस नीति, आयात-निर्यात नीति, राजकोषीय नीति, नियंत्रण-प्रतिबंध एवं प्रशासकीय नियमन प्रणालीक जटिलता कें कम कयल गेल। अफसरशाही, लालफीताशाही एवं राजनैतिक स्तर पर भ्रष्टाचार कें समाप्त कयल जा रहल अछि। आठम योजनाक अवधि मे 6 प्रतिशत विकास-दर प्राप्त करबाक लक्ष्य अछि। एहि अवधि मे बचत दर, पूजी उपयोगक कुशलता तथा निर्यात ओ आयात मे वृद्धिक आवश्यकता पर विशेष बल देल गेल छैक। उच्च तकनीक आयात कें केंद्रीय महत्त्व देल जा रहल अछि। विदेशी निवेश एवं भारतीय फर्म द्वारा विदेशी प्रौद्योगिकीक हेतु समझौता कें सरल कयल गेल अछि। सरकार अंतरराष्ट्रीय व्यावसायिक कंपनी कें 51 प्रतिशत धरि विदेशी इक्विटी निवेशक हेतु आमंत्रण सुनिश्चित कयने अछि। एहि परिप्रेक्ष्य मे अनिवासी भारतीय एतयक उद्योग मे पूजीनिवेश यथेष्ट मात्रा मे करैछ। सरकार अनिवासी भारतीय कें आर्थिक सहयोगक संगहि कर-व्यवस्था मे सेहो सुविधा द' रहल अछि।

अपना देश मे जे भारतीय नहि रहैत छथि अनिवासी भारतीय कहल जाइत छथि, जनिका दू भाग मे बांटल जा सकैछ—पहिल ओ अनिवासी जे भारतीय नागरिकता आकि मूलक उद्गम, दोसर अन्य निवासी। पहिल कोटिक अनिवासी लोकनि कें भारत मे पूजीनिवेशक पूर्ण सुविधा छनि मुदा दोसर तरहक अनिवासी कें विदेशी विनिमय कानून एवं नियमक अंतर्गत किछु नियंत्रण छनि। अनिवासी

भारतीय एतय पूजीनिवेश एहि तरहें क' सकैत छथि—(ए) निवेश बिना देश मे प्रत्यावर्तनक (i) निजी स्वामित्व ओ साझेदारी व्यवसाय, जाहि मे ओ आश्वासन दैत छथि जे पूजीनिवेश एवं ओहि स' अर्जित आय प्रत्यावर्तित नहि होयत। ओ कोनो सीमा धरि निवेश क' सकैत छथि, स्थावर संपत्ति कें छोड़ि क', (ii) शेयर बजारक माध्यम स' भारतीय कंपनीक शेयर मे निवेश—कोनो सीमा धरि जाहि मे पूजी एवं आय प्रत्यावर्तित नहि होयत, (iii) भारतीय कंपनीक नव शेयर मे बिना कोनो माध्यमक निवेश-100 प्रतिशत धरि, जाहि मे पूजी एवं आय प्रत्यावर्तित नहि होयत। (बी) प्रत्यावर्तित आधार पर निवेश—(i) यूनिट ट्रस्ट एवं सरकारी प्रतिभूति मे निवेश—आय एवं निवेशक बिक्री स' प्राप्ति बैंकक माध्यम स' पठायल जा सकैछ, (ii) शेयर एवं ऋण पत्र मे पोटफोलियो निवेश-आय एवं निवेशक बिक्री स' प्राप्ति बैंकक माध्यम स', (iii) 40 प्रतिशत स्कीमक अंतर्गत भारतीय कंपनीक शेयर मे निवेश—रिजर्व बैंकक विदेशी निवेशक प्रभागक माध्यम स' कयल जा सकैछ। औद्योगिक कंपनी, होटल एवं अस्पताल हेतु, (iv) 74 प्रतिशत धरि प्राथमिक उद्योग मे निवेश-एहि मे 'परिशिष्ट-1' मे अंकित उद्योग सब अछि। अस्पताल एवं होटल उद्योग मे सेहो निवेश कयल जा सकैछ। (v) विद्युत ऊर्जा उद्योग मे 100 प्रतिशत पूजी निवेश कयल जा सकैछ। अनिवासी भारतीय द्वारा पूजीनिवेश मे सुविधा क' देल गेल अछि। आब ओ एकमुश्त पूजी लगा सकैत छथि, जे पहिने नहि छल।

अनिवासी भारतीय एत' बैंक मे तीन तरहक खाता खोलि सकैत छथि—(i) अनिवासी (विदेशी) रुपया खाता ब्याज ओ आय कर स' मुक्त अछि। संपूर्ण राशि संपत्ति कर स' मुक्त एवं एहि राशि मे स' निजी संबंधी कें दान देला पर उक्त दान कर मुक्त अछि। संपूर्ण राशि भारतक बाहर प्रत्यावर्तित कयल जा सकैछ। एहि स' भारत मे पूजीनिवेश भ' सकैछ, (i) विदेशी मुद्रा (अनिवासी) खाता—खास-खास विदेशी मुद्रा मे खाता संभव। सावधि जमा सेहो संभव अछि मुदा चालू एवं बचत खाता नहि खोलल जा सकैछ, (iii) साधारण अनिवासी खाता सभ तरहक खाता बैंक मे खोलल जा सकैछ। एहि मे ब्याज आय कर स' मुक्त नहि अछि। निकासी कयल जायत तथा निवेश सेहो कयल जा सकैछ।

अनिवासी भारतीय एतय अचल संपत्तिक खरीद बिक्री क' सकैत छथि, मुदा विदेशी भारतीय कें अचल संपत्तिक खरीद-बिक्री मे फेरा (FERA) अधिनियमक अंतर्गत रिजर्व बैंक स' अनुमति लेब' पड़तनि एवं एहि खरीद-बिक्री स' प्राप्त आय ओ विदेश नहि ल' जा सकैछ। एहिना व्यापारिक-पत्र खरीद-बिक्रीक हेतु प्रावधान अछि।

आयकर एवं विदेशी विनिमय अधिनियम मे अनिवासी भारतीयक परिभाषा

मे भेद अछि। 1982-83 धरि भारतीय नागरिक जे एहि देश मे 182 दिन स' कम रहैत छलाह अनिवासी भारतीय आय करक परिभाषाक अंतर्गत जानल जाइत छलाह मुदा संप्रति ई परिषाभा बदलि गेल अछि एवं अनिवासी भारतीय ओ कहल जाइत छथि जे भारतीय नागरिक अपना देश मे नहि रहि रहल छथि। हिनक निवेश आय पर कोनो तरहक कटौती नहि कयल जायत। अन्य आयक संग निवेश-आय सेहो रहला पर कानो कटौती नहि होयत। एहि तरहक आय पर 20 प्रतिशत आय कर देय अछि। एहि आय मे दीर्घकालीन पूजीगत आय सेहो सम्मिलित कयल जा सकैछ। विदेशी विनिमय संपत्ति मे पूजीगत लाभ पर कोनो कर नहि लागत यदि टाका कें 6 मासक अंतर्गत खास-खास संपत्ति किंवा बचत योजना मे निवेश क' देल जाय। अनिवासी भारतीय कें आय पर विधान अंतर्गत वार्षिक आयक विवरण देबाक प्रयोजन नहि छनि जं आय मात्र निवेश आकि पूजीगत लाभ हो। अनिवासी भारतीय जं एत' रह' लगैत छथि एवं जाधरि संपत्ति स्थानांतरित नहि होइत छनि अनिवासी भारतीयक सुविधा आय कर मे ल' सकैत छथि। देश स' बाहर चल-अचल संपत्ति एवं विदेशी विनिमय कें दान-कर स' छूट प्राप्त छैक। एनआर ई बैंक खाता स' कयल गेल दान पर कर नहि लगैछ। यदि अनिवासी भारतीय एतय स्थायी रूप स' रहबाक लेल अबैत अछि त' अयबाक तिथि स' सात वर्ष धरि प्रत्यावर्तित संपत्ति पर संपत्ति कर नहि लगतनि। हिनका द्वारा अर्जित संपत्ति पर सेहो संपत्ति कर नहि लगैछ।

भारतीय उद्योग मे अनिवासी भारतीयक पूजीनिवेश तेजी स' बढ़ि रहल अछि। वित्त मंत्रालय सूत्रक अुनसार उदार अर्थव्यवस्थाक नीति पालनक फलस्वरूप एतयक उद्योग मे अनिवासी भारतीयक पूजीनिवेश तेसर स्थान पर अछि।

विगत किछु मास स' एहि मे तेजी स' बढ़ोतरी देख' मे आबि रहल अछि। दिसंबर '93 मे वित्त मंत्रालय सात टा योजनाक मंजूरी देलक, जाहि मे अनिवासी भारतीयक पूजीनिवेश छनि। एहि योजना सब मे दू अरब 73 करोड़ टाकाक पूजीनिवेश हिनका लोकनि द्वारा कयल जायत। सितंबर मे साठिटा विदेशी वित्तीय ओ तकनीकी योजना कें स्वीकृति देल गेल छैक। एहि योजना सब मे तीन अरब दस करोड़ टाकाक पूजी निवेश होयत। एहि मे एकतीस टा योजना तकनीकी सहयोग स' संबंधित अछि एवं 29 टा योजना वित्तीय सहयोग पर आधारित छैक।

अगस्त '91 स' अगस्त '93 धरि एक हजार तीस अरब 98 करोड़ टाकाक मंजूरी देल गेल छैक। एकरा अंतर्गत तीन हजार एक सौ सातटा परियोजना शुरू करबाक छैक। एहि मे एक हजार सात सय 39 योजना तकनीकी सहयोगक एवं एक हजार तीन सय 76 योजना वित्तीय सहयोग स' संबंधित अछि। सब स' अधिक

645 परियोजना अमेरिकाक अछि, जे चारि सय 19 अरब 53 करोड़ विदेशी मुद्रा मे निवेश करत। दोसर स्थान पर स्विटजरलैंड अछि, जे 154 परियोजना पर एक सय दस अरब 46 करोड़ टाका लगायत। अनिवासी भारतीय एक सय 39 योजना पर 83 अरब 36 करोड़ विदेशी मुद्रा निवेश करताह। एहि अवधि मे 69 देशक कंपनी भारत मे पूजीनिवेश ओ तकनीकी सहयोगक समझौता कयने अछि। एहि मे फ्रांस, जर्मनी, हांगकांग, इटली, जापान, कोरिया, रूस, सउदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, स्वीडन, थाइलैंड ओ ब्रिटेनक कंपनी शामिल अछि। जापानक कंपनी कें 142 तकनीकी सहयोग एवं 68 वित्तीय सहयोगक मंजूरी भेटि गेल छैक। एहि योजना मे 75 अरब 77 करोड़ रुपयाक विदेशी मुद्रा लागत। मात्र सितंबर '93 मे अमेरिकाक सातटा योजना मे 15 करोड़, ब्रिटेनक दूटा योजना पर 67 करोड़ 68 लाख, इटलीक दूटा योजना पर 38 करोड़ 35 लाख, हांगकांगक दूटा योजना पर 21 करोड़ 50 लाख, आस्ट्रियाक दू टा योजना पर 47 करोड़ 24 लाख ओ फिनलैंडक दूटा योजना पर 13 करोड़ 20 लाख विदेशी मुद्राक निवेशक स्वीकृति वित्त मंत्रालय देलक अछि। अनिवासी भारतीय लोकनि पश्चिम बंगाल मे 51 परियोजना मे 425 करोड़ पूजी लगा रहल छथि। आंध्र प्रदेश मे 76 अनिवासी यूनिट मे 130 करोड़ 73 लाख टाकाक लागत स' उत्पादन कार्य शुरू भ' गेल अछि एवं 15 यूनिट 57 करोड़ 3 लाख टाकाक लागत स' निर्माणाधीन अछि।

अनिवासी भारतीय शुरू-शुरू मे पूजीनिवेश कर' मे हिचकिचाइ छलाह, मुदा आब हुनका लोकनिक दुविधा समाप्त भ' गेल छनि। ई लोकनि आब अधिक स' अधिक योजना मे पूजी लगयबाक प्रस्तावक संग अपना देश मे आबि रहल छथि। चीनक बाद अनिवासी भारतीय अपन मूल देशक अर्थव्यवस्था मे अधिक स' अधिक रुचि ल' रहल छथि आ ई चीन तथा भारतक परिवर्तित उदार आर्थिक नीतिक परिणाम अछि, जाहि स' देशक अर्थव्यवस्था मे आशातीत विकासक संभावना अछि।

(दिसंबर, 1993)

युवाक लेल प्रधानमंत्री रोजगार योजना

देशक शिक्षित बेरोजगार युवक लेल भारतक प्रधानमंत्री गत वर्ष स्वतंत्रता दिवसक अवसर पर एकटा योजना घोषित कयलनि, जे प्रधानमंत्री रोजगार योजनाक नाम स' जानल जाइछ। एहि योजना पर 2 अक्टूबर 1993 स' काज चलि रहल अछि। एहि योजनाक अंतर्गत 18 स' 35 वर्ष धरि आयुक युवा वर्ग कें, जनिक पारिवारिक वार्षिक आय 24 हजार टाका छनि, सम्मिलित कयल जायत। प्रत्येक उद्यमी कें एक लाख टाका धरिक ऋण बिना गारंटीक देल जायत तथा ई ऋण बैंक स' सामान्य शर्त पर प्रदान कयल जायत। 6 स' 18 मास धरि ऋणक वसूली नहि कयल जायत तथा 7 वर्षक अवधि मे एहि ऋणक भुगतान कयल जा सकत। उद्यमी कें परियोजनाक लागत पर मात्र 5 प्रतिशत धन लगाबय पड़त। एहि ऋण पर 15 प्रतिशतक दर स' 75 सय टाकाक सबसीडी सेहो देल जायत। परियोजनाक तैयारी, उद्यमीक चयन एवं प्रशिक्षण मे प्रसिद्ध गैर-सरकारी संगठन कें संबद्ध करबाक प्रावधान छैक। एहि योजना मे 1993-94क अवधि मे मात्र शहरी क्षेत्र कें सम्मिलित कयल गेल। 1994-95 स' एहि योजना कें समस्त देश मे तखनहि लागू कयल जायत, जखन शिक्षित बेरोजगार युवकक लेल वर्त्तमान स्वरोजगार योजना पर अमल कयल जायत। ग्रामीण तथा पिछड़ल इलाका मे उद्योगक स्थापनाक सुविधा हेतु लघु उद्योग लेल प्रौद्योगिकी सेवा समेत समन्वित मूल ढांचा विकासक लेल एकटा योजना तथा कृषि एवं उद्योगक बीच आओर सघन संपर्क कें प्रोत्साहन देबाक कार्य कें संबद्ध प्राधिकारक संग विचार-विमर्श कय अंतिम रूप देल जा रहल अछि। लघु उद्योग मे प्रौद्योगिकी कें आधुनिक बनायब तथा ओकर स्तर कें बढ़ेबाक लेल एकटा शीर्ष प्रौद्योगिकी विकास केंद्रक संरक्षणक अंतर्गत अनेक प्रौद्योगिकी केंद्र तथा उपकरण कक्ष खोलल जा रहल अछि। देशक दसटा विभिन्न राज्य मे उद्यम विकास संस्थान खोलबाक योजना पर अमल कयल जा रहल अछि। एखन गौहाटी मे एकटा एहि तरहक संस्थान स्थापित कयल जा रहल अछि। एहि स' पूर्वोत्तर राज्यक आवश्यकताक पूर्ति होयत। उद्यमी

कें लघु इकाई दिस आकृष्ट करबाक लेल पर्याप्त विद्युत आपूर्तिक संग ग्रामीण क्षेत्र कें अन्य मूल ढांचागत सहयोग प्रदान कयल जायत। युवा तथा महिलाक प्रशिक्षण पर विशेष बल देल जायत तथा उद्यम विकास कार्यक्रम कें तेज कयल जा रहल अछि। आठम योजना अवधि मे एहि राज्य सब मे दसटा उद्यमी विकास केंद्र खोलल जायत। लघु उद्योग क्षेत्रक समर्थन कार्यक्रमक वास्ते सरकार अपन नीति कें जारी रखबाक तथा प्रोत्साहन देबाक उपायक संबंध मे सब मोर्चा पर नवीनता अनबाक निर्णय कयलक अछि।

एकरा अंतर्गत लाइसेंस, स्थान तथा पर्यावरण सुरक्षा नियम आदि मे पर्याप्त ढील देल गेल छैक। संयंत्र तथा मशीन मे निवेशक सीमा दू लाख टाका स' बढ़ा क' पांच लाख टाका करबाक हेतु अत्यंत लघु क्षेत्रक परिभाषा मे संशोधन कयल गेल अछि। लघु उद्योग क्षेत्रक लेल एकटा निर्धारित समय दरक प्रावधान वला कानून लागू कयल गेल अछि। लघु उद्योग क्षेत्रक पूजी आधार व्यापक बनयबाक हेतु 24 प्रतिशत इक्विटीक भागीदारीक अनुमति देल गेल छैक। लघु उद्यमीक प्रशिक्षण ओ प्रबंध सहायता/ग्रामीण क्षेत्रक अवधारणा सेहो तैयार कयल गेल अछि। लघु उद्योग क्षेत्रक नियंत्रण कें ढील देबाक हेतु कतेको उपाय कयल गेल अछि, जेना—

1. लघु उद्योग क्षेत्र मे प्रतिबंधित सूचित समाप्त कयल गेल।

2. इलेक्ट्रोनिक वस्तुक पंजीकरण हेतु प्राधिकार राज्य स्तर पर देल गेल।

3. अत्यंत लघु क्षेत्र कें परिभाषित करबाक लेल स्थान प्रतिबंध हटा देल गेल छै।

4. उद्योग स' संबद्ध सेवा तथा व्यवसाय उद्यमीक परिभाषा सुचारू तथा एक समान क' देल गेल।

5. पंजीकरण प्रक्रिया सरल तथा उदार बना देल गेल छैक। यथा जाहि इकाई मे 50/100 स' कम श्रमिक कार्यरत छथि आ जनिका संग अधिकार नहि छनि, हुनका औद्योगिक लाइसेंस लेबाक प्रयोजन नहि छनि। एहि इकाई स' उत्पादित वस्तु कें अनुसूची दू मे सम्मिलित कयल गेल अछि।

6. लघु उद्योग इकाई कें जल तथा वायु प्रदूषण लेल स्वीकृति देबाक मार्ग सरल बनाओल गेल अछि।

7. देशक भीतर तथा विदेश मे लघु उद्योग कें प्रोत्साहन तथा विकासक हेतु राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम एकटा प्रमुख एजेंसी अछि। भारतक प्रौद्योगिकी क्षमता कें अवसर देबाक हेतु 1993 मे एकटा अन्य प्रौद्योगिकी बजार 'टेकमार्ट'क आयोजन कयल गेल।

भारत सरकार खादी आओर ग्रामोद्योग क्षेत्रक प्रगति तथा विकासक गति कें

तेज करबाक उद्देश्य स' प्रधानमंत्रीक अध्यक्षतावला एकटा उच्चाधिकार समितिक गठन कयलक अछि। समिति क्षेत्रक लगातार प्रगति तथा विकासक लेल आरक्षण समेत उपयुक्त नीति तथा सहयोगक जांच कयल जा रहल अछि। ई समिति आयोग, वित्तीय संस्था तथा बैंक सब स' पर्याप्त तथा समय पर ऋण सुनिश्चित करब एवं एहि क्षेत्र मे सरकार द्वारा निवेश बढ़यबाक उपाय देखाओत। समिति कच्चा मालक आपूर्ति, विपणन, सहयोग तथा अन्य सुविधाक हेतु सिफारिश करत।

हाथ स' बनल कागत उद्योगक व्यवस्था कें सुदृढ़ करबाक हेतु जयपुरक निकट सांगानेर मे यू.एन.डी.पी.—के.बी.आइ.सी. परियोजना शुरू कयल गेल अछि। एहि कागतक निर्यातक संभावना तथा अवसरक हेतु कनाडा एवं अमेरिका मे बजार सर्वेक्षण कयल गेल छैक। के.बी.आई.सी., अंबाला मे यू.एन.डी.पी.क सहयोग स' लेदर अंब्रेला प्रोजेक्ट स्थापित करय जा रहल अछि। 50–50 प्रतिशतक आधार पर पूर्वी क्षेत्र मे मधुमाछी पालन परियोजना प्रारंभ कयल जा रहल अछि। एहि परियोजनाक अंतर्गत के.बी.आइ.सी. एकटा प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन केंद्र, एकटा केंद्रीय मधु प्रसंस्करण संयंत्र तथा प्रायोगिक व्यापारिक केंद्रक स्थापना वर्त्तमान वर्ष मे करत। आसामक नौगांव कें एहि उद्देश्य स' चुनल गेल अछि। के.बी.आइ.सी. 39 प्रशिक्षण केंद्रक सहायता स' हुनर वृद्धिक हेतु प्रशिक्षण द' रहल अछि। नासिक स्थित डाक्टर बी.आर. अंबेडकर ग्रामीण प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधन संस्थाक दर्जा बढ़ा क' राष्ट्रीय स्तरक प्रशिक्षण केंद्र बनायल जा रहल छैक।

सरकार आठम पंचवर्षीय योजनाक शेष अवधिक हेतु 14 लाख शिक्षित युवा वर्ग कें रोजगार प्रदान करबाक हेतु 7 लाख लघु उपक्रम स्थापित करबाक विचार क' रहल अछि। 13 सितंबर 1993 कें राज्य एवं केंद्र शासित प्रदेशक मुख्य सचिवक बैसार मे उद्योग राज्यमंत्री सात लाख उपक्रम मे स' 40 हजार उपक्रम स्थापित करबाक प्रस्ताव कयल एवं 1994–95 मे 2 लाख 20 हजार उपक्रम स्थापित करबाक लक्ष्य राखल गेल। लघु उपक्रम लगयला स' औसतन दू गोटे कें रोजगार प्राप्त होइछ। एहि योजनाक अंतर्गत 10 लाख शिक्षित बेरोजगार युवा कें स्वरोजगार उपलब्ध कराओल जायत। केंद्रीय बजट मे 1994–95 मे 145 करोड़ टाकाक प्रावधान कयल गेल अछि। ज्ञातव्य अछि जे ई योजना 1993–94 मे मात्र शहरी क्षेत्र मे शुरू कयल गेल छल जे 1994–95 मे संपूर्ण देश मे शुरू कयल जा रहल अछि।

योजना आयोगक अनुसार प्रत्येक वर्ष तीन मिलियन शिक्षित युवा शक्ति कें रोजगार चाही जे कुल बेरोजगारक मात्र 45 प्रतिशत अछि। आठम पंचवर्षीय योजनाक अंत मे अर्थात 1997 धरि 15 मिलियन शिक्षित युवा रोजगारक हेतु उम्मीदवार भ' जयताह। अप्रैल 1992 मे एहि योजनाक प्रारंभिक वर्ष मे 7 मिलियन

शिक्षित बेरोजगार छलाह। एहि तरहें, बेरोजगारक संख्या योजना आयोगक अनुमान स' 22 मिलियन होइछ, मुदा आइऐएमआरमे 22.10 मिलियन अंकित अछि। सरकार आशा करैछ जे एहि योजना स' 20 मिलियन शिक्षित युवा कें काज भेटि जयतनि। मुदा, योजना आयोगक एहि आकलन कें आर्थिक जगत मे संदेहक दृष्टि स' देखल जा रहल अछि।

एकरा पाछा ट्राइसम एवं अन्य स्वरोजगार योजना कें पूर्ण सफल नहि होयब मानल जा रहल अछि। बैंक एहि योजना मे ऋण-वितरण कें आकर्षक दृष्टि स' नहि देखि रहल अछि। बैंक कें ऋण डूबि जयबाक आशंका छैक। आंध्र प्रदेशक बारंगल मे गत 18 अक्टूबर कें प्रधानमंत्री स्पष्ट कयलनि जे ई योजना पूर्ण सफल होयत। बिहार सरकार सेहो पचासटा प्रशिक्षण सह उत्पादन केंद्र खोलबाक कार्यक्रम बना रहल अछि।

(अक्टूबर, 1994)

कर चोरी गंभीर अपराध

कर प्रवंचन एवं कर चोरी भारतीय कर प्रणालीक एक गंभीर समस्या भ' गेल छैक। करक वर्गीकरण एहि तरहें कयल जाइछ—प्रत्यक्ष एवं परोक्ष कर प्रगतिशील, आनुपातिक प्रतिगामी एवं अधोगामी कर। प्रत्यक्ष कर ओहि व्यक्ति स' वोसूल कयल जाइछ जिनका पर ई आरोपित कयल जाइछ, जेना आय कर, संपत्ति कर, निगम कर, उपहार कर, व्यय कर आदि। एकर विपरीत परोक्ष कर, वस्तु एवं सेवा पर आरोपित कयल जाइछ यथा उत्पादन शुल्क, सीमाशुल्क, बिक्री कर आदि। परोक्ष कर—विशिष्ट एवं यथामूल्य दू तरहें लगायल जाइछ जे एक दोसरक पूरक होइछ। कर दर मे वृद्धि भेला स' करदाता प्रयास करैछ जे कर योग्य आय, संपत्ति आदि न्यूनतम देखाओल जाय एवं जाहि स' ओहि पर कम कर लागय। मुख्यत: कर चोरी ओ प्रवंचनक यैह मुख्य कारण अछि।

विधि-विधानक अंतर्गत कर बचायब (Tax Avoidance) करक चोरी नहि कहल जा सकैछ। यथा वैधानिक कटौती, कर स' छूट, कर विधानक अपूर्णता आकि सुराग स' कर बचायब चोरि नहि भेल, विधानक अनुसार लाभ उठायब मात्र किंतु करदाता विधिवत ढंग स' कर बचयबाक प्रयास नहि करैछ। ओ करक चोरी एवं कालाधनक संचय करैछ जे गंभीर अपराध मानल गेल छैक। एहि अपराधक हेतु ओ व्यक्ति अर्थदण्ड आ अभियोजनक भागी भ' सकैत छथि।

भारत मे कर प्रवंचन बड्ड पैघ समस्या भ' गेल छैक। अनुमानत: प्रत्येक वर्ष पांचसय करोड़ आय करक चोरी होइछ। आय कर भुगतान मे यदि कोनो करदाता निम्नांकित भूल करैत छथि तखन हुनका पर निम्न प्रकारक अर्थदंड लगायल जा सकैछ—

1. स्वयं कर निर्धारण पर कर भुगतान मे चूक—धारा 140A(3)क अनुसार जाबत तक चूक रहत करक राशिक 2% अर्थदंड वसूल कयल जा सकैछ।

2. कर मे चूक पर ब्याज—धारा 220(2)क अंतर्गत धारा 156क तहत नोटिस

मे 30 दिनक भीतर कर नहि चुकायला स' 1½% प्रतिमासक दर स' ब्याज देबय पड़तनि।

3. कर मे चूक पर अर्थदंड—धारा 221क अंतर्गत यदि कर भुगतान मे भूल करैछ तखन 220(2) मे लगायल गेल ब्याजक अतिरिक्त अर्थदंड लागत जे अधिक स' अधिक बकाया कर राशि तक लागि सकैछ।

4. प्रतिभूतिक संबंध मे सूचना देबा मे चूक—धारा 94(6)क तहत 500 टाका अर्थदंड। यदि आरोप चलैत रहल तखन 500 टाका प्रतिदिनक हिसाब स' ।

आयक विवरण दाखिल करय मे अथवा हिसाब-किताब प्रस्तुत करय मे अथवा सबूत प्रस्तुत करय मे अथवा आय छिपायब अथवा हिसाबक अंकेक्षण करबा मे चूक—धारा 139Aक तहत निर्धारित समय सीमाक भीतर आयकर विवरण दाखिल करबा मे भूल भेला पर प्रत्येक भूलक लेल कम स' कम 500 टाका आ अधिक स' अधिक 10,000 टाका अर्थदंडक प्रावधान अछि।

यदि कियो धारा 142(1) अथवा 143(2)क तहत देल गेल नोटिसक पूर्ति नहि करैछ अथवा धारा 142(2A)क अंतर्गत अंकेक्षण करयबाक निर्देशक पालन नहि करैछ त' प्रत्येक चूकक लेल कम स' कम 1,000 टाका आ अधिक स' अधिक 25,000 टाका अर्थदंड लगतै।

उपरोक्त अर्थदंड माफ करबाक हेतु आयकर कमिश्नर कें अधिकार देल गेल छैक एवं सही ढंग स' अपील कयला पर करदाता दंड मुक्त भ' सकैछ। यदि अर्थदंड 1,00,000 रुपया स' अधिक अछि तखन कमिश्नर कें सी.वी.डी.टी. स' अनुमति लेबय पड़तनि। अर्थदंडक अलावा आयकर विधानक उल्लंघन भेला स' अभियोजन सेहो भ' सकैछ। विभिन्न आयकर धाराक अंतर्गत विभिन्न प्रकारक सजा अछि एव जहल जयबाक प्रावधान अछि। किछु विशेष दशा मे अर्थदंड एवं जेलक सजा दुनू देल जाइछ।

एहि तरहें संपत्ति कर, बिक्री कर, उत्पाद एवं सीमा शुल्कक उल्लंघन भेला स' अर्थदंडक अलावा जहलक प्रावधान सेहो अछि। उत्पाद कर मे यदि भुगतान 1,00,000 टाका स' उपरक अछि तखन जेलक सजा सात वर्ष तक एवं अर्थदंड सेहो लागि सकैछ। यदि एहि स' कम भुगतान छिपायल गेल हो तखन जेलक सजा तीन वर्ष एवं अर्थदंड सेहो देबय पड़ि सकैछ। तहिना संपत्ति करक भुगतान मे उल्लंघन भेला स' 1,00,000 टाका स' अधिक रहला पर सात वर्षक कठोर जेल सजा ओ अर्थदंड सेहो। एहि स' कम राशिक भुगतानक उल्लंघन मे कम स' कम तीन मास एवं बेसी स' बेसी तीन वर्षक कठोर जेलक सजा एवं अर्थदंड सेहो भ' सकैछ। बिहार बिक्री कर अधिनियमक अंतर्गत धारा 38क तहत जेलक सजा एवं

अर्थदंडक प्रावधान अछि। दान कर कें छोड़ि प्रत्येक तरहक कर भुगतानक उल्लंघन मे कठोर जेल सजा एवं अर्थदंड देबाक प्रावधान अछि। कतिपय अपराध—करक भुगतान संबंधी Code oh Criminal Procedure विधानक अंतर्गत Non-Cognigable सेहो मानल गेल छैक। निष्कर्ष यैह जे कर भुगतानक चोरी दंडनीय अपराध अछि एवं जेल ओ अर्थदंड दुनू होइछ।

देशक कर प्रणाली मुद्रा मे आय आओर संपत्तिक बृहत भाग एहन अछि जकर कोनो लेखा-जोखा नहि छैक। एकर उपयोग देशक अर्थव्यवस्था मे पैघ मात्रा मे उचित ओ अनुचित काजक लेल कयल जाइछ। एहन मुद्रा कें कारी आय ओ धन कहल जाइछ। कारी धन देश मे कतेक अछि एकर आकलन नहि भ' सकल अछि। अनुमानतः कर प्रवंचित आय निर्धारित आयक 68% अछि। एकर सही अनुमान कठिन अछि। कारण अधिकांश व्यक्ति स्वरोजगार मुक्त छथि जे सुलभ ढंग स' कर परिहार मे सफल भ' जाइत छथि। दोसर दिस वेतनभोगी व्यक्ति आय कें छिपा क' कर चोरी वा करवंचन नहि क' सकैत छथि। सरकार कर चोरी स' निर्मित कारी धन कें निकालबाक निम्नांकित प्रयास कयलक अछि मुदा बड़का माछ कें नहि पकड़ि सकल। एखन तक प्रयास कें असफले कहल जा सकैछः—

विमुद्रीकरण (Demonetisation)—वर्ष 1946 एवं 1978 मे कयल गेल जाहि मे मात्र 29 करोड़ मूल्यक मुद्राक लाभ भेल जे कारीधनक बड्ड छोट भाग छैक।

स्वेच्छिक प्रकटीकरण योजना (Voluntary Disclosure Schemes) अनेक बेर ई योजना चालू कयल गेल 1951, 1965, 1975, 1985 आदि मुदा परिणाम असंतोषजनक।

छापा (Raids)—समय-समय पर कर अधिकारी करवंचकक ओतय छापा मारैत छथि। छापाक बाद कारीधन बरामद करैत छथि, मुदा कोर्ट मे उपयुक्त दस्तावेजक अभाव मे बरामद संपत्तिक अधिकांश भाग कें करवंचक कें वापस क' देबय पड़ैत छनि।

विशेष धारक बांड्स (Special Bearor Bonds)—समय-समय पर धारक बांड्स निर्गत कयल गेल। एहि योजना स' धारक दंड ओ जुर्माना स' बचि जाइत छथि एवं सरकार कें कम ब्याज दर पर सार्वजनिक ऋण उपलब्ध भ' जाइछ।

निष्कर्ष यैह अछि जे करवंचक द्वारा अर्जित कारीधन ओ आय कें सरकार पूर्णतया समाप्त नहि क' सकल अछि किंतु प्रभावी उपाय द्वारा एकरा कम करबाक सतत प्रयास सरकार जारी रखने अछि।

आर्थिक नियोजन व वित्तीय व्यवस्था हेतु सरकार केंद्रीय ओ राज्य-करारोपणक मदद लेने अछि आओर देशक कर प्रणाली मे निरंतर सुधारक! प्रयत्न

जारी अछि। करक ढांचा कें युक्तिसंगत बनायब, कर प्रवंचन कें न्यूनतम करब तथा कर आगम कें अधिकतम करबाक सतत प्रयास जारी अछि। सरकार द्वारा नियुक्त समिति तथा व्यक्तिगत अनुसंधानकर्त्ता एहि संबंध मे अनेक तथ्य एकत्रित कयलनि अछि एवं कर-व्यवस्था मे सुधारक हेतु सुझाव प्रस्तुत कयलनि अछि। प्रत्यक्ष कर प्रशासन जांच समिति अथवा देश मे आय कर चोरीक पैघ कारण आय करक उच्च दर मानने छथि। अनुभवक आधार पर देखल जा रहैल अछि जे जखन सरकार करक दर सीमा मे कमी कयलक अछि सरकारी आय बढ़ल। ई युक्तिसंगत लगैछ यदि एक टाकाक आय पर सरकार 95 पाइ कर लादि देत त' लोक उपार्जन किएक करत। ई मत ओहि अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त अर्थशास्त्रीक छियनि जिनका स' भारत सरकार 1985 मे करक संबंध मे सलाह लेने छलाह। करारोपणक सीमांत दर कर प्रवंचन कें प्रोत्साहित करैछ। करक सीमांत दर स' चोरी कयल गेल करक रूप मे करदाता कें अधिक प्रतिशत लाभ होइछ। भारत सरकार समय-समय पर कर प्रवंचन कें न्यूनतम ओ कर ढांचा कें युक्तिसंगत बनयबाक हेतु विभिन्न समिति स' सुझाव लैत रहल अछि। एहि क्रम मे एल.के. झा कमेटी नियुक्त भेल। एहि कमेटीक अन्य सिफारिसक अतिरिक्त मुख्य सिफारिश छल—से विशिष्ट शुल्क (Specihic duty)क आग्रह यथा मूल्य कर (Advalorem duty) लगायल जाय। तहिना प्रत्यक्ष करक ढांचा कें युक्तिसंगत बनयबाक लेल चोकसी समितिक नियुक्ति क' झुकाव लेने छल। संप्रति नरसिंह राव सरकार गद्दीनसीन भेला पर नव आर्थिक नीतिक घोषणा कयल एवं प्रसिद्ध अर्थशास्त्री राजा चेल्लिहाक नेतृत्व मे कर ढाचा कें सरलीकरण एवं व्यवहारीकरण हेतु सुझाव लेने अछि एवं बहुतो सुझाव पर अमल कयल जा रहल छैक। एहि सुझावक विरोध मे देशक 35 नेतृत्वकारी अर्थशास्त्री ओ बुद्धिजीवी वैकल्पिक दृष्टिकोण-दस्तावेज सरकारक समझ उपस्थित कयने छलाह जाहि मे मुख्य व्यक्ति छलाह डॉ. अशोक मित्र, डा. रजनी कोठारी, डा. आरसी दत्त आदि। हुनका लोकनिक सुझाव सरकार नहि मानलक।

सालाना आर्थिक बजट प्रस्तुत करबाक समय सरकार कर चोरी एवं आगमक हेतु विभिन्न चेंबर आफ कॉमर्स, अर्थशास्त्री सांसद, चार्टड एकाउंटेंट आदि स' सुझाव लैछ एवं हिनका लोकनिक सुझाव कें मद्देनजर राखि बजट प्रस्तुत करैछ। जेना एखन मूल्य वृद्धि कर (VAT) Modvat व्यक्तिगत एवं कंपनी कर सीमा कें न्यून करबा पर जोर देल जा रहल अछि। सरकार कर प्रणाली स' आर्थिक नियोजन कर-वंचन राष्ट्रीय संसाधनक विवेकपूर्ण उपयोग सरकार द्वारा संसाधनक विदोहन आदि सुविधाक लेल प्रयत्नशील अछि।

(फरवरी, 1995)

बुद्धदेवक विदेशी पूजीनिवेश

'अपन उत्पादक लेल बजार कें सतत विस्तारित करबाक आवश्यकता पूजीपति वर्ग कें समस्त दुनिया मे दौड़बाक लेल बाध्य करैत छैक।' मार्क्स ओ एंगेल्स लगभग 160 वर्ष पूर्व ईबात कहने छलाह। हुनका सब जगह पहुंचय पड़तै, सब जगह बसय पड़तै एवं सब जगह संपर्क कायम करय पड़तै। आजुक युग मे साम्यवादी विचारक माध्यमे विकास करबाक हेतु बुद्धदेव भट्टाचार्य सदृश मुख्यमंत्री कें सेहो ताकय पड़तनि। जेना ब्राजील मे लूला कें पूजीवादी देश तकलकनि। भारतक प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह स' ल' क' विश्वबैंकक पैघ स' पैघ पदाधिकारी, अन्य बहुराष्ट्रीय संस्था स' ल' क' भारत मे अमेरिकी राजदूत तक— साम्राज्यवादी खगोलीकरणक सब राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय सिद्धांतकार हिनक प्रशंसा करबा स' नहि अघाइत छथि। अपन कम्युनिस्ट छवि ओ साख खतम क' रहल छथि। नवउदारवादी सुधार कार्यक्रम कें जायज साबित करबा मे विदेशी निवेशक पैघ स्तंभ भ' गेल छथि। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टीक अगस्त 2005 मे केंद्रीय कमेटी हिनक विवादास्पद नीतिक समर्थन क' देलकनि। तहिया स' ई विदेशी पूजी निवेशक पैघ पैरबीकार भ' गेल छथि। 2006क विधान सभा चुनवा मे उत्तम समर्थन भेटल छनि। फलस्वरूप, मार्क्सवादक मूल सिद्धांत मे सुधारक प्राय: आब पैघ जरूरति बुझना जाइत छनि। बुद्धदेव भट्टाचार्य आर्थिक सुधार एवं विदेशी निवेशक मुद्दा पर अपन पैर आब पाछू करयबला नहि छथि।

पश्चिम बंगालक वाममोर्चा सरकार वर्ष 1978 स' 1982 तक ऑपरेशन बर्गा (बटाईदारी) खूब जोरशोर स' शुरू कयलक। 1992 मे राष्ट्रीय सैंपुल सर्वेक्षणक अनुसार 30.6 प्रतिशत वर्गादारक पंजीकरण भ' सकल। जाहि मे भूमिहीन मात्र 16 प्रतिशत एवं पैघ बटाईदारक 71 प्रतिशत पंजीकृत भेल। एहि सुधार मे कोन वर्गक कृषक कें लाभ भेल से स्पष्ट होइछ। बोरो (गरमा) धानक खेतिहर कें कोनो लाभ नहि भेल किंतु गाम मे जोत जमीन मे जे सुधार भेल तकरहि बल पर वाममोर्चा

पश्चिम बंगाल मे एहि पैघ अबधि स' शासन क' रहल अछि, जे मार्क्सवादी इतिहासक नव अध्याय अछि। एतेक दिन 'जमीन जोतयबलाक' नाराक बदौलति राज करयबला अपन नारा कें बदलि लेने छथि आ नारा भ' गेल छनि 'जमीन बहुराष्ट्रीय कंपनी'क। साम्यवादी चीन प्रारंभ मे अपन कृषि सुधार ओ कृषि आधारित उद्योगक बदौलति आइ विश्व मे एकटा पैघ विकसित राष्ट्रक स्थान हासिल क' चुकल अछि।

देशक प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह जखन 1990 मे भारतक वित्तमंत्री छलाह एतयकअर्थव्यवस्था कें विश्व बजारक हेतु खोलि देलनि। वैश्वीकरणक प्रारंभ तखन स' भेल। पूर्व मे मिक्सड इकोनोमी कार्यरत छल। मनमोहन सिंह पश्चिम बंगाल मे चलि रहल आर्थिक सुधारक पैघ प्रशंसक भ' गेल छथि। अमेरिका मे बंगालक सुधार विषय पर सेमिनार आयोजित कयल जा रहल अछि। यैह कारण अछि जे बुद्धदेव भट्टाचार्य नव-नव घोषणा ओ विकासक काजक' रहल छथि, जाहि मे निम्नलिखित मुख्य अछि—

1. हवाई अड्डाक निर्माण ओ विकास मे विदेशी निवेश 100 प्रतिशत करबाक बयान।

2. राज्य सरकार द्वारा 145 वर्ष पुरान प्रसिद्ध ग्रेट ईस्टर्न होटल कें निजी हाथ मे सौंपब, जखन कि वाममोर्चा सरकार स्टेट सेक्टर मे विश्वास करैत अछि।

3. राज्यक कृषि मंत्री कमल गुहा, फारवर्ड ब्लॉकक प्रदेश अध्यक्ष, खेतीक जमीन पर उद्योग लगयबाक विरोध कयलनि। हुनक कथन जे खेतीक जमीन पर भूमंडलीकरणक बहाना वामक पारंपरिक चरित्र मे अछि, बदलाव जे उचित नहि।

4. इंडोनेशियाक विवादास्पद सलेम समूहक संग पश्चिम बंगाल सरकारक लंबा-चौड़ा समझौता। कृषियोग्य (दू फसिला) जमीन उद्योगक लेल देल जा रहल छैक। इंडोनेशियाक सलेम ग्रुप द्वारा 44,000 करोड़ धनराशिक निवेश हैत, जाहि हेतु सरकार 5100 एकड़ भूमि द' रहल छनि। ई ग्रुप मनोरंजन पार्क, फूड प्लाजा, टूरिस्ट कॉम्पलेक्स ओ अन्य, जे ओकरा पसंद पड़तै लगौत। कहल जाइछ 30,000 लोक कें रोजगार भेटत। लगभग डेढ़ करोड़क निवेश पर एक नोकरी, जखनक एहि मे कतेको नर-नारी कें अपन परंपरागत रोजी-रोटीक साधन, अपन घर-द्वारि हाथ स' निकलि जयतनि। सरकार जुलाइ मे पश्चिम बंगाल भूमि सुधार (संशोधन) विधेयक 2005क प्रारूप तैयार कयलक—मात्र खेतीक जमीन मे उद्योग स्थापित करबाक लेल। आब खेतीक जमीन मे दोसर काज सुविधा स' भ' सकैछ।

5. जिंदल समूह कें लगभग 4000 एकड़ भूमि इस्पात संयत्र लगयबाक लेल समझौता।

6. राज्यक सत्ता पुन: सम्हारला पर पहिले दिन टाटा समूह द्वारा 1000 करोड़ रुपया निवेशक सहमति। हुगली जिलाक सिंगुर मे 1000 एकड़ जमीन पर कारखाना लगयबाक अनुमति। एहि मे सर्वप्रथम टाटा समूह एक लाख रुपयाक एक गाड़ी बनौताह आ एहि छोट गाड़ीक उत्पादन 2008 मे शुरू करताह। एहि मे 10,000 लोक कें रोजगार भेटतै। दोसर खड़गपुर मे 2500 करोड़ रुपयाक लागत स' टाटा मोटर कारखानाक विस्तारक काज हैत।

7. खुदरा कारोबार मे अमेरिकाक अग्रणी कंपनी वॉलमार्टक प्रमुख कार्टर कास्ट स' हिनक समझौता। प्रचुर विरोध भेला पर कहल जे एहि मे एखन समय लागत।

8. 28 अक्टूबर, 2005 मे राष्ट्रव्यापी हड़तालक बाद बुद्धदेव भट्टाचार्यक कथन जे आईटी क्षेत्र कें हड़ताल स' बाहर रखबाक चाही जाहि स' औद्योगिक निवेश पर प्रतिकूल असर नहि हो। सीटूक महासचिव एम.के.पंधे कें बड्ड अनसोहात लगलनि एवं हिनक सुझाव नकारि देल गेलनि।

भूमंडलीकरणक संबंध मे हिनक विचार छनि जे एहि स' आर्थिक विकास अवश्यंभावी अछि। एकरा किओ नहि रोकि सकै अछि मुदा निजी हित मे नहि वा विकाससील देशक हित मे नहि, समान धरातल पर होयबाक चाही। अन्यथा एक तरफा भ' जायत। हम सब भूमंडलीकरणक प्रक्रियाक उपेक्षा नहि क' सकैत छी। हमरा सब कें निश्चित रूप स' एहि मे साझीदार होबय पड़त। पश्चिम बंगाल मे जापानक विदेशी प्रत्यक्ष निवेश—देश मे सब स' अधिक भेल छैक। ई चारि साल पूर्व जापान गेल छलाह आ मित्सुबिशी केमिकल्स बड्ड पैघ संयत्र बैसेलक अछि। आइबीएम ओ पेप्सी सदृश अमेरिकी कंपनीक औद्योगिक इकाई पश्चिम बंगाल मे आबि गेल छैक। आब वाममोर्चा सरकार विदेशी निवेशक पक्षधर अछि तथा पश्चिम बंगाल विदेशी निवेशक लेल लोकप्रिय भ' गेल अछि। कतेको विदेशी निवेशक पश्चिम बंगाल मे आबि चुकल छथि एवं आबि रहल छथि। जाहि मे सिपुत्रा समूहक कोलकाताक पास टाउनसिप योजना, सिंगापुरक तीन कंपनी पहुंचि चुकल, थाइलैंड ओ मलेशिया स' संपर्क भ' रहल छै, इंडोनेशियाक कंपनी प्रोजेक्ट पर काज शुरू क' देने अछि तथा इंडोनेशियाक निवेशक पूर्ण स्वागत छैक। दक्षिण पूर्व एशिया एवं जापान, चीन आदि देश स' अधिक स' अधिक संपर्क स्थापित कयल जा रहल छैक। विदेशी निवेशक हेतु पश्चिम बंगालक बुद्धदेव भट्टाचार्यक सरकार सब रास्ता खोलि देने अछि।

कम्युनिस्ट होइत बुद्धदेव भट्टाचार्यजी कांग्रेस सहित विदेशी व्यापारीक संग पैर मे पैर मिलाक' काज क' रहल छथि। एहि पर हुनक मत छनि जे पुरान मतवादक

बारे मे किछु नहि कहब। दुनिया तेजी स' बदलि रहल अछि आ हम सब सेहो बदलि रहल छी। कथन छनि जे 1978 पूर्वक तुलना मे चीनक स्थिति संपूर्ण विश्व मे बदलि चुकल अछि। चीनवासी एकरा महसूस करैत छथि। देंग शियाओ पिंग कहैत छलथिन जे हम किताब स' नहि, तथ्य स' सीखैत छी। पश्चिम बंगालक हेतु नव नीतिक जरूरति अन्यथा पिछड़ल रहि जायब। भूमिसुधार हमर गाथा अछि। एहि मे सफलताक बाद उद्योग कें हम फोकस करय चाहि रहल छी। भट्टाचार्यजी आब अपन वामपंथी विचार पर अडिग नहि रहताह। पश्चिम बंगाल कें विदेशी निवेश स' आच्छादित क' देताह।

पश्चिम बंगाल मे खेती जीवकोपार्जनक पैघ स्रोत। एतयक जमीन बहुत उपजाऊ तथापि बुद्धदेव बाबू चाहैत छथि जे विदेशी कंपनी एतय पैघ-पैघ उद्योग लगाबथि। एतयक अधिकांश जमीन दू फसिला अछि, किंतु किछु दिन पूर्व बांग्लौर मे स्वामीनाथनक अध्यक्षता मे अपन बयान देल जे संपूर्ण देश मे भूमिसुधार होयबाक चाही। किछु राज्य भूमिसुधार कानून मे भ' रहल परिवर्तन जाहि स' कृषि भूमि कें औद्योगिक कंपनी के देल जा रहल छैक, घोर विरोध कयने छलथिन। किंतु आब स्वयं भूमिसुधार विधेयक मे परिवर्तन क' औद्योगिक प्रतिष्ठान कें कल-कारखाना निर्माणक हेतु कृषिभूमि द' रहल छथिन। मार्क्सवादी कें अपन मानसिकता बदल'क चाहिएन। पश्चिम बंगाल मे एहि तरहें आर्थिक सुधार नहि कयल गेला स' आम जनताक अहित हैत। पोलित ब्यूरो, मार्क्सवादीक सर्वोच्च नीति निर्धारक हिनक मत कें स्वीकार क' लेने छनि, किंतु केंद्र सरकार यदि विदेशी निवेशक प्रस्ताव लबैत अछि तखन घोर विरोध करैत अछि । मकपाक केंद्रीय कमेटी आर्थिक विकास ओ शहरीकरणक संग औद्योगिक ओ कृषि—इतर उपयोगक लेल जमीन देबाक औचित्य कें स्वीकृत कयने अछि। संगहि भूमिसुधार कें अपरिवर्तनीय रखबाक संकल्प कें दोहरौने अछि।

एखन तक देशक निर्माण मे मजदूरक सघनता कें आधार बना क' काज कयल जा रहल अछि। संप्रति बाहरी पूजी 2-3 बिलियन निवेश भ' पबैत अछि। जे प्रतिवर्ष विनिवेशक 1.5 प्रतिशत छोट-पैघ कंपनी ढेर रोजगारक सुअवसर दैछ। पैघ पूजीवला कंपनी पूजीक संघनता बढ़ायत आ रोजगारक अवसर कम क' देत। उदाहरणस्वरूप, स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना। पैघ पूजी कें अवसर भेटल छैक। पैघ मशीन स' काज ल' क' मजदूरक संख्या अत्यल्प भ' गेल छैक। छोट-छोट ठेकेदारक कोनो जरूरति नहि। रोजगारक अवसर कमि गेल। बहुराष्ट्रीय कंपनी आबि क' पूजी ओ श्रमिकक संबंध खराब करत। एहि हेतु विदेशी विनिवेश ओ उद्योगक निजीकरणक विरोध भ' रहल छैक। जख नि पूजी बाहर स' अबैछ ओ एक संख्या

नहि होइछ। देशक सामाजिक संबंध कें प्रभावित करैत अछि। अपना देश मे श्रमिक ओ पूजीक संबंध कें बहुराष्ट्रीय कंपनी प्रभावित करत। एकर उदाहरण गुड़गांव मे देखल गेल। विदेशी पूजी कखनो नहि चाहैत अछि जे श्रमिक अपन अधिकारक लेल आवाज उठाबथि। बहुराष्ट्रीय कंपनी 'हायर एन्ड फायर'क सिद्धांत पर काज करैत अछि।

बिहारक नवगठित नीतीशक सरकार बुद्धदेव भट्टाचार्यजीक आर्थिक विकासक मार्गक अनुकरण करबाक योजना बना रहल छथि। भूमिसुधारक हेतु बिहार सरकार भूमिसुधार आयोग बनायल अछि, जकर अध्यक्ष 30 वर्ष पहिनेजे पश्चिम बंगाल मे भूमिसुधार कयने छलाह, डी. बंदोपाध्याय, हुनके अध्यक्ष बनायल अछि। संप्रति श्री बंदोपाध्याय 'सामाजिक विकास परिषद' कोलकाताक संस्थाक कार्यकारी अध्यक्ष छथि। विदेशी निवेशक हेतु एत'क सरकार प्रयत्नशील अछि। शिक्षा, स्वास्थ्य ओ उद्योगक विकासक हेतु 'एनआरआइ' अपन ठोस प्रस्तावक संग बिहार आबि रहल छथि। एहि मे मिथिलांचलक क्षेत्र सेहो अछि।

(अप्रैल-जून, 2006)

बजारवाद आ मैथिली साहित्य

भूमंडलीकरण, वैश्वीकरण, बजारवाद पर बहस गत पंद्रह वर्ष स' अपना देश मे चलि रहल अछि। भूमंडलीकरण शब्द स' भ्रम पसरैत अछि जे एकर नीति ओ कार्यक्रम स' सबहक, सब नागरिकक ओ राष्ट्रक भूमंडलीकरण भ' जायत! अर्थात समानता भ' जायत किंतु असलियत एहि स' भिन्न अछि। भूमंडलीकरण कयल जा रहल अछि वित्तीय पूजीक। मतलब यैह जे पूजीक विश्व भ्रमण मे जे बाधा अछि, ओकरा समाप्त क' देल जाय। 1991 मे सोवियत संघ कें टूटला स' ओ पूर्वी यूरोपक समाजवादी व्यवस्था कें उलटि गेला स' अमेरिकाक नेतृत्व मे दुनिया कें एक ध्रुवीय बनायब, वित्तीय पूजीक वर्चस्व कायम करबाक विश्वव्यापी अभियान चलायल जा रहल अछि। यैह थिक भूमंडलीकरण। एकर सोझ अर्थ अछि अमेरिकीकरण। कीसिंगर किछु वर्ष पूर्व कहने छलाह जे आजुक युग मे क्षेत्रीय सीमा, भाषा, सांस्कृतिक अस्मिताक आधार पर राष्ट्रीय पहिचान करब पिछड़ापन थिक। अर्थात् भूमंडलीकरण प्रक्रिया मे शामिल भ' क' हम आगू बढ़ि सकैत छी, आधुनिक बनि सकैत छी। अन्यथा हम पिछड़ि जायब। आइ वित्तीय पूजी मे भयानक वृद्धि ओ स्वयं पूजीबजारक निर्माण औद्योगिक पूजीवाद कें पाछू छोड़ि देने अछि। पहिने सामाजिक जरूरति कें ध्यान मे राखि उत्पादन कयल जाइत छल, आब उत्पादनक अनुसार जरूरति उत्पन कयल जाइछ। एकर अतिरिक्त उत्पादन ओ निवेशक बदला पूजी सट्टा बाजार, शेयर बाजार, तस्करी, कालाबजारी आदिक माध्यम स' बढ़ि रहल अछि। अमेरिका ओ अन्य विकसित देश अपन अंदरुनी संकट कें हल करबाक लेल तेसर दुनियाक देशक प्राकृतिक संसाधन, बौद्धिक संपदा, वित्तीय संपदा, बजार ओ आणविक संपदाक प्रयोग ओ अपन संकट कें दूर करबाक अभियान मे लागि गेल अछि। भूमंडलीकरणक माध्यम स' विश्व व्यापार संगठन, विश्व बैंक ओ अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोषक दबावक माध्यम स' बहुराष्ट्रीय कंपनीक विशाल पूजीक दुनिया भरि मे विचरण करबाक सुविधाक मांग हुनका दिस स' कयल जा रहल

अछि।

वर्ष 1991क मध्य मे भारत सरकार निश्चय कयल जे अर्थतंत्र मे ओ अपन भूमिका कम करैत जायत एवं अंतत: उद्योग-व्यापार स' ओ अपना कें अलग क' लेत। विदेशी निवेश कें खोलि देलक आ उदारीकरणक पालन होबय लागल। एहि दृष्टि स' सरकार अपन नीति ओ कार्यक्रम मे समायोजन कयल। फलस्वरूप, आइ देशक अर्थतंत्र पर अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कंपनीक बरदहस्त बलवान होइत गेल। भारत सहित तेसर दुनियाक सरकार जनताक जिंदगीक समस्याक समाधान मे विफल रहल। प्रगतिशील अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन स्पष्ट कहलनि जे भूमंडलीकरणक प्रक्रिया स' आब बचल नहि जा सकैछ, जखन कि ओ मानैत छथि जे गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी, अकाल आदि संकट वास्तव मे मनुष्यकृत अछि। ओ पूजीवादी जनतंत्र कें उदार जनतंत्र मानैत छथि।

बजार समाज मे अत्यंत प्राचीन काल स' अछि। पूजीवादक उदयकाल मे ओहि मे परिवर्तन आयल। ओ उपभोक्ताक जरूरति ओ मानसिकताक ध्यान रखैत अछि। आजुक बजार मात्र लाभ पर ध्यान रखैत अछि। एहि बजार मे एहि समाज मे मानव मूल्यक कोनो महत्त्व नहि। आइ बजार। हमर चेतना मे घुसि गेल अछि, हमर आपसी संबंध मे, मनुष्यक संवेदना, ईमानदारी आदि कें बिकाऊ बना देने अछि।

बजार प्राथमिक ओ उच्च शिक्षा कें उपभोक्ता माल बना देबाक प्रक्रिया मे बच्चा कें क्रूर ओ अमानवीय स्थिति मे राखि देने अछि। बजार आश्रित शिक्षा प्रणाली दिनानुदिन विकसित भेल जा रहल अछि। शिक्षा संबंधी ब्रितानी ढांचाक सिफारिश आजादीक 39 वर्ष बाद 1986 मे राष्ट्रीय शिक्षा नीति मे सम्मिलित क' लेल गेल। एन. जनार्दन रेड्डी कमेटी 1992, राममूर्ति कमेटी 1986, ताराचंद कमेटी 1984, कोठारी आयोग 1965, खेर समिति 1955, मुद्दालियर आयोग 1952, एनसीईआरटी ओ यूजीसीक रिव्यू कमेटीक समस्त सकारात्मक रिपोर्ट कें गतालखता मे फेकि देल गेल। अनौपचारिक शिक्षा ओ राष्ट्रीय साक्षरता मिशन कें सफेद हाथी बना देल गेल। आब अतिशीघ्र अंबानी-बिड़लाक शिक्षा रिपोर्ट 'ए पॉलसी फ्रेमवर्क फार रिफार्म इन एजूकेशन' के ब्रह्मवाक्य मानि मुट्ठी भरि लोकक हाथ मे शिक्षा कें सौंपि देल जायत। संपूर्ण प्रतिभाक समग्र उन्नयन भेल शिक्षाक तात्पर्य किंतु आजुक छात्र कें कान्वेंटी हाजत मे निर्मम भ' कांच निंद स' उठा क' पीठ झुका'बला बस्ता लादि पढ़यबाक होड़ लागल अछि। जतय शिशु कें कंप्यूटरक माइक्रोचिप बुझि अधकचरा लेखक द्वारा बजारु विश्व विज्ञान कें ओहि मे ढुसि-ढुसि क' भरि देल जाइछ। जाहि मे अनुभव, अनुभूति ओ मौलिक आभिव्यक्तिक लेल कोनो स्थान नहि। अनुभूति ओ अनुभव नहि, तखन निर्माण कोना? निर्माण नव-पुरान अनुभूतिक जोड़-तोड़

स' होइछ। जकरा बालक सृजनक क्रियाक रूप मे खेल मे सीखैत अछि। प्रतिभा संपन्न व्यक्ति, कवि, कलाकार, वैज्ञानिक ओ चिंतक नव विचार, नव सिद्धांत, नवीन आविष्कार वा साहित्य कलाक नवीन विधा कें जन्म दैत छथि। ओ अपना क्षेत्र मे मन स' खेले त' करैत छथि। ठीक ओहिना जहिना शिशु अपन खेलौना कें उनटि-पुनटि क' तोड़-जोड़ क' कें नव-नव कल्पना ओ संभावनाक रूप दैत अछि। ई अवसर आजुक बजार मे विकसित कान्वेंट शिक्षा नहि द' सकैछ। शिशु कें बजारु स्पर्द्धाक दलदल मे ढकेलल जाइछ। ओफर बाल्यावस्था छीनि लेब, ओकरा भीतरक उत्साह, जिज्ञासा, कौतूहल कें सहज स्वाभाविक सुंदर भाव कें नष्ट क' कुंठित करब, प्रश्न करयक प्रवृति कें प्रोत्साहित करबाक जगह पैघ बात कें आंखि मुनि मानि लेब सिखायल जाइछ। शिक्षाक एकमात्र उद्देश्य रहि गेल अछि परीक्षा पास करब। कम समय मे अधिक स' अधिक ज्ञान अर्जन करब। मौखिक बातक जरूरति नहि। वैह पढ़ल-पढ़ायल जाइछ जे परीक्षा मे अबैछ। पाठ्यक्रम स' बाहर किछु नहि। परीक्षा मे सुंदर अंक लाऊ नहि त' जिनगी मे आगू बढ़बाक सब रास्ता बंद। ई भ्रामक धारणा शिक्षा कें कुशिक्षा बना रहल अछि। आतंकवाद, आर्थिक साम्राज्यवाद सदृश खतरा समक्ष अछि, तखन शिक्षाक मूल उद्देश्यक अनदेखी करब मानवता कें खतरा मे देब हैत।

अमेरिका मे जन्मल नोबेल पुरस्कार स' सम्मानित अर्थशास्त्री जोसेफ स्टिगलिट्सक अनुसार वैश्वीकरण स' अमेरिका सहित अनेक राष्ट्र अधिक संपन्न भ' रहल अछि, किंतु जनता जनार्दन गरीब भ' रहल अछि। हिनक मान्यता छनि जे वैश्वीकरणक प्रतियोगिता श्रमिक ओ कर्मचारीक लेल नोकसानदेह साबित भेल अछि। हुनक वेतन ओ स्वास्थ्य सुरक्षाक लेल योजना मे कटौती भ' रहल छैक। भारतक नीति-निर्धारक ओ उच्च पदस्थ अफसर अंतरराष्ट्रीय आर्थिक प्रतियोगिता, विश्व बैंक, अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोषक तर्क द' भारतीय समाजक मानसिकता कें बदलवाक प्रयास करैत छथि किंतु निरंतर अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोषक साख निरंतर खसि रहल अछि। एशियाक जे देश एकर अनुगमन कयल, आर्थिक स्थिति खास्ता भ' गेल छै। लातीनी अमेरिकाक अर्जेंटीना किछु दिन पूर्वहि दिवालियाक स्थिति मे आबि गेल छल। वैश्वीकरणक चक्कर मे मेक्सिको ओ अमेरिका मे व्यापारिक असंतुलन स' मेक्सिकोक कृषकक हालति खराब भ' गेलनि, जखन कि मात्र शहरी मौज-मस्ती बढ़ि गेल। मेक्सिकोक गामक लेल आयातित सस्त मक्का आर्थिक बोझ बनि गेल। कारण एतयक कृषक एतेक कम दाम पर अपन फसिल नहि बिक्री क' सकैत छथि। भारत सेहो ओहि दिशा मे बाढ़ि रहल अछि। भारत मे कम दाम पर विदेशी गहूंम, चीनी, फल-सब्जी आदि कें लयबाक प्रयास भ' रहल अछि। महानगरक

अगल-बगल मे आलीशान मकानक फ्लैटक मूल्य लाख-करोड़ मे पहुंचि रहल अछि आ दिन-राति मजदूरी करयबलाक झोपड़पट्टी तोड़ल जा रहल छैक। कोलकाता महानगर मे विधिवत हाथ रिक्सा कें वर्जित क' देल गेल छैक जाहि स' उत्तर प्रदेश ओ बिहारक अधिसंख्यक रिक्सा चालक अपन गुजर-बसर क' रहल छलाह।

आइयो साहित्य अपना जगह पर अछि, ओ बजारक आवश्यकता अनुसार अपना कें नहि बदलि रहल अछि। साहित्यक अपन मूमंडल सदैव रहलै अछि, आइयो अछि। ओहि भूमंडल मे मनुष्यताक विस्तार अछि। कहल जाइछ जे सूचना विस्फोटक युग अछि। सूचना-तंत्रक विस्फोट मनुष्यता आकि मनुष्यक रचनात्मकताक विकास करबाक उद्देश्य नहि। सूचना-तंत्रक विस्फोट ओ बजार-तंत्रक भयानक विस्तारक एहि कालखंड मे मनुष्यक इंद्रिय-बोध संकट मे अछि। एकर विपरीत इंद्रिय-बोध साहित्यिक रचनात्मक स्रोत अछि। इंद्रिय-बोधक संकटक अर्थ साहित्यक रचनात्मक स्रोतक संकट। बजार तंत्र मनुष्य कें मूल्यहीन ओ पुरुषार्थ हीन बना दैछ जखन साहित्य बजारक अमानुषिकता ओ संवेदनशून्यता कें बेपर्द क' मनुष्यक पुरुषार्थ कें जगबैत अछि। समाजक काज मे मनुष्य वैह होइत छथि जे पुरुषार्थी ओ संघर्षशील होइत छथि। बजार कमजोर मनुष्य कें धकिया क' बाहर क' दैछ ओ साहित्य कमजोर व्यक्ति कें अपन पात्र बना क' ओहि मे जीवनी शक्ति भरि दैत अछि। साहित्य मूल्यबोध पर जीवैत अछि, बजार केवल मूल्य पर। साहित्य दैत-बंटैत अछि, जखन कि बजार कीनैत-बेचैत अछि। बजारवाद राष्ट्रीय विप्लव थिक। साहित्यकार कें पूर्वाभास भ' रहल छनि। ताहि प्रसंग मनीषी लोकनि चेतबैत रहलाह अछि।

साहित्य कें बजारक जरूरति पड़ैत छैक। ओहो बजार मे जाइछ। साहित्य बजारक निषेध नहि करैछ किंतु ओ बजार मे जे चीज ल' कें जाइछ ओकर जरूरति वित्तीय पूजी बजार कें नहि। एक वैकल्पिक चेतना ल' क' जाइछ। बजार-तंत्रक लेल ई खतरनाक होइत अछि। कविता आकि साहित्य मे मात्र स्थापित सत्ता ओ समाजतंत्रक विकल्प रहैछ। समाजक स्वप्न ओ अपेक्षाक अनुसार रचना। यैह चेतना परिवर्तन स्रोत बनैत अछि। वित्तीय पूजी बजार परिवर्तनक सब रास्ता कें बंद क' देबय चाहैत अछि। दोसर दिस कवि ओ लेखक वैह सफल ओ श्रेष्ठ होइत छथि जे गतिशील यथार्थ कें निरीक्षण स' नव-नव उद्भावना कें प्रस्तुत करैत छथि। साहित्य यदि यथास्थिति ओ बजारक उपभोक्तावादी संस्कृति कें ध्यान मे राखि रचल जायत, तखन ओ घटिया साहित्य प्रमाणित हैत। कोनो लेखक धन अर्जित करबाक लेल अपन विद्या-बुद्धि ओ कला-साधनाक उपयोग करत, तखन ओ अपन व्यक्तित्व

ओ कला दुनू अवमूल्यन क' ओ साहित्य आ कलाक दुनिया मे नहि रहि सकैत छथि। एहि तरहें साहित्य ओ बजार मे दुनूक परस्पर उपयोगिताक आधार पर संबंध बनैत अछि।

मैथिल समाज-साहित्य मे धार्मिक कट्टरता तथा रुढ़िवादिता अति प्राचीनकाल स' मूलबद्ध रहल अछि। शताब्दी बदलि गेल। देशक राजनीति पलटी खेलक। मिथिला मे राजनैतिक उथल-पुथल भेल, मुदा एतयक सामाजिक कट्टरता आ रुढ़िवादिता मे कम अंतर दृष्टिगोचर हैत। बजारवादक एहि सर्वग्राही दौर मे अंग्रेजी भाषा-साहित्य जाहि तरहें अपन पैर पसारि रहल अछि ताहि स' भारतीय भाषा मैथिली समेत सब भाषा पर खतरा बढ़ि गेल अछि। एहन विकट परिस्थिति मे कोनो भाषा कें बचेबाक हेतु जनताक स्वीकार्यता आ रोजगारक निर्माण अंततः सब स' पैघ हथियार साबित होयत। मैथिली साहित्य मे बाजारवादक विकृति स' सावधान करयवला कथा, निबंध आ कविताक अभाव नहि। भूमंडलीकरणक कहब जे साहित्य आ संस्कृतिए नहि, विचारधाराक सेहो अंत भ' गेल अछि। जनकवि यात्री एहि साम्राज्यवादी मानसिकता कें एहि तरहें रखैत छथि—

'चित्रा' कविता संग्रह मे 'वंदना' (15.08.47) मे लिखैत छथि—केयो किअए हएत फिकरें बताह? नहि पड़ल रहत, भेटतैक काज।

—सभ करत मौज, सब करत राज/पढ़ता गुनता करताह पास

—जूगल कामति, छोटन खवास/जे काजुल से भरि पेट खायत/ककरो नहि बड़का धोधि हैत/कहबओता अजुका महाराज केवल कामेश्वरसिंह/काल्हि हमरा लोकनि जे खाइत छी/खएताह ओहो से भात-दालि।

हिनक दोसर कविता 'अपन आ आन'क (29.09.78)

अपन मल परिमल, आनक मल विष्ठा
आनक बात जिद्द, अपन जिद्द निष्ठा
आनक विवेक दुर्बुद्धि अपन विचार शुद्धि
आनक आंखि बट्टम, अपन आंखि आंखि। अंत मे—
आनक भाखा बोली, हमर भाखा भाखा
अनकर ठेङा मुठबांसी, हमर ठेंङा चानी मढ़ल
कल्पवृक्षक शाखा, हमर गोली दनुफक फूल, आनक कमल त्रिशुल

कवि यात्री साम्राज्यवादी मानसिकता कें हुबहू बहुत पहिने चेता देने छथि जखन अपना देश मे भूमंडलीकरणक प्रभाव गत शताब्दीक नवम दशक मे देखार भ' गेल। मनुष्य, जल, भूमि, ऊर्जा आ खनिज सदृश एकटा संसाधन बनि क' रहि गेल। बजारवाद आ उदारीकरण टेलीविजन आ इलेक्ट्रोनिक मीडिया पर अपन

कार्यक्रम चालू कयलक तथा साध्य साधन बनि गेल।

उदारीकरण वस्तुतः राष्ट्रविप्लव थिक। आइ मानवकृत विपदाक घड़ी मे मनुष्यक अचार बिका रहल अछि। गंगेश गुंजन दैनिक पत्र-पत्रिका मे छपल एक टा एहने अचार समाचार प्रस्तुत कयने छथि—

लोक,
पंचतारा होटल मे जनिक नहि संभव प्रवेश
वा तेहन धर्मनिष्ठ-अबोधक पैघ उपभोक्ता बजार
खंड पखंड रक्तरंजित मानव शिशु-स्त्रीक
मांस-पिंडक सुखौंत,
एकटा विराट विज्ञापनक चद्दरि पर,
आ अंत मे

तैयार अछि मनुक्ख मांसक खण्डवला
शोनित सोखल अचार
बिलकुल पहिल बेर
पहिल स्वाद
छपलए आजुक अखबार मे भव्यता स' फेर ई अचार समाचार।

व्यवसायी मे निःसंदेह मानवीयता नहि रहैत छै। हुनका लग रहैत छनि मात्र रुपया। पूजी। संवेदना नहि। साधन आ साध्यक प्रति यैह दृष्टिकोण जे हुनका हीन बनबैत छनि। स्मरण अछि एक व्यापारी स्पष्ट कयने रहैथ जे मनुष्य कें हम सब जान स' नहि मारैत छिएनि, शोणित चुसि लैत छिएनि।

रामलोचन ठाकुरक काव्य संग्रह 'लाख प्रश्न अनुत्तरित' वैश्वीकरण विरोधी स्वर कें समर्पित अछि। स्वयं श्री ठाकुर मिथिला-मैथिलीक सर्वांगीण विकासक सतत् समर्पित सेनानी छथि। जे हिनक निबंध संग्रह 'स्मृतिक धोखरल रंग' मे स्पष्ट होइत अछि। हिनक ई कविता 'संविधान बिनु मैथिलीक आ मानचित्र बिनु मिथिला धाम' विरोधी स्वरक दोसर बानगी। पुनः हिनकहि एक पांती *'सावधान! नहि त' ई मिथिला देश बनत विश्वसक दोसर बांग्लादेश/दोसर बियतनाम/बजारवाद* कें ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य मे सुकांत सोम अपन विदेशिया नामक कविता मे एहि तरहें देखैत छथि—

पांच सय वर्ष पहिलुक अपन अभियान कें स्मरण करैत,

बास्को डी गामाक नाम लैत ओहिना, एक हाथ मे तराजू आ दोसर मे तलवार लहरबैत, उत्तर स' दक्षिण पूरब स' पश्चिम, जेम्हर स' सुविधा हो चलि आबी,

हे मीत विदेशिया, चिन्हले धरती आ जनले त' लोक अछि, कोनो जिंता जुनि करी, भोरक प्रतीक्षा जुनि करू'

कविवर आरसी प्रसाह सिंहक मिथिला-मैथिली आंदोलनक संबंध मे
वाजि गेल रणडंक, डंक ललकारि रहल अछि।
गरजि गरजि क' जन-जन कें परचारि रहल अछि।
कोसी-कमला-उमड़ि रहल, कल्लोल करै अछि।
के रोकत ई बाढ़ि ककर सामर्थ्य अड़ै अछि।

अंत मे—

डंक वाजि गेल, आगि लंक मे लागि रहल अछि।

अग्निपुष्पक 'कालचक्र', केदार काननक 'बाजार', पंकज पराशरक 'मोसकिल', हरेकृष्ण झाक 'ओ फाहा छेमक', विद्यानंद झाक 'कोनो उदास धुनिक नाम-2' कीर्तिनारायण मिश्रक 'ओ आ हम', रमेशक 'अंतर्संबंध' ओ अन्य कविता बाजारवादक प्रतिरोध करैत अछि। मैथिली साहित्य मे बजारवादक विकृति स' सतर्क करयबला कवि ओ हुनक कविताक भरमार अछि।

मैथिली साहित्य मे सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यबोध आ मानवीय चेतनाक विकासक लेल अदौकाल स' एहि भाषाक साहित्यकार लड़ैत रहलाह अछि। बजारवादी मानसिकता पर लिली रेक 'रंगीन परदा', मायानंद मिश्रक 'रंग उड़ल मुरुत' तथा राजमोहन झाक लिखल 'शताब्दीक अंत मे' नामक कथा भूमंडलीकरण, बजारवाद तथा अप-संस्कृतिक प्रसंग जोरदार आवाज प्रस्तुत कयने अछि। संवेदनशीलता कें लोक आ क्षेत्र करैत रहल अछि। किंतु, पिता सेहो करैत छथि। ई अशोकक 'तानपूरा' कथा मे स्पष्ट होइछ। संगीत सिखला स' की हैत? आइ.ए.एस.नहि हैब, हाकिम नहि कहायब, बड़का संगीतकार नहि हैब, पैघ लोक नहि हैब आदि। पुत्र पिता स' संगीत सिखबाक लेल तानपूरा कीनबाक मांग करैत अछि। एक पिताक ई खलनायकी चरित्र बाजारवादक देन थिक। एहिना नीता झा अपन 'एषणा' कथा मे एक पुत्रक उक्ति जे पिता नोकरी मे रहैत मरितथि तखन एक बात। रिटायर भ' क' मरताह तखन हमरा लेल की लाभ? पिता जी हमरा लेल नहि किछु कयलनि। मरला पर सेहो कोनो फायदा नहि। बजारवादक सटीक रूप।

विभूति आनंदक 'व्यापारपंथ', अजित कुमार आजादक 'लाल भौजी डाटकॉम' ओ रमेशक कथा 'आचार्य प्रशांतक पाठकीय धर्म' मे बजारवादक अन्य रूप भेटैत अछि। प्रदीप बिहारी अपन कथा 'गमला मे धान' मे लोक-गीत आ नृत्य कें पॉप म्यूजिक ओ आर्केस्ट्रा कोना जोड़ि रहल अछि, तकर सटीक चित्रण अछि। प्रो. मनमोहन झाक कथा 'शांति' मे बाल्यावस्थाक बेटा-बेटी पर टेलीविजनक गलत

पड़ैत प्रभावक सटीक वर्णनन अछि जे जीवन कें असहज हेबाक संकेत करैत अछि। एहि तरहें विभूति आनंदक 'बबूरवन' तथा तारानंद वियोगीक 'विवेकपथ' कथा समाज मे नैतिकताक पतनक विशद विवरण आ चेतावनी दैत अछि।

हम मैथिली साहित्यक मर्मज्ञ नहि। आर्थिक मुद्दा पर किछु लिखि लैत छी मैथिली साहित्य मे बजारवादक कुप्रभाव स' सावधान करयवला कथा-कविताक अभाव नहि। मैथिलीक साहित्यकार सब दिन स' संवेदनाक सजग प्रहरी रहलाह अछि। आइयो छथि। अनेको साहित्यकार—बजारवाद जीवनक कोन-कोन कें आक्रांत कयने जा रहल अछि, समाज मे नैतिकताक पतन कोन तरहें भ' रहल अछि ताहि मादे चेतावनी देने छथि। सब साहित्यकारक विचार कें एहि छोट लेख मे समेटब संभव नहि। एकरा अन्यथा नहि लेल जाय। सुखद आश्चर्यक विषय अछि जे बजारवादक विकृतिक वर्णन आ ताहि स' चेतयबाक काज युवा साहित्यकार पुरजोर स' कयलनि अछि ओ क' रहल छथि। जनकवि यात्रीक कविता 'नवतुरिए आबओ आगां' स' युवा साहित्यकार कें एहि काजक हेतु आमंत्रित क' रहल छियनि—

युग सत्यक आबा मे...
जुनि करी परवाहि बूढ़-बहीर कानक
टटका यंत्र थिक,
नवतुरिए आबओ आगां।
उएह करत रुढ़िभंजन, आगू मुंहे बढ़त उएह।

(अगस्त, 2006)

भ्रष्टाचार भेल सदाचार

अर्थशास्त्र ओ समाजशास्त्र मे घनिष्ट संबंध छैक। एहि संबंधक एक महत्त्वपूर्ण आयाम भ्रष्टाचार आ भ्रष्टाचारी स' जुड़ल अछि। मौद्रिक अर्थशास्त्रक एक नियम एक संग एहि संबंध मे अर्थशास्त्र ओ समाजशास्त्र स' जुड़ल महत्त्वपूर्ण प्रवृत्तिक व्याख्या करैछ। एहि नियमक आशय अछि 'खोट सिक्का खरा सिक्का कें चलन स' बाहर क' दैछ।' ई वक्तव्य अर्थशास्त्र ओ समाजशास्त्र मे अछि। अर्थशास्त्रक प्रख्यात ग्रेशम नियमक अनुसार खराब मुद्राक कारण लोक बढ़िया मुद्रा कें सुरक्षित सजा कें अपना पास रखैत छथि तथा खराब मुद्रा कें बजार मे चलबैत छथि। सदाचार, नैतिकता, ईमानदारी, कर्त्तव्यपरायणता, सामाजिक दृष्टिकोण राष्ट्रहित मे बढ़िया मूल्य, देखय-सुनय मे असरदार, किंतु आइ-काल्हि सामाजिक व्यवहार मे किछु हासिल नहि होइछ। जोगाड़बाजी, आपराधिक गिरोहबंदी, व्यक्तिगत स्वार्थ लेल अनैतिक कर्म स' कोनो परहेज नहि। ई सब खराब भेल, परंतु चलयबला गुण आकि मूल्य यैह थिक। भौतिक-सामाजिक उपलब्धिक नींव मे यैह मूल्य अछि। एहि अर्थ मे खराब मूल्य बढ़िया मूल्य कें चलन स' बाहर क' देने अछि। भ्रष्टाचार ठीके निंदनीय तथापि व्यापक ओ व्यावहारिक रूप स' स्वीकृत सामाजिक मूल्य भ' गेल अछि। सदाचार आब छोट कक्षाक छात्रक लेल निबंध लेखनक विषय मात्र।

वर्तमान समाजक भ्रष्टाचार संबंधी मान्यता आधुनिक समाजक संस्थागत नियम विशेष क' नियुक्ति ओ आर्थिक लाभ स' संबद्ध नियमक लग-पास। केंद्रित होइछ। आधुनिक राजकीय, वित्तीय तथा औद्योगिक संस्था मे उच्च पद पर नियुक्ति मनुष्यक सामाजिक स्तर ओ आर्थिक सुविधा कें अत्यधिक प्रभावित करैछ। अर्थ कें केंद्र मे राखि चलयबला अपना समाज मे नियमक पालन महत्त्वपूर्ण छैक। एहन नियुक्ति मे योग्य व्यक्तिक चयन संस्थाक क्षमता स' गहीर संबंध हैब। एहि हेतु एहन नियुक्ति मे यथासंभव कुल, परिवार आकि भावना पर आधारित अन्य सामाजिक संबंधक प्रभाव स' मुक्त रखबाक नियम बनायल जाइछ। जाहि स'

अधिक स' अधिक योग्य व्यक्तिक चयन विभिन्न पद पर कयल जाय। एहि नियमक उल्लंघन संस्थागत भ्रष्टाचार मानल जाइछ। संस्थागत भ्रष्टाचारक एक स्थूल ओ सुपरिचित रूप थिक आर्थिक लाभक लेल छोट आकि पैघ घूस ल' क' पक्षपातपूर्ण व्यवहार। नियुक्ति संबंधी कतेको भ्रष्टाचार प्रकाश मे आयल अछि।

वर्ष 2002 मे पंजाब लोक सेवा आयोगक अध्यक्ष पर 50 करोड़ रुपयाक भ्रष्टाचारक मामिलाक रहस्योद्घाटन भेल। मार्च 2003 स' बेचारे जेल मे छथि। उच्चतम न्यायालय मे जमानत याचिका लंबित छनि। वर्ष 2005 मे बिहार लोक सेवा आयोगक अध्यक्ष, किछु सदस्य एवं उच्चाधिकारी नियुक्तिक मामिला मे जेल मे छथि। जमानत नहि भेटल छनि। एक भूतपूर्व महिला अध्यक्ष उपर सेहो गंभीर चार्ज छनि एवं ओ महिला पाकिस्तान भागि गेल छथि।

आधुनिक समाज मे आर्थिक एकरूपताक अभाव भ्रष्टाचारक जननी थिक। गैर बराबरीक स्तर अधिक भेला पर निम्न स्तरक लोक अवैध तरीका स' उच्च जीवन-यापनक प्रयास करैत अछि। नवीन आर्थिक नीति मे गैर बराबरी बहुत बढ़ि गेल छैक। मध्यवर्ग मे एहन व्यवस्था छैक जतय मासिक वेतन 20 हजार रुपया स' एक लाखक संभावना। एकर प्रभाव निम्न आय वर्ग पर पड़त। जे बेकार छथि हुनका जीविकाक उपार्जनक अवसर नहि भेटैत छनि। किछु भ्रष्टाचार समाज मे सतत रहत। पैसा ककरा नहि अपना दिस घिचैत अछि? उद्योगपति आ व्यापारी कें भ्रष्ट हैब शोभा द' सकैत छनि। कारण मानि लेल गेल छैक जे पैसा कमायब हुनक एकमात्र लक्ष्य। नोकरी कयनिहार कें सात्विक बनब कठिन, जिनका बीच ओ काज करैत छथि, हुनका प्रति उत्तरदायी नहि छथि। प्राय: किछु जनप्रतिनिधि राजनीति कें समाज सेवाक उच्चतम स्थान तक नहि ल' जा सकैत छथि। अपना देश मे राज्य स' संबंधित भ्रष्टाचार अत्यधिक अछि। एकर मतलब जे भारतीय राज्यक एखन तक लोकतंत्रीकरण नहि भ' सकल छैक। राजतंत्रक संचालन हेतु समाज अपन प्रतिनिधि नहि पठबैत छथि। किछु लोक जे प्रतिनिधित्वक व्यवस्था क' लैत छथि ओ राजतंत्र पर हावी भ' जाइत छथि। व्यापक राजनैतिक भ्रष्टाचार भारतीय राज्यक यैह अल्पसंख्यक चरित्रक अभिव्यक्ति अछि। राजनैतिक भ्रष्टाचारक एक पैघ पक्ष अछि चुनावी भ्रष्टाचार। जनप्रतिनिधिक निर्वाचन निष्पक्ष ढंग स' नहि भ' रहल अछि जे लोकतांत्रिक व्यवस्थाक लेल सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण।

आइ राजनीति आब समाज बदलाबक उपक्रम नहि। किछु व्यक्ति लेल अपन स्याह-सफेद नुकयबाक आ कुकृत्य कें स्वीकृत करा लेबाक माध्यम। खल चरित्रक अंतिम शरण स्थली। स्वार्थ साधनक एकमात्र धंधा आकि पैसा। राजनेता स्वार्थ सिद्धिक लेल सब नैतिक मानदंडक उल्लंघन करैत छथि। साधन शुचिताक रोक

नहि। कोनो सामाजिक वा व्यक्तिगत आचार संहिताक पालनक लेल बाध्य नहि। धन-संग्रह हुनका जीवनक एकमात्र लक्ष्य। मतदान केंद्र कें लूटि वोट हासिल करब तथा कानून कें तोड़ि-मरोड़ि क' धन हासिल करब हिनक प्राथमिकता। ई सब अपराध राजनीतिज्ञ कें दागदार बनबैत छनि। एहि स' संसदीय लोकतंत्रे नहि आर्थिक विकास प्रभावित होइछ। सार्वजनिक जीवनक पैघ बात होइछ। अग्रिम पीढ़ी अधिक भ्रष्टाचार सिख लैछ। भ्रष्टाचारी राजनेता कें बेपर्द कयल जयबाक चाही। मंत्रिमंडल मे दागी मंत्रीक विरोध भ' रहल छैक। राजनीतिक अपराधीकरण तथा भ्रष्टाचार कें रोकबाक असरदार पहल अपेक्षित छैक। कमीशनखोर मंत्री, विधायक, सांसद आदि कें विधान मंडल तथा संसदक सदस्यता समाप्त क' देबाक चाही। एक अध्ययनक मुताबिक देशक राजनेता, उच्चाधिकारी, ठेकेदार आदि विदेशी बैंक मे फर्जी नाम स' जे धन जमा रखने छथि आ ओकरा देश मे आनि क' बांटल जाय त' 45 करोड़ लोक कें एक-एक लाख रुपया आसानी स' बांटल जा सकैछ। संसद मे प्रश्न पुछबाक हेतु पैसा लेबाक मामिला मे 13 सांसदक सदस्यता लोकसभा स' समाप्त क' देल गेल छनि। राजनीति मे आब नैतिकताक लेल कोनो स्थान नहि। उच्चतम मूल्यक कथा कोन? वर्तमान चुनाव-प्रणाली कुल मिला' अर्थतंत्र, बलतंत्र, माफियातंत्र एवं अपराध तंत्रक चारू कात चक्कर काटि रहल अछि।

देशक स्वतंत्रता प्राप्तिक पहिल दस वर्ष मे भ्रष्टाचारक जे रूप सामने आयल ओहि मे टैक्स चोरी, सीमेंट स' ल' क' खाद्य पदार्थ मे भारी मिलावट, जमाखोरी, कालाबाजारी ओ घूस प्रमुख छल। बिना राजनीतिज्ञक शह कें ई सब संभव नहि। एहि कालखंड मे अधिक नवनिर्माणक काज, भूमिक चकबंदी, बंदोबस्ती ओ अत्यधिक नोकरीक सुअवसर छल। नवीन कर प्रणाली लागू भेल। नवीन कृषि ओ उद्योग नीति लागू भेल। सब दिस घूस, कालाबाजारी ओ भ्रष्टाचारक प्रचुर संभावना। उच्च पद पर आसीन व्यक्ति एहि संभावनाक खुलि क' दोहन कयल। किओ ग्रामीण जनता कें लूटि रहल छलाह, किओ उद्योगपति स' मिलि क' पैघ कांडक ब्यूह रचना मे लागल छलाह। देश ओ समाज सेवाक जगह आत्मसेवा सर्वोपरि भ' गेल छैक।

वर्ष 1951-52 तक आर्थिक घोटाला कम छल। 1954-55क बाद स' आर्थिक घोटलाक पर्दाफाश शुरू भेल जाहि मे राजनेता, पूजीपति ओ सरकारी अफसरक पोल खुजय लागल। दलालीक पहिल मामिला जे प्रकाश मे आयल ओ छल भारतीय सेनाक हेतु 4603 जीपक खरीद। एहि मे भारतक प्रसिद्ध प्रतिरक्षा मंत्री वी.के. कृष्ण मेनन दोषी पायल गेलाह। जांच मे मेनन दोषी पायल गेला आ अपन जिम्मेदारी मानि लेलनि। सार्वजनिक जीवन मे पतनक विधिवत शुरूआत छल 1956 मे सिराजुद्दीनक डायरी। एहि प्रकरण मे लाइसेंस-परमिट राजक दुर्गंध ओ राजनेता

तथा व्यापारी वर्गक सांठ-गांठक प्रारंभ। सुरेंद्रनाथ द्विवेदी पर्दाफाश कयने छलाह। खान मंत्री केशवदेव मालवीय कबूल कयलनि, इस्तीफा देबय पड़लनि। 1957 मे उद्योगपति हरिदास मूंदड़ा कांड भेल जाहि मे 160 करोड़ रुपयाक घपला आ 180 अपराध छल। सांसद फिरोज गांधी संसद मे ई मामिला उठौने छलाह। न्यायाधीश मुहम्मद करीम छागलाक अध्यक्षता मे जांच भेल। वित्तमंत्री टी.टी. कृष्णामाचारी, वित्त सचिव एच.एम. पटेल ओ भारतीय जीवन बीमाक अध्यक्ष दोषी पायल गेलाह। मंत्री कें पद स' हटायल गेलनि ओ मूंदड़ा गिरफ्तार भेलाह। 1960 मे बिना कोनो जांच-पड़ताल कें धर्म तेजा नामक व्यापारी कें 20 करोड़ रुपया द' देल गेल। ओ जहाज रानी कंपनी खोललनि आ 80 प्रतिशत शेयर अपने रखलनि। डा. राममनोहर लोहिया संसद मे मामिला उठायल। धर्म तेजा पर जांच भेल। ओ विदेश भागि गेलाह। आधुनिक पंजाबक निर्माता मुख्यमंत्री प्रताप सिंह केरौं पर हुनक मुख्यमंत्रित्व काल मे अनापशनाप धन-संपत्ति एकत्र करबाक आरोप लागल। न्यायाधीश सुधीर रंजन दासक अध्यक्षता मे जांच आयोग बैसायल गेल जे 1960 मे अपन रपट प्रस्तुत कयल। किछु आरोप मे बरी कयल गेला। प्रशासनिक मामिला ओ अपन संबंधी द्वारा गड़बड़ीक हेतु जिम्मेदार साबित भेलाह। 1971 मे नागरवाला कांड एक अद्‌भुत कांड भेल। 24 मइ 1971 कें दिन 11.30 बजे भारतीय स्टेट बैंक, संसद मार्ग शाखाक मुख्य खजांचीक पास एक फोन आयल जे बांग्लादेशक एक गुप्त मिशन कें तत्काल 60 लाख रुपया कोडक व्यवहार करयबला कें द' देल जाय आ रसीद प्रधानमंत्री कार्यालय स' एकत्र क' लेल जाय। खजांचीक अनुसार ई संदेश पी.एन.हक्सर ओ प्रधानमंत्री इंदिरा गांधीक छल। जांच भेल। रुपया लेनिहार रुस्तम सोहराब नागरवला छलाह। 1972 मे हुनक मृत्यु भ' गेलनि। तामिलनाडुक मुख्यमंत्री आ हुनक सहयोगी मंत्री पर भ्रष्टाचारक आरोपक जांच 1976 मे न्यायमूर्ति सरकारियाक अध्यक्षता मे कयल गेल। 28 मामिला पर जांच भेल। करुणानिधि दोषी पायल गेलाह आकि परोक्ष रूपें दायी करार कयल गेला। किछु नहि भेटल गबन धन। ने कोनो सजा भेलनि। कर्नाटकक मुख्यमंत्री देवराज अर्स पर भ्रष्टाचार, पक्षपात, भाई-भातिजावाद ओ सरकारी पदक दुरुपयोग पर 25 आरोप लागल। मुख्यमंत्री ओ हुनक सहयोगी मंत्री दोषी पायल गेलाह। 1982 मे महाराष्ट्रक मुख्यमंत्री अंतुले पर भ्रष्टाचारक आरोप प्रमाणित भेल। हिनका एहि पद स' हटायल गेलनि। मध्यप्रदेशक मुख्यंमत्री अर्जुन सिंह पर चुरहट लॉटरी कांड मे 4 करोड़ 10 लाख रुपया गबनक आरोप लागल। इस्तीफा देबय पड़लनि। जांच एखनो चलि रहल अछि। 1983 मे कर चोरी आ धोखाधड़ीक आरोप उद्योगपति डालमिया पर लागल। न्यायमूर्ति बोवियन बोसक अध्यक्षता मे जांच भेल। डालमिया कें जेल भेलनि आर हुनक बहुतो उद्योग बंद

भ' गेलनि। आपातकाल मे केंद्र सरकारक मनमानी, दमनात्मक कारवाई, भ्रष्टाचार, भाई-भातिजवाद, पदक दुरुपयोग, मीडियाक दुरुपयोग आ वित्तीय क्षेत्र मे धांधली उजागर भेल। न्यायमूर्ति जे.सी. शाहक अध्यक्षता मे जांच भेल। सत्ता परिवर्तन भेल। सब मामिला वापस ल' लेल गेल। 1986 मे स्वेडन बोफोर्स कंपनी स' 155 तोप खरीदबाक सौदा भेल जाहि मे 64 करोड़ रुपया दलालीक मामिला अछि। शासन सत्ता बदलल मुदा मामिला एखनो लटकले अछि। एहि कालखंड मे प्रतिभूति घोटाला जाहि मे मुख्य अभियुक्त हर्षद मेहता ओ हितेन दलाल छलाह अपन नेटवर्क द्वारा लगभग 10,000 करोड़ टाकाक घोटाला कयलनि। बैंकक पैघ अफसर, सरकारक मंत्री तथा शेयर दलाल सरकारी नियम-कानून कें ताख पर राखि करोड़ो रुपयाक हेराफेरी कयल। संयुक्त संसदीय जांच समिति किछु केंद्रीय मंत्री कें दोषी साबित कयलक। दूटा केंद्रीय मंत्री कें इस्तीफा देबय पड़लनि। एहि समय मे चीनी घोटाला 1200 करोड़ रुपयाक भेल। मामिला कें दबा देल गेल। मात्र एकटा केंद्रीय मंत्री हटायल गेला। 1980 मे कुओ तेल कांड भेल। इंडियन आयल निगमक तेल शोधित करबाक टेंडर छल। हरीश जैन द्वारा 9 करोड रुपयाक हेराफेरी भेल छल। वर्ष 1990-2003 तक कतेको कांड भेल छैक जे एहि छोट लेख मे समेटब संभव नहि तथापि फेयर फैक्स कांड, जर्मन पनडुब्बी कांड, जैन (डायरी) हवाला रैकेट जाहि मे विभिन्न राजनैतिक दलक 24 राजनेता, 18 आला अफसर ओ एक व्यापारी फसल छलाह। शेयर घोटला पुनः भेल। केतन पारिख एवं सहयोगी, सहकारी बैंक आदि फसल। संसदीय जांच भेल। गबन भेल रुपया वोसूल नहि भेल। प्रत्येक राज्य से एक स' एक घोटाला भेल छैक। तहलका, जूदेव ओ अजीत जोगी, झारखंड मुक्ति मोर्चा घूसखोरीक इतिहासे बनौने अछि। दोषी की दंडित भेलाह? एक घोटला मे डा. रंजीत सिन्हाक 100 करोड़ रुपया वार्षिक लाभ आंकल गेल। मायावतीक ताज कोरिडोर घोटाला, जाहि मे 175 करोड़ रुपया गबन भेल छैक। सर्वोपरि तेलगीक स्टांप घोटाला जाहि मे 32,000 करोड़ रुपया आंकल जा रहल अछि। भ्रष्टाचारक अनंत-कथा प्रकाश मे आयल अछि। कहिया खतम हैत तकर कोनो उमीद नहि। वैश्विक स्तर पर भारत वर्ष 90म स्थान पर भ्रष्ट देश अछि।

बिहार राज्यक भ्रष्टाचारक चर्चा कयने बिना ई लेख अपूर्ण रहि जायत। एतय भ्रष्टाचारक गंगा बहि रहल अछि। गत दशक मे विकासक नामोनिशान नहि। बेकारीक कारण लोक दोसर राज्य मे पलायन क' रहल अछि तथा शरण लेने अछि। उद्योगपति ओ व्यापारी अपन कारोबार, कल कारखाना बंद क' भागि गेल अछि। जे शासक शपथ लेबाक काल मे 'घूस को गोमांस मानेंगे' जेल गेलाह आ एखनो बिहार ओ झारखंड मे भ्रष्टाचारक मामिला मे फंसल छथि—से बिहारक भाग्य

विधाता। एतय भ्रष्टाचारक मामिला मे सर्वप्रथम 1967 मे अय्यर कमीशन बैसायल गेल। आयोगक रपट मे आरोपित व्यक्ति पर कोनो कारगर कारवाई नहि भेल। फलस्वरूप, घोटाला पर घोटला होयब लागल। जांच एजेंसी कतेको अछि यथा अपराध अनुसंधान विभाग, बिहार राज्य निगरानी पर्षद, विधान सभा/परिषद समिति, लोक लेखा समिति, निवेदन समिति, लोकायुक्त, जांच आयोग अदि। बहुतो जांच आयोग अपन रपट तक नहि देने अछि। यथा, अमीर दास आयोग। बिहार विनिर्दिष्ट आचरण निवारण अधिनियम, 1982 जाहि मुख्यमंत्रीक राजकाल मे लागू भेल ओ स्वयं पशुपालन घोटाला मे जेल गेलाह एवं तत्संबंधी कतेको मामिला मे फसिल छथि। 1990 तक बिहार निगरानी अन्वेषण ब्यूरोक जिम्मा मे नाममात्र भष्टाचारक मोकदमा छल। आजुक तारीख मे 7000 आरोपी पर जांच चलि रहल छैक। 1993-94 मे 20 आई.ए.एस., 2 आई.पी.एस., 4 भारतीय वन सेवा, 5 विभागीय प्रधान तथा 444 अभियंताक विरुद्ध जांच चलि रहल छल। राजपत्रित ओ अराजपतित्रतक संख्या बाद बाकी अछि। शिक्षा, स्वास्थ्य, पशुपालन, परिवहन, वन, सिंचाइ आदि विभाग सब अछि। लोक लेखा समितिक अध्यक्ष जे घोटालाक जांच करैत छथि ओकर अध्यक्ष विधायक जगदीश शर्मा ओ ध्रुव भगत पशुपालन घोटलाक मुख्य आरोपी छथि। पशुपालन घोटाला सब स' पैघ 1150 करोड़ रुपयाक। भूतपूर्व दूटा मुख्यमंत्री जेल गेलाह आ संप्रति बिहार ओ झारखंड मे मोकदमा चलि रहल छनि। अलकतरा, कोबाल्ट मशीन खरीद, बी.एड. तथा डेंटिस्ट कें फर्जी डिग्री, मेधा घोटाला, नव अंगीभूत कालेजक 27 मामिला, वन विभाग, परिवहन विभाग, विभिन्न लोक उपक्रम, फर्जी डिग्री (जाहि मे शिक्षा मंत्रीक गिरफ्तारी नहि भेल) राज्यक 7-8 मंत्री हटायल गेलाह आदि। सभ्य समाज मे यौन-संबंधी नियम अछि। एकरा तोड़ब भ्रष्ट आचरण भेल। कतेको घटना आ काण्ड भेल अछि। हालहि मे कोलकाता जा रहल हिमगिरी एक्सप्रेस मे कश्मीरक जे नर्तकी दलक संग दुर्व्यवहार कयलाह, हुनका पर वारंट अछि। भागल फिरैत छथि। ओ व्यक्ति बिहार जल परिषदक अध्यक्ष चुनल गेलाह अछि। कारण, राजाक सहयोग भेटलनि। तखन भ्रष्टाचारी स' के लड़त? रंगदारी आ अपहरण पैघ धंधा। एहि मे राजाक हिस्सा सेहो रहैत अछि। ट्रांसपैरेंसी इंटरनेशनल भ्रष्ट राज्यक गणना मे बिहार के अंतिम स्थान देलक। भ्रष्टतम राज्य साबित भेल।

ट्रांसपैरेंसी इंटरनेशनल अपन रिपोर्ट मे स्पष्ट कयल जे तेसर दुनिया मे भ्रष्ट राजनेता आ हुनक पिट्ठूक बीच सशक्त गठबंधन बनल अछि जाहि मे घूस ओ दलालीक कोनो अवसर ओ लोकनि नहि छोड़ि रहल छथि। विकासशील दुनियाक ई भ्रष्ट राजनेता अपन निजी लाभक लेल सामान्य जनक हित गटागट करैत राष्ट्रक

आर्थिक विकास कें पाछू धकेलि रहल छथि। भ्रष्टाचार कें केंद्र मे रखैत 1995 मे एन.एन. बोहरा समिति अपन रिपोर्ट मे राजनेता, व्यापारी, अफसर आ अपराधी-चारूक गठबंधन कें भ्रष्टाचार मे लिप्तक संकेत देने छलाह। लोकतंत्र मे भ्रष्टाचार के कम करबाक प्रयास भेल। केंद्रीय सतर्कता आयोग, सीबीआई आकि भ्रष्टाचार निवारणक कोनो अन्य शाखा भ्रष्टाचारी दैत्य स' लड़बाक प्रयास कयलक मुदा असफल रहल। कारण, राष्ट्रक कर्णधार लोकनि भ्रष्टाचारक तह तक नहि गेलाह। सतही इलाज कयल। देशक प्रधानमंत्री स्वीकार कयल जे विकास काजक मद मे खर्च होबयला धनराशिक मात्र पंद्रह फीसदी नींचा तक जाइछ। 85 प्रतिशत नेता, अफसर ओ दलालक बीच रहि जाइछ। विकासक पथ अवरुद्ध भ' जाइछ। सिद्ध भ' चुकल अछि जे सत्ता मे रहि क' भ्रष्ट हैब लोक सेवकक अधिकार भ' गेल छनि। विगत साठि वर्ष मे देश मे हजारो करोड़ रुपयाक घोटाला भेल। चौदहम संसद मे 100 स' अधिक सांसद एहन छथि जे कोनो ने कोनो मामिला मे आरोपित छथि। जखन हमर नीतिनिर्धारक भ्रष्ट ओ आपराधिक रिकार्डबला छथि तखन भ्रष्टाचार पर लगाम कोना लागत। जांच समिति ओ आयोग बनल किंतु ओकर रिपोर्ट पर कार्रवाई किएक नहि भेल। जनताक कठिन कमाई लूटलाक बाद सत्तासीन किएक छथि। लोक जीवन मे भ्रष्टाचार कम करबाक सब उपाय निष्फल भ' गेल छैक। सत्ता हासिल करबा मे राजनैतिक माहौल मे जखन चारित्रिक विचार-धाराक लोप होइछ, राजनीति अनुशासनहीन भ' जाइछ। तत्पश्चात ओ लोक कल्याणक साध्य नहि रहि क' असीमित लोभ, स्वार्थसिद्ध ओ खुदगर्जक साधन बनि जाइछ। तर्क बुद्धिक लोप तथा सामाजिक सरोकार घट' लगैछ। नैतिक पतन होइछ। व्यक्तित्व असंतुलित।

भ्रष्टाचारक व्यापक प्रकृतिक संगति मे पुलिस भ्रष्टाचार सेहो अछि। 1902 मे भारतीय पुलिस आयोग पुलिस कें 'भ्रष्ट ओ दमनकारी' कहलक। 1977 मे धर्मवीर आयोग कहल 'जनताक नजरि मे पुलिस अपन कर्त्तव्यक निर्वाह करबा मे राजनीतिक पक्षपात, क्रूरता, भ्रष्टाचार ओ अकुशलताक लेल कुख्यात अछि। कानून ओ व्यवस्था ठीक राखय मे नागरिक जीवन मे पुलिस व्यवस्था एक अनिवार्य तथ्यक रूप मे स्वीकृत अछि। ग्रामीण, मोहल्ला, नगरीय ओ जीवन मे सब हिनक चपेट मे परि जाइत छथि। पुलिसक फंदा मे एक-न-एक दिन सब कें फंसय पड़ैत छनि। मानव जीवनक प्रत्येक व्यापार ओ गतिविधि मे ओ भ्रष्टाचारक गुंजाइस क' लैत छथि। निर्धन ओ धनवान किओ हिनक भ्रष्ट व्यवहार स' नहि बचि पबैत छथि। राजनीतिक सत्ता पुलिस कें अपन पक्ष मे उपयोग करैछ। कतेको बेर सत्ताच्युत नेता एकर फेर मे पड़ि जाइत छथि। पुलिस भ्रष्टाचार जाति, धर्म, उम्र, लिंग, पेशा आदि

कें नहि मानैत अछि। एक हाथ स' डंटा ओ दोसर हाथ स' घूस। हिनक अत्याचारी पंजा स' बचबाक लेले लोक एकर भ्रष्टाचारी पंजाक शरण लैत छथि। जनताक नजरि मे पुलिस आइ-काल्हि 'अपराधीक सर्वाधिक संगठित समूह' मानल जा रहल अछि। पैसा कमेनाइ आ ओकर एक भाग अपन राजनैतिक संरक्षक कें पहुंचेनाइ एकर मुख्य काज भ' गेल छैक। औपनिवेशिक काल (1861)क बनल पुलिस अधिनियम कें बदलय पड़त। मानवीय बनबय पड़त। किंतु, की ई इच्छाशक्ति राजनीतिज्ञ ओ नोकरशाह मे छनि?

समाजवादी, समाजवादीन्मुख आकि पूजीवादी अर्थव्यवस्था होअ' एक सूत्र स्पष्ट छैक जतय भ्रष्टाचारक सामर्थ्य छैक, ओतय भ्रष्टाचार अवश्यंभावी। भ्रष्टाचारक क्षमता कें भ्रष्टाचार करबा स' प्रत्यक्ष संबंध छैक। समाजवादी आकि पूजीवादी दुनू व्यवस्था मे। समाजवादी व्यवस्थाक तहत नियम-कायदा-कानूनक प्रयोग भ्रष्ट अफसर करताह। पूजीवादी व्यवस्था मे व्यापारी पूजीपति कर्मचारीक वेतन, टैक्सक चोरी आदि बेईमान तरीका स' हड़पताह। अर्थात् भ्रष्टाचार दुनू व्यवस्था मे। जतय सामर्थ्य ओतहि भ्रष्टाचार। सामाजिक नियंत्रणक आशय राजनैतिक नियंत्रण, राजनैतिक नियंत्रणक अर्थ सरकारी नियंत्रण, सरकारी नियंत्रणक आशय भ्रष्टाचार कें प्रश्रय दैत नियम-नियंत्रण। समाजवादक रीढ़ बनल ई नियम-नियंत्रण संसाधनक दुरुपयोगक मार्ग प्रशस्त कयलक अछि। फलस्वरूप, अनुमानतः 1980-81 मे 50,977 करोड़ रुपैया कारी धन छल, जे 1983-84 मे, 85,991 करोड़ रुपया भेल आ 1987-88 तक 1,49,297 करोड़ रुपया पहुंच गेल। 1985 मे भारतक वित्त मंत्रालय एक रपट मे भ्रष्टाचारक किछु महत्त्वपूर्ण स्रोतक उल्लेख कयल जे एहि तरहक अछि। लाइसेंस ओ परमीटक बदला घूस आकि राजनीतिक भुगतान, प्रशासनिक कारवाई शीघ्र करबाक हेतु 'स्पीड मनी'; समस्त सरकारी सेवा मे ट्रांसफर पोस्टिंगक बिक्री; फैक्टरी इंसपेक्टर, बॉयलर, हेल्थ, टैक्स इंसपेक्टर आदि; किछु अफसर कें नियमित घूस-रिश्वत, कंट्रोलबला वस्तुक कारी बजारी; टेलिफोन, बिजली, जल आपूर्ति अन्य सार्वजनिक तंत्रक माध्यम द्वारा काजक हेतु; विभिन्न सरकारी खर्च कार्यक्रम मे लीकेज; सरकारी ठीकेदारीक लेल घूस, चुनावी चंदा आदि। भ्रष्टाचार स' लाभान्वित शीर्ष पायदानक लोकक प्रतिशत अधिक अछि। भ्रष्टाचारक भौतिक लाभ गिनल-चुनल लोक कें उपलब्ध छनि। समाज मे विवाह योग्य बरक दाम एहने व्यक्ति द्वारा बढ़ायल गेल अछि। शिक्षा, रहन-सहन मे सेहो पैघ परिवर्तन भेल छैक। भ्रष्टाचारक विरोधक स्वर आब उठब स्वाभाविक। ई बीमारी अपन सीमा कें पार क' चुकल अछि। भ्रष्टाचार पर राजनैतिक ओ नैतिक स्वर बिल्कुल व्यर्थ ओ नपुंसक भ' गेल छैक। विशेष कानूनी अड़चनक कारण राजनैतिक

भ्रष्टाचार मे वृद्धि भेल छैक। पूर्व अनमातिक बिना मोकदमा नहि चलायल जा सकैछ तथा पद पर आसीन रहला पर जांच तक नहि कयल जा सकैछ। प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री कें पदमुक्त भेला पर विशेष परिस्थिति मे कारवाई नहि कयल जायत। भ्रष्टाचारक आरोप लगला पर अपना देशक राजनेता शान स' घूमैत छथि। भ्रष्टाचार मे जांच कें राजनीति प्रेरित आ अपना कें पाक-साफ साबित करैत छथि। किंतु, देशक महानगर मे राजनेता ओ अफसरक पैघ-पैघ कोठी, शॉपिंग कंपलेक्स, कृषि फार्म, कीमती मोटर गाड़ी तथा तमाम नामी-बेनामी संपत्ति कोन बातक प्रमाण? ई देखि क' लगैत छैक जे हिनका लोकनिक हेतु कोनो कानून नहि हो?

साम्यवादी व्यवस्था मे भ्रष्टाचार सोवियत रूस मे सेहो चलल। सर्वहाराक तानाशाही मुट्ठी भरि राजनेताक तानाशाही भ' गेल। फरवरी 1922 मे लेनिन अपन मित्रक चिट्ठी मे उल्लेख कयने छलाह जे कम्यूनिस्ट नोकरशाही मे बदलि गेल छथि। हमर ध्वंसक कारण ई नोकरशाही हैत। भ्रष्टाचारक मोकबलाक लेल राजनीतिक विचारधाराक रूप मे समाजवाद ठोस साबित नहि भेल अछि। चीन मे भ्रष्टाचार ओ खास क' पार्टी ओ नोकरशाहीक भ्रष्टाचार आम नागरिक लेल पैघ हतासाक विषय बनि गेल अछि। 14 सितंबर 1994 मे 'न्यूज फ्राम चाइना' एक रपट मे 'चोरी ओ घूसखोरी मे पार्टी आओर सरकारी अधिकारीक संख्या मे भयानक तेजी आयल।' एहि अपराधक कारण सामाजिक संतुलन गड़बड़ा गेल छैक। हेराफेरीक मामिला मे भयानक वृद्धि छैक। की पश्चिम बंगाल, केरल ओ त्रिपुरा भ्रष्टाचार मुक्त अछि? जतय साम्यवादी व्यवस्थाक अनुभव भेल अछि।

गत पंद्रह वर्ष; मार्च 2002 तक 22, 376 करोड़ रुपयाक 14 घोटाला भेल। वित्त जगतक जड़ि हिला देने अछि। नेता, अफसर ओ व्यापारीक भ्रष्ट गठजोड़ आई एकटा वास्तविकता भ' गेल छैक। राष्ट्रक सुरक्षाक संग शेयर बजार, बैंकिंग तक प्रत्येक जगह भ्रष्टाचारी ओ बिचौलियाक छाया मर्राइत रहैत छैक। पूर्व केंद्रीय सतर्कता आयुक्त बी.एन. विट्ठलक अनुसार उच्च नागरिक सेवा मे 2001 मामिला एहन अछि जाहि मे उच्चपदस्थ अधिकारी पर अभियोग चलयबाक आकि जुर्मानाक सिफारिश कयल गेल। मुदा, कोनो कारवाई नहि भेल। भ्रष्ट अधिकारी कें बचायल गेल। स्वयं प्रधानमंत्रीक कथन अछि जे भ्रष्टाचार समस्त देश मे महामारी जकां पसरि गेल छैक तथा पहिनेक तुलना मे आओर पांच प्रतिशत वृद्धि भेल छैक। प्रश्न अछि जे एहि स्वीकारोक्ति स' जनमानस ओ राष्ट्रक कोनो लाभ नहि भ' रहल अछि। मात्र चिंता व्यक्त कयला स' भ्रष्टाचारी पर अंकुश नहि लागि रहल अछि। न्यायपालिका ओ कार्यपालिका कें भ्रष्टाचार पर अंकुश लगब' पड़तै, तखने विकास हैत।

पारदर्शिता, जवाबदेही आ समय पर काजक अभाव मे भ्रष्टाचार होइछ। एकरा विरुद्ध सब संभव आ सार्थक लड़ाइ लड़य पड़त। अपराधीक खिलाफ कठोर दंड, चुनाव सुधार द्वारा भ्रष्ट राजनीतिज्ञ पर रोकक प्रावधान, प्रत्येक विभाग मे सूचनाक अधिकारक क्रियान्वन, ईमानदार अधिकारी कें सुरक्षा सुनिश्चित, भ्रष्टाचारक विरोध मे जन अभियान, न्यायिक प्रक्रिया कें निश्चित अवधि ओ प्रभावी क्रियान्वन लेल सार्थक पहल, जन शिकायत निवारणक हेतु प्रत्येक मंत्रालय ओ विभाग कें अत्यधिक शक्ति देल जाय तथा अधिकारी पर आरोपक मामिला मे नागरिक सामाजिक संगठनक हस्तक्षेप आ समय पर न्यायक व्यवस्था जरूरी अछि।

(अक्टूबर, 2006)

विशेष आर्थिक क्षेत्र नहि, विशेष अवरोध आ शोषण क्षेत्र

विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईजेड), भारतक धरती पर विदेशी भूक्षेत्र, निर्यात कें प्रोत्साहित करबाक हेतु सर्वप्रथम 1965 मे कांडला (गुजरात) मे स्थापित कयल गेल। ई भारत आ एशिया मे सेहो पहिल अछि। एकर बाद सांताक्रूज (महाराष्ट्र), कोचीन (केरल), चेन्नई, विशाखापटनम (आंध्रप्रदेश), फाल्टा (पश्चिम बंगाल) आ नोएडा (उत्तर प्रदेश) मे चालू कयल गेल। एहि क्षेत्र मे नियंत्रण आ क्लीयरेन्सक विविधता, उच्च आधारभूत ढांचाक अभाव तथा एक अस्थिर राजकोषीय पद्धतिक कारणें निर्यात संवर्द्धनक प्रभावी माध्यमक रूप मे उभरय मे ई सफल नहि भ' सकल। अप्रैल, 2000 मे विशेष आर्थिक क्षेत्र कें सफल बनयबाक दृष्टि स' निम्नलिखित परिवर्तन कयल गेल—

—एक अभिहित शुल्क-मुक्त इंक्लेव जकरा केवल व्यापार संचालन, शुल्क एवं करक लेल विदेशी क्षेत्रक रूप मे देखल जाय,

—आयातक लेल कोनो लाइसेंस आवश्यक नहि,

—निर्माण आ सेवा गतिविधिक अनुमति,

—तीन वर्षक अन्दर एसईजेड इकाई कें सकरात्मक विदेशी मुद्रा अर्जक बनायब,

—पूर्ण सीमा शुल्क आ आयात नीतिक लागू भेला पर घरेलू बिक्री,

—उप-संविदाक लेल पूर्ण आजादी।

निर्यात/आयात कार्गोक कस्टम अधिकारी द्वारा कोनो रूटीन जांच नहि हैत। निवेशक मे आत्मविश्वास भरबाक लेल, स्थायी एसईजेड नीति पद्धतिक प्रति सरकारी प्रतिबद्धताक संकेत देबाक लेल तथा एसईजेड पद्धति कें स्थायीत्व दैत एसईजेडक स्थापना द्वारा अधिक आर्थिक गतिविधि तथा रोजगार सृजित करबाक

उद्देश्य स' पुन: 2005 मे एक विस्तृत विशेष आर्थिक जोन अधिनियम संसद स' पारित कराओल गेल। एहि मे जनता द्वारा चुनल व्यक्तिक कोनो प्रतिनिधित्व नहि रहत। विकास आयुक्त, केन्द्र सरकारक तीन अधिकारी आ उद्यमीक अधिक स' अधिक दू नामित प्रतिनिधि रहताह। हिनके सभ कें ओहि विशेष क्षेत्रक आधारभूत ढांचाक विकास, जल एवं सफाइ व्यवस्था, उपयोग शुल्क वसूल करब आ सम्पत्ति फीस संग्रह करबाक अधिकार देल गेल छनि। संगहि जे पूजीपति विशेष क्षेत्रक विकास करता आ कारोबार करता हुनका अन्य आर्थिक तथा वित्तीय नियम-निषेध स' मुक्त राखल जायत। 100 प्रतिशत विदेशी निवेशक अनुमति, लाभांश कें अपना देश ल' जयबाक छूट, उद्योग शुरू करबाक पहिने 5 वर्ष तक आयकर छूट, 10 वर्ष तक बहुत कम दर पर आयकर लागत, श्रमिक विधान मे छूट तथा हड़ताल करबाक अधिकार नहि। सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क, केन्द्रीय बिक्री कर मे छूट, सेवाकर स' छूट, कर-मुक्त कच्चा माल आ अन्य सुविधा।

एसईजेडक लेल भूमि अधिग्रहण एक पैघ मुद्दा बनि गेल छै। जमीन अधिग्रहणक हेतु कारपोरेट जमींदार व्याकुल छथि। भूमि अधिग्रहण कोन आधार पर आ कोन तरहें कयल जाय? जमीन पर मालिकाना राज्य सरकारक छैक तथा उद्योगक लेल भूमि उपलब्ध करायब ओकर जिम्मेदारी। जमीन एहन संसाधन अछि जकर आपूर्ति पूर्णत: सीमित। राष्ट्र कें उद्योगक हेतु जमीन अवश्य देल जाय मुदा केहन जमीन। कतेक मुआवजाक राशि। पूजीपति स' मुआवजाक राशि कम नहि वसूलल जाय। पश्चिम बंगालक सिंगूर मे टाटा कें लगभग 1000 एकड़ कृषियोग्य उपजाऊ जमीन 20 करोड़ रुपया मे बेचल गेल छैक, जे पांच साल मे एक प्रतिशत सालाना ब्याज दर स' घुमाबय पड़तै। कार्यत: जमीनक मूल्य 12 करोड़ रुपया भेल। भूक्षेत्र मे अधिगृहीत जमीनक आधा भाग पर मुख्य काज करय पड़तै। शेष भूमि मे पूजीपति अपन मनोनुकूल किछु क' सकैत अछि। फलस्वरूप, देशक उद्योगपति विशेष आर्थिक क्षेत्र संबंधी योजनाक लाभ उठा क' बड़ पैघ स्तर पर भूमि हथिया रहल अछि। जयपुर मे सूचना टेक्नोलॉजी अथवा सूचना आधारित सेवाक लेल मात्र 49 हेक्टेयर जमीनक मंजूरी छल। आब बहु-उत्पादवला सेजक हेतु 1000 हेक्टेयर भूमि आवंटित कयल गल छै। एहिना रिलायंस इंडस्ट्रीज लि. कें जामनगर मे 400 हेक्टेयर भूमि पेट्रोलियम एवं पेट्रो केमिकल्सक लेल मंजूर छल। आब हुनका 1000 हेक्टेयर क्षेत्रफल मे बहु-उत्पाद वला सेजक अनुमति भेट गेल छै। खाद्यान्न उत्पादनक कमीक आशंका छै। तखन कृषियोग्य भूमिक अधिग्रहण स' सरकार कें बचबाक चाही।

चीन विशेष आर्थिक क्षेत्रक माध्यम स' शानदार सफलता अर्जित कयलक

अछि। किन्तु, चीन मे सेजक पहल सरकारक प्रोत्साहन पर भेल छै। भूमिक स्वामित्व राज्यक हाथ मे छै। अपना ओतय निजी क्षेत्र अधिकांश सेजक विकास करत आ भूमिक स्वामित्व ओकरे हाथ मे सोंपल जा रहल छै। चीनक सेज रणनीतिक रूप स' देशक दक्षिण-पूर्वी भाग मे स्थित अछि। जाहि मे तीनटा क्वांगतुंग प्रान्त मे अछि। निर्यातोन्मुख औद्योगिक क्षेत्र बन्दरगाह तथा हांगकांग, मकाओ आ ताइवान सदृश व्यापार मे साझीदारक निकट सेज छै। भारतक सेजक लेल कोनो दीर्घकालीन रणनीति नहि छै। पूजीपति जतय चाहै सेजक लेल भूमि चुनि सकैछ। चीन मे उद्यमीक छूटक निर्धारण निर्भर करैत अछि जे ओतय स' राष्ट्रीय अर्थतंत्र कें कतेक योगदान भेटैत छै। ओतय सरकार चालकक सीट पर बैसल अछि। अपना ओतय कारपोरेट घराना। एतय पूर्णत: साम्राज्यवाद पर निर्भर। चीन एसईजेडक माध्यम स' विदेशी निवेश आकर्षित करय मे सफल भेल अछि। एहने सफलता भारत सरकार चाहि रहल अछि।

सरकारक कथन अछि जे एसईजेड योजनाक मुख्य उद्देश्य रोजगार अवसरक सृजन आ आर्थिक गतिविधि कें विकसित करब अछि। एकर लाभ सब स्टॅाकहोल्डर्स कें भेटतै। एतय मूल्यवर्धित उत्पादक निर्माण। उत्पादन कें अवसर प्रदान करब तथा बजार कें कच्चा मालक उत्पादकक निकट आनबाक प्रयास। कृषि क्षेत्र तथा खाद्य प्रसंस्करण मे एसईजेड प्रस्तावित अछि। एहि स' कृषि क्षेत्र मे निवेश हैत एवं प्रसंस्कृत खाद्य आ कृषि उत्पादक निर्यात विकसित होयत। एहि स' देशक किसान लाभान्वित हेताह। एसईजेड कें कर रियायतोक कारण राजस्व हानि, देल गेल प्रोत्साहनक आकलन नहि कयल गेल छै। वाणिज्य मंत्रीक कथन जे एहि योजना स' लाभ अनेक गुणा बेसी हैत वनिस्वत देल गेल रियायत/प्रोत्साहन कें देशक सकल घरेलू उत्पादक अंश रूप मे निर्यात 13 फीसदी अछि जे 1990-91 मे मात्र 6 फीसदी छल। एतयक वस्तु निर्यात 2002-03 मे 53 अरब डालर छल जे 2005-06 मे 103 अरब डालर पहुंचि गेल। चालू वर्ष मे 125 अरब डालरक वस्तु आ 75 अरब डालर सेवा निर्यातक लक्ष्य छै। आगू कहैत छथि जे एक उत्पादक आ उपभोक्ताक रूप अपन नव छविक संग, अन्तरराष्ट्रीय बजार तथा बहुपक्षीय व्यापार व्यवस्था कें प्रभावित करबा मे एक जिम्मेदार आ विश्वसनीय देशक रूप मे एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाब'क लेल प्रस्तुत आ समर्थ छी। देश वैश्वीकृत आ विश्व अर्थव्यवस्थाक संग एकीकृत भ' रहल अछि। विश्व बुझय लागल अछि जे भारतक बिना व्यवसाय करब असंभव। अपन उदारीकरण संग देश दुनियाक प्रत्येक निवेशक देशक राडार अपना कें स्थापित क' लेलक।

एखन तक स्थापित विशेष आर्थिक क्षेत्रक निर्माण स' देश कें कोनो खास लाभ नहि भेल छै किन्तु आब बदलल परिवेश आ देशक अन्तरराष्ट्रीय छवि मे सुधार

कें देखैत मानल जा रहल अछि जे एसईजेडक माध्यम स' आर्थिक प्रगति कें गति प्रदान कयल जा सकैछ। भारत सेवा क्षेत्रक विस्तार क' क' विकसित देशक रूप मे स्थापित नहि भ' सकैछ। उद्योगीकरण कें जोर-सोर स' चालू राखय पड़त। केन्द्र सरकारक विभिन्न मंत्रालयक बीच विशेष आर्थिक क्षेत्र निर्माणक लेल मतभेद छै। वाणिज्य मंत्री एहि क्षेत्र स' अति उत्साहित छथि। एहि स' निर्यात मे वृद्धि हैत तथा तीन वर्ष मे तीन लाख लोक कें नौकरी भेटि जायत। वित्तमंत्री विशेष आर्थिक क्षेत्र मे उद्योग कें देल जा रहल रियायत मे एक लाख करोड़ रुपया राजस्वक हानि देखि रहल छथि। ग्रामीण विकास मंत्री भूमि अधिग्रहणक तौर-तरीका स' सहमत नहि छथि। किछु राजनीतिक दल स्पष्ट क' देने छथि जे ओ अपना ओतय विशेष आर्थिक क्षेत्रक निर्माण नहि होबय देत। केन्द्र सरकारक कर्त्तव्य होइत छैक जे विशेष आर्थिक क्षेत्रक मंजूरी देबाक पूर्व ई सुनिश्चित क' लेबाक जे भूमि अधिग्रहण स' किसान कें शिकायत करबाक मौका नहि भेटनि। उद्योगपतिक दबाव मे आबि' राज्य सरकार भूमि अधिग्रहण क' विशेष आर्थिक क्षेत्र कें द' रहल अछि। भूमि अधिग्रहणक हेतु कोनो पोख्ता नीति नहि बनायल गेल छै। गुजरात सरकार उद्योगपति कें जिम्मेदारी देने छनि जे विशेष आर्थिक क्षेत्रक निर्माणक हेतु ओ स्वयं किसान स' जमीन खरीद करथि। कृषियोग्य भूमिक अधिग्रहण नहि हेबाक चाही।

भूमि अधिग्रहण विवादक रूप ल' लेने अछि। कारण राजनेता एहि बहाने अपन राजनीति आगू बढ़बय चाहैत छथि। किन्तु, किसानक भूमि अधिग्रहण मे मनमानी भेल छै। केन्द्र आ राज्य सरकार विशेष आर्थिक क्षेत्रक घोषणा करैत जा रहल अछि। मुदा कृषियोग्य भूमि अधिग्रहण स' कोनो परहेज नहि छै। मुआवजाक लेल मनमानी छै। कोनो ठोस नियम नहि। समयक मांग अछि जे उद्योगीकरण कें गति देल जाय। अधिक स' अधिक उद्योग स्थापित हो किन्तु किसानक हितक अनदेखी नहि कयल जाय। खाद्यान्न सुरक्षाक संकटक उपेक्षा कयल जा रहल छै। फलस्वरूप, खाद्यान्नक आयात बढ़ि रहल अछि। तखन कृषियोग्य भूमि उद्योग कें देल जा रहल छै। अनेक उद्योगपति विशेष आर्थिक क्षेत्रक लाभ उठाक' बहुत बेसी भूमि हथिया लेने छथि, जखन कि हुनका लग एहि भूमि पर उद्योग स्थापित करबाक कोनो ठोस योजना नहि छनि। अर्थात विशेष आर्थिक क्षेत्रक नाम पर एक नवीन ढंगक भू-माफिया उभरल अछि। नकली विकासक योजनाक खिलाफ किसान संघर्षरत भ' गेल छथि। हुनकर लड़ाइ टाटा, रिलायन्स, सलीम आ अन्यक खिलाफ मात्र नहि। असल लड़ाइ राज्य सरकार स' छै। जे पूजीपतिक दलाल बनि क' किसानक अदौ स' अबैत प्रिय जमीन बंदूकक नोंक पर छीनने जा रहल छै। बेदखलीक नग्न नृत्य उड़ीसाक कलिंग नगर आ जगतसिंहपुर, उत्तर प्रदेश मे दाहरो,

पंजाब मे बरनाला, महाराष्ट्र मे रायगढ़, पश्चिम बांगल मे सिंगूर एवं नन्दीग्राम मे देखबा मे अबैछ। विभिन्न किस्मक संगठन आ समन्वय संस्था अस्तित्व मे आयल छै तथा जन–आन्दोलन मुखर भ' गेल छै। जमीनी स्तर आ राष्ट्रीय राजनैतिक रंगमंच पर भूमिक प्रश्न एक बेर पुन: वर्ग–संघर्षक केन्द्रीय मुद्दा बनि क' सामने आयल। एहि मे महत्त्वपूर्ण बात ई जे सामाजिक जनवादीक दुर्ग पश्चिम बंगाल अखिल भारतीय आन्दोलनक अग्रिम चौकी बनि क' उभरल अछि। बंगालक वामपंथी उत्तर प्रदेश, पंजाब, महाराष्ट्र आदि प्रदेश मे कृषिगत जमीन पर विशेष आर्थिक क्षेत्र बनयबाक घोर विरोध करैत छथि। पश्चिम बंगाल मे कृषिगत जमीन कें उद्योगक लेल उपयोग कें हितकर मानैत छथि। दोहरा मानदंडक एहि सं उत्तम उदाहरण कत' भेटत? पश्चिम बंगालक बाम मोर्चा सरकारक नव एजेंडा अछि भूमि सुधार कें उलटब, गैर किसानकरण, निगमीकृत खेती, विशेष औद्योगिक क्षेत्र आदि। सरकार सत्ता मे मदमस्त अछि। माकपा मुख्यमंत्री घमंडक निशा मे घोषणा कयलनि जे ककरो टाटाक खोपड़ीक एको रोआं छुबय नहि देल जायत। भूमि अधिग्रहण क' किसान आन्दोलन कें ध्वस्त करबाक प्रयास मे लागल अछि। वाम मोर्चा किसान विरोधी काज मे लागल अछि।

ई दुर्भाग्यपूर्ण अछि जे विशेष आर्थिक क्षेत्रक निर्माणक संबंध मे केन्द्र आ राज्य सरकार गैर जिम्मेदारीवला काज कयलक। यदि केंद्रीय सरकार विशेष आर्थिक क्षेत्र आ अन्य औद्योगिक परियोजनाक लेल जमीन अधिग्रहण, किसानक पुनर्वास, मुआवजा आदिक संदर्भ मे पहिने स्पष्ट नियम–कानून बना लेने रहैत, तखन एखन जे विवाद आ संघर्ष चलि रहल अछि से नहि होइत। देश मे कृषिक अधीन 120 मिलियन हेक्टेयर कुल जोत जमीन अछि। विशेष आर्थिक क्षेत्र आ औद्योगिक विकासक लेल मात्र 0.001 प्रतिशत भूमि आवंटित कयल गेल छै। प्रमोटर द्वारा एसईजेडक स्थापनाक लेल स्वीकृति समय अनुमानित आधार पर दिसम्बर, 2007 क अंत तक 5–6 अरब अमेरिकी डालरक विदेशी निवेश सहित 1,00,000 करोड़ रुपयाक निवेशक आकलन कयल गेल अछि। सम्प्रति, एसईजेड मे 927 इकाइ चालू अछि जे 1.23 लाख लोक कें प्रत्यक्ष रोजगार प्रदान कयने छै। एहि मे 40 फीसदी महिला छथि। एहि क्षेत्र मे इकाइ स्थापित करय मे उद्यमीक 2000 करोड़ रुपयाक निवेश छनि जाहि मे विदेशी अनिवासी भारतीय निवेश लगभग 600 करोड़ रुपया लागल छै। 1990–91 मे सकल घरेलू उत्पादक 6 फीसदी निर्यात छल जे एखन 13 प्रतिशत अछि। गत तीन वर्ष मे एसईजेड स' निर्यात 13,854 करोड़ रुपया स' बढ़िक' 22,510.83 करोड़ रुपया भ' गेल जे लगभग 63 प्रतिशत वृद्धि दर्शाबैत अछि। सितम्बर, 2006 तक वाणिज्य मंत्रालय भारत सरकार 267 विशेष आर्थिक

क्षेत्र निर्माणक अनुमति द' चुकल अछि।

उड़ीसाक कलिंगनगर आ पश्चिम बंगालक मिदनापुर जिलाक नंदीग्राम विशेष आर्थिक क्षेत्रक मतलब स्पेशल एक्सप्लायटेशन जोन बना देलक अछि। सेज कॉरपोरेट वर्ल्ड कें भारतक संसाधनक खुजल लूटक छूट साबित भेल अछि। पश्चिम बंगालक वामपंथी सरकार 'लेन्ड टू द टिलर्स' आ वर्गादारक नारा पर सत्ता मे आयल आ गत तीस वर्ष स' राज क' रहल छथि। किन्तु आब 'लेन्ड टू द कॉरपोरेट' के नारा बुलंद क' रहल अछि। नक्सलबाड़ी आंदोलन कें खतम कयने अछि। नंदीग्रामक नरसंहार देशक राजनैतिक सिस्टम कें नांगट क' देलक। एत'क लोक कें उग्र होयबाक छोरि दोसर उपाय कोनो नहि छल। गरीबक पार्टी गरीब स' जमीन ल' क' पैघ–पैघ पूजीपति कें देने जा रहल छल। 6–7 जनवरी, 2007 कें नंदीग्राम मे 6 किसानक हत्या कयलाक बाद 14 मार्च, 2007 कें कानून व्यवस्था बहाल करबाक नाम पर पश्चिम बंगालक वाम मोर्चा सरकारक पुलिस मुख्यमंत्रीक निर्देश पर संघर्षरत 15 किसानक निर्मम हत्या कयलक। निहत्था लोकक निर्मम हत्या, महिलाक सामूहिक बलात्कार आ बच्चा पर पाशविक हमला भेल। गुमशुदा परिजनक खोज भ' रहल छल। भांगेबेड़ा, सोनाचूड़ा आ गोकुलनगर गाम मे बहुत कम नवयुवती आ बच्चा जीवित पाओल गेल। महिला पर यौन आक्रमण आ छोट–छोट बच्चा कें टांग चीरिक' मारि देल गेल। अमानवीयताक हद भ' गेल। नंदीग्राम मे जे भेल ओ हत्याकांड, जनसंहार, लोकतंत्रक हत्या कहल जायत। एहि घटना स' दुखित न्यायाधीश वी.आर.कृष्ण अय्यर माकपाक प्रकाश करात कें एक पत्र लिखल। ओकर अंश 'समकालीन लोकयुद्ध' 31 मार्च–13 अप्रैल, 2007 स' उद्धत अछि—

''पुलिस बल ने जो पाशविकता और रक्तपात किया, उससे अब मानवता पर गोली दग रही है।...कल नंदीग्राम मे जो दहशत फैलाई गई है, उससे मेरे भीतर निराशा व डर पैदा हो रहा है। शोषक सत्ता के भ्रमजाल मे फंसा मंत्रालय बंदूक के बल पर राज कर रहा है, मैं जानता हूं कि हजारों लोग मेरी ही तरह नंदीग्राम की घटना से स्तब्ध होंगे। दया करके उन लोगों का कुछ ध्यान रखें जो यह मानते हैं कि समाजवाद का अर्थ आतंकवाद नहीं, मानवतावाद है और बंदूक के बल पर कुशासन राजसत्ता पर काबिज वाम दलों के राज करने का तरीका नहीं है। मेरे इस मजबूत विश्वास और उम्मीद को व्यक्त करने के लिए मुझे माफ करें कि वामपंथी सरकार आम जनता के बुनियादी जरूरतों के बारे मे सोचती और काम करती है, न कि गोली के बर्बर ताकत के बल पर अधिकार छीनती है।''

देशक उच्च मेधा सम्पन्न अरुंधती राय, महाश्वेता देवी, मेधा पाटकर, सांवली

मित्र, जया मित्र आ अन्य एहि अमानवीयताक घोर भर्त्सना कयलनि। महाश्वेता देवी कहैत छथि 'सेजक मतलब भूमि अधिग्रहण। जमीन अधिग्रहणक मतलब अछि लोकक गरीबी। तखन मजदूरक ठीकेदारी। तखन एहि गरीब कृषक लोकनि कें बंधुआ मजदूरक हैसियत स' काज करबाक हेतु अन्य राज्यक शरण लेब' पड़ैत छनि। सेज लोकक लेल गरीबी लाब' बला आ सरकार तथा धन्ना सेठक लाभ पहुंचाबय बला धंधा अछि। एकर विरोध मे जन आंदोलन परमावश्यक।' ओ स्वयं झारखंडक पलामू जिला मे बंधुआ मजदूरीक विरोध मे घोर आंदोलन कयने छथि। पश्चिम बंगाल मे जत' किसान कें वर्गादारीक तहत संरक्षण देल गेल छल, ओतहि आइ अनुपस्थित जमींदार कें संपूर्ण मुआवजा देल जा रहल छै आ गैर-पंजीकृत वर्गादार, खेत मजदूर आ खेतीक पेशा मे लागल लोक कें बिना कोनो मुआवजाक सोझे बेदखल कयल जा रहल छै। नंदीग्राम अमानवीयताक भर्त्सना करैत 'द सनडे इंडियन'क प्रमुख सम्पादक अरिंदम चौधरी अप्रैल 1, 2007 अंक मे लिखैत छथि—

Budhadeb.....Unlike your prede-cessor Jyoti Basu (Who would have never done such cold-blooded and murderous hoolhardiness), you certainly are not Bhadralok. You are a cold-blooded Hitlerian !"

नंदीग्रामक नरसंहार जालियांबाग मे जेनरल डायरक क्रूरताक समान बुझना जाइछ। की अपन न्योयोजित अधिकारक लेल ई सज्जा? कोलकाता उच्च न्यायालय एहि घटना कें असंवैधानिक कहल तथा सीबीआई जांचक आदेश देलक। भारतीय संसद 2007-08क बजट प्रस्ताव पारित नहि करा सकल आ पांच दिन पहिने सदन अवकाश मे चल गेल। विपक्ष नंदीग्रामक अमानवीय अत्याचारक कारण सरकार कें बाध्य कयलक।

मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य 14 मार्च, 2007क जनसंहारक बाद माकपाक राज्य सचिवक समक्ष घोषणा कयल जे हुनका पर कार्यवाही करबाक लेल पार्टीक दिस स' दबाव देल गेल छल। 15 मार्च, 2007 कें विधानसभा मे पुलिस कार्रवाई कें आत्मरक्षार्थ आ जायज कहल। अंत मे सरकारक प्रमुख होयबाक नाते नैतिक जिम्मेदारी स्वीकार कयल आ स्पष्ट बजलाह—हुनका एतेक प्रतिशोधक आशा नहि छलनि जे पुलिस बल एहि तरहक जयादती करती। 17 मार्च, 2007 कें पश्चिम बंगाल मे सत्तारूढ़ वाम मोर्चा घोषणा कयलक जे पूर्वीय मिदनापुर जिलाक नंदीग्राम मे उद्योग-धंधाक लेल भूमि अधिग्रहण नहि हैत। एत' स' चरणबद्ध ढंग स' पुलिस कें हटाओल जायत।

23 मार्च, 2007 कें बजारबाद आ भूमंडलीकरणक प्रणेता प्रधानमंत्रीक एक बयान आयल जे सेज संबंधी नीति स' पाछू नहि हटल जायत। मुदा नंदीग्रामक भयानक हिंसा आ अमानवीय अत्याचार भारत सरकार कें विशेष आर्थिक क्षेत्र पर सोचबाक हेतु बाध्य कयलक। 5 अप्रैल, 2007 कें केंद्रीय सरकारक प्राधिकृत मंत्रिमंडल समूह निर्णय लेलक जे 5000 हेक्टेयर भूमि सीमा स' बेसीक आर्थिक क्षेत्र नहि बनत। भूमि अधिग्रहण राज्य सरकार नहि करत। आब नव कोनो विशेष आर्थिक क्षेत्रक प्रस्तावक अनुमोदन नहि कयल जायत। एहि निर्णय स' भारत सरकारक वाणिज्य मंत्रालय आ पश्चिम बंगाल सरकार सहमत नहि अछि। रिलायन्सक महामुंबई आ हरियाणाक आर्थिक क्षेत्र, डीएलएफ गुड़गांव प्रोजेक्ट तथा मैक्सक हरियाणा प्रोजेक्ट एहि व्यवधान मे फंसि गेल। ई लोकनि आब अपन क्षेत्र कें 5000 हेक्टेयर सीमाक अन्दर नहि बांटि सकैत छथि। उड़ीसाक मुख्यमंत्री पोस्कोक लटकल विशेष आर्थिक क्षेत्रक योजनाक समाधान शीघ्रातिशीघ्र करबाक प्रयास क' रहल छथि। भूमि अधिग्रहण अधिनियम आ विशेष आर्थिक क्षेत्र अधिनियम मे जाबत विधिवत संशोधन नहि हैत, राज्य सरकार, वाणिज्य मंत्रालय आ ग्रामीण विकास मंत्रालयक बीच विवाद चलैत रहत।

(अप्रैल, 2007)

खुदरा व्यापारक अंधकारमय भविष्य

भारतीय खुदरा बजारक निकट भविष्य रोचक आ संघर्षमय हैत। एहि लेल छोट-पैघ, देशी-विदेशी सब तरहक व्यवसायी समूह अपन श्रेष्ठ स्थान बनयबाक हेतु तत्पर भ' गेल अछि। संप्रति खुदरा बजार मे दोकान मालिक दू स' तीन कर्मचारी ओ अपन समांगक संग कार्यरत छलाह। एखन एकहि संग कतेको पैघ औद्योगिक घराना अपन प्रवेश ओ विस्तारक योजना कें ल' क' चर्चा मे अछि। आगामी किछु वर्ष मे रिटेल व्यापार मे अत्यधिक निवेश संभावित अछि। भारतक सकल घरेलू उत्पाद लगभग 600 अरब डॉलर मे 300 अरब डॉलर खुदरा भारतीय बजार मे छैक। कृषिक बाद भारतीय खुदरा बजार रोजगारक सब स' पैघ स्रोत अछि जाहि मे 80 प्रतिशत असंगठित खुदरा व्यापारी छथि। संप्रति यैह भारतीय खुदरा व्यापार संस्कृतिक निर्धारक। मात्र 3 प्रतिशत संगठित खुदरा व्यापार छैक। खुदरा बजार मे प्रत्यक्ष विदेशी निवेशक स्वीकृति भारत सरकार एखन तक नहि प्रदान कयने अछि। सरकारक पूर्ण प्रयास भ' रहल छैक। एखन ढुलमुल नीति दृष्टिगोचर होइछ। रिटेल बजार मे सिंगल ब्रांड मे 51 प्रतिशत विदेशी निवेश तथा थोक व्यापार मे 49 प्रतिशतक विदेशी निवेशक छूट छैक। किछु थोक व्यापार कैश एंड कैरी ओ लॉजिस्टिक आदि मे 100 प्रतिशत विदेशी निवेशक छूट भेट गेल छैक। एहि मार्ग स' विदेशी कंपनी भारतीय बजार मे प्रवेश क' रहल अछि। सुनील मित्तलक भारती इंटरप्राइज ओ वॉलमार्टक बीच ताजा एकरारनामा एकर स्पष्ट उदाहरण अछि।

वालमार्ट विश्व मे सब स' पैघ खुदरा बजारक व्यापारी अछि। अमेरिकाक अर्कान्सस मे एकर मुख्यालय छैक। वित्तीय वर्ष जनवरी 2005 मे ई 285.2 बिलियन डॉलरक कारोबार कयने अछि । 1.6 मिलियन एसोसिएट्स विश्व भरि मे एकरा संगे काज करैत छैक। 3600 दोकान अमेरिका मे आ 1570 इकाई मेक्सिको, रिको, कनाडा, अर्जेंटीना, ब्राजील, चीन, कोरिया, जर्मनी ओ ब्रिटेन मे कार्यरत छैक। 138 मिलियन क्रेता प्रति सप्ताह एकर दोकान स' माल खरीदैत छथि। गत जुलाइ मास मे भारतक प्रधानमंत्री, जे बजारबादक प्रबल समर्थक छथि, अपन अमेरिका यात्रा मे वालमार्टक कार्यकारी अध्यक्ष ली स्कॉट कें भारतक रिटेल बजार मे निवेशक हेतु आकर्षित कयलनि। कतेको सेक्टर मे विदेशी पूजी निवेश भ' चुकल अछि। खुदरा बजार मे विदेशी पूजी नहि आयल छल। आब श्रीगणेश भ' चुकल अछि।

भारत कें संगठित खुदरा बजारक हिस्सा मात्र 3 प्रतिशत। संगठित रूप स' निवेशक प्रयास नहि भेल। किछु व्यापारी प्रयास कयबो कयलनि, मुदा सफल नहि भ' सकलाह। 1.2 अरब उपभोक्ताक एहि विशाल बजार मे 60 प्रतिशत उपभोक्ता युवा छथि। 30 वर्ष स' कम आयुक एहि वर्गक जीवन शैली मे विशेष परिवर्तन भेल छैक। एकर आय ओ क्रयशक्ति मे आकर्षक वृद्धि दृष्टिगोचर होइछ। यैह वर्ग खुदरा बजार मे पैघ औद्योगिक घराना कें आकर्षित कयने अछि। एहि विस्तारक लाभ उठयबाक हेतु पैघ औद्योगिक भारतीय घाराना अपन-अपन योजना कें मूर्त रूप देबा मे सक्रिय भ' गेल अछि। आगामी पांच साल मे लगभग 22 मिलियन स' अधिक निवेशक संभावना। एकर अतिरिक्त नव ग्लोबल आ बड़का स्थानीय व्यापारीक प्रवेश अवश्यमभावी। खुदरा बजार मे 40 प्रतिशत बढ़ोतरी संभावित छैक, जाहि स' 2011 तक 427 बिलियन डॉलर तथा वर्ष 2015 तक 635 बिलियन डॉलरक आंकड़ा के पार करबाक छैक।

खुदरा बजारक विस्तारक योजना स' किछु महत्त्वपूर्ण ओ विचारक प्रश्न उपस्थित भ' गेल अछि जाहि पर विवेचना परमावश्यक। विश्वक सब स' पैघ रिटेल ग्रुपक भारतीय बजार मे प्रवेश, भारतीय रिटेल व्यापारी पर केहन प्रभाव करत? दोसर पैघ भारतीय व्यापारीक संगठित खुदरा क्षेत्र मे निवेश स' छोट-छोट खुदरा व्यापारी विशेष क' 70 प्रतिशत असंगठित क्षेत्रक छोट खुदरा व्यापारीक की होयतनि? अमेरिकाक समान एहि छोट-छोट खुदरा व्यापारी कें अपन दोकान बंद करय पड़तनि। तेसर, की घरेलू व्यापारी एतेक मजबूत ओ समृद्ध छथि जे विदेशी रिटेल कंपनीक संग प्रतिस्पर्द्धा मे टिक सकताह? अंतिम प्रश्न अछि जे सब स' महत्त्वपूर्ण, जे उपभोक्ता कें एहि स' केहन लाभ होयतनि? छोट-पैघ, देशी-विदेशी औद्योगिक घराना अपन शक्तिशाली स्थान बनयबाक प्रयास मे अछि। आगामी किछु वर्ष मे वृहत निवेश होबय जा रहल अछि। कृषिक बाद भारतीय खुदरा बजार रोजगारक पैघ स्रोत। आर्थिक विषयक विश्लेषक लोकनिक अनुसार पैघ-पैघ कंपनी कें रिटेल बजार मे प्रवेश स' भयक कोनो शंका नहि। एखन तकक असंगठित बजार आब संगठित भ' जायत। सामानक गुणवत्ता बढ़त। यातायात ओ भंडारण क्षमता मे हिनका लोकनिक माध्यम स' सुविधा हैत। सामान सही समय पर बजार मे पहुंचि जायत। सामान नष्ट भेला स' कृषक आहत होइत छथि। आब एहन शंका निर्मूल साबित

हैत। मॉल मात्र शहर मे नहि। गाम मे सेहो पैघ कंपनी प्रवेश क' रहल अछि। रिलायंसक मुकेश अंबानी किसान हाट नाम स' ग्रामीण स्तर पर उत्पाद खरीदक लेल मंडी बनाब'वला छथि। रिटेल स्टोरक लेल मजबूत सप्लाई चेन निर्माणक योजना सेहो छैक। हैदराबाद मे पहिल 'रिलायंस फ्रैश आउटलेट' खोलिक' ई भारतीय खुदरा बजार मे प्रवेश कयने अछि। हिनक मत छनि जे एहि तरहक खुदरा बजार मे 8-10 पैघ व्यापारी प्रवेश क' सकैत छथि। रिटेल कारोबार लाभप्रद हैत।

भूमंडलीकरणक वर्तमान समय मे सामाजिक-आर्थिक ओ क्षेत्रीय विषमता मे वृद्धि भेल अछि। संयुक्त राष्ट्रक एक संस्था हाल मे प्रकाशित अपन रिपोर्ट मे स्वीकार कयल अछि जे विश्वक 40 प्रतिशत (अढाई अरब) निर्धनतम लोक दू डॉलर स' कम पर अपन गुजर करैत छथि। विश्वक कुल आय मे हिनक हिस्सा मात्र पांच प्रतिशत। 10 प्रतिशत सब स' धनिक वर्गक हिस्सा 54 प्रतिशत। सभ तरहक प्रगतिक बादो 80 करोड़ लोक भुखमरी ओ कुपोषण स' पीड़ित अछि। एक अरब 10 करोड़ लोक कें पेयजलक अभाव तथा प्रतिघंटा 1200 बच्चाक मृत्यु होइछ, जकर इलाज संभव। दक्षिण एशिया मे भारत सब स' पैघ राष्ट्र। एतयक समाज मे आर्थिक असमानता ओ क्षेत्रीय विषमता निरंतर बढ़ि रहल अछि। एहन परिस्थिति मे 'कृषकक किस्मत रिटेल मे' बजारवादी द्वारा प्रचारित कयल जा रहल अछि। पैघ रिटेलर्स कें कृषि खुदरा बजार मे स्वागत कयल जा रहल छैक। कारण ई लोकनि बजार मे तर्कसंगत कौशल ओ स्पर्धा अनताह। जाहि स' उपभोक्ता कें रियायत ओ किसान कें मुनाफा। एक पारंपरिक किसान कें अपन उपजक उचित मूल्य नहि भेटैत छनि। बिचौलिया हुनक शोषण करैत छनि। अपना पक्ष मे तर्क उपस्थित करैत छथि। कृषि अर्थशास्त्रीक अध्ययन स्पष्ट करैछ जे विकसित देश मे किसानक वस्तु कें उपभोक्ता मूल्यक एक पैघ भाग प्राप्त होइत छनि। कारण वितरण प्रणाली छोट ओ प्रभावी होइछ। जाहि मे उत्पादक ओ विक्रेताक मध्य बिचौलिया नहि होइत अछि। पैघ रिटेलर्स वातानुकूलित गोदाम ओ ट्रक आनि रहल अछि जाहि स' कृषि उत्पादकक नोकसान नहि हैत। अनुबंध खेती प्रचारित भ' रहल छैक। एहि मे जोखिम कंपनीक। किसान कें रोजगार ओ लाभक निश्चिंतता। अनुबंध खेती मे कंपनी बढ़िया बीज ओ वैज्ञानिक तकनीकक माध्यम स' उत्पादन बढ़ायत। अनुबंध खेती मे किसान कें तीस स' सय प्रतिशत तक अधिक लाभ होइत छनि। खेतक उत्पादकता बढ़ि जाइत छैक। सीमांत किसान अधिक मुनाफा मे रहैत छथि। कारण श्रमिकक खर्च बचि जाइत छनि। यैह भेल खेत स' खुजत किस्मतक ताला।

अक्टूबर 2006 मे देशक खरबपति मुकेश अंबानी पश्चिम बंगाल मे 12 स्थान मे कृषि उत्पादक खरीद-बिक्रीक हेतु कृषि विपणन परिषद मे लाइसेंसक हेतु

आवेदन कयने छलाह। एखन तक स्वीकृति नहि भेटल छनि। कारण वाममोर्चा सरकार मे कृषि विभाग ओ कृषि विपणन परिषद फारवर्ड ब्लॉकक अधीन छैक। ई दल साम्राज्यवादी उद्योगपतिक घोर विरोधी। अंबानी कृषि खुदरा बजार मे 2000 करोड़ रुपया निवेश करबाक हेतु आतुर छथि। आब 15 कृषि उत्पाद क्रय केंद्र आ 6 राष्ट्रीय रिटेल केंद्र खोलय चाहि रहल छथि। 25 लाख लोक कें एहि स' आघात हेतनि। तें पश्चिम बंगालक सरकार अनुमति नहि देने छैक। पश्चिम बंगाल सरकार मे फारवार्ड ब्लॉक, भाकपा ओ आरएसपी एहि तरहक उद्योगीकरणक विरोधी अछि। टाटा ओ सलीम ग्रुपक सेहो विरोध कयने छल, मुदा माकपाक वरदहस्त पैघ उद्योगपति कें उपलब्ध छैक। तखन सिंगुर ओ नंदीग्राम मे उद्योगीकरण। रिलायंस हल्दिया आ आसानसोल मे 100 एकड़, कोलकाताक निकट 110 एकड़, मालदह मे 83 एकड़ भूमिक प्रयास मे अछि जखन 100 एकड़ सिलीगुड़ी मे, तथा 15 स्थान पर 10 एकड़ भूमि निजी ढंग स' कीनि चुकल अछि। मुकेश अंबानी उद्योगपति नंबर एकक बाद देशक सब स' पैघ जमींदार बनबाक प्रयास मे छथि। आर्थिक विश्लेषक जगदीश शेट्टिगरक मत छनि जे खुदरा बजार मे विशाल कंपनीक प्रवेश स' कृषक कें लाभे-लाभ छनि। प्रथम, सब प्रकारक खाद्यान्न, साग-सब्जी पैघ खुदरा व्यापारी किसान एवं हुनक उत्पाद अधिक मूल्य पर कीनि रहल छथि। गहूंमक खरीद सरकार द्वारा तय न्यूनतम मूल्य स' सय-दू सय अधिक मूल्य पर कीनैत छथि। एहि स' किसान कें बेसी लाभ होइत छनि। दोसर, उपभोक्ता कें सेहो कम मूल्य पर सब सामान भेटि जाइत छैक। कारण, बिचौलिया, आढ़तबलाक कमीशन नहि देबय पड़ैत छैक। एहि पैघ कंपनी कें यातायात ओ स्टोरेजक आधुनिक सुविधा उपलब्ध छैक तें उत्पाद खराब होयबाक कोनो संभावना नहि। एकर असर उत्पाद मूल्य पर पड़ैत छैक तथा कम मूल्य पर बेचय मे एहि रिटेल कारोबारी कें कोनो नोकसान नहि हेतै।

अखिल भारतीय व्यापारी परिसंघ (कैट) देशक प्रधानमंत्री कें एक ज्ञापन देल—खुदरा कारोबार मे पैघ कंपनीक भागीदारीक विरोध मे। एहि मे कहल अछि जे बहुराष्ट्रीय कंपनी ओ देशक पैघ औद्योगिक घराना खुदरा बजार पर आधिपत्यक प्रयास मे जुटि गेल अछि। एकर असर छोट व्यापारी पर पड़त। एहि स' आर्थिक विकास, लघु क्षेत्र, किसान विक्रेता ओ निर्माता पर सेहो पड़तै। राष्ट्रीय व्यापार नीति बनयबाक मांग ई कयने अछि। एक कार्यबल गठित कयल जाय। एकर रिपोर्ट उपलब्ध भेला पर खुदरा व्यापार मे बहुराष्ट्रीय कंपनी ओ पैघ औद्योगिक घरानाक प्रवेश वर्जित हो। एहि परिसंघक कथन छै—पैघ कंपनी अपन विशाल संसाधनक बल पर स्थानीय व्यापारी स' प्रतिस्पर्द्धा समाप्त करबाक लेल कम दाम पर वस्तु बेचैत अछि एवं एक बेर अपन कब्जा जमा लेबाक बाद उपभोक्ता स' मनमानी दाम

बोसूलैत अछि। रिलायंस फ्रेश हैदराबाद स' अपन खुदरा व्यापार शुरू कयलक। कोनो विरोधक सामना नहि करय पड़लै। कारण, हैदराबाद मे कंपनी अपन दोकान मे फल ओ सब्जी बेचैत अछि। संगहि संग छोट व्यापरी कें सेहो उत्पाद आपूर्ति करैत अछि। किंतु, फल ओ सब्जीक खुदरा व्यापार मे रिलायंस समूह कें घोर विरोध भेल छैक। एकर शुरुआत रांची मे भेल। एक-दू दिनक बाद इंदौर मे भेल। विरोध कयनिहार ओ लोक छलाह जनिक हित प्रभावित भ' रहल छलनि। रोजी-रोटीक समस्या उपस्थित भ' गेल छलनि। पश्चिम बंगाल मे बहुराष्ट्रीय कंपनी ओ पैघ औद्योगिक घराना द्वारा प्रस्तावित खुदरा व्यापार कें अधिकांश लोक मे बेकारी ओ शोषणक आशंकाक कारण घोर विरोध भ' रहल छैक। खुदरा व्यापारक प्रवेश स' गाम ओ शहर मोहल्लाक किराना, सब्जी ओ अन्य छोट-छोट व्यापारीक दोकान बंद हैत तथा देशक पैघ क्षेत्र मे बेकारी ओ भूखमरीक साम्राज्य पसरि जायत।

भारतक पैघ औद्योगिक घरानाक मत छैक जे भारतीय खुदरा बजार मे 10-12 खिलाड़ी कें काज करबाक यथेष्ट गुंजाइश छैक। रिटेल कारोबार पहिने स' अधिक आसान भेल छैक। संस्थागत ढांचा मे सुधार, बढ़ैत शहरीकरण, क्रेडिट कार्डक व्यवस्था, आय ओ क्रय-शक्ति मे वृद्धि रिटेल कारोबारक विस्तार मे सहायक अछि। वर्तमानक 3 प्रतिशत खुदरा बजार आगामी पांच वर्ष मे 10 प्रतिशतक संभावना। संगठित खुदरा क्षेत्रक भागीदारी 65 स' 80 बिलियन डॉलर तक पहुंचि जायत। शॉपर्स स्टाप भारत मे मॉल कल्चरक शुरुआत कयल। एकर प्रबंध निदेशक बीएस नागेशक कथन छनि जे जहिना प्रतिस्पर्द्धा बढ़त, विश्वस्तरीय रिटेल आउटलेट्स बनत, सुविधाक विस्तार हैत। जाहि स' उपभोग बढ़त। टाटा ग्रुपक मार्केटिंग हेड नीति चोपड़ाक अनुसार अपन सेवा ओ सुविधाक गुणवत्ता बढ़यबाक तकनीक सीख रहल छी। प्रशिक्षित कर्मचारीक नियुक्ति कयल जा रहल अछि तथा अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ीक संग बढ़िया प्रतिस्पर्धात्मक माहौल तैयार हैत। फ्यूचर ग्रुपक (पेंटालून रिटेल) किशोर बियानीक अनुसार सब स' पैघ ताकत भारतीय बजार ओ उपभोक्ताक समझ अछि। रिटेल बजार मे पहिने स' अपन सिक्का जमोने छथि। जून 2010 तक 30 मिलियन वर्गफीट मे अपन आउटफिट खोलय चाहैत छथि। टर्नओवर 25,000 करोड़ करबाक छनि। टाटा ग्रुप अंतरराष्ट्रीय रिटेलर वूलवर्थक संग गठजोड़ कयने अछि। वेस्टसाइड, स्टार इंडिया बजार ओ लैंडमार्क उपभोक्ताक बीच पहिने स' लोकप्रिय अछि। मुकेश अंबानी 800 शहर मे 5500 रिटेल आउटलेट ओ 85 लॉजिस्टिक खोलताह। आदित्य बिड़ला समूह, आर.पी.जे. रिटेल ओ रंजन रहेजा समूहक रिटेल आउटलेट पहिने स' बजार मे अछि। विशाल मेगा मार्ट देश मे लगभग 33 शहर मे 45 बजार चला रहल अछि एवं एकरा विकसित करबाक

योजना छै। सुभिक्षाक वर्तमान हिस्सेदारी 300 करोड़ रुपयाक आ 500 स्टोरक संख्या छै। भारतीय ग्रुप जे वालमार्ट स' समझौता कयलक अछि 31,500 करोड़ रुपया रिटेल कारोबार मे विनिवेश करत। स्वास्थ्य ओ प्रसाधन, परचून, मनोरंजन, कैटरींग, जूता, मोबाइल फोन, पोशाक, फैशन ओ आभूषणक रिटेल कारोबार मे विकास आ वृद्धि देखय मे आबि रहल छै। एहि समूहक खुदरा दोकान वर्ष 2008 मे खुजब प्रारंभ भ' गेल। एक सालक अंदर कंपनी देशक अधिकांश शहर मे अपन दोकानक शृंखला स्थापित करबाक योजना बनौने अछि। डीएलएफ देशक विशालतम शॉपिंग मॉल गुड़गांव मे बना रहल अछि। जकर क्षेत्रफल 40 लाख वर्गफीट हैत। कुल भूमिक लिहाज स' एहि मॉलक क्षेत्रफल 32.87 एकड़ हैत।

खुदरा कारोबार एखन चर्चा मे अछि। बजार विश्लेषक ओ देशी-विदेशी कंसल्टेंसी कंपनी व्यावसायिक संभावनाक दृष्टि स' खुदरा कारोबार कें सोनाक खान मानि रहल छथि। देशी-विदेशी पैघ कारपोरेट समूह एहि क्षेत्र पर अपन-कब्जा करबाक प्रयास मे लागि गेल अछि। कारण, असंगठित क्षेत्रक छोट व्यापारी, दोकानदार, फेरीबाला ओ रेहड़ीबाला कें पैघ कारपोरेट समूह स' प्रतियोगिता करबाक ने सामर्थ्य ने तकनीक आने प्रबंध कौशल छै। तें हेतु ओ अपन वर्चस्व स्थापित करबाक प्रयास मे अछि। तखन असंगठित क्षेत्रक खुदरा व्यापारीक भविष्य अंधकारमय बुझना जाइछ। भारत मे रिटेल बजारक एक खास विशेषता छैक जे देशक सामाजिक तथा आर्थिक विभाजन बहुत साफ नजरि आयत। कम आय कम उपभोग। असंगठित क्षेत्रक खुदरा व्यापार अधिकांशत: छोट-छोट परिवार द्वारा संचालित अछि। 95 प्रतिशत खुदरा दोकान जे मात्र 500 वर्गफुट स' कम जगह मे लगैत अछि। लगभग चारि करोड़ लोकक जीवन-यापानक जरिया अछि। चीन, थाइलैंड, वियतनाम ओ मलेशिया सदृश विकासशील देश मे जखनहि संगठित क्षेत्र ओ पैघ पूजी खुदरा बजार क्षेत्र मे उतरल, छोट पूजी ओ असंगठित क्षेत्रक विस्थापन भेल। अमेरिका मे 1987-97क बीच मे 12,000 स' अधिक छोट-छोट किराना दोकान बंद भ' गेल। भूमंडलीकरणक मुख्य कार्यक्रम अछि—विस्थापन। विस्थापनक अर्थ जीविकाक स्रोत पर आश्रित आबादीक पैघ हिस्सा कें ओहि स' विस्थापित करब। ओहि स्थान पर एकाधिकारवादी पूजीक महल ठाढ़ करब। भूमंडलीकरणक योजनाकार अपन कार्यक्रम कें एहि तरहें तैयार कयल अछि जाहि मे विरोधक राजनीति कें समाहित क' लेल गेल छैक। अमेरिका भारत कें रिटेल क्षेत्र मे उदारीकरणक लेल जबर्दस्त दबाव बना रहल अछि। भारतीय उद्योग संघ (फिक्की) द्वारा आयोजित एक सेमिनार मे अमेरिकाक वाणिज्य मंत्री कालेरिन एम. गुटिरेज भारत मे रिटेल कारोबारक संग अन्य क्षेत्र मे उदारीकरण तेज करबाक सुझाव देल।

कारण, एहि क्षेत्र मे भारतक संग साझेदारी मे परेशानी अत्यधिक भ' रहल अछि। भारतक वाणिज्य मंत्री कहल जे भारत सब क्षेत्र मे प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) बढ़यबाक हेतु प्रस्तुत अछि। रिटेल कारोबारक कोन कथा।

खुदरा व्यापारीक समर्थन मे उत्तर प्रदेशक सरकार रिटेल स्टोर पर रोक लगा देने अछि। केरल मे मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टीक सरकार खुदरा व्यापार पर बहुराष्ट्रीय कंपनीक कब्जाक योजना कें विफल करबाक हेतु कानून बनयबा पर जोर द' रहल अछि। जखन कि एहि पार्टीक नेतृत्व मे पश्चिम बंगालक सरकार खुदरा व्यापार मे एकाधिकारवादी पूजी कें आमंत्रित क' रहल अछि। कम्युनिस्ट देश चीन मे सुपर मार्केटक तेजी स' विस्तार भ' रहल छैक। चीन मे एक लाख साठि हजार सुपर मार्केटक स्थापना भ' चुकल छैक। चीनी सरकार गाम मे सुपर मार्केटक विकासक लेल केंद्रीय राजस्व स' विशेष धन राशि लगायल अछि। 50 करोड़ खान पूजी स्वयं लगायल ओ चीनक राष्ट्रीय बैंक दस अरब य्वान कर्ज प्रदान कयने अछि। पटना मे बिहार चैंबर ऑफ कॉमर्स चिंता व्यक्त कयलक अछि जे खुदरा व्यापारक क्षेत्र मे देशी तथा विदेशी कंपनीक प्रवेश स' छोट-छोट व्यापारी बर्बाद भ' जयताह। मूलभूत संरचना तथा सुविधाक सृजन तथा विकासक लेल बहुराष्ट्रीय ओ पैघ कंपनीक स्वागत छैक। खुदरा व्यापार मे निवेश कें घातक करार देलक अछि। मुदा, निश्चित रूप स' उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण नीति समाजक संपन्न वर्गक हित मे अछि, जखन कि आर्थिक रूप स' वंचितक सर्वनाश हैत।

केंद्र सरकारक खाद्य प्रसंस्करण ओ वाणिज्य विभाग एक ब्लूप्रिंट पर काज क' रहल अछि जकरा अनुसार कृषक कें निर्यातक तैयारी, गुणवत्ता मानक ओ फसिल प्रबंधन तकनीक मे प्रशिक्षित करबाक योजना छैक। सरकार कारपोरेट फार्मिंग ओ लीज फार्मिंगक तौर-तरीका अपना क' पैघ पूजीक मददि स' खेतीक पूरा पैटर्न बदलबा मे लागल अछि। खेतीक पैटर्न बदलला स' किसान अधिकाधिक फल-सब्जी आदि उगाबय लगताह। कृषि क्षेत्रक परिदृश्य बदलि जायत। एहि तरहक विकासक संबंध रिटेल व्यवसायक ग्लोबीकरण स' अछि। खेतीक पैटर्न बदला स' फल-सब्जीक धंधा खुदरा व्यापारीक हाथ स' निकलि जायत। संपूर्ण अंबानी, मित्तल ओ बियानी देखय मे अयताह। फल-सब्जीक फेरीबला रिक्सा चला क' कोनो तरहें दुनू सांझ रोटी-नोनक जोगाड़ क' सकताह। जखन कि भारत मे 13 मिलियन रिटेल आउटलेट अछि जे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष ढंग स' 18 मिलियन लोक कें रोजगार देने अछि। पैघ पूजीपतिक प्रवेश खुदरा व्यापार मे हिनका लोकनि कें रोजी-रोटीक संकट उपस्थित क' देने छनि।

(2007)

पंचवर्षीय योजनाकाल मे कृषिक दुर्गति

मानव सभ्यताक विकासक आरंभ स' कृषि विशाल जनसंख्याक जीविकाक प्रधान साधन रहल अछि। वास्तव मे कृषि सब उद्योगक जननी ओ मानव जीवनक पोषक थिक। विश्वक विकसित महत्त्वपूर्ण राष्ट्र कें तीव्र गति स' कृषिक विकास उद्योगीकरण कें सुदृढ़ आधार प्रदान कयलक। कोनो अल्प विकसित भूभाग खाद्यान्न मे आत्मनिर्भरता प्राप्त कयने बिना अपन आर्थिक विकासक कल्पना नहि क' सकैछ। आर्थिक विकास मे कृषिक भूमिका एहि सत्य स' परिलक्षित होइछ—बढ़ैत जनसंख्याक हेतु पर्याप्त खाद्य-सामग्री उपलब्ध करायक, औद्योगिक कच्चा मालक आपूर्ति, पूजी निर्माण मे सहायक, विदेशी विनिमयक स्रोत, औद्योगिक मालक हेतु बजार एवं अन्य पूजी-प्रधान उद्योगक हेतु श्रम-शक्ति उपलब्ध करायब। कृषि उत्पादकता मे सुधार उद्योगीकरण कें प्रोत्साहित करबा मे ठोस साधन साबित भेल अछि। कृषि एवं आर्थिक विकास मे अत्यंत घनिष्ठ संबंध छैक। कृषि एवं उद्योग दुनू क्षेत्रक विकास अंतर्संबंधित अछि। प्रत्येक एक दोसर पर निर्भर अछि। विश्व बैंकक एक रपटक अनुसार बिना कृषि विकास कें आर्थिक विकास संभव नहि। मिथिलांचलोक आर्थिक विकास कृषिक समग्र विकास बिना संभव नहि। कृषि-व्यवस्था मे आमूल परिवर्तनक योजना कें कार्यान्वित करय पड़तै।

भारतक आर्थिक व्यवस्था मे कृषिक महत्त्वपूर्ण स्थान छैक। अतएव देशक आर्थिक विकासक लेल कोनो आर्थिक विकासक योजना मे कृषिक विकास कें महत्त्व देब अनिवार्य। एहि हेतु भारत सरकार प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951-56) मे खद्यान्न ओ कच्चा पदार्थक अभावक पृष्ठभूमि में तैयार कयल गेल। द्वितीय विश्वयुद्ध एवं देशक विभाजन स' उत्पन्न तात्कालिक समस्या मे खाद्यान्न ओ कच्चा मालक अभावक समाधान कें ध्यान मे राखल गेल। योजनाकाल मे कृषि संबंधी कार्यक्रम पर 290 करोड़ रुपया खर्च कयल गेल। ई राशि एहि योजना कालक कुल व्ययक 14.8 प्रतिशत छल। भूमिसुधार ओ सामुदायिक विकास कार्यक्रम पर पूरा

जोर दल गेल। एहि योजना काल मे सिंचाइ व्यवस्था पर 384 करोड़ रुपया खर्च कयल गेल। द्वितीय पंचवर्षीय योजना काल मे उद्योगीकरण कें प्राथमिकता देल गेल तथापि कृषि विकासक विभिन्न कार्यक्रम पर 549 करोड़ रुपया व्यय भेल। द्वितीय योजना कालक अंत मे 279 लाख हेक्टेयर भूमि मे सिंचाइक सुविधा प्राप्त भ' चुकल छल। तृतीय पंचवर्षीय योजना मे कृषि विकास कें पर्याप्त महत्त्व देल गेल। एहि योजना काल मे कृषि, लघु सिंचाइ एवं सामुदायिक विकास कार्यक्रम पर 1089 करोड़ रुपया व्यय भेल। खाद्यान्न उत्पादन मे वृद्धि नहि भेल। लक्ष्य स' 100 लाख टन कम भेल। खाद्यान्नक स्थिति विकट भ' गेल। चारिम पंचवर्षीय योजना काल मे कृषिक विकास पर पर्याप्त ध्यान देल गेल। एहि योजना काल मे कृषि, सामुदायिक विकास आ सहकारिता मद मे 2320 करोड़ रुपया खर्च भेल। गहन कृषि कार्यक्रम पर विशेष जोर देल गेल। एहि योजना काल मे वृहत् एवं मध्यम सिंचाइ योजना द्वारा 27 लाख हेक्टेयर अतिरिक्त भूमि मे तथा लघु सिंचाइ योजना द्वारा 45 लाख हेक्टेयर भूमि मे अतिरिक्त सिंचाइक व्यवस्था कयल गेल। पांचम पंचवर्षीय योजना मे कृषिक विकास पर अधिक जोर देल गेल। कृषि पर सार्वजनिक क्षेत्र मे 4865 करोड़ रुपया व्यय कयल गेल। कृषि उत्पादनक लक्ष्य पूरा भेल। छठम योजना मे कृषि तथा सामुदायिक विकास पर 5800 करोड़ रुपया तथा सिंचाइ आ बाढ़ि नियंत्रण पर 9650 करोड़ रुपया व्यय कयल गेल। एहि योजना काल मे 140 लाख हेक्टेयर अतिरिक्त भूमि मे सिंचाइक सुविधा देबाक लक्ष्य छल। सातम पंचवर्षीय योजना (1985-90) मे पुन: कृषि विकास पर अधिक ध्यान देल गेल। खाद्यान्नक उत्पादन मे वार्षिक 3.7 प्रतिशत वृद्धिक लक्ष्य छल। कृषि विकास मद मे 10,524 करोड़ रुपया व्यय कयल गेल। 1972क बाद खाद्यान्नक आयात बंद भ' गेल। खाद्यान्न उत्पादन मे वृद्धि भेल मुदा भूमिहीन मजदूर ओ सीमांत किसानक समस्याक समाधान नहि भ' सकल। आठम पंचवर्षीय योजना (1992-97) काल मे विश्व मे सर्वत्र केंद्रीभूत अर्थव्यवस्थाक विखंडन भ' रहल छल। बजार अर्थव्यवस्थाक मांग जोरदार छल। एहि योजना काल मे कृषि पदार्थक उत्पादन मे वृद्धिक लेल उत्तम प्रकारक बीज, खाद तथा कीटनाशक दवाइक प्रयोगक महत्त्वपूर्ण वृद्धिक लक्ष्य छल जाहि स' खाद्यान्न उत्पादन मे भारतक स्थिति सुदृढ़ हो। ग्रामीण विकास एवं ग्रामीण क्षेत्र मे निर्धनता निवारण प्रधान उद्देश्य छल। कृषि एवं संबद्ध मद मे कुल योजना व्ययक 4,34,100 करोड़ रुपयाक 14.3 प्रतिशत व्यय कयल गेल छल। पंचवर्षीय योजनाक एहि 40 वर्षक अवधि मे खाद्यान्नक उत्पादन मे साढ़े तीन गुणा वृद्धि, तेलहन मे तीन गुणा, कपास उत्पादन मे चारि गुणा तथा जूटक उत्पादन मे तीन गुणा वृद्धि भेल। निष्कर्ष जे पंचवर्षीय योजनाक 47 वर्षक अवधि मे कृषिक क्षेत्र मे कोनो

उल्लेखनीय ओ आधारभूत प्रगति नहि भेल। खाद्यान्नक उत्पादन मे वृद्धि भेल, आ विदेश स' आयात बंद भेल किंतु संस्थागत परिवर्तन, जाहि स' कृषक उपज अधिक स' अधिक हो एवं भूमिहीन मजदूर ओ सीमांत कृषकक समस्याक समाधान हो, नहि कयल गेल। समुचित तकनीकी एवं संस्थागत परिवर्तन द्वारा एहि आधारभूत समस्याक समाधान होइत। कृषि तथा कृषकक हित मे ई समाधान अनिवार्य अछि।

24 जुलाइ, 1991 देशक इतिहास मे महत्त्वपूर्ण तिथि अछि। भारत अपन साकार यात्रा कें त्यागि निराकार यात्रा प्रारंभ कयलक। आजुक दिन भारतीय संसद मे केंद्रीय बजट प्रस्तुत कयल गेल। राजनीतिक-सामाजिक, राष्ट्रीय ओ सांस्कृतिक रचना कें बदलि देल गेल। भूमंडलीकृत लोकतंत्रक कल्पना कयल गेल। हिनक मत छनि जे उदारवादी लोकतंत्र एकमात्र शासकीय रूप अछि जकरा माध्यम स' आधुनिक राज्यक कामकाज सुचारु रूपेण चलायल जा सकैछ। लोकतंत्रक यैह रूप आर्थिक ओ सांस्कृति परिवर्तन क' सकैत अछि। एकर प्रधान अर्थ अछि विश्व अर्थतंत्र ओ विश्व बजारक निर्माण। आर्थिक विकास 1994-95 स' एखन पर्यन्त पर्याप्त रूप स' समन्वित नहि रहल। कृषि विकासक गति गड़बड़ायल एवं संकटग्रस्त स्थिति मे पहुंच गेल। देशक किछु क्षेत्र मे कृषकक आत्महत्याक रूप मे परिलक्षित भ' रहल अछि।

भारत सरकार मइ 2007 मे 11म पंचवर्षीय योजनाक दृष्टि-पत्र प्रस्तुत कयलक। 'तीव्र विकास एवं अधिक समन्वित विकास' शीर्षक दृष्टिकोण पत्र व्यावहारिक एवं प्रेरणादायक। एहि मे कृषि क्षेत्र मे महान चुनौती। कारण जे 1980 स' 1996-97क अवधि मे हासिल कृषि क्षेत्र मे 3.27 प्रतिशतक विकास उत्तरोत्तर घटि क' दू प्रतिशत स' कम भ' गेल छैक। अपर्याप्त उत्पादकता विकास ओ उत्पादनक कम मूल्यक कारण कम आय तथा उचित दर पर ऋणक उपलब्धता पैघ संख्या मे किसान कें कर्ज स' डुबा देने छनि। संगहि मूल्य, उत्पादकक गुणवत्ता, मौसम ओ कीट संबंधी अनिश्चितता जोखिम स' जुड़ल बीमाक अनुपलब्धता सब मिलि क' किसानक स्थिति कें नाजुक बना देने छनि। एहि दस्तावेज मे स्पष्ट कहल गेल अछि जे यदि कृषिक दुर्गति हैत ओ गरीबी ओ भुखमरी अनंत काल तक कायम रहत, तखन नक्सलवादक प्रसार दिनानुदिन बढ़ैत जायत। देशक 100 जिला मे नक्सलवाद सक्रिय अवस्था मे अछि। बिहार मे तीव्र गति स' बढ़ि रहल छैक। मिथिलांचलक अधिकांश जिला नस्ललवाद स' प्रभावित भ' चुकल अछि। 2000 वर्ष पूर्व रोमन दार्शनिकक कथन छल—एकटा भुखायल आदमी कोनो तर्क नहि सुनि सकैत अछि। कोनो धर्म ओ प्रार्थना मे नतमस्तक नहि भ' सकैत अछि। जतय भुखमरी रहत, ओतय शांति कोना स्थापित हैत। ई दृष्टिकोण पत्र राष्ट्रीय किसान

आयोग कें कृषि संकट स' उबारबाक हेतु मुख्यत: निम्नलिखित रणनीति पर सुझाव मंगलक अछि—

1. मृदा संरक्षण एवं विकास,

2. जल संरक्षण, जल स्रोत कें पुन: क्रियाशील करब एवं जलक प्रति बूंद आवक मे बढ़ोतरी हेतु जलक दक्षतापूर्ण उपयोग,

3. ऋण एवं बीमा सुधार,

4. प्रौद्योगिकी वितरण तथा प्रौद्योगिकी एवं आगत आपूर्ति सेवाक समग्र पैकेज,

5. सुनिश्चित एवं परिणामोन्मुख विपणन।

आयोग (राष्ट्रीय कृषि आयोग) महत्वपूर्ण सुझाव कृषि विकासक हेतु देने अछि—कृषि, पशुपालन, मत्स्यपालन, स्वास्थ्य शिक्षा एवं पात्रता स' जुड़ल बहुआयामी एवं मांग आधारित सूचना कें जरूरतिमंद लोक तक शीघ्र पहुंचेबाक कारगर नीति पर बल देने अछि। कृषि कार्यनीति संबंधी अन्य घटक—

1. उन्नत कृषि पद्धति कें अपना कें मौजूद प्रौद्योगिकी स' मामूली अतिरिक्त लागत पर प्रति हेक्टेयर अधिक उपज प्राप्त कयल जा सकैछ।

2. बीज बदलबाक दर कम अछि जाहि स' उत्पादन मे कमी होइछ। बीज उत्पादनक सुधार मे राज्य सरकार प्रमुख भूमिका निभा सकैछ।

3. मृदाक स्थिति मे गिरावट एक पैघ समस्या। राज्य सरकार कें मृदा परीक्षण प्रयोगशाला अवश्य स्थापित करबाक चाहियैक।

4. सहकारी ऋण संस्था कें पुनर्जीवित कयल जाय। राज्य सरकार कें वैद्यनाथन समितिक सिफारिश अवश्य कार्यान्वित करबाक चाहियैक। बिहार सरकार एहि समितिक सिफारिश मानि लेने अछि एवं कार्यान्वित क' रहल अछि।

5. आधुनिक कृषि विपणन प्रबंधनक विकास कें प्रोत्साहित कयल जाय।

6. अनुबंध खेती ओ अन्य कृषि उद्योग संपर्क कें बढ़ायाल जाय।

7. एकफसला कृषिक स्थान पर फार्म प्रणाली दृष्टिकोण अपनायल जाय जाहि मे गैर कृषि-डेयरी, मुर्गीपालन, मत्स्यपालन, पशुधन कें शामिल कयल जाय। कारण जलाभाव क्षेत्रक लेल ई विशेष महत्त्वपूर्ण अछि।

8. अनुसंधानक विकास अवश्य कयल जाय जाहि स' उत्पादकताक समस्याक समाधान कयल जा सकय।

9. भूमिसुधार ओ भूमि अवधि स' जुड़ल मुद्दा पर पुन: बल देल जाय।

11म योजना वर्ष 2007-08 स' प्रारंभ भ' रहल अछि। एहि अवधि मे कृषि क्षेत्र मे 4 प्रतिशत विकासक लक्ष्य रखल गेल छैक जखन कि 10म योजनाकाल मे मात्र 1.7 प्रतिशत लक्ष्य हासिल भ' सकल। पिछला दशक मे कृषि क्षेत्र मे भयानक विफलता भेल। ख्यातिप्राप्त अर्थशास्त्री प्रो. वाई. के. अलघक कथन छनि जे कृषि क्षेत्र मे गिरावटक कारण ग्रामीण रोजगार मे कमी आयल, शहरी-ग्रामीण असमानता मे वृद्धि भेल तथा कृषि क्षेत्र मे निवेश ओ लाभ कम भेल। रोजमर्राक वस्तु महग भेल—

	2004-05 (रुपया/किलो)	2006 (रुपया/किलो)	बढ़ोतरी
आंटा	7.50-8.00	11.50-12.00	50 प्रतिशत
चाउर	7.50-8.00	16-17	112 प्रतिशत
सरिसो तेल	35-36	58-60	66 प्रतिशत
वनस्पति	38-40	60-62	55 प्रतिशत
चीनी	15-16	23-24	60 प्रतिशत

गत 10 वर्षक अवधि मे फसिल कम लगायल गेल तथा नहरि द्वारा सिंचित क्षेत्र मे कमी भेल। देशक लगभग 50 प्रतिशत भूमि बेकार ओ बंजर अछि। देशक 45-50 प्रतिशत क्षेत्र कें सिंचाइक परिधि मे आनब संभव भ' सकैत छैक। वर्षाक कमीवला शेष क्षेत्रक लेल वैज्ञानिक विधि स' वाटर रोड विकासक काज कें प्राथमिकता देब परमावश्यक। बंजर ओ बेकार पड़ल भूमि मे खेतीक लेल ग्राम सभा ओ ग्राम पंचायत कें प्रभावी ढंग स' भागीदार बनायल जाय। सिंचाइक संगे-संग जल-संरक्षण, घरक छत उपर जलसंग्रहण, जलशोधन ओ जलक समुचित प्रयोग समान रूप स' महत्त्वपूर्ण छैक। उन्नत बीज, उर्वरक, ऋण सुविधा, सुनिश्चित विपणन ओ प्रशिक्षण सुविधा उपलब्ध कराक' 4.1 प्रतिशत 11म पंचवर्षीय योजनाक कृषि विकासक लक्ष्य कें प्राप्त कयल जा सकैछ। कृषि आधारित प्रत्येक कार्यक्रम मे ग्रामीण इलाका मे रोजगारक अवसर सृजन करबाक पूर्ण संभावना छैक। एकरहि पालन कयला स' शहरक दिस पलायन कें रोकल जा सकैछ। तखनहि सर्वांगीण आर्थिक विकास संभव।

बजारवादक प्रभाव स' भारतक कृषि विकास संकट मे अछि। राष्ट्रीय कृषि आयोगक सदस्य अतुल कुमार अंजानक कथन छनि—किसानक स्थिति पर दु:ख व्यक्त करब सरकारक रुटीन काज भ' गेल छैक। योजना आयोग भारतक गांव ओ किसानक खिलाफ षड्यंत्रक केंद्र थिक। कॉरपोरेट ठीकाक खेती ओ कॉरपोरेट खेतीक माध्यम स' सरकार पैघ व्यावसायिक हेतु कृषियोग्य जमीनक जोगाड़ क' रहल अछि। विश्व व्यापार संगठनक प्रावधानक माध्यम स' 10 फीसदी कृषि उत्पादक निर्यातक पालन करबाक छैक। राष्ट्रीय ओ राजकीय बीज निगमक भूमिका

नगण्य अछि ओ नकली बीज ओ खादक भरमार छैक। बीज ओ खाद्य प्रसंस्करणक क्षेत्र मे आब सब स' पैघ बहुराष्ट्रीय कंपनी मोनसेंटो ओ कारगिल कब्जा जमा चुकल अछि। विश्व बैंकक दबाव ओ विश्व व्यापार संगठनक वाध्यता एहि कंपनीक पक्ष मे छैक। कृषि शोध विकास ओ मार्केटिंगक लेल भारत-अमेरिकाक बीच समझौता भेल अछि। एकर बाद बोर्डक गठन भेल छैक, जाहि मे बहुराष्ट्रीय कंपनी मोनसेंटो, वॉलमार्ट ओ एडीएम शामिल अछि। आब यैह भारतीय कृषिक भावी रणनीति तय करय मे अपन दखल देत। सरकार कृषि क्षेत्र कें विशाल निजी कंपनीक हाथ मे सोंपि रहल अछि। कॉरपोरेट ठीका पर खेतीक माध्यम स' किसानक जमीन किछु वर्षक लीज पर मनमानी खेती करत। उर्वरकक अधिक प्रयोग स' जखन जमीनक उत्पादन क्षमता चौपट भ' जायत किसान कें खेत वापस क' देल जायत। एहि स' किसानक आत्महत्याक ब्लूप्रिंट तैयार कयल जा रहल अछि। टिकाऊ खेतीक दिन खतम भेल आ वाणिज्यिक खेती जोर-शोर स' चालू भेल अछि। फलस्वरूप, भोजन सुरक्षा खतम भ' रहल छैक ओ भूख स' मृत्युक सिलसिला जारी अछि। देश मे अन्नक संकट अछि। भारी मात्रा मे गहूंमक आयात कयल जा रहल छैक। 1998-2006क बीच सरकारी रेकर्डक अनुसार 1,42,000 किसान आत्महत्या क' चुकल छथि। पंजाब ओ हरियाणा मे पूरा-पूरी खेतीक मॉडल बिखरि गेल छैक।

अगिला पांच साल मे कृषिक विकास दर 1.2 फीसदी स' बढ़ाक' 4 प्रतिशत करबाक लक्ष्य छैक। योजना आयोग कृषि क्षेत्रक विकासक लेल जे प्रारूप तैयार कयलक अछि ओहि स' स्पष्ट होइछ जे आब खेती किसानक लेल नहि, कॉरपोरेट क्षेत्रक लेल फायदाक कारोबार थिक। सब्सिडी कम करैत कॉन्ट्रैक्ट खेती (ठीका पर खेती)क माध्यम स' कॉरपोरेट क्षेत्र कें आकर्षित कयल गेल छैक। एहि परिवर्तनक विरोध पारंपरिक कृषक द्वारा हैत। आयोगक राय छैक जे एहन विरोध प्रगतिरोधी हैत। एहि स' किसान तथा उपभोक्ता दुनू कें नोकसान हेतनि। सिंचाइ व्यवस्थाक खस्ताहाल स्वीकार कयल गेल अछि। मात्र 60 प्रतिशत कृषि जमीन सिंचाइ ओ वर्षा पर निर्भर छैक। तकनीकी विकासक लेल निजी क्षेत्रक जोरदार पक्ष लेल गेल छैक। बहुराष्ट्रीय कंपनी बीज, उर्वरक, मार्केटिंग ओ अन्य पर अपन नजरि रखने अछि। निजी-सरकारी पार्टनरशिप खोलबाक सुझाव अछि। अधिक कृषि यंत्रक प्रयोगक मार्ग खोलल गेल छैक जाहि स' कम श्रमिक-शक्ति प्रयोग हैत। निराश करयबला योजना अछि। संप्रति 90 प्रतिशत किसान अपन उत्पाद स' लागत नहि निकालि पबैत छथि। अर्थात् प्रतिवर्ष घाटा मे खेती करबाक लेल अभिशप्त।

बिहार एकटा गरीब ओ पिछड़ल प्रदेश अछि। अपराध ओ बेरोजगारीक भीषण प्रकोप। कृषि एतयक मुख्य व्यवसाय। राज्यक अधिकांश लोक खेती पर निर्भर।

संसाधनक मामिला मे पंजाब, गुजरात ओ अन्य राज्य स' पिछड़ल। राज्यक किसान मात्र खेती नहि कतेको मोर्चा पर संघर्षरत छथि। अपराध, बिजली, बीज, खाद, सिंचाइ, खाद्यान्न कें सुरक्षित गोदाम तक पहुंचायब उचित मूल्य, कृषि ऋण ओ विपणनक नव-नव समस्या झेल रहल छथि। आजुक स्थिति एहन विकराल अछि जे एहि राज्यक माटि अपन बेटा-बेटीक पेट नहि भरि पाबि रहल अछि। एक शानदार अतीतक स्वामी एहि राज्यक लेल एहि स' पैघ दुर्भाग्य की भ' सकैछ? वर्तमान राज्य सरकार आर्थिक विकासक लेल कृतसंकल्प अछि। 11म पंचवर्षीय योजना मे राष्ट्रीय औसत कें हासिल करबाक लेल कृषि, उद्योग ओ सेवा क्षेत्र राज्यक 'ग्रोथ इंजन' हैत। सरकार 8.5 प्रतिशत विकास दर हासिल करबाक हेतु प्रयत्नशीलअछि।

(जनवरी, 2008)

आर्थिक विकास : भारत-चीन

सभ्य मानव समाजक सब स' पैघ समस्या निर्धनता। मानव सभ्यताक सर्वाधिक पैघ अभिशाप तथा सभ्य समाजक माथ पर कलंकक ठोप। असल मे निर्धनता सब स' पैघ पाप तथा सब अपराधक जननी। किंतु, भारतीय निर्धनता दू सय वर्ष स' ब्रिटिश शासनक देन अछि। मुक्ति भेटल 15 अगस्त 1947 कें। देश स्वतंत्र भेल। संविधान निर्माता 'संपूर्ण प्रभुत्वसंपन्न लोकतंत्रात्मक धर्मनिरपेक्ष समाजवादी गणराज्य' निर्माणक स्वप्न देखलनि। समाजवाद शब्द देशक भावी सामाजिक एवं आर्थिक ढांचा कें स्पष्ट करैछ। एकर लक्ष्य एहन राज्यक स्थापना जाहि मे प्रत्येक व्यक्तिक पूर्ण विकास। ब्रिटिश शासनक दासत्व भारतीय अर्थव्यवस्था कें पंगु बना देलक। देशक आर्थिक विकासक लेल कोनो सक्रिय प्रयास नहि कयल गेल। जाहि स' निर्धनताक निर्मम जाल स' मुक्ति पायबाक लाखों प्रयासक बादो हम एखनो पिछड़ले छी। एहि निर्धनता कें दूर क' बहुलताक स्थिति कें उत्पन्न करबाक दृष्टि स' अंग्रेजी शासनकाल देश मे योजनाकरणक मार्ग कें विभिन्न व्यक्ति एवं संस्था द्वारा विचार कयल जाय लागल। एम. विश्वेश्वरैया 1934 मे 'प्लनेड इकोनोमी फॉर इंडिया' नामक पुस्तक मे भारतक आर्थिक विकासक संबंध मे प्रथम रूपरेखा राखल। जवाहरलाल नेहरूक अध्यक्षता मे कांग्रेस आर्थिक विकासक लेल 'नेशनल प्लानिंग कमेटी' नियुक्त कयलकजे अपन मसौदा प्रस्तुत कयलक। 1941 मे 'बंबई योजना' देशक चुनल आठ व्यवसायी देशक आर्थिक विकासक लेल प्रस्तुत कयल। जकर मुख्य उद्देश्य छल 15 वर्षक अंदर प्रति व्यक्ति औसत आय कें दुगना करब। स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद स्पष्ट भ' गेल जे एक व्यापक योजना द्वारा देशक संपूर्ण साधनक समुचित उपयोग स' आर्थिक विकास संभव। 1951-52 स' देशक प्रधानमंत्रीक अध्यक्षता मे योजना आयोग एखन तक दसटा पंचवर्षीय योजना पूरा क' चुकल अछि आ एगारहम पंचवर्षीय योजना मे प्रवेश क' रहल अछि।

स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद 6 अप्रैल, 1948 कें भारत सरकार अपन औद्योगिक नीतिक घोषणा कयल जाहि मे एहि बात पर जोर देल गेल जे देशक उद्योगीकरण मे सरकारक सक्रिय सहयोग परमावश्यक। उद्योग-धंधा कें चारि वर्ग मे विभाजित कयल गेल। पहिल मे अस्त्र-शस्त्रक निर्माण, अणु-शक्तिक विकास तथा रेलवे उद्योग जाहि पर राज्यक पूर्ण स्वामित्व रहत। दोसर श्रेणी मे लोहा एवं इस्पात, कोयला, वायुयान एवं जलयानक निर्माण उद्योग जकर भावी विकासक लेल राज्य पूर्णरूपेण जिम्मेदार रहत। एहि उद्योग मे सरकार निजी उद्योगपति स' सहयोग मांगि सकैछ। तेसर ओ चारिम वर्ग मे शेष उद्योग छल जे निजी क्षेत्रक लेल छोड़ि देल गेल। भारतीय उद्योग कें सार्वजनिक ओ निजी क्षेत्र मे विभाजित कयल गेल। तें एकरा मिश्रित अर्थव्यवस्था कहल गेल। प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरूक नेतृत्व मे राष्ट्रवादक विचारक नव रूप स' निर्माण महत्त्वपूर्ण छल। राष्ट्रवादक ई संस्करणक खास बात छल जे तेजी स' आधुनिक बनबाक जरूरति पर पर्याप्त जोर। लक्ष्य छल जे तर्कबुद्धि कें आधार बनाय राज्य-व्यवस्थाक रचना कयल जाय जे आर्थिक संचय ओ उद्योगीकरणक दृष्टि स' राष्ट्रीय आयाम कें पुनर्संगठन करय। गांधीवादी अर्थशास्त्र कें राष्ट्र-निर्माणक रणनीति स' बाहर क' नेहरू सदृश राष्ट्रवादी बिना विलंब कयने ओहि जमानाक उदीयमान विकास-संबंधी विचार कें राजकीय नीतिक औजार जकां स्थापित क' देल। विकासक अवधारणा द्वितीय विश्वयुद्धक बादक देन थिक। भारत आर्थिक दृष्टि स' एक पिछड़ल राष्ट्र जतय प्राकृतिक संसाधनक प्रचुरता अछि। एतय जानवर, वनस्पति एवं खनिज पदार्थक प्रचुरता छैक। अधिक केशवला काश्मीरी पहाड़ी भेड़ स' राजस्थानक ऊंट, बंगालक हाथी तथा बाघ, उत्तर मे गहूंम, फल ओ देवदारक वृक्ष, गरम निचला भाग एवं तटीय क्षेत्र मे चाउर ओ नारियल, बंगाल, बिहार ओ उड़ीसा मे कोयला, लोहा, अवरख क्षेत्र स' ल' क' मैसूर मे सोना ओ राजस्थान तथा पंजाब मे नोनक पहाड़ उपलब्ध अछि। एतय आर्थिक विकासक विशाल संभावना वर्तमान छैक मुदा समुचित प्रयास नहि भेल छैक। अवाड़ी कांग्रेस स' नेहरूक समाजवादी आर्थिक विकासक सूत्रपात भेल। पंचवर्षीय योजनाक माध्यम स' द्रुत गति स' आर्थिक विकास प्रारंभ भेल। राष्ट्रीय आय 9100 करोड़ रुपया स' बढ़िक' 1965-66 (तेसर पंचवर्षीय योजनाक अंत) 14,640 करोड़ रुपया भेल। अर्थात् राष्ट्रीय आय मात्र एक प्रतिशतक दर स' बढ़ल। सातम योजना कालक अंत तक क्रमश: प्रत्येक योजना काल मे विकासक दर 3.4, 3.2, 2.9, 3.3, 4.3, 5.2 तथा 5.2 प्रतिशत भेल। सातम योजना काल मे कृषिक क्षेत्र मे 4 प्रतिशत, उद्योग तथा खनिज क्षेत्र मे 8.3 प्रतिशत, विद्युत गैस मे 12 प्रतिशत तथा यातायातक क्षेत्र मे 8 प्रतिशत विकासक लक्ष्य छल। पैघ बांध, विराट इस्पात परियोजना, विद्युत (ताप ओ जल) ओ अन्य नेहरूयुगीन आर्थिक विकास भेल। सातम योजना कालक अंत (1990) मे भीषण मुद्रास्फीति देशवासीक

जीवन नारकीय बना देलक। योजना अवधि मे लाइसेंस व्यवस्थाक दोषपूर्ण ढंग स' कार्यान्वित कयल गेल। औद्योगिक जगत मे एकाधिकारक प्रवृति बढ़ल। आर्थिक सत्ता पैघ औद्योगिक घरानाक हाथ मे केंद्रित भ' गेल। एहि समूहक परिसम्पत्ति योजनावधि मे बहुत बढ़ल। आर्थिक सत्ताक केंद्रीयकरणक कारण नेहरूक समाजवाद अपन लक्ष्य स' विमुख भ' गेल। नियोजनक एहि अवधि मे सफलता ओ असफलताक अजीव मिश्रण रहल। भारतीय अर्थव्यवस्था गतिमान भेल। आर्थिक विकास प्रक्रिया चालू भेल। किंतु एहि अवधि मे तीन बेर पड़ोसी देशक आक्रमण तथा युद्धक कारण सुरक्षा व्ययक अत्यधिक भार उठाब' पड़ल। 1965-66 मे अभूतपूर्व अकालक कारण कृषि व्यवस्था डगमगा गेल। एकर प्रभाव संपूर्ण अर्थव्यवस्था पर पड़ल।

देशक आजादीक 44 वर्षक बाद 24 जुलाइ 1991 कें नरसिंह राव सरकार एक नवीन उद्योग नीतिक घोषणा कयल। राष्ट्रीय समाजवादी राज्यक ढांचा कें बदलि देल गेल। ई भारतक ग्लोबलाइजेशन आकि भूमंडलीकरणक शुरुआत छल। एकरा जगतीकरण, वैश्वीकरण, ग्लोबीकरण आदि नाम स' जानय लागल गेल। बांग्ला मे एकरा विश्ववायन कहल जेल। मार्क्सवादी एकरा पूंजीवादी सर्वव्यापीकरण कहल तथा साम्राज्यवाद विरोधी व्यूह रचनाक एलान कयल। एहि नीति स' राष्ट्रवादी सब स' बेसी चिंतित भेलाह। जून 1991 मे विदेशी मुद्रा कोष मात्र दू सप्ताहक आयात भुगतान लायक छल। जुलाइक पहिला तीन दिन मे रुपयाक दू चरण मे बीस प्रतिशत अवमूल्यन कयल गेल। नियति सब्सिडी खतम कयल गेल। 'ग्लोबल गवर्नेंस' चालू भेल। एकर मतलब संयुक्त राष्ट्र, विश्व व्यापार संगठन, नाटो, यूरोपीय संघ, आई एम एफ, विश्व बैंक संगठनक घटक बनहाक' एहन शासन प्रणाली चलायब बुझल जाइछ जाहि पर कोनो एक राष्ट्र-राज्यक नियंत्रण नहि। एहि शासनक पास अभूतपूर्व वित्तीय ओ राजनैतिक शक्ति छैक। अमेरिकाक सामरिक शक्ति तथा यूरोपीय देश ओ जापान-चीनक समर्थन प्राप्त छैक। एकर चरित्र लोकतांत्रिक नहि। शक्ति-हीन राष्ट्र राज्य पर अपन चौधराहट थोपब। प्रश्न अछि जे एहन ग्लोबल गवर्नेस स', 'ग्लोबल डेमोक्रेसी' ओ 'ग्लोबल सिविल सोसाइटीक रचना की संभव अछि। शीतयुद्ध समाप्त भेलाक बाद एक नव तरहक साम्राज्यवाद विश्व कें अपना अधीन करबाक प्रयास कयलक। ई अराजनैतिक, प्रौद्योगिकी आधारित ओ राष्ट्र-राज्य कें कमजोर करयवला नव पूजीवादी साम्राज्यवाद थिक। ई शक्ति कोनो प्रकारक विकल्प सहन करयक लेल प्रस्तुत नहि। असहमतिक सब स्वर कें कुचैल दैछ आकि प्रलोभन द' क' अपना दिस मिला लैछ। एहि हस्त-कौशल कें नागरिक समाजक संस्था स' ल'क' प्रतिरोधक सब रूप पर अजमायल जा रहल अछि।

11म पंचवर्षीय योजनाक प्रारूपक मंजूरी द' देल गेल अछि। अनुमान अछि जे एहि योजनाक अंतिम वर्ष मे भारतक आर्थिक वृद्धि 10 प्रतिशत स' अधिक हैत। यदि अर्थव्यवस्था मजबूत बनल रहत तखने एहि योजनाकालक अंत मे लोकक आमदनी दुगना भ' जायत किंतु समाजक वंचितअछि वर्गक लेल विकासक एहि तेज गति मे कोनो स्थान नहि। 27.5 प्रतिशत भारतक आबादी गरीबी रेखा स' नीचा अछि। 80 करोड़ आबादी कें रोजाना खर्चक हेतु 20 रुपया तक नहि छै। 2020 तक भारत विश्वक एक प्रमुख आर्थिक शक्ति बनबाक स्वप्न देख रहल अछि किंतु ई स्वप्न सफल कोना हैत। यदि देशक बहुसंख्यक आबादी एहि सफलताक समान बंटवारा नहि क' सकय। भारत मे जापान स' तीन गुना अरबपति छथि। लेकिन अपना देश मे गरीबक संख्या जापानक कुल आबादीक चारि गुना अछि। विश्व आय मे भारतक हिस्सा दू प्रतिशत नहि अछि आइ गाम मे मोबाइल फोन, डीजल पंप, केबुल टेलीविजनक बुनियादी सुविधा उपलब्ध अछि मुदा गाम स' पलायन सेहो जारी अछि। ग्रामीण युवक ट्रक मे क्लीनरक काज आकि ढाबा मे थारी-बाटी धो क' जीवन यापन क' रहल छथि। बुनियादी संरचना मे विकास ओ आम आदमीक आयक ह्रास संगे-संग चलि रहल अछि। बुनियादी संरचना अवश्य बनय ओ बढ़य। संगहि आर्थिक नीति एहन बनय जाहि स' आम आदमी, झोपड़ीपट्टी वासी आ ग्रामीणक आर्थिक विकास कें सर्वोपरि स्थान भेटय

वर्ष 2007 मे भारतीय अर्थव्यवस्थाक संवृद्धि औसत 9 प्रतिशत स' उपर छल। कृषि उत्पादन एहि वर्ष 3.8 प्रतिशत बढ़ल जे वर्ष 2006 मे 2.8 प्रतिशत बढ़ल छल। औद्योगिक उत्पादन वृद्धि दर पछिले सालवला रहल। सेवा क्षेत्रक विकास जे 2006 मे 10.6 प्रतिशत छल एहि वर्ष 11.6 प्रतिशत बढ़ल। धान उत्पादनक लक्ष्य छल 11 करोड़ 42 लाख टन जे 11 करोड़ 22 लाख टन हैत। कपास, जूट ओ कुसियारक उत्पादन लक्ष्य स' अधिक हैत। 9 प्रमुख तेलहनक लक्ष्य छल एक करोड़ 85 लाख टन जे 1 करोड़ 61 लाख टन हैत। दलहनक स्थिति दयनीय अछि। दालिक उत्पादन 1996-97 मे 14.24 मिलियन टन छल जे वर्ष 2006-07 मे घटिक' 14.11 मिलियन टन भ' गेल। दालिक मूल्य 30 रुपये प्रति कीलो स' 60 रुपये किलो तक अछि। गरीबक बात के करय, सामान्य आयवला सेहो सुविधा स' खरीद क' नहि खा सकैत छथि। दालिक अभाव मे देशक ग्रामीण क्षेत्रक लोक मे प्रोटीनक बहुत कमी भ' गेल छैक। औद्योगिक उत्पादन, विशेष क' विनिर्मित वस्तुक उत्पादन मे निर्धारित लक्ष्य स' कम वृद्धि भेलाक कारण शेयर बजारक मूल्य सूचकांक मे अप्रत्याशित वृद्धि भेल। मुंबई शेयर बजारक संवेदी सूचकांक 20,000क आंकड़ा पार क' गेल। एक वर्ष मे वृद्धि दर 38.4 प्रतिशत अछि। शेयर बजारक संवेदी सूचकांक वृद्धि स' एक छोट (अंबानी, मित्तल, डीएलएफ ओ अन्य) वर्गक संपदा मे तेजी स' वृद्धि भेल। एहि

स' भारतीयक आर्थिक संवृद्धिक कोनो संकेत नहि थिक। पछिला साल भरि डॉलरक तुलना रुपयाक विनिमय मूल्य बढ़ैत गेल। मार्च 2007 मे एक डॉलरक लेल 43 रुपया 59 पैसा दातव्य छल। वैह आब 39 रुपया 50 पैसा भ' गेल छैक। परिणामस्वरूप निर्यातक परेशानी मे छथि। कारण अपना देशक माल विश्व बजार मे महग होइत जा रहल अछि। जाहि स' देशी मालक बिक्री पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ि रहल छैक। बाध्य भ' भारत सरकार निर्यातक कें सहायता देबाक घोषणा कयलक अछि। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी)क वर्ष 2007क मानव विकास रपट 27 नवंबर 2007 कें जारी कयलनि योजना आयोगक उपाध्यक्ष मोंटेक सिंह अहलूवालिया आ यूएनडीपीक भारत स्थित प्रतिनिधि मैक्सिन ओल्सन। एहि मे कहल गेल जे भारतक लोकक स्वास्थ्य, शिक्षा ओ समृद्धि सुधारबाक दिशा मे प्रगति अल्प भेल। एहि मे 177 देशक मानव विकास रैंकिक निर्धारित कयल गेल आ भारतक स्थान 128 अछि। प्रश्न अछि अंबानी बंधुक समृद्धि बढ़ला स' भारतक आमजन कें की लाभ भेलनि? जाहि विदेशी मुद्राक भंडारक अभावक कारण नेहरूकालीन आर्थिक नीति कें जुलाइ 1991 मे भूमंडलीकरण कयल गेल ओकर प्रभाव स' 11 जनवरी 2008 कें विदेशी मुद्रा भंडार 281 अरब 72 करोड़ 90 लाख डॉलरक नव शिखर पर पहुंचि गेल।

पश्चिम बंगाल मे 30 वर्ष स' मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टीक नेतृत्व मे राज-पाट चलि रहल अछि। ऑपरेशन वर्गा (बटाईदारी)क जोर पर पार्टी राज कयलक। आब देशक मूर्धन्य साम्यवादी ज्योति बसु कहैत छथि राज्यक उद्योगीकरण परमावश्यक आ एखन समाजवादक लक्ष्य पहुंचक बाहर अछि। समाजवाद लक्ष्य अछि आ कायम करबाक अछि। वर्गहीन समाजक गठन बहुत दूर अछि। पूजीवाद पद्धतिक अनुशरण करैत काज कयल जा रहल अछि। सामाजिक कल्याण कार्यक्रम कें लागू रखबाक हेतु निजी पूजीक आवश्यकता। समाजवाद हमर राजनैतिक एजेंडा अछि। हम क्षुब्ध छी एहि महान वरिष्ठ साम्यवादीक उक्ति स'। हिनका मे आ मनमोहन सिंह ओ मोन्टेक सिंह अहलुवालिया मे की फर्क?

ग्रेट ब्रिटेनक संग अफीम युद्ध (1840-42) मे पराजयक बाद साम्राज्यवादी शोषणक कमरतोड़ बोझ चीन कें झेलय पड़लै। साम्राज्यवादी सत्ता चीन कें विदेशी नियंत्रणबला कतेको इलाका मे विभक्त क' देलक। 1920क दशक स' आस्ते-आस्ते माओ-त्से-तुंगक नेतृत्व मे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी देशक विदेशी प्रभुत्व एवं शोषण तथा च्यांग-काई-शेकक तानाशहीक विरुद्ध लोकप्रिय विद्रोह कें संगठित कयलक। 1949 मे चीनी कम्युनिस्ट पार्टीक नेतृत्व मे क्रांतिक जीत भेल। पार्टी घोषणा कयलक जे ओ जनमानसक दु:ख-दर्द कें दूर करत आ समाजवादक निर्माणक आधार पर नव जनतांत्रिक भविष्य आरंभ करत। हिनक क्रांति भूमि ओ आमदनीक विकट विषमताक

अंत कयल। माओक नेतृत्व काल मे चीन समाजवादक जाहि रणनीतिक अनुकरण कयल ओहि मे भारी उद्योग, केंद्रीय आर्थिक योजना, उत्पादनक साधन कें राजकीय स्वामित्व ओ राजनैतिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर पार्टी नियंत्रण पर जोर छल। चीनी क्रांति ओ ओहि स' उपजल राजकीय नीति सफल भेल। देश पर विदेशी प्रभुत्व खत्म भेल। गाम मे सामंती संबंधक अंत भेल। चीनक श्रमजीवी जनता मे प्रत्येक कें रोजगार उपलब्ध भेल। बुनियादी सामाजिक सुरक्षा हासिल भेल। समाजवादी समाज बनल। एहि व्यापक ओ अहम उपलब्धिक लेल पैघ सामाजिक मूल्य चुकाबय पड़ल। 'आगांक दिस लंबा कूद' (1958-61) ओ 'सांस्कृतिक क्रांति' (1966-76)क अवधि मे चीनक सामाजिक जीवन मे भू-चाल मचि गेल। ई सामाजिक उथल-पुथलक कालखंड छल। ढेर लोकक जान गेल। पार्टी औद्योगिक जगत मे जनतंत्रक पक्ष मे नहि छल। औद्योगिक उपक्रमक देखरेख मे कामगार कें पैघ भूमिका देबाक विरोध क' रहल छल। शहरी मेहनतकश मे असंतोष बढ़ि रहल छल। कामगार यूनियनक एकमात्र महासंघ 'ऑल चाइना फेडरेशन ऑफ ट्रेड यूनियन' बेअसर साबित भ' गेल छल। आर्थिक, राजनैतिक ओ सामाजिक प्रवृत्तिक विरोध स' जनसंतोष बढ़ैत गेल। आखिर काल एकर प्रतिफल 5 अप्रैल 1976 कें थ्यानमेन कांडक रूप मे भेल। जनवरी मे चाउक मृत्यु भ' गेल। चाउ सांस्कृतिक क्रांति काल मे हताहत लोकक पक्ष लेने छलाह। चाउक प्रति सम्मान प्रदर्शन कें चीनी सरकार अपन नीतिक आलोचना मानलक। चौक पर अर्पित फूल राताराती हटवा देलक। आंदोलनक रूप ल' लेलक। आंदोलनक मुख्य भूमिका निभायल कामगार लोकनि। चारू दिस पक्षपात, पाखंड ओ असमानताक विरुद्ध जोरदार आंदोलन भेल। सरकारक दमनचक्र सेहो अत्यंत क्रूर रहल। सितंबर 1976 मे माओक निधन भ' गेलनि।

माओक नेतृत्व मे चीनी क्रांति एक ऐतिहासिक घटना छल। एकर बादक दशक मे समाजवादक अधीन अपार सफलता भेटल किंतु एहि सफलताक बादो तीन महत्त्वपूर्ण तथ्य कें नजरअंदाज नहि कयल जा सकैछ। प्रथम, 1976 मे माओक निधनक समय चीनक जनता समाजवादी कार्यक्रम कें साकार करबा मे लागल छल। दोसर 1978 मे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी बजार आधारित सुधार प्रक्रियाक शुरू कयल। कहल गेल जे एहि प्रक्रियाक रूपरेखा समाजवादक निर्माणक प्रयास कें नवजीवन प्रदान करबाक दृष्टि स' प्रस्तुत कयल गेल अछि। अंतिम महत्वपूर्ण बात जे दुनियाभरिक विकास पसंद लोक चीनक घटनाक्रम स' अपन जुड़ाव मानि रहल छथि। ओहि स' प्रेरित भ' रहल छथि। कारण, एहि देशक तेज निर्यातजन्य आर्थिक संवृद्धि कें बजारू समाजवादक गुणक रूप मे देख रहल छथि। बाजारू समाजवादक गुणक पुष्टिक रूप मे। चीन विदेश व्यापार ओ विदेशी निवेशक क्षेत्र मे भूमंडलीकरण कें

अत्यधिक निर्णायक रूप मे अपनौलक। माओक निधन चीनक जनता कें अतीतक प्रयास कें नव रूप स' आकलन करबाक मौका देलक। जाहि मे छल समाजवादक निर्माण ओ देशक आर्थिक विकास। एहि मौका पर देंग सियाओ पिंग राजनैतिक रणनीतिक घाघ साबित भेलाह। सांस्कृतिक क्रांतिक क्रम मे माओ हिनका 'पूजीवादी घुसपैठिया' साबित करैत छलाह किंतु माओक निधन स' तत्काल उत्पन्न अनिश्चितताक देंग भरपूर लाभ उठायल आ 1978क अंत तक चीनक सर्वोच्च नेता बनि गेलाह। बजारू समाजवादक घोषणा कयल। देश मे उत्पादक शक्तिक निर्माणक हेतु बजारू आर्थिक शक्तिक समावेश पर जोर देलनि। कारण, यैह उत्पादनक समाजवादी संबंधक निर्माणक प्रक्रिया कें आगू बढ़ा सकैत अछि। किंतु, चीनक अर्थव्यवस्था चौपट नहि छल। मात्र सांस्कृतिक दशक (1966-76)क बीच औद्योगिक उत्पादनक वृद्धि 10 प्रतिशत छल। 1980क दशक मे चीनक उपर कोनो देशक कर्जा नहि छल। औद्योगिक विकासक तुलना कृषि विकास कम छल। मात्र दू प्रतिशत वृद्धि छल। कम्यून प्रणालीक माध्यम स' चीनक कृषक प्रसन्न छलाह। सार्वजनिक इलाज, आवास, शिक्षा ओ सामाजिक सुरक्षाक लाभ उठा रहल छलाह। माओ युगक प्रारंभ (1949) धन-संपत्तिक विषमता मेटा गेल छल।

देंग अपन राज्यकालक प्रारंभ मे कहल जे चीनक आर्थिक समस्याक समाधानक लेल जरूरी अछि देशक उत्पादक शक्ति कें बढ़ायब नहि कि उत्पादनक समाजवादी संबंधक संग अत्यधिक प्रयोग। उत्पादक शक्ति कें बढ़यवाक हेतु बजारक विशेष प्रयोग। चीनी अर्थव्यवस्थाक बजारीकरण करबाक निर्णय पार्टीक छल। देशक सामने अनेकानेक आर्थिक ओ सामाजिक समस्या उपस्थित छल। एकर समाधानक लेल बजारू शक्ति कें शक्तिशाली करबाक मांगक जनांदोलन नहि भेल। बाजारीकरण कें चीनक जनमानस पर थोपि देल गेल। मुख्य क' खेतिहर कम्यून प्रणाली कें जबर्दस्ती तोड़बाक संबंध मे। माओक नेतृत्व मे विकसित खेतिहर कम्यून प्रणाली कें तोडि क' एकल पारिवारिक ठीकाक व्यवस्था कें लागू कयल गेल। सामूहिक लोक कल्याणक समाजवादी स्वरूप कें ध्वस्त कयल गेल। राजकीय उपक्रम एवं विश्वविद्यालय सहित समाज कुल प्रमुख सांस्थानिक केंद्रक कल्याणकारी व्यवस्था कें बंद करबाक लेल मजबूर कयल गेल। हिनक सुधार प्रक्रियाक प्रत्येक चरण मे तनाव ओ विसंगति उत्पन्न भेल। जकर समाधान बजारीकरणक शक्ति कें विस्तार क' क' कयल गेल। सुधार कयनिहारक युक्ति छल जे 'पूजीवादक प्रयोग स' समाजवादक निर्माण' करब।

दिसंबर 1978 मे चीनी कम्युनिस्ट पार्टीक तेसर प्लेनम संपन्न भेल। बजारीकरण अत्यधिक प्रयोग कें 'समाजवादी आधुनिकीकरण दिस ऐतिहासिक खिसकाव' हासिल करबाक कुंजी कहल। क्षेत्रीय ओ प्रांतीय योजना कें अधिकार देल

गेल, राजकीय फर्मक प्रबंधक कें उत्पादनक संगठन मे अधिक अख्तियार देल गेल। उत्पादनक विविध स्वरूप कें प्रोत्साहन देल गेल, जाहि मे सहकारी ओ निजी फर्म सेहो छल। सुधार पहिने चुनिंदा शहरी क्षेत्र मे चालू भेल। श्रम बजार सुधार लागू कयल गेल। 1983 मे सरकार राजकीय उपक्रम कें आदेश देल जे नव श्रमिक कें सीमति अवधिक अनुबंध पर नियुक्त कयल जाय। एहन श्रमिक कें नोकरीक सुरक्षा ओ राजकीय क्षेत्रक नियमित श्रमिकक कल्याणकारी सुविधा नहि देल जाय। अप्रैल 1987 तक चीन मे राजकीय मिल्कीयतबला उपक्रम मे 75 लाख ठीकाक मजदूर बनयवाक प्रयास भ' रहल छल। सुधार प्रक्रियाक अंतर्गत निजी उपक्रम जाहि मे परिवारक सात लोक काज करैत छलाह एहि सीमा कें खत्म क' देल गेल। जाहि स' निजी क्षेत्र मे श्रमिकक संख्या 2 लाख 40 हजार स' बढ़िक' 1984 मे 34 लाख भ' गेल। 1983 मे विदेशी निवेश प्रतिबंध कें ढील क' देल गेल। विदेशी मिल्कीयत वला उपक्रम स्थापित करबाक स्वीकृति दय देलक। सितंबर 1980 मे सुधार प्रक्रियाक अंतर्गत समूहीकृत खेतिहर कम्यून कें भंग करब शुरू क' देल गेल। एकरा स्थान पर परिवार आधारित उत्पादन व्यवस्था शुरू कयल गेल। जमीन एखनो सार्वजनिक संपत्ति छल। असलियत मे निजी जायदाद छल। कम्यून प्रणालीक अंत भ' गेल। 1982 मे नव संविधान लागू भेल। कम्यूनक सब शक्ति नवगठित नगर क्षेत्रीय ओ ग्रामीण सरकार कें सोंपि देल गेल। जे कम्यूनक औद्योगिक संपत्ति पर अपन कब्जा क' लेलक। नगर उपक्रमक संख्या मे अत्यधिक वृद्धि भेल। 1987 मे जे 15 लाख छल, बढ़िक' 1993 मे 2.50 लाख पहुंच गेल आ श्रमिकक संख्या 12 करोड़ 30 लाख छल जे 1978 मे मात्र 2 करोड़ 80 लाख छल। चीनी सरकार निजीकरण ओ बजारीकरण स' उत्साहित भ' गेल छल। कम्यून प्रणालीक अंत भेला स' ग्रामीण बुनियादी संरचना ओ सामाजिक समर्थन व्यवस्था ध्वस्त भ' गेल। अन्नक उपजा मे गिरावट आयल। कृषक कें अपन ओ परिवारक जीवन-यापन कष्टकर भ' गेलनि। कृषि छोड़ि ग्रामीण ओ शहरी औद्योगिक काज मे लागि गेलाह।

1982 मे 12म पार्टी कांग्रेस मे आर्थिक योजना कें मुख्य ओ बजारीकरण नियमन कें दोयम स्थान प्रदान कयलक। 1984 मे 12म कांग्रेसक तेसर पलेनम मे 'योजनाबद्ध माल अर्थव्यवस्था'क अवधारणा कें अपना लेलक। एहि तरहें बजारू शक्तिक हैसियत कें उंच क' देल गेल। नव सुधारक अंतर्गत राजकीय उपक्रम पर केंद्रीय नियंत्रण ओ केंद्रीय सहायता कम क' देल गेल। अतीत मे राजकीय उपक्रम कें तमाम धनराशि राज्य सत्ता स' प्राप्त होइत छल। तें हेतु राजस्व राजसत्ता कें द' देल जाइत छल। नव सुधार मे ई व्यवस्था बंद क' देल गेल। राजकीय उपक्रम कें राजकीय बैंकिंग प्रणाली स' कर्ज ल'क' काज करबाक व्यवस्था कयल गेल। जाहि स' दुर्लभ पूजीक

दुनू देशक तुलनात्मक अध्ययन

1. वर्ष 2004 मे भारत मे 1,81,000 करोड़ रुपया प्रत्यक्ष विदेशी निवेश आकर्षित कयल गेल। मुदा चीन एहि अवधि मे 11,39,000 करोड़ रुपया आकर्षित कयलक।
2. भारतक विदेशी मुद्रा ओ स्वर्ण भंडारक मूल्य छल 7,85,000 करोड़ रुपया जखन कि चीनक छल 43,00,000 करोड़ रुपया।
3. भारत मे 2 प्रतिशत ऋण माफ कयल गेल। चीन कयलक 20 प्रतिशत।
4. वर्ष 2005-06 मे भारतीय रेल 576 अरब यात्री किलोमीटर तय कयलक ओ चीनक रेलवे 571 अरब यात्री किलोमीटर कयल।
5. भारत मे 2005 मे 25,60,000 करोड़ रुपया छल बजार पूजीकरण शेयर बजार मे। वैह चीन मे 3630 करोड़ रुपया छल।
6. 2004 मे 1,86,000 करोड़ रुपया मूल्यक सेवा निर्यात भेल छल भारत मे। एहि अवधि मे चीन स' निर्यात भेल छल 2,90,000 करोड़ रुपया।
7. वर्ष 2003 मे भारत मे 5,58,000 वर्ग किमी सिंचित भूमि छल। वैह चीन मे मात्र 5,45,960 वर्ग किमी भूमिक लेल सिंचाइ सुविधा छल।
8. 86 प्रतिशत भारतीय कें साफ जल उपलब्ध छनि जे चीन मे 77 प्रतिशत लोक कें छनि।
9. वर्ष 2005 मे 80,466 भारतीय छात्र अमेरिका मे छलाह। एहि काल मे 62,523 चीनी छात्र ओहि देश मे छलाह।
10. भारतीय अमेरिकीक औसत आय 12 लाख रुपया छनि। चीनी अमेरिकीक 9.30 लाख रुपया आ श्वेत अमेरिकीक औसत आय छनि 10.98 लाख रुपया।
11. भारतीयक औसत उम्र छनि 64.71 वर्ष ओ चीनीक औसत उम्र छनि 72.58 वर्ष।
12. भारत मे जीडीपीक 2.5 प्रतिशत सेना पर खर्च कयल जाइछ। चीन मे जीडीपीक 4.06 प्रतिशत सेना पर खर्च होइछ।
13. भारत मे 5 वर्ष तकक बच्चाक मृत्यु दर 85 प्रतिशत छैक जे चीन मे मात्र 31 प्रतिशत अछि।
14. प्रत्येक नागरिक पर भारत मे शोध ओ विकास पर 920 रुपया खर्च होइछ जे चीन मे एहि मद पर 2612 रुपया खर्च कयल जाइछ।
15. प्रति 10 लाख व्यक्ति पर 119 लोक भारत मे शोधकर्त्ता ओ विकास अनुसंधानकर्त्ता छथि। चीन मे प्रति 10 लाख व्यक्ति पर 663 लोक छथि।
16. वर्ष 2004 मे भारत स' 13,200 करोड़ रुपयाक हाइटेक निर्यात भेल। एहि काल मे चीन स' 7,50,842 करोड़ रुपयाक निर्यात भेल छल।
17. भारत कें विश्व बैंक आकलन सूचकांक मे 2.61 अंक प्राप्त भेल। चीन कें 4.21 अंक भेटलनि।
18. वर्ष 2001 मे भारतक दिस स' 11,076 लेख प्रकाशित भेल विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी पत्रिका मे। एहि काल मे चीनक दिस स' 20,978 लेख प्रकाशित भेल छल।
19. आविष्कारक हेतु भारत कें 3.72 अंक प्राप्त भेल जखन कि चीन 4.74 अंक प्राप्त कयलक।
20. वर्ष 2001 मे अमेरिकी पेटेंट एंड ट्रेडमार्क आफिस द्वारा 231 पेटेंट भारतक मंजूर कयल गेल। एहि वर्ष मे चीनक 298 पेटेंट मंजूर भेल छल।
21. वर्ष 2001-2005 मे 55 उपग्रह प्रक्षेपित कयल गेल जाहि मे भारतक हिस्सेदारी 2 प्रतिशत छल ओ चीनक हिस्सेदारी छल 9 प्रतिशत।
22. प्रति हजार लोक मे 32 गोटे भारत मे इंटरनेट व्यवहार करैत छथि। चीन मे ई संख्या 73 अछि। संगहि भारत मे प्रति 100 लोक पर ब्रॉडबैंड ग्राहक मात्र 0.6 छथि। जखन कि चीन मे हिनक संख्या 16.5 अछि।
23. भारत मे प्रतिवर्ष 5 लाख डाक्टर बनैत छथि। चीन मे मात्र 11027 डाक्टर बनैत छथि।
24. वर्ष 2005 मे 9070 डॉक्टरेट डिग्री भारत मे देल गेल। ओहि अवधि मे ई डिग्री चीन मे 6000 लोक कें देल गेल।
25. भारत मे प्रतिवर्ष 3.5 लाख इंजीनियर बनैत छथि। चीन मे 6 लाख इंजीनियर बनैत छथि।
26. 57 लाख स्कूली शिक्षक छथि भारत मे जखन कि चीन मे 22 लाख शिक्षक छथि।
27. भारत मे प्राथमिक स्कूल मे शिक्षक ओ छात्रक बीच अनुपात अछि 1:41क बीच। चीन मे ई अनुपात अछि 1:21क।
28. भारत मे पुरुष साक्षर छथि 73 प्रतिशत आ चीन मे 95 प्रतिशत पुरुष साक्षर छथि।
29. 50 लाख पांडुलिपि अछि भारत मे। चीनी मे 69 लाख पांडुलिपि छैक।
30. फार्चुन 500क 125 कंपनी भारत मे अपन शोध इकाई स्थापित कयलनि अछि ओतहि चीन मे 400 कंपनी।

उपयोग विवेकपूर्ण ढंग स' होबय लागल। एहि स' अति उत्पादन ओ अन्य चीजक किल्लतक गंभीर समस्याक निराकरण भ' गेल। राज्य सत्ता उत्पादन ओ निवेशक फैसला बजारक शक्ति पर भरोस करय लागल। 1984 मे पार्टी उपभोक्ता ओ खेतिहर वस्तुक मूल्यक निर्धारण बजारक शक्ति कें घटाबय ओ बढ़ाबयक अधिकार द' देलक। मात्र बुनियादी औद्योगिक ओ इस्पात, कोयला, पेट्रोलियम ओ अन्य अनिवार्य औद्योगिक उत्पादनक मूल्य केंद्रीय सरकार द्वारा तय होअय लागल। 1982 मे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी नव संविधानक अंतर्गत हड़ताल करयक अधिकार कें खतम क' देलक। राजकीय कामगार कें रोजगार गारंटी व्यवस्था खतम करबाक प्रस्ताव पेश कयलक। एहि पर भयंकर विवाद भेल। नव बहालिक लेल अनुबंध प्रणाली एक खास अवधिक लेल तथा प्रबंधक ओहि अवधि स' पहिने हटा सकैत छथि यदि ओ व्यक्ति पर्याप्त रूप स' उत्पादक नहि छथि। अनुबंध पर बहालीक प्रणालीक श्रमिक द्वारा जमि क' विरोध भेल। राज्य सत्ता विदेशी निवेश कें उच्च प्राथमिता देलक। चीन अपन सीमा कें विदेशी निवेशकक लेल खोलि देलक। विदेशी निवेशक चीनक श्रमिकक सस्त वेतनक लाभ उठायल आ अपन आवश्यक वस्तु कें चीन मे बनबय लगलाह। प्रसिद्ध

अमेरिकी उद्योगपति वालमार्ट चादरि बनयबाक तकनीक चीनी उद्यमी कें उपलब्ध करायल ओ तैयार माल अमेरिका पठा देल गेल। 80क दशकक प्रारंभ मे चीन 'अति विशिष्ट क्षेत्र' (सेज)क स्थापना कयल। चीन एशियाक कारोबारी केंद्र हांगकांग मे सेज स' भेटल सफलता स' अपना ओतय एकर स्थापना कयल। हिनका पास सेज कें आगू बढ़यवाक लेल एक मास्टर प्लान ओ ढांचा छलनि। एहि योजनाक अंतर्गत उत्पादनक ओ उद्योगीकरणक लेल पैघ शहरक स्थापना कयल। विदेशी कंपनी कें भारी-भरकम रियासत देल। फलस्वरूप, चीन कोन चीज नहि बनबैत अछि ओ विश्व बजार मे बेचैत अछि। चारि सेज क्षेत्र स' चौदह अन्य तटवर्ती शहर कें विदेशी निवेशक लेल खोलि देल गेल। जाहि मे पर्ल नदीक डेल्टा, मिन नदीक डेल्टा ओ यांगत्शे नदीक डेल्टा अर्थात तटवर्ती क्षेत्र। मार्च 1987 मे चीनी कम्युनिस्ट पार्टीक महासचिव झाओ जियांग विदेशी निवेशक कें आमंत्रित कयल। चीनी विशिष्टताक संग साम्राज्यवादक प्रशस्त मार्ग पर आगू बढ़ल। निरंतर बढ़ैत निर्यातवला अर्थव्यवस्थाक विकास। मुद्रास्फीति, वास्तविक मजदूरी मे गिरावट, विदेश व्यापार मे घाटा ओ बजट घाटाक समस्या जगजाहिर भेल। 1980-89क बीच चीनक वास्तविक सकल देशीय उत्पाद मे औसत 9.7 प्रतिशतक वृद्धि भेल। शहरी उद्योग कें ग्रामीण उद्योगक अपेक्षा विशेष महत्त्व देल गेल। बढ़ैत दामक कारण कृषि उत्पादन दर मे ह्रास भेल। 1989-91 मे कृषि उत्पादन मे सालाना दू प्रतिशतक वृद्धि भेल। ग्रामीण बेरोजगारी तेजी स' बढ़ल। बेरोजगार रोजगारक खोज मे शहर दिस पलायन करय लगलाह।

अक्टूबर 1992 मे 14म पार्टी कांग्रेस मे चीनी विशेषताक संग समाजवादी बजारू अर्थव्यवस्था स्थापित करबाक संकल्पक एलान कयल। राजकीय उपक्रमक प्रति अपन पुरान प्रतिबद्धता कें त्याग कयलक। राजकीय उपक्रमक निजीकरण कयल गेल। सैन्य उपक्रम ओ असाधारण उपादन मे लागल राजकीय उपक्रम अपना अधीन राखलक। राजकीय कर्म पट्टा पर ओ बेचल गेल। निजीकरणक नीति कें विस्तार कयल गेल। 1996क अंत तक 4300 राजकीय उपक्रम संयुक्त पूंजी कंपनी मे बदलि देल गेल। सितंबर 1999 मे 15म पार्टी कांग्रेसक चारिम प्लेनम मे निजीकरण अभियानक विस्तार क' ओहि मे राजकीय स्वामित्ववला मध्यम ओ लघु उपक्रम कें शामिल क' लेल गेल। जुलाइ 2000 मे पेकिंग शहरक सरकार एलान कयल जे तमाम लघु ओ मध्यम राजकीय उपक्रम मे राजकीय ओ सामूहिक मिलकियत कें अगिला तीन साल मे खत्म क' देल जाय। परिणामस्वरूप 2001 तक कुल औद्योगिक रोजगारक 15 प्रतिशत ओ आंतरिक व्यापार मे कुल 10 प्रतिशत स' कम राजकीय उपक्रम मे भेल छल। चीनक सुधार कार्यक्रम राजकीय नियोजन ओ आर्थिक गतिविधिक राजकीय दिशा निर्देशनक कारगरता कें कमजोर कयल। आर्थिक समृद्धिक एहन मॉडल कें

अपनयबाक बढ़ावा देल जे निरंतर विदेशी पूजी ओ निर्यात पर आश्रित होअय। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी 'समाजवादी बजारू अर्थव्यवस्थाक नाम पर आर्थिक रूपांतरणक जे प्रक्रिया चलायल ओ एहन अर्थव्यवस्था स्थापित कयल जकरा समाजवाद स' कोनो मतलब नहि। एहि व्यवस्था कें समाजवाद मानल नहि जा सकैछ। चीनक सरकार विदेशी निवेश आकर्षित करवाक लेल कतेको नीति अपनायल। 1999 तक विदेशी निवेश तटवर्त्ती इलाका मे कयल गेल। जाहि मे अधिकतर निवेश विदेश मे रहनिहार चीनी लोक कयलनि। 1990 दशकक प्रारंभक बाद अमेरिकी, यूरोपीय ओ जापानी निवेशक अपन हिस्सा अत्यधिक बढ़ा लेलनि। 2006 मे चीनक निर्यात 30,000 अरब रुपया छल। शेंझेन चीनक सब स' पैघ सेज 493 वर्ग किमी मे अछि। पिछला 17 वर्ष मे शंघाईक पुडोंगक पास 15,000 विदेशी निवेशक छथि। हिनक निवेश 1320 अरब रुपया छल। एतय 300 बहुराष्ट्रीय कंपनी अछि। एहि मे अधिकांश यूरोपक अछि। मात्र पुडोंगक प्रतिव्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 6 लाख रुपया, शंघाईक 2 लाख 80 हजार आ चीनक मात्र 40 हजार अछि। मा शियूजीक शब्द मे 'बजार अर्थव्यवस्था सामाजिक विकासक रास्ता थिक'। चीनक जीडीपी 10 प्रतिशत स' बेसी अछि। बीजिंगक पांच रिंग रोड ओ क्रॉसिंगक तुलना दिल्लीक धौलाकुंआक फ्लाई ओवर बौना अछि। 2020 मे चीन सब क्षेत्र मे अमेरिका स' उपर भ' जायत। पूजीपति कें पार्टीक सदस्य बनायल जा रहल अछि। चीन मे धनवान ओ गरीबक बीच दूरी भारत स' बेसी अछि। प्रश्न अछि चीनी समाजवाद कायम रहल आकि समाजवादक अंत?

भारत आ चीन दुनू विश्वक विशाल देश। दुनू देशक आर्थिक विकासक चर्चा हम एहि छोट लेख मे संक्षेप मे कयल अछि। आब एक तुलनात्मक दृष्टि स' एकरा प्रस्तुत करबाक प्रयास क' रहल छी। भारत साम्राज्यवादी अंग्रेज बहादुरक चाङुर स' 1947 मे मुक्ति पौलक। चीनक मूर्धन्य साम्यवादी नेता माओत्से तुंगक नेतृत्व मे 1949 मे च्यांग-काई-शेकक तानाशाही स' देश कें स्वतंत्र कयलनि। भारत ओ चीन, दुनू देश पारंपरिक दृष्टि स' कृषि प्रधान देश। दुनू देशक जनसंख्या आधा स' अधिक कृषि पर आधारित। विशाल जनसंख्या बला दुनू देश आइ खाद्य सुरक्षाक प्रति गंभीर। आइ स' 25 वर्ष पहिने दुनूक स्थिति एक समान छल। वर्ष 2006 मे भारतीय कृषिक विकास दर 2.7 प्रतिशत छल जे पिछला 15 वर्ष स' चीन मे विकास दर 4-5 प्रतिशतक बीच रहल। वर्ष 2005 मे चीन विश्वक सब स' पैघ खाद्यान्न आपूर्ति करयबला देश बनि गेल। चीनी फसिलक उत्पादकता आ विविधीकरण भारत स' आगू अछि। भारत मे धानक औसत उपजा 2003-2005क बीच 30.34 क्विंटल प्रति हेक्टेयर छल जे चीन मे 62.33 क्विंटल प्रति हेक्टेयर भेल छल। गहूंमक उपजा 26.88 क्विंटल प्रति हेक्टेयर जे चीन मे छल 41.55 क्विंटल। तेलहन मे भारत मे चीनक आधा उपजा होइत अछि।

बागवानी क्षेत्र (फल ओ तरकारी) वर्ष 2003 मे 4500 लाख टन उत्पादन भेल छल जे भारत मे 1350 टन छल। चीन मे पशुपालन ओ मत्स्यपालनक कृषि उत्पादन मे 2005 मे योगदान 45 प्रतिशत छल जे भारत मे मात्र 30 प्रतिशत अछि। चीन मे कृषि विविधीकरण स' कृषि आय मे वृद्धि भेल छैक। चाइनीज एग्रीकल्चरल पॉलिसी सेंटरक निदेशक हुआंग जिकुनक कथन छनि जे मुख्य तीन कारण स' एतय कृषि उपज अधिक होइछ। अनुसंधान एवं विकास कार्य द्वारा तकनीक मे सुधार, ग्रामीण आधारभूत सुविधा मे बढ़ैत निवेश आ तेसर उदारीकृत कृषि नीति। वर्ष 2006 मे चीन कृषि क्षेत्रक अनुसंधान ओ विकास मे 1.5 अरब डॉलर निवेश कयल। संप्रति ओतय 1000 अनुसंधान एवं विकास केंद्र कार्यरत अछि एवं उन्नतशील प्रजाति विकसित कयल। भारत मे 30,000 कृषि वैज्ञानिक काज क' रहल छथि तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा जारी कयल गेल एक सूचनाक अनुसार 1997-2001क बीच 50 प्रतिशत प्रजाति कमि गेल। 15 वर्ष पूर्व बिहार सरकार उन्नत बीज फार्म सब मे चरवाहा विद्यालय ओ पहलवान विद्यालय बना देलक। उन्नत बीज कृषि कें भेटब बन्द भ' गेल। चरवाहा विद्यालय सेहो बंद पड़ल अछि। कृषिक विकास कोना हैत? मात्र अनुसंधान एवं विकास स' चीनक कृषि एतेक उन्नति नहि कयलक। सरकार सड़क, भंडारण एवं अन्य विपणन सुविधा मे निवेश द्वारा कृषिक विकास कें संभव कयलक अछि। संगहि उदारीकृत कृषि नीति जाहि मे क्षमता ओ समदृष्टि (इक्विटी) पर विशेष ध्यान देल गेल छैक। भारतीय कृषक, नीति नियंता ओ कृषि वैज्ञानिक कें चीनक कृषि विकासक पद्धति स' सबक लेबाक चाहि यानी ओ कृषि क्षेत्र मे आमूल-चूल परिवर्तन करबाक चाहियनि। दृश्य अपना ओतय उल्टा अछि। भारत खाद्यान्नक मामिला मे दूसाल पूर्वहि आत्मनिर्भर भ' गेल छल। संप्रति गहूंम ओ चीनी आयात करबाक हेतु बाध्य भ' गेल अछि।

चीन भारी मात्रा मे विदेशी निवेश आकर्षित क' क' 12-13 प्रतिशतक विकास दर हासिल कयल। विश्व बैंकक आंकड़ाक अनुसार 1998-99 मे भारत मे 6 अरब डॉलर विदेशी निवेश भेल। जखन कि एहि अवधि मे चीन मे 43 अरब डॉलर विदेशी निवेश आयल। भारतक बचत दर 20 प्रतिशत तथा विकास दर 6.9 प्रतिशत छल। चीनक बचत दर 42 प्रतिशत छल ओ विकास दर 7.2 प्रतिशत छल। चीनक वास्तविकता यैह छैक जे उच्च बचतक कारण विकास दर मे वृद्धि नहि होइत छैक। कारण ओहि वृद्धि कें विदेशी निवेश खा जाइत छैक। विदेशी निवेशक अपन पूजी पर लाभांश स्वदेश कें पठबैत छथि। चीनक विकास नीतिक तीन अंग छैक—भारी मात्रा मे विदेशी निवेश, उच्च बचत दर ओ सुशासन। उच्च बचत दर सुशासन पर निर्भर करैछ। हिनकर मत छनि एक कें फांसी द' कें सय व्यक्ति कें सावधान करू। न्यायमूर्ति

गाओ चांगुली भ्रष्टाचारक मामिला मे आजीवन हिरासत मे ल' लेल गेलाह। हारबिन नामक शहरक उपमहापौरक घर स' 225 हजार डॉलर नकद बरामद भेल। हिनका आजीवन कारावास द' देल गेल। 1931 मे जवाहरलाल नेहरू कें एहन भ्रष्टाचारक बारे मे पूछल गेलनि। उत्तर छलनि जे एहन व्यक्ति कें हम लैंप पोस्ट मे बान्हि कें सुट क' देबनि। भारतक अपन दीर्घ शासनकाल मे एकोटा एहेन फांसी नहि देलथिन। भारत मे भ्रष्टाचार ओहि काल स' आबि रहल अछि। आब भ्रष्टाचार सदाचार भ' गेल अछि। भारत सरकार सरकारी बचतक कोनो प्रयास नहि करैत अछि। सत्तरिक दशक मे सरकारी बचत 3.7 प्रतिशत, अस्सीक दशक मे 3.00 प्रतिशत, पूर्वार्द्ध मे 1.5 प्रतिशत ओ वर्ष 1998-99 मे शून्य प्रतिशत। चीनक विकासक रहस्य छैक निरंतर बढ़ैत जा रहल बचत दर ओ घरेलू सुशासन। भारत चीन स' बचत एवं सुशासनक सबक ल' सकैत अछि। विदेशी निवेश स' नोकसानक आकलन हाबर्ड विश्वविद्यालयक प्रो. हुआंग एहि तरहें कयलनि अछि, 'विदेशी निवेशक अधिकाधिक लाभ विदेशी कंपनी कें देल गेल छैक। चीन मे कार्यरत विदेशी कंपनी द्वारा लाभांश प्रेषण 1995 मे 5 अरब डॉलर प्रतिवर्ष छल जे वर्तमान मे 30 अरब डॉलर पहुंचि गेल छैक। विदेशी निवेशक द्वारा लगायल गेल प्रोजेक्टक 85 प्रतिशत लाभ बाहर चल जाइत छैक। घरेलू अर्थव्यवस्थाक लेल मात्र 15 प्रतिशत रहि जाइत छैक।

पछिला 15 वर्ष स' प्रत्यक्ष विदेशी निवेश भक्षक आकि रक्षक थिक, एहि पर तर्क-वितर्क चलि रहल छैक। अपना देशक पिछला तीन वित्तमंत्री प्रत्यक्ष विदेशी निवेश कें रक्षक कहल जखन किस्वदेशी जागरण मंच ओ वामपंथी एकरा भक्षक कहल। अर्थशास्त्री डा. भरत झुनझुनवाला प्रत्यक्ष विदेशी निवेशक घोर विरोधी छथि। चीन आब विदेशी निवेश पर सख्ती क' रहल अछि। चीन मे विदेशी निवेशक कें 15 प्रतिशतक दर स' आयकर दातव्य छल जखन कि घरेलू उद्यमी कें 33 प्रतिशत आयकर देय छलनि। आब दुनू उद्यमी कें 25 प्रतिशत आयकर देब जरूरी भ' गेल छनि। पूर्व मे चीन मे निर्यात आधारित विदेशी निवेश कें छूट छलै। आब निर्यात पर प्रतिबंध लगायल जा रहल छैक। किंतु आधुनिक तकनीक पर आधारित विदेशी निवेश के विशेष प्रोत्साहन प्रदान करबाक नीति बनायल गेल छैक। भारतक वित्त मंत्री विदेशी निवेश कें खुजल सुविधा देबय चाहैत छलथिन, मुदा आंतरिक विरोधक कारण निवेशक सुविधा नहि देल जा रहल छनि। मनोहर श्याम जोशी ('आउट लुक' साप्ताहिक 25 जुलाइ 2005) लिखैत छथि—चीन अमेरिकी बहुराष्ट्रीय पूजीवाद कें अपन बिजनेस पार्टनर बना लेने छथि। किंतु अमेरिका कें अपन प्रतिद्वंद्वी मानि रहल छथि। अमेरिका कें विश्वास छलनि जे ओ चीन कें अपना प्रभावक्षेत्र मे क' लेताह आ ओतय स' साम्यवाद कें उखाड़ि फेंक देताह। किंतु चीन प्रत्येक क्षेत्र मे हुनक

प्रतिद्वंद्वी बनि गेल छथि आ एखनो कम्युनिस्ट छथि। सांस्कृतिक दृष्टि स' अपना समाज कें अमेरिकी नहि बनय देने छथि। लोक कें व्यापार-धंधाक लेल अंग्रेजी सिखा देल गेल छनि। संगहि चीनी भाषा कें अंतरराष्ट्रीय महत्त्व देने छथि। डा. महीप सिंह कहैत छथि जे चीन कें देखला स' प्रतीत होइछ समाजवाद अपन नव परिभाषा ग्रहण क' रहल अछि। साम्यवादी व्यवस्थाक निरंकुश शासनतंत्र ओ पूजीवादी व्यवस्थाक उन्मुक्त बजार कान्ह मे कान्ह मिला क' चलि रहल अछि, यैह थिक आजुक चीन।

विश्व बजार मे एहि वर्ष मंदी अछि किंतु चीनी उत्पादनक मांग लगातार बढ़ि रहल अछि। भारतक अर्थव्यवस्था इंग्लैंड स' पैघ होयबाक संभावना अछि। पछिला साल भारतक अर्थव्यवस्था मे 9 प्रतिशत बढ़ोतरी भेल छैक। विकसित विश्व मे असुरक्षाक भावना ओ मंदीक भय छैक किंतु चीन ओ भारत मे मंदीक आशंका नहि छैक। भारत मे करोड़ो लोक बेहद गरीब आ असुरक्षाक जीवन व्यतीत क' रहल छथि। उद्यमक कमाइ छनि क' नींचा तक नहि जा रहल अछि। शहर ओ गाम मे भारी अंतर छैक। चीनक शंघाई आकि बीजिंग मे मल्टी लेन हाइवेक निर्माण होइछ एवं तैयार भेला स' कार स' भरि जाइछ। एकर विपरीत ढांचागत सुविधा मे निवेशक मामिला मे भारत बहुत पाछू अछि। मुंबई के शंघाई बनयबाक बराबरि चर्चा होइछ। दुनू शहरक आबादी मोटा-मोटी समान अछि। शंघाई पूर्ण विकसित अछि। झुग्गी-झोपड़ी देखय मे नहि आयत। मुंबई मे एशियाक सब स' पैघ स्लम एरिया अछि। चीनी राष्ट्रपति हू जिनताओ दिसंबर 2006 मे भारत आयल छलाह। चीन चाहैत अछि जे भारतक संग मुक्त बजार व्यापार समझौता होअय जाहि स' चीनी माल बरोकटोक भारत आबि सकय। दुनू देश मे आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, वैज्ञानिक ओ तकनीकी सहयोगक लेल 13 समझौता कयल गेल किंतु भारत चीन कें मुक्त व्यापारक छूट नहि देल ओ चीन भारतक सीमा, परमाणु-समझौता आकि सुरक्षा परिषदक मामिला मे कोनो ढील देने अछि। व्यापार, वीजा, सुविधा, पर्यटन, बहुविध सहयोग आदि अपन अंदरुनी आवश्यकताक कारण भेल छैक। सहज सौहाद्र नहि, पड़ोसीक अनिवार्यता। 38.5 अरब डॉलर द्विपक्षीय व्यापार भारत ओ चीनक बीच 2007 मे भेल। अर्थात् 50 प्रतिशतक दर स' वृद्धि भ' रहल छैक। जस्टिन लीन इफु, जे पेकिंग विश्वविद्यालय मे कार्यरत छलाह, एखन विश्व बैंकक प्रमुख अर्थशास्त्री नियुक्त भेल छथि। चीन मे आब घनाढ्य लोकक अभाव नहि। चीनक सब स' अधिक धनवान 49 वर्षक महिला ZHANG YIN कें पास 3.4 बिलियन डॉलर संपत्ति 12.10.2006 मे छलनि। बांडुगक पंचशील मे 'हिंदी-चीनी भाई-भाई'क जगह 1962क सीमा विवादक रहितहुं, संप्रति हिंदी-चीनी BUY-BUYक जोरदार नारा अछि।

(फरवरी-मार्च, 2008)

स्मृति शेष

विद्यावाचस्पति पं. उपेंद्र झा : हमर पिता

मिथिलाक पावन भूमिक उत्कृष्टता जनक, याज्ञवल्क्य, शंकर, वाचस्पति, उदयन, मंडन, विद्यापति आदि मनीषि द्वारा रचित शास्त्र–पुराण मे वर्णित ओ प्रभावित अछि। एहि अंचलक कतेको विश्वविख्यात विद्वान विविध विद्या रस प्रवाह स' आप्यायित कयने छथि। एहि अंचल मे अवस्थित तरौनी गाम (दरभंगा जिला अंतर्गत) संस्कृत शिक्षा मे विशिष्ट स्थान स्थापित कयने छल। गामहि मे संस्कृत टोल ओ संस्कृत विद्यालय छल। हमर पिता विद्यावाचस्पति पं. उपेंद्र झा बलिया स' सकुरी मूल वंशोद्‌भव म.म.पं. परशुराम झा आ अहि कुलक अंतिम म.म.पं. परमेश्वर झाक वंशज। संस्कृत विद्वानक शृंखला मे, जाहि स' एहि गामक प्रसिद्धि समस्त मिथिला मे छल, हमर पिता अंतिम विद्वान भेलाह। हमर पितामह बबुआ झा ज्योतिषक प्रख्यात विद्वान छलाह, जनिक वाक्‌सिद्ध परोपटा मे चर्चित छल।

हमर पिता उपेंद्र झाक जन्म 13 सितंबर 1903 कें भेलनि। कृशकाय रहबाक कारण दुलारक नाम फुद्दी बाबू। प्रारंभिक शिक्षा गामहि मे भेलनि। अपन पितिऔत भायक, जे प्रतापनारायण संस्कृत विद्यालय मे ज्योतिषक आध्यापक छलाह, संग लक्ष्मीपुर, भागलपुर गेलाह। बंगालक मध्यमा परीक्षा देलनि एवं प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण भेलाह। लक्ष्मीपुरे मे विकराल चेचक बीमारी स' आक्रांत रहला। माय जेना–तेना उठा क' तरौनी अनलथिन। हिनक भयंकर रूप देखि हमर मांई (पितामही) बड़का कका कें कहलथिन जे ई कि उठा क' अनने छी। कतहु फेकि दितियैक। तदुपरांत बताहि भ' गेलीह। 11म दिन स' सुधार हैब शुरू भेलनि। छः मास स्वस्थ हेबा मे लगलनि। पुनः अध्ययनक हेतु लक्ष्मीपुर नहि गेलाह। म.अ. रमेश्वरलता महाविद्यालय दरभंगा मे व्याकरणाध्यापक मुक्तिनाथ मिश्र (पं. श्री चंद्रनाथ मिश्र अमरजीक पिता) स' व्याकरण आ षट्शास्त्राचार्य रविनाथ झा स' मीमांसा पढ़ब प्रारंभ कयलनि। धर्म समाज महाविद्यालय मुजफ्फरपुर मे चनौर ग्राम निवासी महामहोपाध्याय शशिनाथ झा स' शब्दरत्न पढ़लनि। अपनहु पढ़थि आ 30टा विद्यार्थी कें पढ़ेबो करथि।

लक्ष्मीपुर, भागलपुर मे व्याकरणक अध्यापक सर्वप्रथम नियुक्त भेलाह। मुदा ओहिठामक परिस्थिति उपयुक्त नहि देखि पुन: दरभंगा सात दिनक अन्दर घूमि गेलाह। 1929 मे रमेश्वरलता महाविद्यालय दरभंगा मे व्याकरणक द्वितीयाध्यापक नियुक्त भेलाह। 1958 मे एहि महाविद्यालय मे प्राचार्य पद पर प्रतिष्ठित कयल गेलाह। 1975 मे कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगा मे स्नातकोत्तर विभाग खोलल गेल एवं व्याकरण विभागक अध्यक्ष नियुक्त कयल गेलाह। विश्वविद्यालय मे विभागाध्यक्ष पद स' निवृत्त भेला पर केंद्रीय सरकार द्वारा संचालित 'शास्त्र चूड़ामणि' योजनान्तर्गत प्रख्यात विद्वानक रूप मे कार्यरत रहलाह। व्याकरण, न्याय बिहार स', व्याकरण तीर्थ बंगाल स' तथा दर्शन, साहित्य, कर्मकांड ओ मीमांसक गहन अध्ययन कयने छलाह।

सर्वप्रथम 1930 मे बड़ौदा मे दक्षिणा परीक्षा देबाक हेतु गेलाह। सफल भेलाह। बढ़िया राशि प्राप्त कयलनि। राज दरभंगा द्वारा संचालित धौतपरीक्षा मे प्रतिष्ठा प्राप्त कयलनि। अक्टूबर 1948 मे महाराजा कामेश्वर सिंह दरभंगा मे ओरिएण्टल कॉनफ्रेंस आयोजित कयने छलाह, जकर मुख्य संचालक छलाह विश्वविख्यात विद्वान अमरनाथ झा। देश-विदेशक विभिन्न भाषाक विद्वान लोकनिक जमघट भेल। मिथिला कॉलेज मे सब भाषाक चर्चाक आयोजन कयल गेल। व्याकरणक अध्यक्षता क' रहल छलाह वैयाकरण मूर्द्धन्य निरसन मिश्र एवं सचिव छलाह हमर पिता उपेंद्र झा। भयंकर शास्त्रार्थ भेल छल। हिनक छात्र पटना निवासी रामदेव झा सर्वप्रथम भेल छलाह। ओपेन सेसन मे रामदेव जी कें पुरस्कार देल गेलनि। हम अपन पिता कें एतेक प्रसन्न पहिने कहियो नहि देखने छलियनि। संस्कृत साहित्य मुख्य क' व्याकरण विषयक शास्त्रीय विशिष्टता स' प्रभावित भ' विश्वविद्यालयीय अनुशंसाक आधार पर कुलाधिपति 'विद्यावाचस्पति'क विशिष्टोपाधि स' अलंकृत कयने छलथिन। संस्कृत वाङ्मय मे विशिष्ट योगदानक कारण राष्ट्रपति गणतंत्र दिवसक अवसर पर संस्कृत भाषाक लेल हिनका पुरस्कृत कयने छलथिन। अस्वस्थताक कारण समारोह मे उपस्थित नहि भ' सकलाह। ओना पूर्व मे राष्ट्रपतिक अतिथि होयबाक सौभाग्य कतेको बेर भेल छलनि। एहि बेर राष्ट्रपतिक प्रतिनिधि स्वयं दरभंगा आबि विधिवत पुरस्कार समर्पण कयने छलथिन। ओहि मे एक टा उन्नी शाल सेहो छल जे हम एखन तक व्यवहार क' रहल छी। चेतना समिति पटना 1979 मे विद्यापति पर्वक अवसर पर मिथिलाक एहि उद्‌भट विद्वान कें सम्मानित कयलक। हिनक सम्मान मे कहल गेल जे हम अपन संस्था कें सम्मानित क' रहल छी। कारण हिनक सम्मान त' राष्ट्रपति स्वयं क' चुकल छथि।

संस्कृत शिक्षाक प्राचीन पद्धति स' अध्ययन एवं अध्यापन मे अपन समस्त जीवन लगा देलनि। भोर स' राति तक पाठ लगैत छल। विद्यालयक बाद निवास स्थान पर। अपन छात्रक अतिरिक्त मिथिला कॉलेजक संस्कृतक छात्र ओ अध्यापकक धरोहरि लागल रहैत छल। गुरुकुल परंपरा। गुरु-शिष्यक बीच एहन तादात्म्य भाव जे एक दोसर कें अपन परिवारक अंग बुझैत छलाह। पढ़बा-पढ़यबा लेल ने त' ककरो समय निर्धारित होइत छलै आने अवधि। भोर-दिन-सांझ-राति जखन छात्र कें आवश्यकता होनि पोथी लेने गुरुक ओतय पहुंचि जाथि आ गुरुओ आन कोनो प्रश्न नहि क' एतबे कहथिन 'बांचू'। शिष्य एक पांती बांचथि आ ओकर बाद गुरु बाजथि आ शिष्य सुनथि। शिष्य शंका करथिन आ गुरु समाधान। ने कोनो पीरियडक झंझट आ कोनो नोट तैयार करबाक प्रयोजन। जखन शिष्य पहुंचि जाथि त' गुरु विद्यादान हेतु सदैव प्रस्तुते। गुरु कें शाष्टांग करब, हुनक सेवा करब शिष्य अपन धर्म बुझैथ आ गुरुक इच्छा यैह रहनि जे हमर शिष्य हमरा स' पैघ विद्वान होथि। मन मे रहैत छलनि 'शिष्यादिच्छेतु पराजयम'। भोजनक समय शिष्य ओ अन्य शिक्षक उपस्थित रहला पर सब संगहि भोजन करैथ। देखल अछि जे वर्ष 1971 स' 1982 तक टभका (समस्तीपुर जिला)क एक छात्र दुनू समय संगहि बैसि क' भोजन करैथ। गुरुकुल परम्पराक ई अंतिम चिन्ह हमर पिताक अवसान भेला पर मिथिला मे शेष भ' गेल।

प्रतिदिन स्नानादिक बाद संध्या-तर्पण, देवार्चन एवं गोदुग्ध स' शिवस्नापन आदि कार्य मे लगभग दू घंटा समय लगैत छलनि। एक हजार गायत्रीक मंत्रक जप एवं विष्णुपादोक स' पितर कें तृप्त क' स्वयं चरणोदक ल'क' प्रकारपूर्ण एवं स्वादिष्ट भोजनक लेल अतिथि एवं संग रहयबला छात्रक संग भोजन करैत छलाह। गृहस्थ रहितहुं विदेहवत। अर्थाभाव मे त्यागी ओ अयाची। अपन सीमित आवश्यकताक संग अपंकिल मार्ग पर अबाध गति स' चलबाक कारण अनुज, पुत्र, बंधु एवं परिजन कें अपना संग राखि समुचित रूप स' शिक्षित क' प्रतिष्ठित बनायल जे सब संप्रति उच्च पद पर आसीन भ' प्रतिष्ठित छथि। संध्याकाल मे दुर्गासप्तशतीक पाठ नियमित करैत छलाह। संगहि पार्थिव महादेवक विधिवत पूजा। दुर्गा पूजा ओ अन्य अवसर पर लाख महादेव बनैत छलाह एवं हुनक पूजा-अर्चना निशारात्रि मे एक हजार इष्टमंत्र जप करैत छलाह। मिथिलाक आचार ओ परंपराक प्रबल समर्थक ओ पोषक कें अनवरत अर्चना, साधना ओ अध्यापन मे संलग्न रहबाक कारण समयाभाव छलनि किंतु अपना बथान पर गोसेवा मे तत्पर रहैत छलाह। गोग्रासक लेल कोमल घासक क्रय करब हुनक दैनिक काज छल। शारीरिक कमजोरी ओ आयु वार्धक्य भेला पर गाय कें हटा देलथिन। कारण, बुझि पड़लनि जे गोसेवा उचित नहि भ' सकतनि। विद्यानुरागक फलस्वरूप समयाभाव रहितहुं पुस्तक लिखलनि एवं कतेको टीका

कयलनि। काव्यप्रकाश ग्रंथक मैथिली अनुवाद लगभग पूर्ण भ' गेल छल। एकर रचनाकाल मे निवासक समीप अमलतासक गाछक नीचा बैसार होइत छल एवं ओहि मे तंत्रनाथ झा, ईशनाथ झा ओ सुरेंद्र झा सुमन बैसि क' एहि पर चर्चा करैत छलाह, से हमरा देखल अछि। मैथिली मे दोसर पोथी 'मणिद्वीप वर्णन' लिखने छलाह। अर्थाभावक कारण दुनू पोथी प्रकाशित नहि भेल। दुखक संग कहय पड़ैत अछि जे काव्यप्रकाशक मैथिली टीका नष्ट भ' गेल। बाद मे हजारो बिसरल-भूलल संस्कृत श्लोकक संग्रह कयलनि। जकर प्रथम भाग मे 501 श्लोक हिंदी अनुवादक संग कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा 'सुभाषितावली' प्रथम भाग 1982 मे प्रकाशित कयलक। दोसर भाग हिनक प्रिय शिष्य स्वर्गीय उपेंद्र झा 'विमल'क पास छल। नहि जानि सम्प्रति कोन अवस्था मे अछि।

संस्कृत शिक्षाक प्रचार-प्रसारक हेतु महाराज दरभंगा द्वारा पोषित बिहार संस्कृत एसोसिएसन बिहार सरकारक शिक्षा मंत्रालय द्वारा संचालित प्राचीन पद्धति स' शिक्षण-परीक्षाक व्यवस्था करैत छल। एकरा द्वारा प्रथमा, मध्यमा, शास्त्री ओ आचार्य परीक्षा संचालित होइत छल। बिहार प्रदेशक कतेको भाग मे संस्कृत विद्यालय छल। सरकारक दिस स' निदेशक, संस्कृत एकर मुख्य प्रशासक। चुनाव पद्धति स' संस्कृत विद्वानक कमेटी बनैत छल जे साहित्य, व्याकरण, न्याय, मीमांसा, आयुर्वेद, कर्मकांड, वेद ओ ज्योतिष विषयक सिलेबस ओ शिक्षाक पद्धति निर्णय करैत छलाह। हमर पिता सब बेर चुनाव जीत क' अबैत छलाह आ प्राचीन पद्धति स' संस्कृत शिक्षाक प्रचार-प्रसार मे सक्रिय योगदान दैत छलाह। पुन: प्राच्य शिक्षाक प्रचार-प्रसारक उद्देश्य स' मिथिला मे एक संस्कृत विश्वविद्यालयक आवश्यकता पंडित समाज कें बुझि पड़लनि। महाराज कामेश्वर सिंहक समक्ष विशिष्ट संस्कृत विद्वानक सक्रिय सहयोग स' दरभंगा मे 1960 मे कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक स्थापना मे सक्रिय सहयोग कयल। महाराज मात्र अपन आनंद बाग पैलेस नहि, एहि भवनक सन्निकट खाली जमीन ओ अपन पुरखा द्वारा संग्रहित संस्कृत पुस्तकालय सेहो एहि विश्वविद्यालय कें दान स्वरूप भेटि गेलै। किंतु, बिहार सरकारक शिक्षा विभाग एहि विश्वविद्यालयक संचालन व्यवस्थित रूप मे नहि क' रहल अछि, ई दुखक बात।

दैनिक 'आर्यावर्त्त'क भूतपूर्व संपादक पं. श्री हीरानंद झा शास्त्री अपन एक संस्मरण मे लिखैत छथि जे एक उपनयन कार्यक्रम मे दुनू गोटे निमंत्रित छलहुं। 'ओहिठामक कार्यकलाप देखि जखन हम जिज्ञाषु भाव स' गुरुदेव दिस देखलौं जे अहां बैसल छी तखन ई की भ' रहल अछि, त' ओ हाथ दबाय हमरा चुप रहबाक संकेत त' करबे कयलनि, परंच हम लक्ष्य कयलौं जे हुनक दुनू आंखि किछु नोरा

गेलनि। ओहि दिन लागल जे युग बदलि गेलै। यथार्थ पण्डित आंगूरो पर गनबा योग्य कहां दृष्टिगोचर भ' रहल छथि। एक-एक क' सब पाछा ढहि गेल आ हमर गुरुदेव एहि क्रमक हमरा लोकनिक क्षेत्रक आखिरी पाया छलाह। विद्यावाचस्पति उपेंद्र झा—स्मृत्यङ्क मे, डा. मदनेश्वर मिश्र भूतपूर्व कुलपति मिथिला विश्वविद्यालय, लिखैत छथि—'अध्ययन और अध्यापन ही उनके जीवन के प्रमुख कार्य थे परंतु ईश्वर-भक्ति के लिए उनके पास सदैव अवकाश था। वस्तुत: पं. झा मिथिला और संस्कृत विद्वानों की उस गौरवमयी परंपरा के प्राय: अंतिम स्तंभ थे जिसमें विद्वान अपनी विद्वता के कारण तो पूज्य होता ही था, उसकी सरलता और सादगी भी अनुकरणीय होती थी और इन दोनों गुणों से बढ़कर अभिनंदीय होता था उसका स्वाभिमानी स्वभाव। सरल प्रकृति के होने पर भी पं. झा ने अपने स्वभिमान को कभी समझौते की वस्तु नहीं बनने दिया। महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय में सेवारत रहते हुए भी कभी किसी ने उन्हें उच्चाधिकारी के दरबार की शोभा बनते नहीं देखा आकि सुना। उन्होंने अपनी भौतिक आवश्यकताएं इतनी सीमित रखी थी कि उन्हें कभी किसी के समक्ष याचक बनने की आवश्यकता ही नहीं हुई।'' महाराज कामेश्वर सिंहक संस्कृत विद्यालय मे कार्यरत रहितहुं जखन महाराज समुद्र लंघन कयलनि (विदेश यात्रा) घोर विरोध कयलथिन एवं महाराज कें बारि देल गेलनि। हुनका ओतय निमंत्रण देला पर सिद्ध भोजन नहि करैत छलथिन। पक्का भोजनी निवास स्थान पर पठा देल जाइत छलनि।

हम संप्रति जे किछु छी, सब हुनके बदौलति। हुनक इच्छा छलनि जे हम चार्टर्ड एकाउंटेंट बनी। 1956 मे बी. कॉम. परीक्षा पास कयला पर साहस कयल। एहि हेतु हम कलकत्ता गेलहुं। जीविकोपार्जन करैत सफल भेलहुं। जखन हम इंटरमीडिएट सी.ए. कयल तखन हमरा बिहार सरकारक एक कंपनी मे उत्तम मासिक आयक नोकरी भेटल। नहि करय देलनि एवं पत्र लिखलनि जे पहिने महात्मा लोकनि कें सिद्ध भेटय लगैत छलनि, एहिना हुनक तप-तपस्या कें नष्ट कयल जाइत छलनि। नोकरी नहि कयल। पास कयला पर कहलनि जे योग्यता अनुकूल द्रव्योपार्जन करब। एहि विभाग मे गलत आयक स्रोत छैक। ओकरा दिस ध्यान नहि देब। हम अक्षरश: पालन कयलहुं एवं आइ सब तरहें आनंद छी। हमर चरित्र निर्माण मे हुनक बड्ड पैघ हाथ छनि।

जीवनक उत्तरार्द्ध मे वातव्याधिजन्य कायिक कंपन भ' गेल छलनि। शारीरिक दुर्बलता ओ कंपनक कारण असौविध्यक अनुभव करैत छलाह। मुदा मानसिक रूप स' पूर्णत: स्वस्थ। कतेको विषय जिह्वाग्र छलनि ओ शास्त्रीय चर्चा ओ अध्यापनक उत्सुकता सब दिन व्याप्त रहलनि। अध्यापन काल मे कतेक छात्र लाभान्वित भेलाह

एकर आकलन नहि भ' सकल। मुदा लगभग 20 छात्र हिनक निर्देशन मे शोध प्रबंध प्रस्तुत क' विशिष्टोपाधि स' भूषित भेलाह। अंतिम काल मे योगीक सदृश शिवलोक जयबाक हेतु प्रस्तुत भ' गेल छलाह। मुखमंडल पर आभा पूर्ववत छलनि। जीवन मे सत्संकल्पक सिद्धि प्राप्त क' चुकल छलाह। जीवन मे परवशता कखनो नहि अयलनि। माया-मोह स' मुक्त भ' गेल छलाह। भाद्रकृष्ण षष्ठी तदनुसार 1 सितंबर 1988 कें शिवलोक प्रस्थान क' गेलाह। हुनक प्रात: कालिक पूजाक अंत—

सर्वे भवंतु सुखिन: सर्वे संतु निरामया:।
सर्वे भद्राणि पश्यंतु माकश्चिद दु:खभाग्भवेत॥ स' होइत छलनि।

हम ऊं शिवाय शिवरुपाय पिते नम:' स' अपन श्रद्धासुमन अर्पित करैत छी।

(2007)

मिथिला राज्यक प्रथम उद्घोषक डा. लक्ष्मण झा

मिथिलाक गौरवमय इतिहास मे महामानवक अवतरणक परंपरा अछि। राजर्षि, महर्षि, दार्शनिक, साधक, भक्त, कवि, लेखक—एक स' एक विलक्षण प्रतिभाक व्यक्ति होइत आयल छथि। परंच राजनैतिक क्षमताक एतय अभाव ज' नहियो, त' विरलता अवश्य रहल अछि। मिथिलाक लोक त' परमार्थी होयताह—संसार स' निर्लिप्त आ नहि त' घोर सांसारिक—परिवार मे लिप्त। समाजक विस्तृत परिधि कें व्याप्त कयनिहार मिथिलाक राजनैतिक दिशा कें गति-बोध देनिहारक श्रृंखला एतय नगण्य। बीसम शताब्दीक एहि तिक्तता-रिक्तता कें दूर कयनिहार समाजसेवी चिंतक राजनैतिक पुरुष मे डाक्टर लक्ष्मण झाक नाम अग्रगण्य अछि।

एहि महामानवक जन्म दरभंगा स' 60 किलोमीटर दूर कमलाक कछेर मे बसल एहि जिलाक सुदूर पूर्वी क्षेत्रक गाम रसियारी मे दिसंबर 1916 मे भेल छलनि। पिताक पैघ दबंग परिवार—सात भाइक भैयारी। हिनक पिताक नाम छल कारी झा, जनिका तीन बालक। एहि मे सब स' छोट लखनजी लक्ष्मण झा। पिता अशिक्षित। लखनजी गाम मे गाय चरबैत छलाह आ शोभालाल दासजी स' पढ़ैत छलाह। लोअर प्राइमरी धरि हिनके स' पढ़लनि। एकर बाद मधेपुर हाई स्कूल मे नाम लिखौलनि। तखन ओहि स्कूल मे दासजी हेडमास्टर छलाह, बाद मे मिथिलाक अद्वितीय विद्वान रमानाथ झाजी हेडमास्टर भेल रहथि। 1937 मे मैट्रिक परीक्षा मे प्रथम श्रेणी—जे ओहि समय मे विरले कें होइत छल मे उत्तीर्ण भेलाह आ हिनका दसटा स्कालरशिप भेटल छलनि। डा. झाक किशोरावस्थाक संबंध मे जे किछु ज्ञात भ' सकल से हुनक बालसखा ओही गामक श्री कमलाकांत मिश्र स', जे बिहार प्रशासनिक सेवा स' अवकाशप्राप्त क' संप्रति पटने मे रहैत छथि।

मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण भेलाक बाद लखनजी टी. एन. जे. कालेज, भागलपुर

मे नाम लिखौलनि एवं ओतहि स' आइ. ए. परीक्षा पास कयलनि।

बी.ए. मे पटना कालेज मे नाम लिखौलनि संस्कृत मे प्रतिष्ठा। बी. ए. आनर्स मे अपना विषय मे सर्वप्रथमक संगहि संपूर्ण विश्वविद्यालयक ओहि वर्षक सब विषयक परीक्षा मे सब स' बेसी अंक हिनके भेटल रहनि। एम. ए. (संस्कृत) मे नाम लिखौलनि, किंतु जखन एम. ए. छठम वर्ष मे रहथि तखनहि 1942क स्वतंत्रता संग्राम मे सक्रिय भ' गेलाह एवं आंदोलनक क्रम मे दरभंगा जेल मे राखि देल गेलाह। एम. ए. परीक्षा पूरा नहि क' सकलाह।

1943 मे जेल स' छुटलाक बाद बिहार विभूति अनुग्रह नारायण सिंहक संपर्क मे आबि गेलाह। हिनक प्रतिभा स' प्रभावित भ' ओ हिनका विलायत अध्ययन हेतु पठयबाक पूर्ण प्रयास कयलनि। राज्य सरकार स' ओतय जयबाक खर्चाक व्यवस्था एवं लंदन विश्वविद्यालय मे पी. एच-डी. करबाक जोगार क' देलथिन। 1942क आंदोलन मे सक्रिय भ' जयबाक कारण डा. झा एम. ए. नहि क' सकल छलाह। नियम कें शिथिल क' अनुग्रहबाबू हिनका विश्वविद्यालय स' अग्रिम अनुमति दिया देलथिन जे अनुमति अपना विश्वविद्यालय स' एखन धरि इतिहास मे मात्र डा. लक्ष्मण झा कें भेटल छनि। 1945 मे लंदन विश्वविद्यालय मे पी. एच-डी.क अध्ययन हेतु चल गेलाह। हिनक शोधक विषय छल 'मिथिला एंड मगध' 1948 मे पी. एच-डी.क उपाधि प्राप्त क' स्वदेश आपस आबि गेलाह।

राज्य सरकार हिनका विदेश जयबाक हेतु जे छात्रवृत्ति देने छल ओहि मे एक शर्त छल जे देश लौटलाक बाद राज्य सरकारक नोकरी मे योगदान करय पड़त। ओहि समय बिहार सरकार मे शिक्षा सचिव जे. सी. माथुर छलाह। हिनका पटना विश्वविद्यालय मे प्राचीन इतिहासक विभागाध्यक्ष डा. अल्टेकरक अंदर अनुसंधानक हेतु पठा देल गेल। के. पी. जायसवाल रिसर्च इंस्टीच्यूट, जे राज्य सरकार द्वारा तखन स्थापित भेल छल, ओहि मे सर्वप्रथम रिसर्च पदाधिकारी नियुक्त कयल गेलाह। अल्टेकर एहि संस्थाक अवैतनिक निदेशक सेहो छलाह। हिनका अल्टेकर महोदय स' नहि पटलनि। गाम चल गेलाह। हिनक राज्य सरकारक सेवाक एतहि अंत भ' गेल।

ई 1928 मे जखन मात्र बारह वर्षक रहथि, भारतीय कांग्रेस पार्टीक सक्रिय सदस्य भ' गेलाह। कांग्रेसक 'डेलीगेट'क उम्मीदवार भेलाह, किंतु अपना हेतु कोनो प्रचार नहि कयलनि। किछु मित्रक सहयोग स' डेलीगेटक चुनाव मे विजयी भेलाह।

ई मिथिला मैथिलीक विकासक हेतु सतत चिंतित रहैत छलाह। जखन लंदन मे पढ़ैत छलाह ओहि समय ब्रिटेन मे कृष्ण मेनन भारत सरकारक अधिकारी छलाह। जवाहरलाल नेहरू ओतय गेल रहथि। डा. झा नेहरूक समक्ष मिथिला ओ कोसीक

संकट कें कठोर शब्द मे प्रस्तुत कयलनि। नेहरू नाराज भ' गेलाह एवं कृष्ण मेननक मार्फत हिनका विरुद्ध बिहार सरकार कें नालिश कयल गेल। 1953क मध्य मे (प्राय: जून मे) जवाहरलाल नेहरू पटना आयल छलाह। कोसी क्षेत्रक कांग्रेसी कार्यकर्त्ता हिनका नेतृत्व मे कोसी संकटक प्रति स्मारपत्र देलक। नेहरू सहानुभूतिपूर्ण उत्तर देल एवं आश्वासन देल जे शासन मे अयला पर अवश्य एकरा पूरा करब। मुदा शासन मे अयला पर कांग्रेसी नेता लोकनि मिथिलाक संकट कें दूर करबाक कोनो प्रयास नहि कयल। कांग्रेसी लोकनि स' हिनका नहि पटलनि। बाद मे रामनंदन मिश्रक प्रयास स' समाजवादी पार्टी मे सक्रिय भेलाह। एतय हिनका जयप्रकाश नारायण, आचार्य कृपलानी, सूरज नारायण सिंह, कर्पूरी ठाकुर आदि समाजवादी नेता स' घनिष्ठ संपर्क भेलनि। सुनल अछि जे ई आजाद दस्ताक सक्रिय कार्यकर्त्ता छलाह। राज्य सरकार द्वारा देल गेल नोकरी—के. पी. जायसवाल इन्स्टीट्यूट वला कें पदत्याग कयलनि एवं 1952क संसदक पहिल चुनाव मे समाजवादी पार्टीक टिकट पर दरभंगा संसदीय क्षेत्र स' उम्मीदवार भेलाह। मुदा कांग्रेसी उम्मीदवार अनिरुद्ध सिंह स' हारि गेलाह।

1 जनवरी 1943 मे दरभंगा जेल मे मिथिला इतिहास परिषद्क स्थापना हिनकर प्रयास स' भेल छल। एकर अध्यक्ष प्रो. बलदेव नारायण सिंह, मंत्री रामेश्वर प्रसाद सिंह तथा संयुक्त मंत्री छलाह लक्ष्मण झा। एहि परिषदक उद्देश्य छल मिथिलाक संस्कृति एवं सभ्यताक रक्षार्थ मिथिलाक सुसंबद्ध इतिहास तैयार करब। पुन: हिनके प्रयास स' जनवरी 1947 मे मिथिला यूनिवर्सिटी कमेटी बनल जकर अध्यक्ष धरणीधर बाबू, उपाध्यक्ष गंगाधर मिश्र एवं हरिनाथ मिश्र सचिव बनायल गेलाह। मिथिला मे शिक्षाक विकासक हेतु पांचटा विश्वविद्यालय निर्माणक योजना सरकारक समक्ष 1952 मे प्रस्तुत कयने रहथि।

1951क प्रारंभ मे डा. लक्ष्मण झा पटना स्थित प्रगतिशील मैथिल लोकनिक संग मिथिलाक साहित्य, संगीत, कला ओ विज्ञानक उन्नतिक हेतु 'मिथिला मंडल'क स्थापना कयलनि। सचिव छलाह डा. लक्ष्मीनारायण सिंह। अक्टूबर 1951 कें मिथिला मंडलक प्रधान कार्यालय पटना स' दरभंगा स्थानांतरित कयल गेल। मिथिलाक प्रत्येक प्रमुख स्थान मे मंडलक शाखा कार्यालय बनाओल गेल। एकर कार्यालय पटना, कलकत्ता, कटक तथा बनारस मे सेहो स्थापित भेल।

27 जुलाइ 1952 कें डा. लक्ष्मण झाक अध्यक्षता मे दरभंगा नगर भवन मे आयोजित दरभंगा मजदूर सम्मेलन दू गोट प्रस्ताव मैथिली मे स्वीकृत कयल। प्रथम प्रस्ताव छल भाषाक आधार पर मिथिला तथा अन्य प्रांतक निर्माण। एतहि स' प्रारंभ होइछ मिथिला राज्यक आंदोलन एवं मिथिला-मैथिलीक सर्वांगीण विकासक हेतु

प्रथम राजनैतिक प्रयास। अन्य प्रस्ताव छल शिक्षा संबंधी जाहि मे सरकार स' आग्रह कयल गेल छल जे—

(1) हाई स्कूल एवं विश्वविद्यालय शिक्षाक अनिवार्य विषय स' अंग्रेजी कें अविलंब हटा देल जाय;

(2) शिक्षाक आधार मैथिली हो;

(3) हाई स्कूलक पाठ्य विषय मे ऐच्छिक विषयक ग्रुप विभाजन हटा देल जाय;

(4) प्रारंभिक शिक्षा 16 वर्षक वयस धरि अनिवार्य हो;

(5) दरभंगा मे शीघ्रातिशीघ्र विश्वविद्यालय स्थापित हो।

मैथिल महासभा, दरभंगा जे ब्राह्मण ओ कर्ण कायस्थ कें मैथिल कहैत छलाह एवं जकर सदस्यता मात्र एहि वर्णक हेतु छल तकर पुरजोर विरोध कयलनि। कारण मिथिला मे रहनिहार सब जाति वर्णक लोक मैथिल छथि। मैथिल महासभा 1951 मे सर्वप्रथम मिथिला राज्यक मांग कयलक—महाराजा दरभंगाक नेतृत्व मे जे स्वत: प्रस्तावक संगे मरि गेल। जमींदारी प्रथाक अंतक आशंका स' चिंतित भ' अपन नेतृत्व बरकरार रखबाक हेतु ई महराजी प्रस्ताव छल। अपन नेतृत्व रखबाक हेतु 1952क संसदीय चुनाव मे दरभंगा महाराज ठाढ़ सेहो भेल रहथि मुदा जमानत जब्त भ' गेलनि।

डा. झा पुन: 26 जुलाइ 1953 कें दरभंगा नगर भवन मे मिथिला राज्य आंदोलन कें सफल बनयबाक हेतु विशेष सम्मेलन कयलनि। एहि मे मिथिला राज्यक स्थापनक ओ मैथिलीक माध्यम स' शिक्षाक प्रस्ताव छल। 22 नवंबर 1953 कें हिनक नेतृत्व मे 'कलकत्ता मैथिल संघ' एक पैघ प्रदर्शन मिथिला राज्यक निर्माणक हेतु कयने छल जे आधा मील लंबा छल आ अंत मे कलकत्ताक गिरीश पार्क मे सभा भेल। 15000 स' बेसी मैथिल एहि मे भाग लेने छलाह। कलकत्ता ओ बाहरक प्रेस मिथिला राज्य आंदोलन कें विस्तृत रूप स' प्रचारित कयलक। 1953 मे पुन: कलकत्ताक कालेज स्ट्रीटक एक रेस्ट्रां मे ई कलकत्ताक प्रेस कें संबोधित कयलनि जाहि मे मिथिला, एकर भौगोलिक स्थिति, भाषा, लिपि, साहित्य ओ आर्थिक स्थितिक विस्तृत विवरण प्रस्तुत कयलनि। प्रेसवला हिनका स' प्रश्न कयलनि जे जखन अहांक लोक एतेक संकट मे छथि तखन पटना ओ दिल्ली मे अहां लोकनिक प्रतिनिधि (विधान सभा ओ संसद) जोरदार मांग किएक नहि करैत छथि? हिनक उत्तर छल जे भविष्य मे करताह एहन आशा करैत छी।

मिथिला राज्य आंदोलन जोर पकड़लक। अखिल भारतीय कांग्रेस पार्टीक अधिवेशन जनवरी 1952 मे कल्याणी (पश्चिम बंगाल) मे आहूत छल। किछु कांग्रेसी जानकीनंदन सिंहक नेतृत्व मे एहि आंदोलन स' प्रभावित भ' 22 जनवरी 1954 कें कांग्रेस अधिवेशन मे मिथिला राज्य निर्माणक मांग करय जा रहल छलाह जाहि मे 56 गोटे आसनसोल रेलवे स्टेशन पर बिहार सरकारक अनुरोध पर बंगाल सरकारक पुलिस द्वारा गिरफ्तार कयल गेलाह। एकर प्रतिक्रिया मे मिथिलाक सब शहर ओ गाम, कलकत्ता ओ पटना मे जन आंदोलनक रूप ल' लेलक। भाषाधार प्रांतक मांग सबल भेल।

भाषाधार प्रांतक निर्माण भारतीय संसद मे सरकार स्वीकार कयलक। सैयद फजल अलीक अध्यक्षता मे 22 दिसंबर 1953 कें सरकार भाषाधार प्रांतक निर्माण आयोग गठन कयलक जाहि मे हृदयनाथ कुंजरू एवं के. एम. पनिक्कर सदस्य नियुक्त भेल छलाह। 26 फरवरी 1954 कें पटना विश्वविद्यालयक अधिवेशन आयोजित छल जाहि मे के. एम. पनिक्कर अधिवेशन कें संबोधित करय आयल छलाह। मिथिला राज्य निर्माणकओ जोरदार विरोध कयने छलाह।

डा. झा भाषाधार राज्य निर्माण समिति कें मिथिला राज्यक निर्माण हेतु स्मारपत्र देल। किंतु पटना ओ दिल्ली सरकारक षड्यंत्र सफल भेल एवं समिति मिथिला राज्यक निर्माण कें अस्वीकृत क' देलक। ई भाषाधार प्रांतक समर्थक छलाह एवं 22 भाषाक हेतु 22 राज्यक सिफारिश कयने छलाह। 1931क जनगणनाक आधार पर मैथिली भाषा-भाषीक संख्या सातम स्थान पर छल मुदा एकरा संविधानक आठम अनुसूची मे शामिल नहि कयल गेल, तकर विरोध कयने छलाह। मैथिली भाषी कें हिंदीक अपभ्रंश मानि लेल गेल छल। एकरा ओ राजनैतिक चालि कहैत छलाह।

मिथिला राज्य आंदोलन कें व्यापक बनयबाक हेतु डा. झा किछु पोथी लिखलनि जाहि मे 'मिथिला ए यूनियन रिपब्लिक' 1952 मे अंग्रेजी मे प्रकाशित भेल। प्रकाशक छलाह डा. लक्ष्मीनारायण सिंह, सचिव, मिथिला मंडल, दरभंगा एवं चंद्रिका प्रेस मे छपल छल। एकर मुद्रक छलाह जयकृष्ण दास। एहि पुस्तक मे सात अध्याय अछि। मिथिला राज्यक संविधान ओ देशक नक्शा सेहो अछि। एहि वर्ष ओ मैथिली मे 'मिथिला भाषा' स्वयं लिखलनि एवं डा. लक्ष्मीनारायण सिंह 'मैथिलीये मे मिथिलाक आर्थिक स्थिति' लिखलनि। 1952 मे डा. लक्ष्मीनारायण सिंह 'मिथिला मे शिक्षा' लिखल। एहि मे 12 अध्याय अछि मिथिलाक भाषा, सरकारक शिक्षा नीति, परीक्षा पद्धति, विश्वविद्यालय आंदोलन आदिक आंकड़ा संग विवरण।

1953 मे 'मिथिला इन इंडिया' अंग्रेजी मे लिखल जे सुधाकर प्रेस, दरभंगा मे छपल। एहि मे मात्र तीन अध्याय अछि। 1954 मे 'मिथिला ए सौवरेन रिपब्लिक' अंग्रेजी मे लिखलनि। 1955 मे अंग्रेजी मे 'मिथिला विल राइज' लिखलनि। एहि

मे 20–21 पृष्ठ मे लिखैत छथि जे ब्राह्मणक व्यवहार एतयक शूद्रक प्रति ठीक नहि रहल। ब्राह्मणक भाषा मैथिली नहि छल, संस्कृत छल। मैथिली शूद्र ओ महिला बजैत छलीह। मैथिली कें एत'क संस्कृत पंडित समाज गमई भाषा कहैत छलाह। शूद्र कें ब्रह्मणक चंगुल स' निकलबाक प्रयास करक चाही मुदा राज्य आंदोलन ओ अपन आर्थिक विकासक हेतु एकजुट भ' संग्राम करक चाही। स्वतंत्र मिथिला एकसरे कोना चलायत। एकर उत्तर छल जे की स्वतंत्र भारत अपना कें एकसरे चला रहल अछि—राष्ट्रमंडल, संयुक्त राष्ट्रसंघ, यूनेस्को, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्वबैंक आदि स' आर्थिक सहायता लैत अछि। जहिना स्वीटजरलैंड, हालैंड, बेलजियम, डेनमार्क, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड आदि छोट राज्य अपन व्यवस्था क' रहल अछि ओहि स' उत्तम ढंग स' मिथिला अपन व्यवस्था करत। आधुनिक युग मे आत्मनिर्भरता ने संभव छैक ने अपेक्षित।

मिथिलांचलक उत्तरी सीमाक बंटवारा अंग्रेज जो नेपालक गोरखा लोकनि अपन सुविधानुसार कयलनि। दुनूक बीच अनेक संघर्ष भेल आ अंत मे दिसंबर 1815 मे सुगौलीक समझौता भेल जे दिसंबर 1816 मे लागू भेल। दुनू देशक सीमा जे पहिने नदी पहाड़ स' बांटल जाइत छल से इंटाक पाया द्वारा बंटवारा भेल। एहि क्षेत्रक मिथिलावासीक घर–दलान पायाक एहि कात भारत मे आ खेत–पथार नेपाल मे पड़ल। कतेकोक घर द्वारि नेपाल मे आ खेत–पथार भारत मे। ई भू–भाग खूब उपजाऊ अछि एवं एहि अंचलक विकास मे पाया बड्ड पैघ अवरोधक। एहि क्षेत्रक आर्थिक विकासक हेतु 1954 मे डा. साहेब पाया आंदोलन शुरू कयलनि। यात्रा सुरसंड स' प्रारंभ भेल आ जयनगर मे समाप्त भेल। पायाक दुनू भागक गाम मे जन–आंदोलन चलायल गेल। एहि आंदोलन मे एहि पंक्तिक लेखक सेहो सम्मिलित भेल छलाह। एकर अध्ययन कयलाक बाद 1955 मे डा. साहेब 'द नार्दर्न बोर्डर' अंग्रेजी मे लिखलनि। मिथिलाक सर्वांगीण विकास बिना नेपालक अधीन तराई भूभाग कें मुक्ति करौने संभव नहि। ई भूभाग सुगौली संधिक पूर्व कहियो नेपालक अधीन नहि छल।

1956 मे लोकसभा चुनावक समय डा. साहेब तीन पोथी, 'द टीचर्स इन मिथिला', 'यूनिवर्सिटी फॉर मिथिला' एवं 'द वोटर्स इन मिथिला' लिखलनि। एहि मे मैथिल मतदाता कें सब तरहें सचेत कयलनि जाहि स' सही प्रतिनिधित्व भ' सकय।

हिनके प्रेरणा स' 1955 मे प्रो. विद्यापति सिंह 'मिथिलाक उद्योग ओ व्यापार' मैथिली मे लिखलनि। एहि पोथीक प्रस्तावना मे डा. साहेब लिखैत छथि—मिथिला कें ने लोकक अभाव अछि ने प्राकृतिक साधन—भूमि, जल, वन, पर्वत आदिक। अभाव अछि केवल व्यवस्थाक। एकरा सब मैथिल–मिथिलावासी पढ़ू, अपन बलक

ओ दुर्दिनक ध्यान करू तथा उद्धार लेल कटिबद्ध होउ। 1957 मे दोसर पोथी डा. लक्ष्मीनारायण सिंह लिखलनि वेल्थ ऑफ मिथिला'।

सितंबर 1959 मे 'मिथिला' साप्ताहिक मैथिली पत्रिका दरभंगा स' प्रकाशित करय लगलाह। संपादक बनायल गेल छलाह श्री भोलानाथ मिश्र एवं ललिता प्रेस दरभंगा स' मुद्रित होइत छल। बड्ड उग्र पत्र छल। नहि चलि सकल। बंद भ' गेल। 1948 मे 'लंदन के पत्र' हिंदी मे सेहो प्रकाशित कयने छलाह।

डा. साहेब सतत अध्ययन करैत छलाह। विषय बहुआयामी छल। करीब पचास स' उपर साठिक लगभग पोथी अंग्रेजी, मैथिली, संस्कृत, मिथिलाक्षर मे लिखलनि। द्रव्याभावक कारण अप्रकाशित रहल। एहि पोथी सब कें राष्ट्रीय ग्रंथ गृह, दिल्ली कें देबाक योजना छल।

डा. साहेब लंदन विश्वविद्यालय स' शिक्षा समाप्तिक बाद स्वदेश फिरबाक तैयारी करय लगलाह। हिनक प्रतिभा स' प्रभावित इष्ट–मित्र हिनक जीविकाक व्यवस्था करय लगलाह। ओतयक सुख–सुविधा हिनका आकर्षित नहि क' सकल। अपन हितैषी स' कहल जे अहांक देश मे जे सब सुविधा अछि से हमरा अपना देश मे बनयबाक अछि। कोसी–कमला–बलानक पीड़ा कें नहि बिसरने छलाह। पटना अयला पर राज्य सरकारक नोकरी करबाक हेतु बाध्य कयल गेला। नहि क' सकलाह। 1951 मे काशी प्रसाद जायसवाल इंस्टीच्यूटक नोकरी स' त्यागपत्र द' संसद सदस्यताक हेतु समाजवादी पार्टीक उम्मीदवार भेलाह। विजयी नहि भ' सकलाह। 1952 मे दरभंगा मिथिला कालेज मे अध्यापन करय लगलाह। छोड़ि देलनि। हिनक विद्वत्ता स' प्रभावित भ' दरभंगाक महराजाधिराज इंडियन नेशन अखबारक हेतु लेख देबाक आग्रह कयलनि। मास मे दू गोट लेख छपय लागल। ईहो व्यवस्था बेसी दिन नहि चलल। 1976–77 मे जयप्रकाश नारायणक आग्रह पर एवं तत्कालीन मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुरक सत्यप्रयास स' मिथिला विश्वविद्यालयक कुलपतिक आसन ग्रहण कयलनि। मात्र एक टाका मासिक वेतन लेब स्वीकार कयलनि। आधुनिक माहौल मे कुलपतिक काज हिनका सन व्यक्तिक हेतु संभव नहि। त्यागपत्र द' देलनि।

डा. साहेब राज्य सरकारक छात्रवृत्ति स' विदेश पढ़य गेल छलाह। जकर मुख्य शर्त छल राज्य सरकारक नोकरी। से नहि क' सकलाह। कांग्रेसक राज्य छल। पार्टी मे सेहो नहि रहलाह। सरकार अपन पाई हेतु मोकदमा कयलक। हिनक हिस्साक गामक जमीनक जब्ती–कुर्की भेल। मुदा सरकार एकर अनुपालन नहि कयलक।

कलकत्ताक महाजाति सदन बनि रहल छल। ओहि मे अखिल भारतीय लेखक सम्मेलन आयोजित कयल गेल छल। मैथिली लेखकक नाम नहि छल। मिथिला

संघक प्रयास स' मैथिली लेखकक नाम जोड़ल गेल एवं डा. लक्ष्मण झा कें निमंत्रण देल गेलनि। जवाहरलाल नेहरू आयल छलाह। प्रत्येक लेखक कें तीन मिनट समय देल गेल छल। डा. झा अपन सब बात अढ़ाइ मिनट मे रखलनि जकर समुचित उत्तर देबाक हेतु नेहरू बाध्य भ' गेल रहथि।

मिथिलाक्षर लिखबाक हेतु बहुत जोर दैत छलाह। संयुक्ताक्षरवला एहि लिपि मे लिखबा मे किछु कठिनता छैक। एकरा सुगम बनयबाक हेतु हलंत चिह्नक प्रयोग क' क' संयुक्ताक्षर लिखबाक प्रचार आवश्यक बुझि तदनुसार मिथिलाक्षर वर्णमाला कें प्रकाशित कयलनि जे छात्र लोकनिक बीच खूब प्रचारित भेल।

हिनके प्रेरणा ओ मार्गदर्शन स' डा. प्रबोधनारायण सिंह, डा. अणिमा सिंह, बाबू साहेब चौधरी, देवनारायण झा एवं कलकत्ताक समस्त मैथिली भाषीक अथक प्रयास स' मैथिली कें साहित्य अकादमी मे स्थान भेटि सकल। प्रबोधबाबू नव गाड़ी खरीदने छलाह। हिनके गाड़ी स' देवघर स' जे अभियान चलल से मिथिलांचलक प्रत्येक गाम गेल एवं ओतय स' पोस्टकार्ड द्वारा दिल्लीक अधिकारी कें एहि हेतु मांग कयलक।

डा. सुनीति कुमार चटर्जीक अध्यक्षता मे 'संस्कृत आयोग' दरभंगा गेल छल। एकर सदस्य सब ओतयक संस्कृत पंडितक संग अधलाह व्यवहार कयने छल। डाक्टर साहेब कें ई सूचना भेटि गेल छलनि। एहि कमीशनक नागरिक अभिनंदन लक्ष्मीश्वर पब्लिक लाइब्रेरी मे सायंकाल आयोजित भेल एवं अध्यक्षता क' रहल छलाह पं. गिरींद्र मोहन मिश्र। धन्यवाद प्रस्ताव डा. लक्ष्मण झा कयलनि। अपन भाषण डाक्टर साहेब अंग्रेजी मे देल एवं बंगाली अधिकारी लोकनि द्वारा मैथिली भाषी कें कोन तरहें बर्ताव भेल छल, तकर उल्लेख कयल। सुनीति कुमार चटर्जी किछु उत्तेजित भेलाह, शांत कयल गेलाह। एहि घोंघाउज मे केयो व्यक्ति पाछू स' हिंदी मे बजलाह जे ई जतय जाइत छथि अहिना करैत छथि। सभा भंग भेलाक बाद जोर स' गरजला जे के लगटवा छल जे अपन भाषा मे गारि नहि द' उर्दू (हिंदी, मे गारि देलक। अपन भाषाक प्रति एतेक साकांक्ष रहैत छलाह।

हम 1975क दिसंबर मे कलकत्ता स' पटना आबि गेल छलहुं। बोरिंग केनाल रोड मे निवास-स्थाल छल। राज्यक सब विश्वविद्यालयक कुलपतिक मीटिंग पटना वीमेंस कालेजक सभागार मे आयोजित छल। डा. साहेब ओहि बेर परिसदन मे टिकल छलाह। भोरका जलखै हमरे निवासस्थान पर कयलनि। अपनहि संगे विश्वविद्यालयक गाड़ी स' हमरा ल' क' मीटिंग मे गेलाह। हम गाड़ी स' अपन कार्यालय चल गेलहुं। किंतु सांझ मे रातिक भोजन ल' क' जखन परिसदन मे पहुंचलहुं, बिगड़ि गेलाह। कारण ड्राइवर विलम्ब स' गाड़ी ल' क' पहुंचलनि। हम

पूछि बैसलियनि मीटिंग नहि भेलै? चोट्टहि कहलनि—उच्च शिक्षा निदेशक जाहि तरहें मुंह पर धुआं फेकय लगलाह, मीटिंग की करितहुं। काल्हि स' छात्र ओ प्राध्यापक लोकनि विश्वविद्यालय मे यैह व्यवहार करय लगताह। केहन अनुशासन माननिहार छलाह, एहि स' दृष्टिगोचर होइछ।

दोसर घटना। जमींदारी प्रथा के घोर विरोधी छलाह। 14 वर्षक अवस्था मे जमींदारक अमला लोकनिक अत्याचारक खिलाफ घोर आंदोलन कयने छलाह। कुलपति भेला पर सर्वप्रथम काज कयलनि विश्वविद्यालय परिसर जे पैघ छहर-देबाली स' घेरल छल ओकरा तोड़बाय लोहाक छड़ स' घेरबौलनि। कारण जखन राज दरभंगाक जमींदारी छल ओहि परिसर मे सर्व साधागणक प्रवेश नहि छल। लोक सब ट्रेन स' आकि बाहर स' उचकि क' ओहि राजभवन सब कें देखबाक प्रयास करैत छल। तें सर्वसाधारणक हेतु एकरा खोलि देल गेल एवं दृष्टिगोचर क' देल गेल।

डा. साहेब गामक स्कूल मे जखन पढ़ैत छलाह, वेश-भूषा बहुत साधारण। धोती, देह पर चादरि, पैर मे जूता नहि। धोती मे नील नहि देल, लोहा नहि देल। यैह परिधान अंत तक रहल। बाद मे पैर मे खड़ांव ओ जूता रहय लागल। भोजन बड्ड साधारण। कूकर मे लकड़ीक कोइला पर बनैत छल। सब किछु उसिनल। शाकाहारी भोजन। 1959-60 मे मिथिला अंचल मे अन्न-संकट भेल। सांझुक भोजन बंद क' देलनि। उच्च रक्तचापक रोगी छलाह।

पटना स' दरभंगा गेला पर लहेरियासराय मे बाबू चंद्रधारी सिंहक 'चंद्र निकेतन' मे रहैत छलाह। बाद मे कैदराबादक एक भाड़ाक मकान मे, तकर बाद बेला चौक पर एक प्राध्यापकक मकान मे। ई प्राध्यापक एहि सरस्वती पुत्रक संग अमानुषिक व्यवहार कयलनि। हिनक विशाल पुस्तकालय कें बेलाक सड़क पर राखि देलनि। तखन पूर्व विधायक प्रेमचंद्र मिश्रक निवासस्थान, सारा मोहनपुर मे रहय लगलाह। गाम स' अबरजात बराबरि छलनि। अंत मे गाम चल गेलाह एवं अंतिम समय ओतहि बीतलनि।

डा. साहेब शिखा-सूत्र नहि रखने छलाह। बाल ब्रह्मचारी रहथि। एहि संबंध मे एक किंवदंती अछि। जखन गामेक स्कूल मे पढ़ैत छलाह हिनक विवाह रसियारीक बगलक गाम मे ठीक कयल गेलनि। बरियाती बर ल' कें बिदा भेलाह, रास्ता मे पेट दर्द आदि बहाना कयलनि, खूब मारि लगलनि। बरियाती बरक संग गाम घुमि गेलाह। एकर बाद परिवारक दिस स' बियाहक कोनो प्रस्ताव नहि आयल।

आधुनिक नेताक कोनो गुण डा. साहेब मे नहि छलनि। बेला, दरभंगाक डेरा पर पुछलनि—अहां माटिक बर्तन कीनने छी? हम कहल—कीनने नहि छी, कीनैत

देखने छी। की देखल? उत्तर छल—लोक हाथ स' बजाक' कीनैत छथि। यैह व्यवहार हिनक अपन कार्यकर्त्ता संग रहल।

सामंतवादी प्रवृत्तिक घोर विरोधी, अपन विद्वत्ता ओ सादगीक हेतु सतत मान्य पुरुष, मिथिला राज्य निर्माणक प्रथम उद्घोषक डा. लक्ष्मण झा एहि असार संसार कें त्यागि 23 जनवरी, 2000 कें 84 वर्षक अवस्था मे चल गेलाह। ज्योतिष्मान् नक्षत्र जकां मिथिलाक माटि-पानि पर उदित भेलाह ओ नक्षत्रपति जकां अस्त भेलाह।

मिथिला मैथिलीक विकास अवश्य हेतै एहेन हिनकर धारणा छलनि। हिनकहि शब्द मे (12 मार्च, 1956 मे भीमशंकरक सभाक भाषणक अंश जे मिथिलाक मुक्ति'क नाम स' छपल छल)—

''एहि समाजक प्राचीन उज्ज्वल अछि। एकरा स्मरण करी। घमंड लेल नहि, सत्कर्मक प्रेरणा लेल। इहलोक पड़लोक सब फेर सुधरतै। अधैर्य कथीक? सब हेतै, गण्डकी कोसी आदिक नहरि स' खेत पटतै, पर्याप्त अन्न उपजतै, केओ किए भूखल रहत? हिमालयक पाथर स' चलय लेल बढ़िया सड़क ओ रहय लेल नीक घर बनतै, जल विद्युत स' अपन कल-कारखाना, रेल, मोटर आदि सवारी चलतै; रोगीक आरोग्य लेल अस्पताल ओ धियापुताक साधारण स' उच्चतम शिक्षाक लेल स्कूल, कालेज ओ विश्वविद्यालय बनतै। एखन तक नहि बनलै तें होइ अछि जे कतौ नहि ने बनै। से कतउ होइ। एखन धरि एहि वस्तु सभक खोज कहां केलियै जे भेटैत? कोन देश, कोन समाज आलस्य, औदासीन्य मे संपन्न भेल अछि? कर्म मे चित्त हृदय मे वैराग्य राखि चल, कल्याण के छीनि सकत?''

जखनहि मिथिला मैथिलीक सर्वांगीण विकास हैत तखनहि एहि महामानवक प्रति असली श्रद्धांजलि हैत। मिथिलांचलक श्रद्धा-कुशक हमर तीन आंजुर अश्रु मिलल जल सभक्ति अछि, ओहि मिथिलाक महान सपूतक पावन स्मृति मे—

ओऽम मिथिला मैथिली गोत्रस्य
मिथिला समृद्ध कर्णधार कर्मयोगी
डा. लक्ष्मण शर्मा तृप्यतामिदम्
तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा॥

(सितंबर, 2000)

बाबू साहेब चौधरी : मिथिला-मैथिलीक अमर ओ निर्भीक सेनानी

आकाशवाणी पटनाक 23 अगस्त 1998 कें प्रादेशिक समाचार मे सुनल जे मिथिला मैथिलीक निर्भीक सेनानी ओ एक विलक्षण स्तंभ बाबू साहेब चौधरी नहि रहलाह। हमरा विश्वास नहि भेल। तीन-चारि दिनक पश्चात हिनकर एक ग्रामीण हमरा ओतय अयलाह आ हुनके मुंहें एहि महान सपूतक मृत्युक संपुष्टि भेल। शुक्र दिन 21 अगस्त 1998 कें जन्मस्थान दुलारपुर मे ई अप्रिय घटना घटल। करीब डेढ़ वर्ष स' अस्वस्थ रहि रहल छलाह। आंखि काज नहि क' रहल छलनि ओ स्मरण-शक्ति सेहो क्षीण भ' गेल छलनि।

हमरा हिनका स' कलकत्ता प्रवास मे भेंट प्रो. प्रबोध नारायण सिंहक नरेंद्र सेन स्कावायर मे 1956 मे भेल। ओहि दिन ओहिठाम मिथिला संघक कार्यकारिणीक बैसार छलै। मिथिला-मैथिलीक प्रति हिनक अटूट प्रेम पहिल बेर देखल-सुनल। 1956 स' 1975 धरि कलकत्ता मे हिनका संग सक्रिय रूपें काज करबाक मौका भेटल एवं दिनानुदिन दुनू गोटे सन्निकट होइत गेलहुं।

बाबू साहेब चौधरीक जन्म दरभंगा जिलाक दुलारपुरक एक निर्धन परिवार मे 1916क भाद्र कृष्ण द्वितीया दिन भेल छलनि अरैवार नानपुर मूलक ब्राह्मण कुल मे। पिताक नाम छलनि रामप्रसाद चौधरी। शिक्षा बेसी नहि। मैट्रिक तक। अपन पहिल प्रकाशित पोथी 'कुहेस' पिता कें समर्पित कयने छलाह जाहि मे स्वयं लिखैत छथि ''अपनेक ई अभिलाषा छल जे हमर बुच्ची (दुलारक नाम) पढ़ि-लिखि एहन व्यक्ति बनथि जाहि स' समाज मे प्रतिष्ठा प्राप्त होइन्ह। अपने तदर्थ एकटा आदर्श अभिभावकक रूप मे आंतरिक चेष्टा, परंच हमहीं अकर्मण्य सिद्ध भेलहुं।'' पिताक ई मनोभाव प्राप्त भेलनि। सामाजिक प्रतिष्ठाक शिखर पर पहुंच गेलाह। मुदा नामक अनुरूप नहि सिद्ध भेलाह। ने बाबू छलाह, ने साहेब छलाह। समाजक निम्न वर्गक

लोक स' संपर्के मे जे आनंद आ उत्साह रहैत छलनि, सैह बांग्ला अखबारक संपादक ओ विद्वान, सरकारी उच्च पदाधिकारी राजनेता आदि स'। तखन चौधरि जरूर छलाह। सब तरहक भोजन पसिन्न छलनि। मांस-माछ खाक' साबुन स' हाथ नहि धोइत छलाह। कारण, माछक गमक खतम भ' जयतनि। गौर वर्ण, कृशकाय, मोट शीशावला चश्माक तर स' झलकैत हुनक पैघ-पैघ आंखि प्रखर, मुखर, शिखर, रंगमंचक सूत्रधार, कर्मठ मैथिली सेनानी चौधरी जी छलाह व्यक्ति रूप नाम स' अधिक एकटा संस्था।

जीवन-यापनक हेतु सिंतबर 1943 मे कलकत्ता गेलाह। संयोग स' प्राइवेट बस एसोसिएशन—टिजला बस एसोसिएशन मे कार्यरत भ' गेलाह ओ एहि बस एसोसिएशन—टिजला बस एसोसिएशन मे 1960 तक सुपरवाइजरक पद पर कार्य कयलनि। ओहि समय मे कलकत्ता महानगरी मे परिवहनक मुख्य साधन निजी बस छल। सड़क यातायातक राष्ट्रीयकरण नहि भेल छल। एहि मार्ग कें सरकार 1960 मे अपना हाथ मे ल' लेलक। चौधरी जी अपन त्याग-पत्र द' देलनि। 6/1 बामन पाड़ा लेन, कलकत्ता मे रहैत छलाह। बाद मे बागुई हाटी, मे रहय लगलाह। बसक राष्ट्रीयकरणक बाद जे किछु टाका भेटलनि ओहि स' मैथिली आर्ट प्रेस, 9/1 खिलात घोष लेन, कलकत्ता-6 मे खोललनि जे शेष जीवन पर्यंत भेल हिनक जीबाक आधार। शुरू मे जीवन-बीमाक विशिष्ट एजेंट सेहो रहथि किंतु जहिना मिथिला-मैथिलीक आंदोलन मे सक्रिय भेलाह, ई धंधा खतम भ' गेलनि। आर्थिक कष्ट मे बरोबरि रहैत छलाह। परिवार कें आर्थिक सुख नहि द' सकलथिन मुदा आजीवन खुश फैल स' जीबाक हेतु कोनो समझौता नहि कयलनि। करितथि कोना—प्रगतिशील वाम विचारक लोक छलाह।

मिथिला-मैथिलीक क्षेत्र मे सर्वप्रथम 31 दिसंबर 1947 कें कालीघाट पार्क मे आयोजित अ. भा. मैथिल संघक सभा भेल छल जकर अध्यक्ष हरिश्चंद्र मिश्र 'मिथिलेंदु' रहथि। तखन मात्र दहेज-काटरक विरुद्ध मे काज होइत छल। मिथिला-मैथिलीक आंदोलनक राजनैतिक रूप तखन नहि छल।

डॉ. लक्ष्मण झा कें चौधरी जी मिथिला-मैथिलीक आंदोलनक एक मात्र गुरु मानैत छलाह। स्टेट्समैन डा. झा, जे आधुनिक राजनीतिज्ञ नहि छलाह, 1951 मे भाफि गेलाह जे मिथिला-मैथिलीक समस्या—भूख, बाढ़ि, पटौनी, शिक्षा, स्वास्थ्य, यातायात आदिक समाधान वर्तमान सरकार स' संभव नहि। तें हेतु पटना मे एहि वर्षक प्रारंभ मे मिथिला मंडलक स्थापना कयलनि। जाहि मे प्रगतिशील मैथिल लोकनि संग देलथिन। एहि क्रम मे कलकत्ताक गिरीश पार्क मे सभाक आयोजन 22 नवंबर 1953 कें कयल गेल। मिथिला राज्यक हेतु आधा मील लंबा प्रदर्शन कयल

गेल छल। एहि आयोजन मे सक्रिय भूमिका छल चौधरीजी, प्रबोध बाबू ओ देवनारायण बाबूक। मिथिला-मैथिलीक आंदोलन मे ई आयोजन मीलक-पाथरक काज करैछ जकरा कलकत्ताक मिथिला मैथिली प्रेमी कहियो नहि बिसरि सकताह। चौधरी जी मे एक उत्कृष्ट संगठनकर्त्ताक सब गुण छलनि। मिथिला पद्धति छलनि। राति-दिन मे कोनो फर्क नहि छलनि। कलकत्ताक मैथिली भाषी कोनो जाति धर्मक छलाह, सब मैथिल। जाहि समय मे दरभंगा-मधुबनीक मूर्धन्य विद्वान ओ एक संस्था मैथिल माने ब्राह्मण ओ कर्ण कायस्थ एवं शुद्ध मैथिली भाषी मात्र पंचकोशी कें कहैत छलाह, प्रवासी कलकत्तिया सब मैथिल ओ मैथिली कें व्यापक बुझैत रहलाह आ एहि हेतु व्यापक आंदोलन कयलनि। तकरे प्रभाव भेल जे आब पूर्णतः मैथिल ओ मैथिलीक परिभाषा बदलि गेल अछि।

अखिल भारतीय लेखक संघक सम्मेलन कलकत्ताक महाजाति सदन मे आयोजित छल। मैथिली लेखकक नामोनिशान नहि छल। चौधरी जी एहि हेतु सक्रिय भ' गेलाह। प्रयास सफल भेलनि। मैथिली भाषाक लेखक कें स्थान भेटलनि। ओहि मे हरिमोहन झा, लक्ष्मण झा आ मणिपद्म कें आमंत्रण भेटलनि। प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरूक उपस्थिति सेहो निर्धारित भेल। पुनः चौधरीजी एवं देवनारायण बाबू सक्रिय भेलाह जे प्रधानमंत्रीक उपस्थिति मे मैथिली भाषी लेखक कें अपन भाषाक व्यथा कहबाक अवसर भेटनि। सफल भेलाह। नेहरूजीक समक्ष डा. लक्ष्मण झा कें तीन मिनट मे अपन विचार प्रस्तुत करबाक मौका भेटलनि। डा. झा अढ़ाइ मिनट मे सब बात सुना देलथिन, जकर समीचीन उत्तर नेहरूजी अपन भाषण मे द' देलथिन। यैह छलनि काजक पद्धति। चौधरीजी असंभव कें संभव करबाक सब समय प्रयास करैत रहैत छलाह।

साहित्य अकादेमी मे मैथिलीक मान्यताक प्रसंग दिल्ली मे बैसार आहूत छल। एहि स' पहिने हिनका प्रयास स' लाखो स' उपर पोस्टकार्ड मिथिलांचल स' अकादमीक कार्यालय से पहुंचायल गेल। एहि हेतु डा. प्रबोधनारायण सिंह एवं डा. अणिमा सिंह देवघर स' यात्रा प्रारंभ कयलनि। जगह-जगह चौधरीजी, देवनारायण बाबू आ मिथिला संघक कायकर्त्ता एहि पावन काज मे सक्रिय भूमिका निभौलनि। समस्त मिथिलांचल घूमि गेलाह। अकादमीक बैसारक दिन जखन नजदीक भेल, चौधरी जी कें सूचना भेटलनि जे एक सदस्य मैथिली विरोधी छथि। जेना-तेना प्रबोध बाबूक प्रयास स' कलकत्ता विश्वविद्यालयक काज मे हुनका फंसा देल गेल। ओही बेर मैथिली के साहित्य अकादमी मे मान्यता भेटि गेल।

दरभंगा मे आकाशवाणी केंद्र एवं समस्तीपुर धरि बड़ी लाइनक निर्माण हेतु विद्यापति जयंतीक अवसर पर सत्यनारायण सिंह जे ओहि समय केंद्रीय सरकार

मे मंत्री छलाह, उद्घाटन कयने छलाह ओ रामेश्वर ठाकुर स्वागताध्यक्ष छलाह। अपन भाषण मे रेडियो स्टेशनक निर्माण स्वीकार कयलनि। रेडिया स्टेशन दरभंगा मे खुजि गेल आ मैथिली प्रोग्राम सेहो चालू भेल। डाक विभागक क्षेत्रीय कार्यालय सेहो खोलबायल गेल जे संप्रति दरभंगा राजक बेला पैलेस मे कार्यरत अछि। बड़ी लाइनक अनुशंसा सेहो करायल गेल जकरा ललित बाबूक कार्यकाल मे समस्तीपुर धरि पूरा कयल गेल। मोकामा मे गंगानदी पर पुल ओ मिथिला एक्सप्रेस ट्रेनक हेतु सेहो आंदोलन भेल छल। मैथिली कें बिहार लोक सेवा आयोग मे ऐच्छिक विषयक रूप मे सम्मिलित करयबा लेल बराबरि प्रयास होइत रहल। बिहार सरकार 1972क पूर्वार्द्ध मे एकरा स्वीकृत कयलक। दुखक संग कहय परैछ जे वर्त्तमान सरकार एकरा आब ऐच्छिक विषय नहि रहय देलक। पटना उच्च न्यायालय मे सरकार हारि गेल आ उच्चतम न्यायालय मे एहि मामिला कें ल' गेल अछि। मिथिला विश्वविद्यालयक हेतु सेहो आंदोलन भेल जे ललित बाबूक सत्प्रयास स' पूरा भेल। एहि तरहे मिथिला मैथिलीक विकास मे चौधरी जी सब दिन अगुआ रहलाह।

चौधरी जी मैथिली साहित्यक सृजन ओ समृद्धि मे सब दिन प्रयत्नशील रहलाह। मैथिली प्रकाशन हेतु मैथिली आर्ट प्रेसक स्थापना कयने छलाह। विभिन्न प्रकाशनक नाम स' मैथिली साहित्यक विभिन्न विधा मे—कथा, उपन्यास, एकांकी, गद्य संग्रह, पद्य संग्रह, नाटक आदि। जेना श्री ललितक 'प्रतिनिधि' (गल्प संग्रह)क 1964 मे प्रकाशन। नैमिकानन प्रकाशन द्वारा 5 पोथी प्रकाशित भेल छल। एहि मे साझीदार छलाह—चौधरीजी, प्रभाकर झा, रामकृष्ण ठाकुर आ एहि पंक्तिक लेखक। तहिना सिंदरी, जमशेदपुर ओ अन्य जगह लोक कें उत्साहित क' प्रकाशन करबैत छलाह। नवतुरिया लेखकक पहिल पुस्तक प्रकाशित आ ओ मूर्द्धन्य मैथिली लेखक प्रमाणित भ' चुकल छथि। यथा मायानंद मिश्रक 'बिहाड़ि पात पाथर' (उपन्यास) 'आगि मोम पाथर' (कथा 1960 मे) राजकमलक 'आदि कथा' (उपन्यास) (1958) एवं अन्यक। मूर्द्धन्य लेखक मे राधाकृष्ण चौधरीक 'शारान्तिधा', हरिमोहन झाक 'चर्चरी', ब्रज किशोर वर्मा 'मणिपद्म'क 'विद्यापति', मधुपक 'झंकार' (कविता संग्रह), आरसी प्रसाद सिंहक 'माटिक दीप' (कविता संग्रह) एवं अन्यक। नवतुरिया मे गौरी मिश्रक 'ठेहिआयल मोन शीतल छाहरि' (कथा संग्रह), श्री प्रवासीक 'अरुणिमा' (कविता संग्रह), नित्यानंद झाक 'धरती जागि उठल', श्याम चंद्र झाक 'उदय आ अस्त', बिंदेश्वर मंडलक 'बाटक भेंट जिनगीक गेंठ' आ 'समाधान', जनार्दन झाक 'निष्कलंक' नाटक, घनचक्र संपादित 'स्वास्तिका' (कथा संग्रह), सीताराम चौधरीक 'सुखायल डारि नव पल्लव' (नाटक), मोहन चौधरीक 'संतान' (नाटक), एवं अन्य साहित्यकार। लिस्ट पैघ अछि जकरा एहि छोट लेख

मे समेटब संभव नहि।

मैथिलीक सब विधा मे नव ओ मूर्द्धन्य साहित्यकारक सहयोग स' भंडार भरलनि। नव लेखक आब शीर्ष स्थान प्राप्त कय। किंतु चौधरी जी अयश अपना माथ पर ने छथि, सेहो लेलनि। कारण रायल्टी ओ परिश्रमिक लेखक लोकनि कें नहि द' सकलाह। यद्यपि कलकत्ता मे परिपाटी छल जे मैथिली पुस्तक बिना मूल्य देने नहि पढ़ब। किंतु चौधरीजी पाइ वोसूलइ मे मोगल नहि भ' सकैत छलाह। कलकत्ता स' बाहर प्रकाशित पोथी-पत्रिका सेहो घूमि क' बेचैत छलाह। पत्रिकाक आजीवन सदस्य बनबैत छलाह। मैथिली पत्रिका स्थायी प्रकाशित नहि भ' सकल। पुनः जिनका सब अंक नहि भेटैत छलनि, हिनका स' अयशक भागी भेलाह।

हमरा जनैत चौधरीजीक तीन टा पोथी प्रकाशित भेल छलनि। 'अछिंजल' (कथा संग्रह), बामन पाड़ा लेन कलकत्ता-19 स' मैथिली प्रकाशन द्वारा प्रकाशित। एहि मे नौ गोट कथा संग्रहीत अछि। एकर ओ स्वयं संपादक आ भूमिका लिखने छथि। डी. एल. राय कृत चाणक्य नाटकक भावानुवाद 1965 मे दोसर रचना छपल जे 23 नवंबर 1965 कें महाजाति सदन कलकत्ता से मंचस्थ भेल छल। तेसर हुनक लिखल 'कुहेस'-मौलिक सामाजिक नाटक 1967 मे प्रकाशित भेल। ई नाटक बहुत समादृत भेल एवं 13 मइ 1967 कें नेताजी सुभाष इंस्टीच्यूटक प्रेक्षागृह, कलकत्ता मे मैथिली रंगमंच संस्था द्वारा मंचस्थ कयल गेल छल। चौधरीजी स्वयं कन्याक पिता—जनकक पार्ट कयने छलाह। प्रदर्शन खूब सफल भेल छल।

नाटकक प्रति चौधरीजी अपन प्रारंभिक जीवन काल स' समर्पित छलाह। प्रत्येक वर्ष दुलारपुर-मकरमपुर मे दुर्गापूजा ओ अन्य उत्सव पर हिनका प्रयासे 1953 धरि नाटक होइत रहल। स्वयं 'कुहेस' क भूमिका मे लिखैत छथि जे क्रमशः एहि स' उदासीन होमय लगलहुं, कारण मिथिला संघ द्वारा संचालित मैथिली आंदोलन मे हम तेना ओझरा गेलहुं जे गामक एहि आयोजन मे सम्मिलित भेनाइयो असंभव भ' गेल। चौधरीजी विद्यापति पर्वक अवसर पर सांस्कृतिक कार्क्रम मे नाटकक प्रदर्शन प्रारंभ कयने छलाह। किंतु स्त्री-पात्रक रूप मे पुरुष द्वारा अभिनय अखरैत छलनि। दोसर मंचोपयोगी नाटकक अभाव बुझना गेलनि। स्वयं प्रबोध बाबू, अणिमा सिंह, इलारानी सिंह, नचिकेता, सीताराम चौधरी, गुणनाथ झा एवं अन्य लोकनि मूल नाटक एवं अनुवाद प्रस्तुत कयलनि। मैथिली नाटक कें आधुनिक बांग्ला नाटकक समकक्ष ल' जयबा मे डा. अणिमा सिंह, प्रबीर मुखर्जी, सीताराम चौधरी, श्रीकांत मंडल, नचिकेता आदिक मुख्य सहायता भेटलनि। श्रीमती वीणा राय बंगालिन कें पहिले पहिल मैथिली नाटक मे स्त्री पात्रक रूप मे उतारल गेल। बाद मे बहुतो मैथिली नाटक मे हिनका स' काज करायल गेल। नव-नव कलाकार कें

चौधरी जी तैयार कयलनि।

मैथिली आंदोलन कें विकसित करबा मे 'मिथिला दर्शन' पत्रिकाक पैघ योगदान छैक। 1952 स' ई मासिक पत्रिका कलकत्ता स' प्रकाशित होमय लागल, मिथिला संघक मुखपत्रक रूप मे। दर्शनक मुखपृष्ठ पर कविवर सीतारात झाक ई पंक्ति, 'पायब निज अधिकार कतहुं की बिना झगड़ने, अछि सलाइ मे आगि बरत की बिना रगड़ने।' मिथिला संघ मिथिला-मैथिली आंदोलनक हेतु सब समय यैह मंत्र अपनौने छल। शुरू मे 'मिथिला दर्शन' सिंह प्रेस स' प्रबोध बाबूक संपादकत्व मे प्रकाशित होइत रहल। कैक खेप बंद भेल—चालू भेल। संपादक सेहो बीच-बीच मे बदलल गेलाह। जेना बाबू साहेब चौधरी, अणिमा सिंह, इलारानी सिंह। मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड सेहो बनल। नव लोक कें सेहो व्यवस्था मे आनल गेल। जेना राजनंदन लाल दास ओ एहि पंक्तिक लेखक कें। मुदा कोनो प्रयास एकरा दीर्घजीवी नहि बना सकल। अंत मे चौधरी जी प्राय: 1975-76 स' 'मैथिली दर्शन' प्रकाशित करय लगलाह। पुन: असफल भेलाह। आ ई पत्रिका बंदे भ' गेल।

साहित्य अकादमी मे पुरस्कृत पोथीक संबंध मे फरवरी 1973क अंकक संपादकीय ''मिथिला दर्शन अद्यावधि मैथिलीक किछु तथाकथित पंडा सब द्वारा (अकादमीक प्रतिनिधि वा टेक्स्टबुक कमिटीक सदस्यगण होथि, खाहे परीक्षक होइथ) मैथिलीक नाम पर जे कुकृत्य कयल जाइत अछि ताहि संबंध मे कम-बेश अवगत रहितहुं मात्र अहि दृष्टि स' जे एखन पारस्परिक घोंघाउज भेनाइ ठीक नहि नीति अपनौने छल, मुदा आब चुप्पी सधने कर्त्तव्य च्युत हेबाक संभावना। प्रारंभे स' ई संदेह सुच्चा मैथिली भक्तक हृदय मे स्थान बनौने छल जे अकादमी मे पूर्ण पक्षपात होइत अछि।'' चौधरीजी के 1973 मे पक्षतापूर्ण रवैया दृष्टिगोचर भेलनि। 2002 मे एहि पक्षपातपूर्ण रवैया पर किछु उत्साही युवक साहित्य अकादमी कार्यालय दिल्ली मे धरना-प्रदर्शन कयल—मूल ओ अनुवाद दुनू पोथी मे उचित निर्णय नहि होयबाक कारण। सचिव साहित्य अकादमी कें दिल्ली पुलिसक सहयोग स' शांति स्थापित करबाक हेतु बजबय पड़लनि।

'विद्यापति पर्वक नव रूप चाही' अक्टूबर-नवंबर 1973क 'मिथिला दर्शन' संपादकीय मे लिखैत छथि, ''हमरा लोकनि भले ही प्रत्येक शहर मे विद्यापति भवन बना ओहि मे विद्यापतिक सोनाक मूर्तियो स्थापना क' ली, परंच जों मिथिला आ मैथिली नहि रहत त' विद्यापति नहि जीवित रहि सकैत छथि। सरकार कें स्पष्ट भाषा मे सब कें कहि देबाक चाही जे मैथिलीक समस्या कें टारने नहि बनत। भाषाक संग आंदोलन मे मिथिलाक अन्यान्य समस्या सब कें (यथा औद्योगिक विकास, यातायात, शिक्षा आदिक प्रबंध) सेहो सम्मिलित करय पड़त।'' ई मैथिली सेवी

संस्था स' अपील कयल गेल छल 1973 मे। किंतु एखनो पटना ओ दरभंगाक मूर्द्धन्य संस्था यैह नहि क' रहल अछि। मिथिला मैथिलीक सर्वांगीण विकासक हेतु कोनो ठोस काज नहि कयल जा रहल अछि।

कलकत्ताक एक बैसार मे एक प्रवासी मैथिल अपन तर्क रखलनि जे मैथिली मे क्रोध व्यक्त करबाक उचित सामर्थ्य नहि छैक, जेहन कि हिंदी वा भोजपुरी मे छैक। चौधरीजीक आंखि एकबैग लाल भ' गेलनि। ओ एतेक जोर स' बजलाह, छाउर लगा क' सट्ट द' जीह खैंच लेब एखने। ओहि बेचारेक वाक-हरण भ' गेल! उपस्थित लोक सकदम्मे रहि गेलाह। एक क्षणक हेतु वातावरण अत्यंत विषाक्त भ'गेल। मुदा तुरंते चौधरी हंसैत बजलाह, ''आब कहू, मैथिली मे क्रोधक नीक अभिव्यक्ति छैक कि नहि?'' मैथिली भाषाक विरुद्ध ओ किछु सुनि नहि सकैत छलाह।

हिंदी स' विरोध नहि छलनि। विरोध छलनि मैथिलीक मंच स' मैथिल द्वारा मातृभाषाक अपमान स'। पटनाक चेतना समितिक 1974क विद्यापति पर्वक आयोजन। नेपालक पूर्व प्रधानमंत्री मातृका प्रसाद कोइराला अपन उद्घाटन भाषण मैथिली मे कयलनि। किंतु अध्यक्षीय भाषण करबाक हेतु डा. जनार्दन मिश्र उठलाह एवं हिंदी मे संबोधन कयलनि। चौधरी जी अन्य अतिथिक संग प्रथम पंक्ति मे बैसल छलाह। ठाढ़ भ' गरजलाह—हां-हां, मंच कें अपवित्र नहि करू। मैथिली मे बाजू। अध्यक्ष पुन: अपन भाषण हिंदी मे शुरू कयलनि। चौधरी जी पुन: गरजलाह-मंच फेर अपवित्र भेल। हम सभाक बहिष्कार करैत छी आ विदा भ' गेलाह। चौधरीजी मैथिली आंदोलनक निर्भीक सेनानीक परिचय देलनि।

मिथिला-मैथिलीक आयोजन कोना कयल जाय। एहि संबंध मे 15-01-70क एक पत्र मे रामकृष्ण झा 'किसुन' कें कलकत्ता स' लिखैत छथि—सुपौल मे व्यवस्था कयने कोना की खर्च पड़तैक एवं कतेक दिन हमरा वा अन्य कार्यकर्त्ता कें समय देमय पड़तैक, तकर सूचना दी। हमरा लोकनि की करय चाहैत छी से पत्र लिखि चुकल छी।' तैयो किछु पुन: उल्लेख क' दैत छी। मैथिलीक कोनो मांगक पूर्ति बिनु आंदोलने संभव नहि तें जे कोनो आयोजन हो, तकर रूप एहन रह'क जाही चाहि स' आंदोलनक झलक जन साधारण तथा सरकारक ध्यान मे अबैक। एकरा ध्यान मे राखि केहन आयोजन हैबाक चाही, तकर अनुभव हमरा स' बेसी अपने कें अछि। राजनीतिक दल स' आशा हमरा एखनो नहि अछि। मिथिलाक समस्त जिला मे हमरा लोकनि आयोजन करय चाहैत छी।

कविवर सीताराम झाक पड़लोक गमन भेला पर स्मृति अंक मनोनुकूल प्रकाशित नहि क' सकलाह। 'मैथिली दर्शन'क जनवरी-फरवरी, 1976 मे लिखैत छथि, ''हमरा जनैत मैथिली दिस लोकक रुचि जगबै मे सब स' विशेष हाथ छनि

सर्वश्री हरिमोहन झा, सीताराम झा आ मधुपजी आदिक। मुदा मिथिला मे सब धान बाइस पसेरीक भाव बिकाइत छैक। हमरा लोकनि जीबैत किनको प्रर्याप्त सम्मान त' दइये ने सकलिअनि, मृत्युक उपरांतो श्रद्धा ज्ञापन करै मे कतराइत रहैत छी। कविवर हम 'मैथिली दर्शन' परिवार आ मिथिला संघक दिस स' सादर प्रणाम ज्ञापन करैत यैह कहब जे जौं आइ मिथिला छोड़ि बंगाल, मद्रास, केरल आदि मे जन्म ग्रहण कयने रहितहुं त' अपने कें अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भेल रहैत।'' चौधरीजीक उपर्युक्त उक्ति सत्य घटित भेल। हुनका जीवन मे ओ मृत्युक उपरांत ई समाज किछु कयलकनि हुनका लेल? धन्य छथि कलकत्ताक प्रवासी मैथिल सब जे हुनक जन्मस्थान मे स्मारक बना रहल छथि।

चौधरी जी तिलक-काटर व्यवस्थाक घोर विरोधी छलाह। जे बालकक विवाह मे टाका गनबैत छलाह, हुनका ओतय भोजन नहि करैत छलाह। अपन सब काज बिनु टाका गनने कयने छलाह। बिहार सरकार 1976 मे विधेयक द्वारा टाका गननिहार-गनोनिहार दुनू कें सजाक प्रावधान कयलक। एहि पर हुनक प्रतिक्रिया 'मैथिली दर्शन'क जनवरी-फरवरीक संपादकीय मे देखल जाय, ''हमरा स्मरण अछि जे 1948 स' 50 धरि कलकत्ताक संस्था द्वारा एकरा विरुद्ध मे जे आंदोलन सौराठ सभा मे भेल छल ओकर नीक प्रभाव पड़ल रहैक, परंच संस्थाक प्रतिनिधिये (विशेष रूप स' पदाधिकारी लोकनि) सब अपना बेटा आ भातिजक बेर मे निर्लज जकां हजारक हजार गना लेलनि त' जनताक दोषे कोन? अपने (तत्कालीन मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्र) टाका गनौनिहार पर निर्मम प्रहार द्वारा तिलक प्रथा बन्न क' मिथिला मे एक टा नव कीर्तिक स्थापना करू। दर्शन अपनेक पूर्ण समर्थन करत।'' किंतु सरकारक विधान एहि सब मे कानूनक किताबक शोभा बढ़ा रहल अछि आ संस्थाक प्रयास असफल भेल।

चौधरीजी जहिना नाटक ओ संगीत मे प्रेम रखैत छलाह, तहिना फुटबौल खेल मे सेहो। मोहन बगान टीमक पैघ भक्त छलाह। हमरा खेल-कूद मे रुचि नहि, माठ मे मैच नहि देखने छलहुं। एक बेर ल' गेलाह। खेल की देखब हम एखन खेलुआर भेल छी, ओ ओहि समय मे छलाह। चाहक भाड़ (चुकिया) गेंद जकां हुनका माथ पर खसल। हम अकचका गेलहुं। ओ कहलनि—एहि सब मे एहिना होइत छैक। मैच खतम भेल तखन घर फिरलाह। हम जहिना मिथिला-मैथिली आंदोलन मे संग दैत छलियनि, अपन 20 वर्षक प्रवास मे खेलक मैदान मे कहियो संग नहि देलियनि।

सामान्य मनुष्यक जन्म होइत छनि सांसारिक भोग-विलासक हेतु। विशिष्ट व्यक्ति अबैत छथि, ओ अपन अवदान छोड़ि, एहि असार संसार मे सारभूति तत्वक स्थापना कय, महाप्रयाण करैत छथि। लोक चर्चित होइत रहैछ अपन क्रिया-कलाप

स', सुकृति-प्रकृति स'—युग पुरुष युगस्रष्टा होइछ, निर्माता होइछ। अपन वैशिष्टय स' सदा चमत्कृत करैत रहलाह मिथिला मैथिलीक ई अमर सपूत। पहिने सोचैत रही, जाहि दिन मैथिली कें संविधानक अष्टम अनुसूची मे स्थान भेटि जायत, ओहि दिन एहि महामानव कें असली श्रद्धांजलि हैत। मुदा आबक स्थिति त'...

(अप्रैल-जून, 2002)

मिथिला–मैथिलीक उन्नायक
प्रो. डा. प्रबोधनारायण सिंह

मैथिली भाषा, साहित्य, कला आ मिथिलाक सामाजिक, राजनैतिक आ सांस्कृतिक चेतना आइ जतय धरि पहुंचल अछि आ अपन परिचय आ स्थान बनौलक अछि ओहि मे नहि जानि कतेको गोटेक जीवन भरिक समर्पण, त्याग ओ योगदान अछि। लक्ष्य एखन आर आगू धरि अछि, मुदा पूर्वजक समर्पण मे आस्था स' प्रेरणा ल'क' आगूक बाट पर बढ़ल जा सकैत अछि। एहने आस्थापूर्ण समर्पण हम प्रबोध बाबू मे देखने छलियनि। 21 मार्च 2005क सांझ अनुज अग्निपुष्पक एहि सूचना पर सहजे विश्वास नहि भेल जे प्रबोध बाबू नहि रहलाह। अपन प्रेरणाक अवसान पर विश्वास कोना होइत। डा. लक्ष्मण झा, डा. लक्ष्मीनारायण सिंह एवं अन्य सहयात्री आ सहयोद्धा प्रबोध बाबूक संग 1956 स' 1975 धरि अपन कलकत्ताक प्रवास मे मिथिला–मैथिलीक सर्वांगीण विकासक लेल सतत सक्रिय एहि महापुरुषक संग डेग मिलबैत रहलहुं। हमर आगूक डेग एना आलोप्त भ' जायत से विश्वास नहि भेल। एखनो हमरा होइत छल जे हम हुनक नरेंद्र सेन स्क्वैयरक आवास पर हुनका स' गप्प क' रहल छी जतय ओ कलकत्ता प्रवास मे पहिल बेर अगस्त 1956 मे भेटल छलाह। कहने छलाह जे काल्हि संध्या 6 बजे आउ। मिथिला संघक बैसार छैक सब स' परिचय भ' जायत। जखन हम पहुंचलहुं, देखल जे एक मुसलिम कार्यकर्त्ता मैथिली मे भाषण क' रहल छलाह। बहुत प्रभावित भेलहुं। 1954 स' मिथिला–मैथिलीक काज मे डा. लक्ष्मण झा ओ प्रो. लक्ष्मीनरायण सिंहक संग संलग्न छलहुं। मुदा मुसलमान कार्यकर्त्ताक संग काज करबाक ई पहिल मौका छल। प्रबोध बाबू करुणा, उदारता ओ लोकोपकारक जीवंत मूर्ति छलाह। हमरा देखल अछि जे अनेकानेक प्रतिभाशाली मुदा गरीब विद्यार्थी हिनक सहयोग पाबि कलकत्ता मे अध्ययन करैत छलाह तथा योग्य भेला पर कतेको व्यक्ति उत्तम कोटिक नोकरी

पाबि गेलाह। कम पढ़ल लिखल लोकक हेतु—दरबान, चपरासी, मोटर गाड़ी चालक तथा अन्य काजक व्यवस्था करैत छलाह। कोसी क्षेत्रक जन्म लेनिहार मिथिला विभूति प्रो. प्रबोध नारायण सिंह स्वतंत्रता संग्रामक योद्धा आ मिथिला–मैथिलीक उन्नायक आब हमरा लोकनिक बीच विद्यमान नहि, हुनक पंचभूत शरीर कलकत्ताक गंगाक कछेर मे विलीन भ' गेल, मुदा ओ अपन अमर कीर्ति स' चिरंजीवी छथि आ रहताह। ओहि महान आत्मा कें शत–शत नमन।

सहरसा जिलाक सोनबरसा प्रखंड मे तिलाबय नदीक तट पर बसल सहमौरा गाम छनि प्रबोध बाबूक किंतु हिनक जन्म भेल छनि 12 दिसंबर 1924 कें हिनक मातृक पस्तपार गाम मे। प्रारंभिक शिक्षा घर मे भेल छलनि। 1938 मे शाह–आलमनगर स' मिडिल स्कूल–परीक्षा उत्तीर्ण भेल छलाह। सहरसा हाई स्कूल मे आगूक शिक्षा हेतु प्रवेश कयलनि मुदा 1942 मे देशक अगस्त क्रांति मे सक्रिय भ' गेलाह। देश कें ब्रिटिश शासन स' मुक्तिक हेतु जोरदार आंदोलन कयलनि। 1942 मे ब्रिटिश ओ बलूची फौज जखन सहरसा पहुंचल तखन अस्त्र–शस्त्र, तीर, धनुष, भाला, फर्सा स' युवा कार्यकर्त्ता कें शस्त्रसज्जित कयलनि। हिनक क्रांतिकारी एवं आक्रामणकारी गतिविधिक कारणें 'देखते ही गोली मार देने का आदेश' जारी कयल गेल छल। ब्लैक वारंट स्वाधीनता पूर्व तक रहलनि। क्रांतिकारी गोष्ठीक सक्रिय सदस्यक कारणें भूमिगत रहय पड़लनि। 1944 मे प्रमुख अधिवक्ता लोकनिक सहयोग स' मधुपेरा स' मैट्रिक परीक्षा पास कयलनि। दू वर्ष एहि आंदोलन मे गमौलनि। 1945 मे 'साहित्यालंकार' ओ 1947 मे 'साहित्यरत्न' हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग स' उपाधि प्राप्त कयलनि। भागलपुर मे इंटर परीक्षा पास कयलाक बाद 1946 मे पटना विश्वविद्यालय मे संस्कृत मे स्नातक परीक्षा मे प्रवेश कयलनि आ 1948 मे संस्कृत मे स्नातक (प्रतिष्ठा) पास क' प्रबोध बाबू बिहार छोड़ि कलकत्ता आबि गेलाह। 1950 मे एम.ए. परीक्षा ससम्मान कलकत्ता विश्वविद्यालय स' उत्तीर्ण भेलाह, जाहि मे हिनका दू टा स्वर्णपदक प्राप्त भेलनि। 1968 मे 'तुलनात्मक भाषा विज्ञान', 1969 मे 'पाली', 1970 मे 'फारसी' परीक्षा मे उत्तीर्ण भेल छलाह कलकत्ता विश्वविद्यालय स' जाहि मे एकाधिक स्वर्णपदक प्राप्त भेलनि। 1972 मे प्रबोध बाबू कलकत्ता विश्वविद्यालय स' मैथिली डी.लिट कयलनि। 1976 मे मगध विश्वविद्यालय, गया स' हिंदी मे डी.लिट कयलनि। भाषा आ साहित्य मे समान कुशलता छलनि। प्राय: 12 गोट छात्र–छात्रा हिनका अधीन मे पी–एच.डी. कयने छलाह।

देश कें स्वतंत्र भेलाक पश्चात् प्रबोध बाबू राष्ट्र सेवाक हेतु अध्यापन कें चुनलनि। प्राय: 40 वर्ष—1950 स' 1990 धरि—हिंदी, पाली, फारसी ओ

तुलनात्मक भाषा, भाषा विज्ञानक अध्यापन कयलनि। प्रारंभ मे 1953 तक कलकत्ताक चारू चंद्र कॉलेज मे हिंदीक प्राध्यापक तथा 1953–1960 जून तक जयपुरिया कॉलेज मे हिंदी मे अध्यापन कयलनि। जुलाइ 1960 मे कलकत्ता विश्वविद्यालयक हिंदी विभाग मे व्याख्याता नियुक्त भेलाह। बाद मे एही विश्वविद्यालयक हिंदी विभागाध्यक्ष रहलाह। 1990 मे एतहि स' सेवानिवृत्त भेलाह।

प्रबोध बाबूक पहिल पत्नी—इलारानी सिंहक मायक देहांत 1947 मे भ' गेलनि। पुन: 28 जुलाइ 1950 मे अपन विवाह सहपाठिनी अणिमा धर स' कयलनि। एहि स' दू पुत्र रत्न-बुबो (उदय) ओ अजय भेलनि। उदय भाषा साहित्य ओ विज्ञान मे निष्णात छथि ओ भारत सरकारक उच्च शिक्षा विभाग मे कार्यरत छथि। अजय आयकर विभाग मे उच्च पद पर आसीन छथि। अणिमा जी बंगाल सरकारक लेडी ब्रेबोर्न कॉलेज मे हिंदीक प्राफेसर छलीह तथा ओतहि स' सेवानिवृत्त भेलीह। अणिमा जी प्रबोध बाबूक संग मिथिला-मैथिलीक विकास मे वर्कर जकां काज कयलनि तथा ओ लोक साहित्यक एक निष्णात अध्येत्री छथि। इला सेहो हिंदी आ मैथिली मे पी.एच.डी. ओ डी.लिट् कयने छली तथा भागलपुर ओ कलकत्ता मे अध्यापन करैत छली। हुनक आकस्मिक मृत्यु स' प्रबोध बाबू अत्यधिक मर्माहत भेल छलाह।

प्रबोध बाबू मिथिला-मैथिली आंदोलनक मात्र प्रमुख संघर्षशील पथप्रदर्शके नहि, अपितु मैथिली, हिंदी एवं उर्दूक विशिष्ट विद्वान, लेखक, अनुवादक तथा संपादक सेहो छलाह। पटना मे जखन ओ स्नातकक छात्र छलाह एकटा हिंदी पत्रिका 'मेल-मिलाप' मे काज करैत छलाह। पटना मे एक छोट लेटर प्रेसक जोगाड़ सेहो कयने छलाह। पटना विश्वविद्यालय स' संस्कृत मे बी.ए. (आनर्स) कयलाक उपरांत कलकत्ता विश्वविद्यालय मे हिंदी मे एम.ए. पढ़बाक हेतु गेला पर अपन जे प्रेस छलनि से अपन प्रिय मित्र अर्थशास्त्री लक्ष्मीनारायण सिंह कें द' देलथिन। जाहि प्रेस कें हमर गुरुवर लक्ष्मीबाबू कार्यशील नहि राखि सकलाह। ई गप्प हमरा लक्ष्मी बाबू स्वयं कहने छलाह। प्रबोध बाबू एहि पर कहियो चर्चा नहि कयलनि। कलकत्ता मे पुन: सिंह प्रेस स्थापित कयलनि ओ ओतहि स' अपन ओ परिवारक रचना प्रकाशन करय लगलाह। मिथिला-मैथिली आंदोलन कें मुखर करबाक हेतु 1951 स' 'मिथला दर्शन' मासिक पत्रिकाक प्रकाशन करय लगलाह। अपना अतिरिक्त क्रमश: श्रीमती अणिमा सिंह ओ श्रीमती इला रानी सिंह के एहि काज मे भिड़ा देलनि। एक साक्षात्कार मे अणिमाजीक उक्ति "ई (प्रबोधबाबू) पढ़ाई, लोकगीत, 'मिथिला दर्शन' ओ अन्य मे हंगामाक सृष्टि क' दैत छलथिन आ हमरा सब टा सोझराबय पड़ैत छल।" 'मिथिला दर्शन' प्रारंभ स' हिनक पत्र छल। बहुत बाद मे अखिल भारतीय मिथिला संघक मुख्यपत्र भ' गेल'। किंतु दर्शन प्रकाशन हेतु अर्थक व्यवस्था

हिनका स्वयं करय पड़ैत छलनि। 'मिथिला दर्शन'क उद्‌बोधन वाक्य शुरू स' कविवर सीताराम झाक यैह पद छल जे एखनो 'मिथिला दर्शन' अपनौने अछि:—

'अछि सलाइ मे आगि बरत की बिना रगड़ने।

पायब निज अधिकार कतहु की बिना झगड़ने॥

प्रबोध बाबू 'मिथिला दर्शन'क संपादकीय मे सब समय एहि मूलमंत्र कें अपनौने रहलाह। हुनक मिथिला-मैथिलीक प्रति समर्पण, सजगता, कार्यशीलता आ प्रयासरत रहबाक प्रमाण 'मिथिला दर्शन'क संपादकीय मे भेटैछ। भाषाक आधार पर राज्यक पुनर्गठन भेल, किंतु ताहि मे सत्तालोलुप कांग्रेसी सरकार द्वारा घोर पक्षपात स' काज लेल गेल। जाहिठामक जनता शांत रहल ताहि-ताहि ठामक कोनो मांग दिसि कानहु धरि नहि देल गेलैक। अढ़ाई करोड़ मैथिलीभाषी जनताक प्रतिनिधिमंडल स' साक्षात्कार कय, ओकर स्मार-पत्र ग्रहण कय, बहुत काल धरि तर्क-वितर्क कए, तखनहुं राज्य पुनर्गठन आयोग अपन विवरण मे मैथिली भाषी जनताक मांग धरि नहि उल्लेख कयलक। एहि कारणें प्रबुद्ध मैथिल समुदाय मे जे क्षोभ व्याप्त छैक से चिंताक विषय। अंत मे लिखैत छथि—आइ कांग्रेस सत्ताक लोभ मे पड़ि राष्ट्रीय एकता कें विनिष्ट करबाक पाप अपना कपार पर किएक लैत छथि? प्रत्येक प्रांतक बहुसंख्यक जनताक भाषा कें स्वीकृति दए तथा अन्यान्य स्वीकृत भाषा जकां समान राजकीय सहायता प्रदान कए संविधानक आदेश पालन करब दिल्ली सरकारक परम कर्त्तव्य थिक। ('मिथिला दर्शन' जुलाइ 1960)। ओहिना मोन अछि प्रबोध बाबू अपन नेतृत्व मे एहि आयोग स' भेट कयने रहथि। पुन: 1961 मे पंजाब प्रांतक आंदोलनकर्त्ता लोकनि प्रांत पुनर्गठनक लेल संघर्ष कें नेहरू राष्ट्रविरोधी षड़यंत्र कहल। किंतु अगस्त 1961क 'मिथिला दर्शन'क संपादकीय मे जोरदार शब्द मे कहैत छथि 'पंजाबी वा मैथिली कोनो सम्माननीय भारतीय भाषाक समुन्नति स' देशक कोनो क्षति नहि भए सकैछ। तखन तकरा उचित अधिकार नहि देब कतय धरि नीक।'

मैथिली भाषाक विकासक हेतु जन आंदोलनक आह्वान करैत दर्शनक मइ-जून 1961क अंक मे लिखैय छथि, 'मैथिली भाषाक प्रति गणतंत्रात्मक सरकार स' न्याय तथा औचित्यक रक्षाक आशा करब व्यर्थ। ओ सर्वदा जनमतक समक्षहि झुकैत अछि। जन आंदोलनक समक्ष सरकार ओहिना कंपायमान भए जाइछ जेना बिलाड़क सम्मुख मुसरी। बिहार मे आधा स' अधिक लोक मैथिली भाषा-भाषी छथि। एक वा दू जिलाक त प्रश्न नहि, कोन प्रांतक दू तृतीयांस निवासी मैथिली बजैत छथि। ताहिठाम मैथिलीक कोनो मर्यादा नहि। एहि अभागलि, किंतु भारतक सर्वप्रसिद्ध एवं समृद्ध भाषा कें ने त' भारतीय संविधान मे कोनो स्थान देल गेल छैक आने प्रांतीय स्तर पर एकरा प्रांतीय भाषा घोषित कयल गेल छैक। ई किएक? एहि लेल

जे मिथिलाक जनता आंदोलन नहि करैछ। जो गणतंत्रात्मक प्रशासन पद्धति समर्थक नेता लोकनिक विवेक पर निर्भर रहि आयल अछि। हुनका लोकनिक नैतिकता, विवेक एवं औचित्य-ज्ञान पर भरोस क'क' ओ बहुत किछु गमौलक। संप्रति मिथिला मे जागरण भए रहल छैक। लोक बुझि गेल अछि जे नपुंसक जकां हाथ पर हाथ दए बैसल रहने तथा नेता लोकनिक हाथ मे भविष्य अर्पित क' देने और बेसी नहि चलत। हमरा दृष्टिएं दूरदर्शी केंद्रीय सरकारक ई कर्त्तव्य थिकै जे वातावरण मे विषाक्ताक सम्प्रसार हैवा स' पहिने मैथिली कें अपन अचित अधिकार दए राष्ट्रीय एकता कें दृढ़ करय एवं अन्यायी हैवाक कलंक स' बांचि जाय।'

अक्टूबर 1966 मे मैथिली आंदोलनक जनप्रियता स' प्रबोधबाबू अत्यधिक उत्साहित भेल छलाह। जे हुनक 'मिथिला दर्शन'क अक्टूबर मासक संपादकीय स' स्पष्ट होइछ। संप्रति मैथिली आंदोलन यथेष्ट जनप्रियता प्राप्त क' लेने अछि। लोक सब मे नव उत्साह, नव लगन, नव आशाक संचार भ' रहल छैक। ई सौभाग्यक विषय जे अन्य क्षेत्रीय भाषाक आंदोलन जकां ई अन्ध नहि, वरन, राष्ट्रीयता-संवलित एवं निर्माणोन्मुख अछि। कलकत्ता, पटना, दड़िभंगा, सहरसा, पूर्णिया, प्रयाग, कानपुर एवं बंबई आदि स्थान मे नीक तथा अनुकरणीय काज भ' रहल अछि। एखन आवश्यकता अछि भागीरथी-व्रती नेतृत्वक। समुचित नेतृत्व पौने ई आंदोलन पवित्र-सलिला भागीरथी जकां समस्त मिथिलांचलक दु:ख-दैन्य दुरितादिक सत्वर प्रक्षालन कए सकैछ। यद्यपि नैसर्गिक तेज-वशात् मैथिल लोकनि ककरहु अपन नेता मानबा लेल तत्पर नहि भ' सकैत छथि, तथापि ई समय एहन अछि जखन दूरदर्शी, सहनशील, निर्भीक एवं सशक्त नेतृत्व सब स' बेसी अभिष्ट बुझाइछ।

प्रबोध बाबूक सत्प्रयास स' 24 मइ 1967 कें सिन्दिरी स्थित विद्यापति परिषदक तत्वावधान मे देशक अधिकतम मैथिली सेवी संस्था मिलि क' 'अखिल भारतीय मैथिली महासंघ'क निर्माण कयल। प्रो. सरोजानंद चौधरी (जमशेदपुर) अध्यक्ष ओ प्रो. प्रबोध नारायण सिंह (कलकत्ता) मुख्य सचिव बनायल गेलाह। कार्यालय छल 162/80, लेक गार्डेन्स, कलकत्ता अर्थात प्रबोध बाबूक निवास स्थान। मुख्य उद्देश्य छल मैथिलीक अधिकारक प्राप्तिक लेल व्यापक आंदोलन जकर नामकरण कयल गेल छल 'मैथिली संग्राम'। अहिंसात्मक विधि स' संग्राम संचालनक हेतु मैथिल सैनिक संग्रह कयल गेल छल। अधिकांश मैथिली सेवी संस्था महासंघ स' संबंधित भ' गेल छल। एकर सफलता पर दिसंबर 1967क 'मिथिला दर्शन'क संपादकीय मे लिखैत छथि—अखिल भारतीय मैथिली महासंघक बहुमुखी अभियान स' समाजक चिंतनशील वर्ग मे एक नव चेतनाक प्रसार भेल छैक। महासंघक समक्ष एहन कोनो कारण नहि छैक जाहि स' ओकरा कनेको निराशाक बोध होइक। अंत मे लिखैत छथि—सिंदरी, पटना तथा दड़िभंगाक अधिवेशन स' अनुभव, प्रेरणा एवं शक्ति अर्जन क' पुन: जमशेदपुर मे 19 नवंबर कें आयोजन भेल अछि जकरा मे महासंघ महत्त्वपूर्ण पदनिक्षेप कयने अछि।

सरकार द्वारा मैथिली भाषाक उपेक्षा पर 'मिथिला दर्शन'क फरवरी 1968क अंकक संपादकीय मे लिखैत छथि, 'ई लज्जाक विषय जे कोटि-कोटि मिथिलावासी लोकनिक मातृभाषा उपेक्षित अछि। कोनो देशक इतिहास मे संसार भरि मे एहन दोसर उदाहरण कतहु नहि भेटत जतय अढ़ाइ कोटि जनताक मातृभाषा कें राजकीय स्तर पर भाषा-पद धरि प्राप्त नहि भेल हो। मिथिलाक अढ़ाइ कोटि जनता एहि ग्लानि स' पीड़ित, अपमानित एवं लांछित अछि। हमरा हिंदी वा आन कोनो भाषा स' विरोध नहि। हिंदी हमर राष्ट्रभाषा थिक, तें ओकरा माथ पर रखबैक। मैथिली हमर मातृभाषा थिक, तें ओकरा हृदयक सिंहासन पर रखबैक। किंतु, हिंदीक लेल हम सब मातृभाषाक निरादर कदापि नहि करब। जौं बांग्ला, उड़िया तथा गुजराती आदि स' देशक एकता पर कोनो आंच नहि अबैत छैक त' मैथिलीक मान्यता स' एतेक विरोध किएक?' अंत मे लिखैत छथि 'मातृभाषा आइ क्रांति एवं बलिदान मांगि रहल अछि।'

मैथिली ग्रंथ प्रकाशनक प्रसंग दिसंबर-जनवरीक 'मिथिला दर्शन'क संपादकीय मे लिखैत छथि, 'ई आनंदक विषय जे मैथिली ग्रंथक प्रकाशक लोकनिक संख्या दिनानुदिन बढ़ले जा रहल अछि। एहि स' ई स्वयमेव सिद्ध भ' जाइछ जे मैथिली ग्रंथक बिक्री बढ़ि रहल अछि। पुन: अनुवादक प्रति भारतक आन भाषाक साहित्य स' अथवा अंतरराष्ट्रीय साहित्य स' परिचय प्राप्त करबाक लेल मैथिलीक पाठक कें अपन भाषा छोड़ि आनहि भाषाक आश्रय ग्रहण करय पड़ैत छनि। यदि प्रकाशक लोकनि आन-आन भाषाक प्रसिद्ध ग्रंथक अनुवाद सेहो प्रकाशित करथि त' एहि अभावक पूर्ति बहुत दूर धरि भ' सकैत अछि। अनुवाद स' भाषा छोट नहि होइत छैक, ओकर गौरव ताहि स' और बढ़बे करैत छैक।...कोनो भाषा अपन प्राचीन साहित्यहि टाक बलें सम्मान नहि पाबि सकैछ। ओकरा लेल ई आवश्यक होइत छैक जे ओ आधुनिकतम चेतना स' अनुप्राणित होइत रहय और ज्ञानक दौड़ मे पाछां नहि पड़ि जाय।' अनुवाद काज कें खूब प्रोत्साहन करैत छलाह एवं स्वयं तथा परिवारक लोक स' अनेको अनुवाद प्रकाशित कयने छलाह। हमर पत्नी—पन्ना झा— स' अनेको कथा अनुवाद करौने छलाह तथा प्रकाशित कयने छलाह। अंग्रेजी लेखक इबस्सनक नाटक 'घोस्ट' कें हिनका स' अनुवाद करौने छलाह जे अप्रकाशित रहल, कारण मिथिला कॉलेज दरभंगाक अंग्रेजी प्राध्यापक दामोदर ठाकुर द्वारा कयल अनुवाद पहिने प्रकाशित भ' गेल।

देशक स्वतंत्रता संग्राम कें धर्मक संग आंदोलित करबाक हेतु लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक गणपति पूजाक आवाह्न कयने छलाह। प्रबोध बाबू 'मिथिला दर्शन'क मइ, 1968क अंक मे मैथिली दिवस मनयबाक अपील करैत छथि। 'सब दिशा स' ई आग्रह भए रहल अछि जे मैथिलीक लेल उग्र आंदोलनक श्री गणेश अविलंब क' देल जाय। आंदोलनक इच्छा मात्र स' आंदोलन नहि होइत छैक। एहि दिशा मे सक्रिय प्रयास करै पड़ैत छैक। से प्रयास व्यक्ति विशेष वा संस्था विशेष स' अनुप्राणित भनहि भ' जाय, पूर्ण रूपें व्यवस्थित, संचालित तथा नियंत्रित नहि भ' सकैछ। एकर व्यापक प्रस्तुतिक लेल समाजक सब क्षेत्रक लोक कें साकांक्ष होमय पड़तनि। आगामी मास मे श्री जानकी नवमी अछि। एकरा हमरा लोकनि मैथिली दिवसक रूप मे उद्यापित करी। मैथिलीक उद्धारक लेल जानकी नवमी दिन स' पैघ आन कोनो अनुकूल दिवस नहि भ' सकैछ। एहि दिन प्रत्येक गाम मे प्रत्येक संस्था द्वारा मैथिलीक लेल प्रभात फेरी, शोभा-यात्रा आदि संपादित हो तथा अपन-अपन उच्च सरकारी पदाधिकारी कें मैथिलीक अधिकार लेल लिखित प्रतिवेदन प्रेषित कैल जाय, जकर विवरण 'मिथिला दर्शन' तथा अन्यान्य पत्र-पत्रिकादि मे प्रकाशित भ' चुकल छैक।' मैथिली दिवस, जानकी नवमी कें मनायल जाय लागल। मैथिली कें भारतीय संविधान आ अन्य स्थान मे मान्यता प्राप्त भ' चुकल अछि तथा एखनो मैथिली सेवी संस्था एकरा मना रहल छथि। पटना मे मैथिली महिला संघ प्रत्येक वर्ष बहुत उत्साह स' एहि पर्व कें मनबैत अछि।

मिथिलावासी कें युगक अनुकूल परिवर्तन परमावश्यक। एहि संबंध मे प्रबोध बाबू दर्शनक मार्च 1961क संपादकीय मे लिखैत छथि, 'बुद्धिमान हुनके लोकनि कें मानल जा सकैछ जे युग परिवर्तनक अनुसार अपनहुं मे यथावश्यक परिवर्तन क' लेथि। रीति-नीति, शिक्षा-दीक्षा, राजतंत्र-समाजतंत्र, सब मे आवश्यक परिवर्तन क' ओहि सब कें जीवनानुकूल बना लेब आवश्यक। कोनो समय मे केवल हठयोग स', केवल कीर्तन स', वा केवल शास्त्र चर्चा स' काज चलि जाइत छल, किंतु आजुक युग मे पूर्ण राजनैतिक चेतनाक जागरण आवश्यक। आइ हम युगानुरूप क' अपन मातृभाषा, अपन संस्कृति, अपन अधिकार एवं गंतव्यक पूर्ण निर्धारण नहि क' लैत छी त' हमरा लोकनि सृष्टिक विकास-क्रम मे सहज लुप्त भ' जायवला अनेक जीव-जंतु जकां अपन अस्तित्व कें हेरा क' मेटा जायब, एहि मे कोनो संदेह नहि। संसार मे वैह टा जाति जीवित रहि सकल अछि जे अपना मे युगानुरूप परिवर्तन क' लेलक।'

वर्ष 1962क साधारण निर्वाचनक समय दर्शनक माध्यम स' प्रबोध बाबूक सुझाव मिथिलांचलक मतदाता कें—साधारण निर्वाचन समय सन्निकट अछि। संप्रति मिथिलांचलक चतुर कंगरेसिया नेता लोकनि मैथिलीयहि मे भाषण देब प्रारंभ करि देने छथि। ओ लोकनि कतहु-कतहु मैथिली भाषा एवं साहित्यिक उपेक्षा पर चिंता सेहो प्रकट करैत छथि जे मैथिलीक उन्नयनक लेल हम सदैव प्रयत्नशील रहब। किंतु, अपन दल (पार्टी)क सम्मुख ओ लोकनि मैथिलीक प्रश्न उपस्थित करबा मे सदा उदासीन रहलाह अछि। अंत मे, आशा अछि जे मैथिली प्रेमी जनता एहन-एहन दुरंगी नीतिवला अखढ़िया नेता लोकनि कें चिन्हबा मे भूल नहि करत। जे प्रबुद्ध वर्ग अपन भाषा, साहित्य तथा संस्कृतिक रक्षा कें अपन परम कर्त्तव्य बुझैत अछि से एहि निर्वाचनक अवसर पर अन्यान्य संकीर्ण नीति तथा वैयक्तिक लाभालाभ कें विस्मृत क' योग्य नागरिक हैबाक परिचय देत, एहि मे कोनो टा संदेह नहि। संगहि ईहो आशा अछि जे नेता लोकनि लोक-भावनाक सम्यक समाहार करबा मे आलस्य नहि देखा अपन कर्तव्य एवं भविष्यक प्रति जागरूक रहताह (मिथिला दर्शन, नवंबर-दिसंबर 1961)

मैथिली रंगमंचक विकासक प्रसंग प्रबोध बाबू लिखैत छथि, 'इतिहास एहि बातक साक्षी अछि, जे जाहि भाषा मे रंगमंचक उत्तरोत्तर विकास नहि तकरा जीवित रहनाइ असंभव। जाहि भाषाक बजनिहार लोकनि केवल आने-आन भाषाक नाटक तथा संगीत द्वारा मनोरंजन करबाक लेल बाध्य होइत छथि तकर लोप अवश्यंभावी। आगू कहैत छथि—आइ स' सात सौ वर्ष पूर्व जखन आन कोनो भारतीय भाषा मे नाटक-रचना धरि नहि होइत छलै तखन मैथिली मे अनेक स्थान पर विकसित रंगमंच सेहो छलै, जाहि मे विशुद्ध मैथिली नाटकक अभिनय होइत छलै। संप्रति मैथिली रंगमंचक लेल चाही उच्च स्तरक चरित्रक एवं द्रव्यवान लोक सभक प्रचेष्टा एवं युवक-युवती लोकनिक व्रत-निष्ठा। घूर्णायमान रंगमंचक आविष्कार स' नाटक आइ नीक जकां चलचित्रक सामाना क' सकैत अछि। यावत् धरि नाटक कें उच्च-स्तरीय सामाजिक मान्यता नहि प्रदान कयल जाइछ एवं संभ्रांत कुलक युवती लोकनिक हेतु अभिनयशीलता विशिष्ट गुण नहि भानल जेतनि तावत धरि मैथिली रंगमंचक दिवास्वप्न चरितार्थ भेनाइ असंभव ('मिथिला दर्शन' जून 1960क संपादकीय स' उद्धृत)। अपने मूल ओ अनुवाद मैथिली नाटक रचना कयलनि एवं मैथिली रंगमंचक हेतु खुद सचेष्ट रहैत छलाह। हिनक यशस्वी पुत्र प्रो. उदयनारायण सिंह अनेको मैथिली नाटकक रचना कयने छथि। मैथिलीक सर्वप्रथम चेंबर ड्रामा हिनक निवास 162/80 लेक गार्डेन्स, कलकत्ता मे आयोजित भेल छल।

प्रबोधबाबूक संपादन काल मे 'मिथिला दर्शन' मातृभाषाक प्रति जागरूक करबाक सशक्त अभियान कयलक तथा मिथिला राज्य आंदोलन मे सक्रिय भूमिका निभौलक। दरभंगा रेडियो स्टेशन, मिथिला विश्वविद्यालयक निर्माण, दरभंगा मे

भारत सरकार द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम, समस्तीपुर तक बड़ी लाइन ओ अन्य विकास काज मे अत्यंत सजग भूमिका 'मिथिला दर्शन'क छल। संगहि मैथिली साहित्यिक सर्वांगीण विकास मे अपेक्षित सहायता कयलक। ई पत्रिका मिथिला, मैथिल एवं मैथिलीक भविष्य, शिक्षाक माध्यम, साहित्य अकादमी एवं संविधान मे एकरा स्थान एवं जनगणना मे मातृभाषा मैथिली लिखायब आदि कतिपय समस्यादिक समाधान अभियान कयलक। सफलता सेहो भेटलै—साहित्य अकादमी मे मान्यता, मिथिला विश्वविद्यालय, समस्तीपुर तक बड़ी लाइन, दरभंगा मे रेडियो स्टेशन, ओतहि सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा मैथिली कें संविधान मे मान्यता। प्राय: 23 वर्ष प्रबोध बाबूक संपादकत्व मे 'मिथिला दर्शन' अपन कीर्तिमान स्थापित क'बंद भ' गेल एवं ओतहि स' मैथिली दर्शनक प्रकाशन शुरू भेल जे प्राय: तीन वर्षक अभ्यंतर मे काल कवलित भ' गेल। पुन: श्री रामलोचन ठाकुरक संपादकत्व मे नव कलेवर मे 'मैथिली दर्शन'क प्रकाशन अखिल भारतीय मिथिला संघ प्रारंभ कयने अछि।

मिथिला-मैथिली आंदोलन मे कलकत्ताक अखिल भारतीय मिथिला संघ अपन कीर्तिमान स्थापित कयने अछि। एकर सर्वोपरि नायक छलाह प्रबोध बाबू आ हिनक टीम। मिथिला राज्यक प्रवल समर्थक, मैथिली भाषाक समर्थ साधक प्रबोध बाबू मैथिली आंदोलनक झंडा उठओलनि आ आगू बढ़लाह आ बढ़िते गेलाह। अपन विलक्षण व्यक्तित्व, सहज-सौम्य स्वभाव, अपूर्व विद्वतापूर्ण आकर्षक भाषण शैली तथा अभिनव नेतृत्व क्षमता छलनि। साहित्य अकादमी मे मान्यताक लेल संघ पोस्टकार्ड ओ हस्ताक्षर अभियान चलौलक। प्रबोध बाबू सपत्नीक कलकत्ता स' अपन गाड़ी मे प्रस्थान कयलनि आ देवघर स' कार्यक्रम चालू भेल। संघक कार्यकर्त्ता अपन-अपन स्थान पर पहुंच गेल छलाह। मिथिलांचल मे सघन हस्ताक्षर अभियान चलौलनि। श्रीमती अणिमाजी अपना संग एक टेप रेकार्डर ल' गेल छलीह। प्रबोध बाबू दलान पर लोक कें एकत्रित क' अपन काज करैत छलाह आ अणिमाजी अपन टेप रिकार्डर मे दादी-काकी स' विलुप्त होइत मैथिली लोक गीत कें टेप करैत छलीह। एक अभियान मे दू काज भेल। साहित्य अकादमीक मान्यताक हेतु प्रयास आ अणिमाजी द्वारा एकत्रित लोक-गीत कें पुस्तकाकार। यैह पोथी भेल अणिमाजीक पी.-एच. डीक थिसिस।

साहित्य अकादमी मे मान्यताक हेतु कलकत्ता, प्रयाग, दरभंगा, मधुबनी, सहरसा ओ अन्य जगह स' समुचित प्रयास भेल। एक गोपनीय घटना हम खोलि रहल छी। जाहि दिन साहित्य अकादमी मे मैथिलीक मान्यताक एजेंडा छल ओहि मे कलकत्ता स' दू विशिष्ट विद्वान कें जयबाक छलनि। प्रबोध बाबू कें बुझल छलनि

जे एक गोटे मैथिलीक विरोध करताह। जोगाड़ कयलनि एवं हिनका कलकत्ता विश्वविद्यालयक काज मे ओझरा देलनि। गोटी सुफल भेल एवं एहि बैसार मे मैथिलीक मान्यता भेटल।

कॉटन स्ट्रीटक जैन प्रेक्षागृह मे विद्यापति पर्व समारोह आयोजित छल। एहि वर्षक पर्व मे हम स्वागत मंत्री ओ उड़ीसा राज्यक वर्तमान राज्यपाल श्री रामेश्वर ठाकुर स्वागताध्यक्ष छलाह। एहि पर्वक दू घटना ओहिना स्मरण अछि। पर्वक अवसर पर विशिष्ट लोकक पत्र अबैत छल जे पढ़िक' सुनायल जाइत छल। श्री सोमदेवजीक पत्र सेहो आयल छल। कार्यकारिणी समिति मे एहि पत्र पर दू तरहक विचार उत्पन्न भेल। आंदोलनकारी पत्र पढ़ल जयबाक पक्ष मे। घमर्थन भेल। कोनो निर्णय नहि भेल। प्रबोध बाबू एक मध्य रास्ता निकालि दुनू पक्ष कें शांत कयलनि। एहि पर्वक उद्घाटनकर्त्ता छलाह भारत सरकारक मंत्री सत्यनारायण सिंह। निश्चय भेल जे हिनक भाषण छापल जाय। हम आर प्रबोध बाबू बिड़ला हाउस मे जतय मंत्रीजी ठहरल छलाह, संपर्क कयल। कहल गेल जे भाषण लिखि क' लाउ। देखि क' स्वीकृत भ' जायत। हम दुनू गोटे विक्टोरिया मेमोरियल मे गाड़ी मे भाषण लिखल। स्वीकृत करायल गेल। सत्यनारायण बाबू सब टा पढ़ि देलनि आ भाषणक अंत मे कहल जे किछु बात हमरा स' जे कहायल गेल से मंत्रीक हैसियत स' हमरा नहि बाज'क चाही। अस्तु, अहां सभक काज हैत। एतेक अल्प समय मे भाषण लिखब एवं प्रेस मे छापब, मात्र प्रबोध बाबू क' सकैत छलाह।

प्रबोध बाबू साहित्य साधना, मैथिली साहित्य मे प्रकाशन, भाषा ओ राज्यक लेल आंदोलन, मैथिल कें व्यवस्थित करबाक संग चंदा अभियान मे सेहो ओतबे सक्रिय रहैत छलाह। एक बेरक घटना स्मरण अबैत अछि—हमर पत्नी एम.ए. (मनोविज्ञान) पढ़'क हेतु कलकत्ता गेलि छली। हम स्वयं सी.ए. फाइनलक बांचल एक ग्रुपक तैयारी मे लागल छलहुं। सामूहिक चंदा करबाक छलै। हम ब्रजनाथ मित्र लेनक एक कोठली ल' क' रहैत छलहुं। दक्षिण कलकत्ता मे प्रबोध बाबूक संग चंदाक हेतु घुमैत-घुमैत राति 12.30 बाजि गेल। आब अपन डेरा नहि आबि सकैत छलहुं। प्रबोध बाबू अपन निवास ल' गेलाह आ हम सब बांटि-चुटि क' भोजन कयल। आनंदक वातावरण छल। जखन दोसर दिन भोर मे अपन निवास अयलहुं, बिना सूचना कें राति नहि अयबाक कारणें, पत्नी द्वारा जे दशा भेल से ओहिना मोन अछि।

प्रयाग स' मैथिलीक विशिष्ट विद्वान सपत्नीक कलकत्ता आयल छलाह। प्रबोध बाबू हिनका अपन निवास स्थान मे सत्कार पूर्वक रखलनि। किंतु, हिनका टंट-घंट बेसी। एहि महारथीक पत्नी भानस करथिन तखने भोजन करताह। ओहि

समय मे भनसाघर मे आजुक व्यवस्था कहां छल। वर्त्तन-जारनिक इंतजाम करय पड़लनि। हिनका निवास स्थान पर एहन चहल-पहल बेसी काल रहैत छल। मात्र मिथिलांचलक विद्वाने नहि, साधारण कंडक्टर, ड्राइवर, खलासी, दर्जी आ अन्य सब अबैत-रहैत छलाह। सब संतुष्ट भ' क' जाइत छलाह।

ओहिना मोन अछि एक घनाढ्य सेठक बेटा कें कोना मनुख बनौलनि। एहि सेठक बेटा अपन धंधा मे ठीक स' योगदान नहि करैत छल। कोनो काजक नहि छल। ओ भोरे प्रतिदिन प्रबोध बाबूक आवास पर अबैत छल। एकरा सामान्य गप्प क' बिदा क' दैत छलथिन। किछु दिनक पश्चात सेठक ई बुड़ल बेटा अपन वनस्पति कंपनीक प्रबंध निदेशक बनायल गेलाह।

प्रारंभिक काल मे देशक स्वतंत्रता संग्राम—अगस्त क्रांति मे सक्रिय भेलाह। क्रांतिकारी भ' गेलाह। कलकत्ता प्रवास मे समाज सुधारक आ एकटा सामाजिक सांस्कृतिक तपल तपायल कार्यकर्त्ताक रूप मे प्रबोध बाबू सब स' आगां रहलाह। मैथिली भाषा तथा मिथिला राज्य आंदोलन कें नव-नव दिशा प्रदान करैत रहलाह। अखिल भारतीय मिथिला संघ, अखिल भारतीय मैथिली महासंघ, मैथिली रंगमंच, लोक साहित्य परिषद, राजेंद्र छात्र भवन न्यास समितिक माध्यम स' कतेको काज कयलनि। अनेक विश्वविद्यालय आ संस्थाक उपदेष्टा समिति आ कार्यकारिणी सभाक सम्मानित सदस्य छलाह। साहित्य अकादमी हिनका उर्दू स' कुर्रतुल एन हैदरक 'पतझड़ की आवाज'क मैथिली अनुवादक लेल 2002 मे पुरस्कृत कयने छल। वर्ष 1998 मे भीषण रक्तक्षयक कारणें प्रबोध बाबू पूर्ण रूप स' अस्वस्थ वाक्-रहित आ चलबाक-शक्ति स' वंचित भ' गेल छलाह। 20 मार्च 2005 कें हिनक निधन भ' गेलनि।

मिथिला विभूति प्रबोध बाबूक पंचभूत शरीर हमरा लोकनिक बीच आब नहि। ओ अपन अमर कीर्ति मे चिरंजीवी छथि आ सतत रहताह। 'कीर्तिर्यस्य स जीवति।'

(अक्टूबर, 2005)

•••